दारोगा ने यह कहा और लम्प लिये हुये वहां से चला गया और वह अभागा कैदी पुनः उसी अँधेरे में अपने लम्बे चौड़े ध्यानों के साथ अकेला छोड़ दिया गया।

जब फोस्ट अकेला रह गया तो वह आपही आप परन्तु जोर से कहने लगा, "उस आदमी ने बहुतही अच्छा किया कि उसने मुझे ऐसी इच्छा से रोक रक्खा, और ईश्वर मुझे ऐसी शक्ति भी दे, कि मैं आगे भी इस इच्छा को रोक सकूँ। ओ थेरिज़ा!" और फिर क्षण एक ठहर कर पागलों की तरह वह चिल्ला उठा "प्यारी थेरिज़ा; तू जानती है कि मैं तेरे लिये सब कुछ करने को प्रस्तुत हूँ। हा! मेरा चित्त गये आध घण्टे से कैसा डाँवाडोल हो रहा है। मेरे कानों में वह भयानक भेद अबलों गूँज रहा है जिसे मैंने पहले कभी नहीं सुना था। मेरे दिल से प्रतिध्वनि की भांति बार २ दारोगा की कही हुई बातें क्यों निकल रही हैं। हाय! क्या यह सब बातें मुझे एक ऊँचाई से, कि जिस पर मैं अबलों जमा खड़ा हूँ नीचे गिराया चाहती हैं। क्या मुझे सचमुच सदैव के निमित्त नरक के गहरे और भड़कते हुये अग्निस्फुलिङ्गों से भरे गार में गिरना होगा? आह ये हठी ध्यान मेरे चित्त में अब तो जमते हुये से जान पड़ते हैं! ओ थेरिज़ा तेरे नरम नरम हाथों का मेरे हाथ में होना, तेरे सुरीले स्वर का मेरे कानों को बसाना, तेरी सुन्दर चमक देखना और तेरे उमङ्गों से भरे हुये कोमल और स्वच्छ छाती को हार्दिक उमङ्गों में फूलते और धड़कते निरखना आह! ये आनन्द किसी बैकुण्ठ के आनन्द से कब कम हैं!—और फिर"—इतना कहतेही उसने अपने आवाज का ढङ्ग बदल दिया "मैं उस घमण्डी सर्दार का घमण्ड और उन अन्यायी हाकिमों से बदला भी तो पूरे २ तौर से ले सकूँगा जो मेरे रक्त के प्यासे हैं। आह! यह सब प्रेम मुझसे करायेगा! हां, थेरिज़ाही का प्रेम मुझे बैकुण्ठ की आशाओं से छुड़ाये देता है और उसी के लिये मैं पिशाच की सहायता लेने और नर्क में जाने पर विवशही नहीं बल्कि तैयार हो रहा हूँ।"

इसी समय द्वार खुला और एक अफसर लम्प हाथ में लिये कोठरी में आ पहुँचा।

अफ०—फोस्ट! मैं तुझे बड़े जज के सामने जो थोड़ीही देर में इजलास पर बैठेंगे ले जाने के लिये आया हूँ।

यह सुनकर फोस्ट का बदन ठण्ढा हो गया और वह काँपकर कहने लगा। "केवल एक क्षण! नहीं ठहरो—एक क्षण नहीं! मैं तीन मिनिट की मुहलत मांगता हूँ कि जिसमें मैं अपने छिटके हुये ध्यानों को एकत्रित कर लूँ"।

अफ०—मैं ऐसे आदमी की बात को, जो अब कुछही घण्टो का संसार में मेहमान है, अस्वीकार नहीं किया चाहता।

यह कहकर अफसर ने लम्प कोठरी की फर्श पर रखदिया और फिर वहाँ से बाहर चला गया।

इसके जातेही फोस्ट ने उन्हीं शब्दों को फिर से दुहराया " ऐसे आदमी की बात को, जो अब कुछही घण्टों का संसार में मेहमान है " तो क्या अब सचमुच मेरे भाग्य ने दो टूक जवाबही दे दिया ! और ऐसा हुई है नहीं तो यह अफसर मुझे काहे को धोखा देता।"

इतना कहकर वह एक गहरे सोच में डूब गया और फिर एक मिनिट के बाद ज़ोर से चिल्ला उठा " आह ! यह भयानक राह ! और उसी पर मेरा एक ध्यान मुझे चलने को कहता है ! दूर हो, ओ ध्यान मैं ऐसा कभी न करूँगा कुछ दिनों के आराम के लिये मैं अपने ईमान को हाथ से न दूँगा।

समय व्यतीत हुआ और अफसर फिर कोठरी में आया।

अफ०—जो समय तुमने मुझसे माँगा था वह व्यतीत हो गया अब उठो और मेरे साथ चलो!

फोस्ट—(गिड़गिड़ाकर) मैं फिर आपकी मिन्नत करता हूँ। कृपाकर मुझे दो मिनिट और प्रदान कीजिये। केवल दो छोटे २ तुच्छ मिनटों का मैं भिखारी हूँ, बस इतने में मेरा चित्त ठिकाने हो जायेगा और मैं फिर आपके साथ चला चलूँगा।

अफ०—मैं जज की घुड़की सुन लूँगा। पर तेरी भिक्षा को न फेरूँगा ! अभागे कैदी जा ! तुझे दो मिनिट मैंने और दिये।

यह कहकर अफसर, कोठरी के बाहर चला गया। जहां अब अन्धकार के बदले सूरज की रोशनी फैल रही थी और यह कैदी फिर अकेला रह गया।

कैदी—(चिल्लाकर) हाय ! यह मुझसे कदापि न होगा कि इस वयस में मैं ऐसे मनोहर संसार से विदा होऊँ " यह कहता वह हैरानी से एक ओर को देखने लगा। इस समय इसके नेत्रों से चिनगारियां सी निकलतीं जान पड़ती थीं और फिर वह कहने लगा " प्यारी थेरिज़ा ! मैं तुमसे फिर मिलूँगा, और मैं अपने चित्त की बड़ी २ कामनाओं को तेरे चरणों पर न्योछावर कर दूँगा और हां ! तेरे पिता और उन पाजी जजों को भी उनकी करतूत का मजा चखाये बिना न रहूँगा जो नाहक मेरे पीछे पड़े हैं। मेरे भाग्य का यही फैसला है—मेरी राय ने यही ठीक किया है और अब मैं इनकी आज्ञा अवश्यही पालन करूँगा ! हां, हां—मुझे प्राणप्यारी का मुख चन्द्र देखने और उन पाजियों से बदला लेने के निमित्त अवश्य जीवित रहना चाहिये।

यह कहकर उसने लम्प उठाया और फिर वह उस दीवार की ओर बढ़ा जिसपर वह मन्त्र लिखा हुआ था। परन्तु फिर वह तनिक हिचकिचा गया उसका साहस यों मन्त्र पढ़ लेने को न पड़ता था।

फोस्ट—आह! इस राह से तो फिर ईश्वर की कुल कृपाओं से वञ्चित रहना पड़ेगा। अरे! तो क्या दो मिनिट बीत गये (ठहर कर सुनता है) हां—पैरों के शब्द तो आ रहे हैं! पर अब यह बन्द होगये। जान पड़ता है कि वह दयालु अफसर, एक मिनिट का अवसर और बिना माँगे मुझे दे रहा है। ओह! ओह! मृत्यु भी कैसी डेरावनी वस्तु है और विशेषतः एक बाईस वर्षीय युवा के लिये। इतना कहते २ युवक को कँपकँपी आ गई और माथे में चक्कर जान पड़ने लगा। अन्त अपने कुल मस्तक की शक्तियों को एकत्रित करके, निराशा भरे उद्योग के साथ, उसने लिखावट की ओर अपनी दृष्टि फेरी और कहा।

"बस हिम्मत के साथ एक पैर आगे बढ़तेही मेरी यह अवस्था एकदम बदल जायगी, और अब मैं वह एक पैर आगे बढ़ताही हूँ चाहे मैं इस्में नरकही में क्यों न जाऊँ।"

इस्के उपरान्त, न तो वह हिचकिचाया और न उसने एक क्षण विलम्बही किया उसी समय अपना वह हाथ, जिस्में लम्प था उसने दीवार के निकट बढ़ाया और निम्न लिखित मन्त्र को जल्दी २ पढ़ने लगाः—

"प्रेतों के सरदार! भयानक कबरों की सौगन्ध तुम्हें।
मुर्दों को जो खाते हैं उन कीड़ों की सौगन्ध तुम्हें॥
कच्चा मुर्दा खानेवाले भुतनों की सौगन्ध तुम्हें।
खूनी की ठंढ़ी गीदड़ के बोलों की सौगन्ध तुम्हें॥
वह, साया सी जो चलती हैं भुतनीं तुमपर वारूं उनको।
अब, पहुँचो जल्दी! और पहुँचकर दिखलाओ अपने गुन को॥"

जैसेही उस साहसी विद्यार्थी के मुंह से मन्त्र का अन्तिम अक्षर निकला वैसेही वह चौंक कर कुछ पीछे हट गया। लम्प उस्के हाथ से छूटकर एक ओर जा पड़ा, क्योंकि उसी समय एक आत्मा मनुष्य के वेष में उस्के सामने खड़ी थी।

पिशाच की मूर्ति कुछ ऐसी भयावनी न थी; भली भांति देखने से उस्के चेहरे पर दुःख के चिन्ह प्रगट होते थे—नहीं, केवल दुःख नहीं वरन् मानो उस्के हृदय में

एक बड़ीही भयानक आग भड़क रही थी, जो उसके हृदय को जलाये देती थी परन्तु हाँ इस्के शरीर में एक प्रकाशमय तीक्ष्ण ज्योति भी थी जिस्के उजेले से कुल कोठरी प्रकाशमय हो रही थी।

पिशाच—(एक गहरी आवाज़ में) मुझसे क्या चाहते हो?

फोष्ट—(चिल्लाकर) मेरे प्राण बचाओ! मुझे इस भयानक स्थान से निकालो!

पिशाच—अभी निकालता हूं।

यह कहकर पिशाच ने दृढ़ता से फोष्ट की बाँह थाँभ ली और बिजली की तरह चमक कर बंदीखाने की छत में से निकल गया, और फोष्ट इससमय बेहोश हो गया।

* * * * * * * * *

जब फोष्ट होश में आया तो उसने अपने को अपनेहीं मकान में पाया जो विटेनबर्ग के बड़े कालिज के सामने था।

अब उसने नेत्र खोल दिये और भयभीत होकर चारों ओर देखने लगा, इससमय दिन का प्रकाश चारों ओर फैल रहा था।

परन्तु जब उस्की दृष्टि बन्दीखाने की गन्दी दीवारों के स्थान अपने मकान की पालिश की हुई तख्तेबन्दी पर पड़ी, और जब उसने उस छोटे से टेबुल को देखा जिस्पर लिखने पढ़ने की सामग्री रक्खी हुई थीं और साथही उस्पर वह पुस्तकें भी रक्खी हुई पाईं जिन्हें वह कालेज-लाइब्रेरी से अपने पढ़ने के निमित्त लाया था तो वह मारे प्रसन्नता के उछल पड़ा।

फोष्ट—(एक बेञ्च पर बैठकर आपही आप) यह एक स्वप्न था; लेकिन स्वप्न भी भयानक, जिस्से मैं बड़ाही भयभीत हो रहा हूं! अच्छा अब मैं यह सोचता हूँ कि मैंने देखा क्या २ था। याद आया! मानों मैं एक डेरावने और अन्धकारमय कारागार में बन्द किया गया हूँ। और वहाँ छः महीने या इस्से कुछ ज्यादे व्यतीत भी हो चुके हैं। मेरी कुल आशायें एक के उपरान्त दूसरी विदा होती गईं। इस्के उपरान्त मैंने देखा—पाक मरियम! मैं अबलों भयभीत हो रहा हूं—इस्के उपरान्त मैंने देखा, कि किसी मन्त्र को पढ़कर मैंने एक पिशाच को बुलाया है जिसने मुझे उस भयानक स्थान से एक क्षण में निकाल दिया। और वह भी बड़ेही कठिन समय में अर्थात् जब मुझे एक अफसर जज के सामने ले जाने के लिये उस कोठरी में प्रवेश कियाही चाहता था। परन्तु ईश्वर, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि यह केवल एक स्वप्न मात्र था—

केवल बुरे ध्यानों का परिणाम मात्र—अब मैं अपनी प्यारी थेरिज़ा के पास जाऊँगा और उससे भी इस भयानक स्वप्न का वृत्तान्त कहूँगा ! प्यारी लड़की, वा कोमलहृदया बालिका के नेत्रों से यह सुनतेही अश्रुपात होने लगेगा। ओहो ! वे कष्ट जो उस स्वप्न में मुझपर हुये हैं अबलों नहीं भूलते, मानों यथार्थही में ऐसा हुवा है। अच्छा ! तो अब मुझे थेरिज़ा के पास चलना चाहिये।

यह कहकर फोस्ट मुस्कराया और दिली प्रसन्नता से उस बेञ्च पर से उठा और आगे बढ़ा ; परन्तु न तो कोई लेखनी—और न किसी मनुष्य की जिह्वाही उसके उस भय का बयान, जो उसकी आत्मा पर चोट लगने से पैदा हुवा था करसक्ती है, कि जब उसने पिशाच को अपनी मसहरी के पीछे खड़ा देखा।

यह देखतेही अभागे युवक को घुमटा सा आ गया और अगर वह निकटही के रक्खे टेबुल को पकड़ न लेता तो इसमें कोई सन्देह न था कि वह चक्कर खाके गिर जाता इसके उपरान्त वह आपही आप बोला " परमेश्वर ! तो वह केवल स्वप्नही न था।"

अब पिशाच अपने दोनों हाथ छाती पर बांधे हुये धीरे २ फोस्ट की ओर बढ़ा इस समय उसके होठोंसे एक घृणायुक्त मुस्कराहट प्रगट थी; और उसका शरीर कुहासे वा धुँये के भीतर मालूम होता था। आगे बढ़के उसने फोस्ट से ऐसी आवाज में बातचीत प्रारम्भ की जिससे इसका दिल कांप गया।

पिशाच—नहीं—यह स्वप्न नहीं वरन् एक सच्ची घटना थी और सच्ची घटना भी वह, कि यदि तुम आगे अपने जीवन और सन्सार के अनगिनती सुखों की इच्छा करोगे तो तुम मेरे हो जाओगे। परन्तु अभी कुछ बिगड़ा भी नहीं है ! तुम मेरी सहायता को अब भी अस्वीकार कर सकते हो, और मुझे यहां से दूर करके अपने भाग्य पर निर्भर रह सकते हो।

फोस्ट—तू कहता है कि अभी कुछ बिगड़ा नहीं है—ओह ! तब फिर मुझे अब तेरे सहायता की कोई आवश्यकता भी नहीं है। मैं भविष्य [illegible] और सुख को कदाचित न छोड़ूंगा। नहीं—अब मैं तेरी किसी प्रकार की सहा[illegible] लिया चाहता ! पिशाच ! अब तू यहां से दूर हो।

पिशाच—अच्छा ! मेरी एक बात और सुनलो और वह यह कि यदि तुम मुझे यहां से हटाते हो और मेरी सहायता की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है, तो इसी क्षण तुम फिर उसी कारागार में पहुंचा दिये जाते हो; जहां से कि तुम अदालत में

पहुंचाये जाओगे ! और फिर अदालत से तुम जानते ही हो कि तुम्हें फांसी की सज़ा दी जायगी ।

फोष्ट—(चिल्लाकर) यह सब झेल लेने की मुझ में सामर्थ्य है ! परमेश्वर मुझे न भुला देगा । मेरा विश्वास अब उस बल पर जम रहा है जो तुझ से कहीं बढ़ा चढ़ा है । सर्वशक्तिमान जगदीश्वर मेरा सहायक होगा; और फिर कभी प्यारी थेरिज़ा भी मेरी हो जायगी ।

पिशाच—(घृणायुक्त हास्य से) बेवकूफ, तू पागल होगया है । क्या तू अनुमान करता है कि जर्मनी के एक ऐसे बलवान और श्रेष्ठ पुरुष की बेटी, जिस्की मँगनी एक राजकुमार के साथ हो चुकी है तुझ जैसे एक तुच्छ विद्यार्थी का ध्यान जो छः महीने से गायब है लगाये बैठी होगी ? क्या तू अनुमान करता है कि उस्के पिता ने तेरे गायब होने की कहानी—या यही बात गढ़ कर उस्से न सुना दी होगी कि फोष्ट एक अन्य स्त्री पर मरता था और अब, अन्य देश में जाकर उस्से उसने अपना व्याह कर लिया ?

थेरिज़ा तेरे बन्दी होने का वृत्तान्त नहीं जानती, बरन् उसे तो केवल यही मालूम हुवा है कि तू अपने मकान से गायब हो गया है । फिर ऐसी अवस्था में भी नादान, समझता है कि वह तेराही लौ लगाये बैठी होगी ? यह पूर्णतया असम्भव है।

फोष्ट—हाय ! यदि यह मैं जान पाऊं कि प्राणप्यारी थेरिज़ा को अब मेरा कुछ भी ध्यान नहीं है—यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि उस्का चित्त मेरी ओर से फिर गया है—और अब उस्के हृदय में दूसरे का प्रेम स्थित है—तो मैं तेरी बातों को इच्छापूर्वक स्वीकार करने को तैयार हूं और फिर जो कुछ मुझ पर बीतेगी मैं झेल लूंगा ! हाँ फिर तो मुझ में बल और धन दोनोंही हो जायगा (जोर से) फिर मैं अपने बैरियों से भी भली भाँति बदला ले सकूँगा इसमें चाहे आर्कड्यूक लिउपोल्डही क्यों न हों । परन्तु ओ विश्वासघाती पिशाच, तेरी बात पर मुझे विश्वास नहीं आता । तू अपने कथन के एक अक्षर का भी प्रमाण नहीं दे सक्ता । नहीं—थेरिज़ा अबतों अपनी बात पर होगी ।

पिशाच—(भयानक होकर) जब तुम्हारा मुझपर विश्वासही नहीं है तो फिर मुझे अपना बल प्रगट करने से क्या लाभ !

फोष्ट—(चिल्लाकर) मैं शपथ करता हूं ! प्रेत ! यदि तू अपने कथनानुसार प्यारी थे-

रिज़ा को निःशील प्रमाणित करदेगा तो मैं और मेरी आत्मा दोनोंही तेरे वश में होंगे; हाँ इस्के उपरान्त मैं जबलों पृथ्वी पर रहूँगा, धन, बल, बदला और प्यारी थेरिज़ा का तो अधिकारी रहूँगा।

पिशाच—और यदि तुम्हारे इच्छानुसारही हमारे कथन का परिणाम हो, तो क्या मेरे इकरारनामे पर तुम हस्ताक्षर करने को तैयार होगे?

फोष्ट—(बिना हिचकिचाये) हाँ हाँ! कह तो दिया कि फिर मैं तुरन्तहीं हस्ताक्षर करदूँगा।

पिशाच—जैसी तुम्हारी इच्छा है वैसाही होगा।

यह कहकर पिशाच ने अपना दाहिना हाथ खिड़की की ओर बढ़ाया और निम्न लिखित मन्त्र पढ़ने लगा:—

"ओ ताकतवाले जादू जिस्से डरता है सारा संसार।
आकर दिखला करतब तू कहता है भूतों का सरदार॥
इस राह को जल्दी खोलो।
हम देखें राजमहल को"॥

इस्के यह कहतेही एक काला बादल धीरे २ खिड़की के सामने छा गया और फिर जब क्रमशः यह साफ हुवा तो दुर्ग रोजेन्थेल का एक कमरा सामने दिखलाई दिया जिस्में थेरिज़ा एक पूर्वीय देश के कौच पर बैठी नजर पड़ी। उस्के लम्बे २ सुनहले बालों की लटें खूबसूरत और चमकीली गर्दन के इधर उधर पड़ी हुई थीं उस्की सुन्दर आँखें एक छोटी तस्वीर पर लग रहीं थीं जिसे वह अपने हाथ में लिये हुये थी।

इसे देखतेही फोष्ट पागलों की तरह चिल्ला उठा, यह वही है! यह वही है!" और यह कहता हुआ शीघ्रता से उसी ओर दौड़ा जिधर वह तस्वीर मन्त्र से दिखाई पड़ती थी, परन्तु इसे भूत ने राहही में रोका।

फोष्ट—मुझे प्यारी के पास जाने दो! अब मुझे मत रोको!

पिशाच—(सुरीली आवाज में) अरे पागल! धैर्य धर, वह तेरे बैरी, और अपने दूसरे प्रेमी की तस्वीर हाथ में लिये हुई है। देख, वह उसपर कैसी उत्कण्ठा से झुकी हुई है। और ले! अब वह उस्को कैसा अपने हृदय से लगा रही है। देखा उस्का प्रेम कैसा उस्के साथ है?

फोष्ट—(धीमी आवाज में) वास्तव में, तुझमें बहुत कुछ शक्ति है । अब मैं तेरी बातों पर सन्देह नहीं करता ! वास्तव में यह ठीक है—थेरिज़ा बेवफा निकली ! ऐसे प्रेम को दूरही से दण्डवत् ।

इसके उपरान्तही वह दृश्य धुँधला पड़ने लगा, और होते २ अन्त फिर एक काला बादल बन गया, और फिर वह बादल भी साफ होने लगा, और कुछ मिनिटों के उपरान्त खिड़की अपनी पहिली अवस्था में दिखाई देने लगी ।

फोष्ट—हाँ ऐसा तो होनाही चाहिये था "कुछ देर के निमित्त मानों वह प्रेत को भूल गया" मेरी समझ में सब कुछ आ गया—यह पृकृति के अनुसारही हुवा–उसने अनुमान किया होगा कि मैंने उसका ध्यान छोड़ दिया । अरे—न तो इस छः महीने में मैं उससे मिलाही, और न कोई पत्रही भेजा, फिर इन बातों का परिणाम इस्के सिवा और क्या हो सक्ता था। मेरा बन्दी होना उससे छिपाया गया और प्रगट किया गया तो यह, कि उसने किसी स्त्री से व्याह कर लिया है। बस इससे उस्का चित्त मेरी ओर से फिर गया होगा और उसने भी मुझसे बदला लेने के निमित्त एक ऐसे व्यक्ति से प्रेम किया जो मुझसे कहीं बढ़के उसे चाहता था ।

पिशाच—फोष्ट ! अब क्या तू मेरा होगा ? मैंने जो कुछ कहा वह कर दिखाया अब तू क्या कहता है ?

फोष्ट—(पागलों की तरह चिल्ला कर) क्या ? मैं तेरा हो जाऊँ, यह कभी सम्भव नहीं है । मैंने तुझसे कुछ प्रतिज्ञा नहीं की थी । और फिर, अब जब मेरी प्यारीही मुझसे फिर गई, तो मैं जीवित रह कर ही क्या करूँगा । बस हुवा ! अब तू मुझे फिर-बन्दीखाने में ले चल ।

पिशाच—झूठे ! अभागे ! तुझसा डरपोक भी कहीं साहस करके फाँसी के तख्ते पर जा सक्ता है ।

यह सुन कर फोष्ट का रक्त मारे भय के ठंढा हो गया, और उस कष्ट के भय से उसने धीरे २ कहा "अच्छा मुझे यह भली भाँति प्रतीत करा दे कि यह कष्ट मैं सहन न कर सकूँगा, तो मैं तेरे अधीन हो जाऊँगा ।"

पिशाच –अच्छा तू इस्की शपथ कर !

फोष्ट—हां, अब मैं शपथ करता हूँ और अब इससे कदापि न फिरूँगा ।

पिशाच—अच्छा तेरी यह इच्छा भी मैं पूरी करता हूँ ।

और यह कह कर उसने फिर अपने हाथ को खिड़की की तरफ बढ़ाया और निम्नलिखित मन्त्र पढ़ने लगाः—

"ओ ताकतवाले जादू जिससे डरता है सारा संसार।
आकर दिखला करतब तू कहता है भूतों का सरदार॥
फाँसी का मैदाँ खोलो।
सब भीड़ जमा जिसमें हो॥"

इतना कहतेही काला बादल फिर खिड़की पर छा गया, और जब वह धीरे २ साफ हो गया, तो बेचारे विद्यार्थी को बन्दीखाने के सामने का लम्बा चौड़ा मैदान दिखलाई दिया। मैदान में मनुष्यों की भारी भीड़ एकत्रित थी और भीड़ के प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि उसी फाँसी के तख्ते पर लगी थी जो उन लोगों के बीच में खड़ा किया गया था। तख्ते के बगलही में जल्लाद अपने कील काँटे से लैस टहलते हुये दिखाई पड़ते थे।

फोष्ट—बस! बस! यह बहुत है।

यह [illegible] उसने अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेर ली, क्योंकि मारे त्रास के वह उस ओर न देख सकता था।

पिशाच—नहीं—डरने की क्या बात है यह सब सामान तुम्हारे ही लिये तो तैयार किये जाते हैं। एक बार इसे और तो देख लो।

फोष्ट ने एक बार फिर उस भीड़ पर दृष्टि डाली तो एक मुनादी करनेवाले को बीच भीड़ में पाया।

मुनादी करनेवाले ने ज़ोर से अपना ढोल बजाया और फिर कहने लगा "फोस्ट की आत्मा के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना करो जो आज दोपहर को अपने अपराधों के बदले यहाँ फाँसी पायेगा! उसकी आत्मा के निमित्त प्रार्थना करो।"

फोस्ट—बचालो! मुझे बचालो! "यह कहता फोस्ट पिशाच के निकट आके बड़ी बेसब्री से उसका हाथ पकड़ने लगा।"

पिशाच—अभी! अभी! अच्छा सुन! बल, धन, बदला और तेरी प्यारी, यह सब कुछ चौबीस वर्ष पर्यन्त तेरे होंगे और फिर इसके उपरान्त तू मेरा होगा।

फोस्ट—केवल चौबीस ही वर्ष! इस्से ज्यादा नहीं?

पिशाच—ना! इस्से आगे एक क्षण भी नहीं। हाँ इन चौबीस वर्षों के बीच में मैं तेरा गुलाम बनके रहूँगा।

फौस्ट—बल, धन, बदला, जीत, और प्रेम -- थैरिजा जैसी कामिनी का प्रेम, यह सब मुझे मिलते हैं फिर अब इससे बढ़के और मुझे क्या चाहिये।

इसके उपरान्त विद्यार्थी इन सब बातों को सोच कर आत्मविस्मृत सा हो गया और कुछ देर ठहर कर एक बारगी पागलों की तरह जोर से चिल्ला उठा "मुझे सब स्वीकार है। मुझे सब स्वीकार है।"

यह सुन्ते ही पिशाच ने अपने पास से एक लिखा हुआ कागज निकाला और उसे टेबुल पर रखके और उसकी ओर इङ्गित करके वह फौस्ट से कहने लगा "इसपर हस्ताक्षर करो।"

युवक की कुल रुकावटों का अन्त हो गया। इसके जीवन की तराजू के पलड़े, जिस्में एक ओर नेकी तथा दूसरी ओर बदी थी अबलों बराबरी में झूल रहे थे, परन्तु अब बदी का पलड़ा एक बारगी भारी होगया, इसलिये कि युवक ने बिना कुछ हिचकिचाये ही कलम उठाई और प्रेत के उस कागज पर हस्ताक्षर कर दिये।

जिस समय उस भयानक एकरारनामे पर हस्ताक्षर हुये उसी समय नगर विटेनवर्ग पर बादल घिर आये और बड़े ज़ोर से गरजने लगे, साथही बिजली भी चमकने लगी, वायु शीघ्रता से चलने लगी, आकाश अन्धकारमय हो गया और एक भयानक तूफान बड़ी प्रबलता से बढ़ने लगा।

फौष्ट—हाय! कैसा अभागा मैं हूँ! अब मैं क्या करूं!

इतने में पिशाच की घृणायुक्त और बड़ेही भयानक रूप से हँसने की आवाज इस्के कानों में आई, जो इस्के कर्णकुहर से होती हुई हृदय में उतर गई और वहां जाकर इसने बेतौर ठेस पहुँचाई- जिसे फौष्ट सहन न कर सका और अचेत होकर कोठरी की फर्श पर गिर गया।

पहिला बयान।

रस्सी और खञ्जर।

सन् १४९३ के अगस्त मास का विचला दिन, अर्थात् पन्द्रहवीं तारीख थी। इसी दिन के अन्त में जब चारों ओर रात की अँधियारी फैलती जाती थी एक अकेला सवार कम्बर्ग नामी हलके से कसबे की छोटी से सराय में आकर उतरा।

युवक सवार की उम्र यही कोई तेईस वर्ष की होगी यद्यपि उस्का शरीर सुडौल, और चेहरा बहुत ही सुन्दर तो न था, पर तो भी उसे बुरा कहना भी उचित नहीं जान पड़ता था। और हां! एक बड़ा भारी गुण उसके चेहरे तथा उसकी बात चीत में यह था, कि जो उस्से मिलता वह मुग्ध हो जाता। इसके कपड़ों की दशा से प्रतीत होता था कि यह न तो बड़ा अमीर ही है और न बहुत गरीब ही। परन्तु हां, उसकी चाल ढ़ाल और बात चीत कुछ ऐसी थी कि जिसे देख उसे किसी उच्च कुल का भूषण ही अनुमान करना पड़ता था।

यद्यपि वह कुछ लम्बा चौड़ा जवान न था पर तो भी, अपने शरीर से अपने बराबरवालों से वह कहीं विशेष बलिष्ट बोध होता था; और यथार्थ में वह था भी वैसाही। उसके लम्बे २ काले २ बाल गरदन के पास से मुड़े हुये थे। उसकी दाढ़ी मुँडी हुई थी, और उस्की छोटी २ मोंछें बड़ी सफाई से नीचे की ओर मुड़ी हुई थीं। उसकी बड़ी २ आँखों में एक विशेष प्रकार की चमक थी। उसका साफ माथा चिकना और ऊँचा था। उसके होंठ कुछ टेढ़े थे, जिस्से एक प्रकार का घमण्ड प्रतीत होता था परन्तु ये बातें उसके उस सादे कपड़े पर बिलकुल शोभा को प्राप्त न होती थीं। जवान के कमरबंद की डाब में एक तलवार लटक रही थी और जीन के दोनों ओर के खानों में दो पुराने समय के पिस्तौल रक्खे हुये थे। युवक के घोड़ा ठहराते ही सराय का मालिक जल्दी से उसे घोड़े से उतरने में सहायता देने के लिये झपटा, परन्तु युवक ने उसे रोक दिया और आप उसी प्रकार अपने कुम्मैत घोड़े की पीठ पर डँटा बैठा रहा।

इसके उपरान्त वह सराय के मालिक से एक बड़े ही नर्म शब्दों में बोला, परन्तु वह उस्की नर्मी बनौवा जान पड़ती थी।

युवक—हमारे सुयोग्य मित्र! भला कहो तो यहां से बिटेनबर्ग कितनी दूर होगा?

इस्का उत्तर मालिक सराय ने, जो एक पचास वर्ष का शानदार और मोटा मनुष्य था यों दियाः—

मा०—यही कोई दो कोस! पर राह बिलकुल वाहियात है, और रास्ते में चोर लुटेरों का भी भय है। क्यों भई फादर थिउडोसस ठीक है न?

ये अन्तिम शब्द उसने एक लम्बे, दुबले पतले, बूढ़े पादरी की ओर देख के कहा था जो मुसाफिर के आजाने से टेबुल छोड़कर, जिसपर वह अभी मालिक सराय के साथ बैठा गप्प हाँकता और शराब पीता जाता था इस्के निकट आ खड़ा हुवा था।

मालिक साराय की बात सुन्तेही उसने सवार को बड़ीही उत्सुक्ता से देखना प्रा-रम्भ किया और फिर एक मन्द मुस्कान के साथ, जिसे सवार न मालूम कर सका कहने लगा "कैसा कुछ भयानक जङ्गल यह है ! मैं तो अनुमान करता हूँ कि जिसे अपने प्राण प्यारे न होंगे ; वही, विना किसी साथी के इस राह से जायेगा नहीं चाहे वह कैसाही वीर क्यों न हो इस्में से अकेले नहीं जासक्ता।"

मुसाफिर--(कुछ रुष्ट होकर) तो क्या लार्ड रोज़ेन्थेल, मुसाफिरों के आराम का बन्दोबस्त नहीं करते ? क्या उन्होंने वेदर्द डाकुओं को मुसाफिरों के लूटने का समर्थ दे रक्खा है, जिस्से वे जिसे चाहते हैं लूटा मारा करते हैं ?

मालिक--(रूखेपन से) कदाच् यह आप को मालूम नहीं है कि यह जङ्गल लार्ड रोज़ेन्थेल की अमलदारी में नहीं है वरन् इस्के अधिकारी मेनफ्रेड के कौण्ट, लिसडौर्फ हैं।

मूसाफिर--अहा ! तो क्या यह वही कौण्ट तो नहीं है कि जिस्के बारे में यह विख्यात है कि जब जरमनी के बड़े दरबार में कुल सभ्य और उच्चश्रेणी के सरदार लोग आये तो यह न आया ?

मालिक--हाँ है तो यह वही "इसे मालिक सराय ने धीमी आवाज में कहा और उधर वह पादरी वहाँ से हट गया और यह फिर बोला" परन्तु इस्का यहाँ मुंह से निकालना वैसाही भयानक है (बहुतही धीरे से) जैसा कि इस जङ्गल में से अकेले जाना।

यह सुनकर सवार कुछ देर तक एक हैरानी में चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा और फिर कुछ निश्चय कर वह घोड़े की पीठ पर से कूद पड़ा। और उस्की बाग मालिक सराय की तरफ फेंक कर कहने लगा। "मैं अपनी इस छोटी सी राह को तो विना समाप्त किये नहीं रहता चाहे इस्में कुछही क्यों न हो। हाँ मुझे ताजा होने के लिये थोड़ी सी अच्छी शराब चाहिये जिसे तुम जल्दी ले आओ, और हाँ एक बात और सुनो कि जब से मैं शराब पीता हूँ तब से तुम कुछ हथियार बन्द आदमी बुलालो जिन्हें मेरे साथ २ विटेनवर्ग पर्यन्त जाना होगा। और इतने में साईस को आज्ञा दे दो कि मेरे घोड़े को भी मल दे। परन्तु यह सब काम जहाँ लों सम्भव हो शीघ्रता से करो।"

यह कह कर मुसाफिर, सराय के भीतर चला गया और वहाँ जाकर भोजन इत्यादि

लाने के लिये उसने आज्ञा दी। जिसपर कुछही देर के उपरान्त इस्के सामने भाँति २ के भोजन अच्छी से अच्छी शराब सहित चुन दिये गये।

उसी समय जब कि मुसाफिर भोजन करने के निमित्त सराय में गया, तो मालिक सराय घोड़ा थाँमे हुये अस्तबल की ओर चला, इतने में वही पूर्व परिचित पादड़ी झपट कर इस्के निकट आया और एक हाकिमाना ढङ्ग में कहने लगा।

पादड़ी—हरमन! देखो आज रात को यह अजनबी किसी तरह आगे न जाने पावे।

मा०—श्रीमान्; मैं इसे कैसे रोक सक्ता हूँ आपही बताइयें!

पा०—इस्के घोड़े को या तो लँगड़ा करदो और या बीमारही डाल दो और कह दो कि दूसरा घोड़ा प्रातः काल पर्यन्त नहीं मिल सक्ता। इस्के अतिरिक्त उससे यह भी कह दो कि आज रात को तुम्हारे साथ बन में जानेवाला कोई नहीं मिल सक्ता।

मा०—श्रीमान ने जैसी आज्ञा दी है वैसाही होगा।

पा०—अच्छा तो उसे उसी कोठरी में जिस्में तख्ताबन्दी की हुई है सुलाना।

मा०—(नम्रता से) ऐसाही होगा! श्रीमान् के एक २ अक्षरों की तामील कर दी जायगी।

यह कह कर सराय का स्वामी तो घोड़ा लिये हुये अस्तबल की ओर गया और पादड़ी उस बाहर की कोठरी की ओर चला जिस्में प्रायः सब लोग बैठ सक्ते थे।

इतने में पादड़ी जब युवक पथिक की कोठरी के सामने से जाने लगा तो उसने कहा "क्या कृपाकर आप मेरे साथ दो एक गिलास शराब के पीयेंगे? यद्यपि यह एक कसबेही की शराब सही, परन्तु शराब यहाँ की एक प्रकार से अच्छीही है।

"मेरे धन्य भाग मैं अभी उपस्थित हुवा" कह कर पादरी कमरे में घुस आया और कुरसी पर बैठके अपना गिलास भर कर वह पथिक से पूछने लगा।"आज तो आप लम्बी मञ्जिल मारे चले आते होंगे?"

प०—कुछ ऐसी लम्बी तो न थी। अच्छा अब मैं आप से कौएट मेनफ्रेड के बारे में कुछ पूछता हूँ और वह यह कि मैंने सुना था कि सरदार रोजेन्थेल तथा इन कोन्ट साहब से आपस में कुछ बिगाड़ है, क्या यह बात सच्ची है?

पा०—(रुखाई से) हाँ होगी!

प०—और मैंने यह भी सुना कि कौन्ट साहब अपनी प्रजा से अपने स्वभावही के कारण बड़े भयभीत रहा करते हैं और उन्हें एक विशेष प्रकार का प्रबन्ध अपनी

प्राणरक्षा के निमित्त करना पड़ा है। कदाच इनकी स्त्री भी मर चुकी है और आगे गद्दी पर बैठने, तथा राज्य काज करने के निमित्त कोई सन्तान भी नहीं है।

पा०—सुन तो कुछ ऐसाही पड़ता है।

यह कहकर वह फिर शराब पीने लगा। पादरी का चित्त बातचीत के स्थान शराब पीने में बहुत कुछ लग रहा था।

प०—क्यों साहब इस्के एक, बड़ा भाई भी तो था जो अचानचक मरगया—"

पा०—(बात काटकर) पथिक महाशय! मैं केवल ईश्वर की वन्दना करनेवाला एक पादड़ी हूँ, मुझे सांसारिक झंझटों से कोई वास्ता नहीं, केवल मनुष्यों की आत्मा के सुख का ध्यान रखता हूँ। यदि आप इस प्रांत के मनुष्यों का वृत्तान्त जानने के निमित्त उत्सुक हो रहे हैं तो कृपाकर सराय के स्वामी हरमन से पूछिये वह आप को पूरे २ तौर से—"

पादड़ी ने अभी इतनाही कहा था कि सराय का स्वामी हरमन भी आन उपस्थित हुवा। इसे देखतेही युवक मुसाफिर ने पहली बात उड़ादी और एक बनौवा नम्रता से कहा "मेरे प्यारे हरमन्, कहो क्या समाचार लाये?

ह०—बड़ेही बुरे समाचार! मेरा आदमी अभी गाँव से लौट कर आया है। उसे वहाँ कोई आदमी आप के साथ जाने के लिये न मिला, कारण यह कि गाँव के जमींदार बेरथोफल के यहाँ आज व्याह है इसलिये जितने गाँव के आदमी हैं सब उसी के कामधाम में लगे हैं, रुपये पैसे की बहुत कुछ लालच दी गई इस पर भी वे नहीं आते!

प०—(शान्तभाव से) तो मैं अकेलाही आगे जाऊँगा मेरे पास हैही क्या जो लुटेरे छीन लेंगे, केवल एक प्राण है उसे लेने में डाकुओं को भी दो एक बलिदान देने पड़ेंगे कुछ यह सहलही थोड़ाही चला जायगा।

ह०—परन्तु मैंने आपसे अभी कुल हाल तो कहाही नहीं, आप का घोड़ा भी सहसा बीमार हो गया है।

"अरे!" इतना कहकर पथिक अपने स्थान से उठबैठा "तो क्या सचमुच मेरे भाग्य ने इस केम्ब्रिज की टुटही झोंपड़ी में पड़े रहने और व्यर्थ अपना समय नष्ट करने पर विवश किया? मैं तुम्हारे साथ अस्तबल तक चलूँगा—तनिक मुझे राह तो बताओ।"

ये शब्द मुसाफिर ने बड़ीही घबराहट में कहे थे, जिसपर सराय के मालिक को विवश हो लम्प जलानाही पड़ा, क्योंकि अब चारों ओर अन्धकार फैल गया था । इसके उपरान्त वह मुसाफिर को लेकर अस्तबल में गया जहाँ उसने अपने घोड़े को वास्तव में बीमार और इस योग्य न पाया कि वह पथिक को लेकर आगे जा सके ।

प०—तुमने पानी देने में जल्दी की ! गरमाये हुये घोड़े को तुमने ठंडा पानी जो पिला दिया तो बेचारा जानवर बीमार हो गया । अब मैं जहाँ लों अनुमान करता हूँ मुझे रात यहीं व्यतीत करनी पड़ी । यह कहकर वह घोड़े की गरदन पर प्यार से हाथ फेरता हुवा कहने लगा, "अच्छा, कोई हर्ज नहीं समय तो मेराही है ना !"

इसके उपरान्त पथिक ने अपने बेग से कुछ दवा निकाली और सराय के मालिक को दिखा के कहने लगा भाग्यवश यह दवा मेरे साथ थी नहीं तो बड़ीही कठिनता पड़ती, अब शीघ्रही घोड़े को पिला दो आशा तो है कि इसके पीने के कुछही घण्टों के उपरान्त वह अच्छा हो जायगा और देखो ध्यान रखना कि सूर्योदय के पहिलेही मेरे रवाना होने का सब सामान लैस रहना चाहिये ।

यह कहकर पथिक तो सराय की बैठक की ओर चला और सराय का मालिक घोड़े को दवा देने में तत्पर हुआ । कोठरी में पहुँचने पर उसे कुछ फल इत्यादि खाने को मिले और फिर कुछ शराब भी पी । जब यह समाप्त हुआ तो उसने सराय के स्वामी से लिसंडार्फ के कौन्ट मिनफ्रेड और बेरेन रोजेन्थेल के बारे में बातचीत करनी प्रारम्भ की । परन्तु पादड़ी के सामने होने के कारण सराय के मालिक ने किसी बात का उत्तर इसे न दिया, वरन् उसने अपना कुर्ता अपने मुंह पर खींच कर दिखाने के लिये ऊँघना प्रारम्भ किया । परन्तु यथार्थ में पादरी के सामने रहने ने उसपर एक मन्त्र का काम किया था । उसके मुंह पर मुहर सी लग गई थी, और सस्ते छूटने के निमित्त उसने यह बहाना निकाला ।

इधर जब पथिक ने अपनी बातों का यों निरादर होते देखा तो खिझला कर उठा और सराय के मालिक से कहने लगा "मुझे मेरे सोने की कोठरी दिखला दो !"

सराय के मालिक ने तुरन्त उसकी यह आज्ञा प्रतिपालन की और एक लम्प लेकर इसके आगे २ कई सीढ़ियों से चढ़ कर एक कोठरी में उसे ले आया । यह कोठरी अन्धकारमय, सँकरी और बहुत कुछ सजी हुई न थी, तो भी एक गाँव की सराय के लिये वह अच्छी ही कही जा सकती थी ।

यहां आकर सराय के मालिक ने लम्प एक कोने में रख दिया और पथिक को सलाम करके नीचे जाया ही चाहता था कि उसने झपट कर हरमन की बाँह पकड़ ली और एक रोबीली आवाज में कहने लगा।

"यह पादरी जो नीचे की कोठरी में बैठा हुआ है कौन है ?"

हर—एक सुयोग्य धार्मिक पुरुष, इसका नाम थिउडोसस है।

इतना कह कर हरमन जलदी से कोठरी के बाहर निकल गया जिसमें पथिक के दूसरे प्रश्न का उत्तर उसे न देना पड़े। और बाहर पहुंच कर इसने दरवाजा बन्द कर दिया और साथ ही पथिक को जञ्जीर चढ़ने का भी कड़ाका सुनाई दिया।

इसे सुन्तेही यह खटक गया और पहले तो जाकर इसने द्वार को ढ़केला और जब देखा कि सच मुच वह बाहर से बन्द कर दिया गया है तब तो इसे दाल में कुछ काला २ सा जान पड़ा और यह आपही आप कहने लगा। "इसका क्या तात्पर्य हो सकता है" और फिर उसने खिड़की की ओर फिर कर और उसके जँगले को हिला कर कहा "ये लोहे के मजबूत डण्डे कुछ कहते हैं; और अब कहना सुन्ना कैसा निश्चय हमारे साथ कुछ दगा खेली गई है।

अब उसने लम्प हाथ में लेकर कुल कोठरी को देखना प्रारम्भ किया। वहाँ और तो उस सँकरी कोठरी में कुछ उसे दिखाई न दिया परन्तु हाँ एक कोने में टेबुल पर कुछ बासन और एक बटुआ रक्खा मिला।

अभी यह उस मेज़ को देखही रहा था कि सहसा धड़ाका हुआ, और इसने सा-साथही जो दृष्टि उठाई, तो जान पड़ा कि टेबुल से सटी हुई जो तख्तेबन्दी की दीवार थी, उसका एक लम्बा तख्ता भीतर की ओर नीचे सरक गया और उसी छेद में से एक नंगा हाथ निकल आया। इस हाथ ने छेद में से निकल कर एक खञ्जर ज़ोर से उसी टेबुल पर गाड़ दिया और फिर जितनी शीघ्रता से वह आया था उतनीही शीघ्रता से गायब भी हो गया।

यह काम केवल एक मिनिट में हो गया था। यह देखकर पथिक कूद कर आगे बढ़ा और उस तख्ते को फिर हटाने का उसने उद्योग किया—परन्तु यह निरर्थक हुआ।

अब उसने अपनी दृष्टि उस खञ्जर पर डाली जो टेबुल पर सीधा गड़ा हुआ था, और जब इसने उसे और निकट से देखा तो जान पड़ा कि खञ्जर के दस्ते में एक कागज सूत से लपेटा हुआ है।

बड़ेही आश्चर्य से पथिक ने उसके दस्ते से वह कागज खोलकर अलग किया और ध्यान उसे देखने लगा तो निम्नलिखित इबारत उसमें लिखी पाई:—

" इस खञ्जर और रस्सी के नाम से तुम्हें
आज्ञा दी जाती है कि आज आधी रात को
जो मनुष्य तुम्हारी कोठरी में जावे उसके साथ
विना किसी उज्र के चुपचाप तुम चले आओ !
देखो इससे उज्र न करना ।"

यह देखतेही कागज युवक के हाथ से गिर पड़ा, भय उसके सर्वाङ्ग पर अधिकृत हो गया था, और वह यह कहता वहीं बैठ गया:—

" पाक मरियम मुझे बचा! यह एक ऐसी तलबी है कि जिससे इनकार करने की मेरी हिम्मतही नहीं पड़ती ।

दूसरा बयान ।

अदालत विम ।

जब युवक का भय जो उस भयानक कागज और उसकी लिखावट के देखने से उत्पन्न हुआ था कुछ कम हुआ, तो वह बड़ी शर्मिन्दगी से उस स्थान से उठा और इधर उधर टहल टहलकर आपही आप कहने लगा:—

"यह मैंने क्या किया? भला मुझे विम अदालत से क्यों भय खाना चाहिये। मैं यह भली भांति जानता हूं कि मुझे उक्त अदालत की तलबी में अवश्य उपस्थित होना होगा क्योंकि यदि मैं न जाऊँगा तो फ्री कौन्ट जो इस अदालत का सरदार होता है मेरे लिये अवश्यही बंध की आज्ञा देगा और इसके गुप्त चर जो प्रत्येक स्थान पर छूटे रहते हैं मुझे मारही डालेंगे ! पाक मरियम ! "इसके उपरान्त युवक बड़े जोश से कहने लगा" इस अदालत के बल के सामने बड़े २ शाहंशाहों, राजकुमारों और नौव्वाबों का अधिकार कोई चीजही नहीं है । जब—सहस्रों मनुष्यों की जमाअत ने जिस्में बादशाह से लेकर एक तुच्छ मनुष्य पर्यन्त मिला हुआ है, आपस में मिलकर और गुप्त रीति से मिले रहने का दृढ़ प्रण करके इस बात का बीड़ा उठा लिया है कि मनुष्यों पर अत्याचार न होने दें और न्याय तथा न्यायालय दोनोंहीं को अपने हाथ में रक्खें तो फिर किसी की क्या सा-

मर्थ्य है कि उनकी विरुद्धता करसके। फिर जैसा उनलोगों ने सोचा था वैसा किया भी अर्था
बड़े२ बादशाहों राजकुमारों को दण्ड दिया—बड़े२ घमण्डी राजों और बड़े २ अत्याचारी सर्दारों
का घमण्ड इसने पल मारते में चूर्ण कर दिया। जब इस अदालत का नौकर किसी दु
के द्वार पर रात *को पहुंचता है और खञ्जर और रस्सी द्वार पर गाड़कर इन्हीं दोनों
वस्तुओं के नाम से अदालत की हाजिरी की हांक लगाता है, तो बड़े २ अधिकारियों क
भी उस समय अपना नाम सुनकर रक्त सूख जाता है, उनका वह सब अधिकार को
काम नहीं आता और वे डरते और कांपते हुये अन्त अदालत विम में उपस्थितही होते हैं।

यह कहकर युवक बैठ गया, इससमय उसका बदन इस ध्यान से काँप रहा था
कि अदालत विम का कोई मेम्बर चाहे वहाँ रात को कुछही क्यों न हो किसी पर कभी
अपने भेद को प्रगट नहीं होने देता। फिर इस्के उपरान्त उसने आपही आप
कहना आरम्भ किया।

"क्या यह सम्भव है कि उस अदालत के किसी मेम्बर की मेरे साथ कोई अदा-
वत हो और उसने बदला लेने के निमित्त यह राह उत्तम समझी हो?"

यह अनुमान करतेही वह घबरा कर उठा कोठरी में इधर उधर ठहलने लगा और
फिर कुछ देर के उपरान्त बोला—

"परन्तु नहीं! यह अदालत अपने बल तथा प्रभुत्व को अदावतियों के अदावत
चुकाने में नहीं नष्ट करती। क्योंकि वह तो इन्हीं भयानक अत्याचारों के रोकने; या
बली के बल से निर्बल के बचाने और अत्याचारियों या दोषियों को उचित दण्ड देने
ही के लिये बनाई गई है। और जब सन् १४२९ इस्वी में शाहंशाह सिगिस्मिण्ड
जैसा व्यक्ति इस्का मेम्बर हुवा तो वह क्या बिना इस्के उत्तमोत्तम गुणों के देखेही हो
गया होगा? तो फिर ऐसी न्यायशाली [illegible] सभा के सामने उपस्थित होते
मैं क्यों हिचकिचाता हूँ, मैं अपनी हिम्मत से पूरी २ सहायता लूँगा और अदालत
विम के सामने जाकर जो कुछ वह पूछेगी उस्का स्पष्ट रूप से उत्तर दूँगा।"

परन्तु जो कुछ हो, इस युवक पथिक से अवश्य कोई गुप्त भेद भी सम्बन्ध रखता
था क्योंकि इतना कहने और सोचने पर भी न जाने क्यों बार २ वह सिहिर उठता था।

---

* यह सभा न्याय करने के निमित्त अर्ध रात्रि कोही बैठा करती थी, इसलिये
असामी रातही को बुलाये जाते थे।

आधीरात हो गई और अब युवक भी सँभल बैठा, उसने अपने चित्त पर पूरा २ अधिकार पा लिया था, अब उस्के चित्त की कोई धड़कन उसे तङ्ग न कर रही थी, कि इतने में द्वार के बाहर किसी के पैरों की धमक सुनपड़ी परन्तु इसपर भी वह तनिक भी न झिझका और उसी तरह बैठा रहा। अब जञ्जीर हटी और इस्के उपरान्तही द्वार खुला और एक अजनबी, जो लोहे की नदी में गोता मारे जान पड़ता था अकड़ता हुवा कोठरी में आया। इस मनुष्य के हाथ में एक नङ्गी तलवार थी जिस्के कब्ज़े पर एक रस्सी लपटी हुई थी।

युवक पथिक इसे देखकर न तो डराही और न उसे आश्चर्य हुवा, उसने उस्के आतेही केवल अपना सिर, इस मतलब से झुका दिया कि वह उस्के साथ चलने तथा अदालत की आज्ञा को प्रतिपालन करने के लिये तैयार है।

उस मनुष्य ने भी इस्से कोई बातचीत न की वरन् केवल अपने पीछे आने का इशारा किया।

इस्का इशारा पातेही युवक उठकर उस्के पीछे होलिया। अब दोनों सीढ़ियों से उतरे और सराय के पिछवाड़ेवाली राह से बाहर आये। बाहर आकर ये दोनों एक ऐसी राह पर होलिये जो सीधी उसी सनोबर के बन में जाती थी।

अभी युवक कुछही दूर उस मनुष्य के साथ गया होगा कि उसे और पैरों की आहट ने बतादिया कि गुप्त सभा के और कुछ हथियारबन्द लोग उस्के पीछे २ चले आते हैं।

ये लोग इसी प्रकार सनोबर के बन में पहुँचे। यहाँ आतेही युवक के उस हथियारबन्द साथी ने रोशनी की, और रोशनी होतेही वे पीछे २ आनेवाले सिपाही जल्दी से युवक के चारोंओर आ गये और अब युवक, कैदियों की तरह सिपाहियों की गारद में आगे बढ़ने लगा। ये लोग बड़ी दूर तक बिना बोले चाले बन में बढ़ते चले गये, यहां लों कि ये एक ऐसे मैदान में पहुंचे जहां कि मुसाफिरों के निमित्त एक गिर्जा बना हुआ था।

यहाँ पहुंच कर यह झुण्ड खड़ा हो गया, और यह पहिली बार वह युवक का साथी उस्से बोला "अब तुम्हारी आंखों पर पट्टी बांधी जायगी। इसमें भय मत खाओ मैं केवल एक नौकर हूं और तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया चाहता; मैं तो केवल एक आज्ञा का प्रतिपालन किया चाहता हूं जिसे तुम भी जानते हो, कि वह मेरा कर्तव्य है।"

यह सुनकर और अपने को इस भयानक अवस्था में पाकर युवक को भय मालूम हुवा और वह काँपकर कहने लगा "तो तुम मुझे लिये कहाँ चलते हो?"

यह सुनकर इस्के साथी ने अपने कमरबन्द की ओर इशारा किया, जिस्में औ हथियारों के बीच में एक रस्सी से लपेटा हुवा खञ्जर भी लटक रहा था और फि वह बोला "तुम उसी अदालत के सामने चल रहे हो जिस्का यह चिन्ह है"

जवान ने अपनी घबराहट और बेचैनी को दबाकर चुपचाप आँखों पर पट्टी बँध ली—क्योंकि वह जानता था कि किसी प्रकार का इनकार इनके आगे काम न देगा औ फिर उसे बड़ा भय तो उन लोगों के रुष्ट होजाने का लगा था।

अब फिर सब मिलकर आगे बढ़े, और उस युवक के पहले साथी के एक हा में तो पथिक का हाथ था और दूसरे में मशाल थी। इसी प्रकार ये लोग लगभ आध घण्टे तक के बढ़ते चले गये और फिर अचांचक सबके सब ठहर गये। इस उपरान्त एक बिगुल की आवाज मैदान में गुंज गई और साथही किसी का कण्ठस्व सुनाई दिया "तुम कौन हो?"

"फ्रेशचोफेन" इन शब्दों को जोर से पथिक के उस हथियारबन्द साथी ने कहा। जिस्पर फिर आवाज़ आई "बहुत अच्छा"

इस आवाज़ को आये कोई दो मिनिट बीते होंगे कि पहियों की खड़खड़ाहट और जञ्जीरों की झनझनाहट सुन पड़ी, जिसे सुन्तेही युवक अपने फौजी अभ्यास के बल ताड़ गया कि वह किसी किले के सामने है और यह शब्द, किले का द्वार खुलने तथा खंदक पर के उठे हुये पुल के फिरसे उसपर डालने से पैदा हो रहा है।

युवक का अनुमान बहुतही ठीक उतरा, कारण यह कि अब जो वह आगे बढ़ा तो उसने पाँव की धमक से निश्चय कर लिया कि वह एक पुल के उपर से जा रहा है। और फिर पैरों के शब्द की प्रतिध्वनि के कारण उसे जान पड़ा कि अब वह किसी मेहराबी दार जगंह में था। फिर यहाँ से वह एक बड़े भारी मकान के दर वाजे पर पहुंचाया गया। जिस्के सामने कुछ देर ठहरने पर एक द्वार खुला, औ इस्के भीतर वे सब घुसे।

अब वे एक ऐसी राह पर थे जो चौड़ाई में तो बहुतही कम, परन्तु उँचाई में बहुत ज्यादा थी। कुछ दूर इसराह से जाने के उपरान्त ये लोग एक बड़े कमरे में पहुँचे जिस्में इतना प्रकाश हो रहा था कि पथिक ने उस मोटी पट्टी के भीतर से भी वहाँ की कुछ न कुछ झलक अवश्यही देखली। इतने में किसी की आवाज़ आई "पट्टी खोल दो" यह आवाज़ सुन कर पथिक कुछ चौंक सा पड़ा, क्योंकि उसे

ह आवाज़ कुछ पहचानी हुई सी मालूम होती थी। इसके साथही पथिक को और बातों ा ध्यान भी आया, अर्थात वह आधी रात का संनोवर के बनकी गुप्त रूप की यात्रा। ंखों पर पट्टी का बांधा जाना, फिर किले के भीतर और अन्त इस मकान में ाना, और इस्के उपरान्त अदालत के सामने उपस्थित होना,—जिसे अब यह देखा ही हता था।

युवक यहीं सब सोचता था कि इतने में इसकी पट्टी उतार दी गई और उसने पने को एक बड़े भारी कमरे में पाया जो अदालत के भाँति सजाया गया था।

इस्से कुछ ही अन्तर पर सामने एक चबूतरा बना था जिसपर एक प्रकार का तख़्त बिछा हुआ था, और उस तख्त पर एक मखमली शामियाना खिंचा था। तख्त के नीचे था अदालत के अन्य व्यक्ति बैठे हुये थे परन्तु तख़्त पर फ्री कौएट, उत्तमोत्तम वस्त्र पहने बड़े ठाठ से बैठा था। यद्यपि पथिक कुछ चक पका गया था परन्तु फ्री कौएट के चेहरे पर जब उसने दृष्टि गड़ाई तो जान लिया कि यह तो वही व्यक्ति या पादड़ी है जिसने सन्ध्या समय सराय में उस्के साथ मदिरा पान किया था।

इस चबूतरे के सामनेही बहुत सी बेंचें आधी गोलाई में रक्खी हुई थीं जिनमें सभा के अन्यान्य मेम्बर जिन में कोई हथियार बन्द और कोई बिना हथियार ही केथा सिर खोले बैठे थे।

चबूतरे के सामनेही एक टेबुल पर एक तलवार रक्खी हुई थी जिसके मूठ पर सलीब का चिन्ह बना हुआ था और जिस पर एक रस्सी लिपटी हुई थी।

इस कमरे की दीवारों में चारों ओर बहुत सी मोमबत्तियाँ, लोहे की दीवार गीरों पर जल रही थीं। इतने में फ्री कौएट ने कहा "चुप रहो" जिसपर वह हुल्लड़ ठिठ गया और लोग धीरे २ बोलने लगे। इतने में कौन्ट ने दूसरी आवाज दी "चुप रहो" इस्बार वह आवाजें और भी धीमी पड़ गईं। अब एक आवाज और कौएट ने दी "चुप रहो" और इसे सुन्तेही चारों ओर मौत का सन्नाटा फैल गया।

कौन्ट—इस मनुष्य को अदालत के सामने लाओ।

"मैं उपस्थित हूं!" यह कहता; पथिक उस आधी गोलाई के भीतर जा खड़ा हुआ।

कौन्ट—तुम यहां किस लिये उपस्थित हुये हो?

पथिक—(दृढ़ता से) इस लिये कि मुझे रस्सी और खञ्जर से अदालत में उपस्थित होने की आज्ञा दी गई थी।

कौन्ट—तब तो तुम अदालत और उसके अधिकार को जिसका चिन्ह यही रस्सी औ खञ्जर है भली भांति जानते होगे ?

पथिक—मैं अदालत के बल से भली प्रकार विज्ञ हूँ।

फ्री०—तो क्या तुम उसके बल को स्वीकार करते हो ?

इस पर पथिक ने कोई उत्तर न दिया।

फ्री०—तो अच्छा हम तुम पर उसका बल अभी प्रगट किये देते हैं, पर यह तो बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है ?

पथिक—तुम मेरा नाम अवश्य जानते हो नहीं बिना जाने भला तुम मुझे यहां कैसे बुलाते ?

फ्री०—इन उत्तरों से हमारा समय व्यर्थ न नष्ट करो, यह बताओ कि तुम किस नाम से अब इससमय भ्रमण, कर रहे हो ?

प०—मैं एक सामान्य प्रजा के भाँति दिल बहलाने और भ्रमण करने के निमित्त निकला हूँ, और राह का पास जो मुझे वायना* में मिला था, उसमें मेरा नाम चार्ल्स हेमेल लिखा हुवा है। यह देखो !

यह कह कर पथिक ने एक लपेटा हुवा कागज अपनी जेब से निकाल कर जज के हवाले करदिया।

फ्री०—(ताने की राह से) एक सामान्य प्रजा के भाँति! अजी यहाँ आने पर तो सामान्य और असामान्य सबही सामान्य हो जाते हैं ! हाँ तो तुम्हारी इच्छा रोज़ेन्थेल के दुर्ग में जाने की है ? और तुम्हें यह भी मालूम हुवा कि तुम यहाँ किसलिये बुलाये गये हो ?

प०—(घमण्ड से भरी हुई आवाज़ में) मुझे क्या मालूम" ! उसी समय एक मेम्बर ने इसके हाथ में एक लिपटा हुवा कागज दे दिया, जिसे इसने बड़े ही शौक से खोल के देखना प्रारम्भ किया।

लगभग आध घण्टे पर्यन्त के युवक उस कागज को देखता रहा, बीच २ में कभी तो उसका चेहरा लाल और कभी सुफेद हो जाता था, अन्त उसके चहरे से एक भारी हैरानी टपकती जान पड़ने लगी।

* आष्ट्रिया की राजधानी का नाम वायना है।

कौन्ट—तब तो तुम अदालत और उसके अधिकार को जिसका चिन्ह यही रस्सी और खञ्जर है भली भांति जानते होगे ?

पथिक—मैं अदालत के बल से भली प्रकार विज्ञ हूँ।

फ्री०—तो क्या तुम उस्के बल को स्वीकार करते हो ?

इस पर पथिक ने कोई उत्तर न दिया।

फ्री०—तो अच्छा हम तुम पर उसका बल अभी प्रगट किये देते हैं, पर यह तो बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है ?

पथिक—तुम मेरा नाम अवश्य जानते हो नहीं विना जाने भला तुम मुझे यहां कैसे बुलाते ?

फ्री०—इन उत्तरों से हमारा समय व्यर्थ न नष्ट करो, यह बताओ कि तुम किस नाम से अब इससमय भ्रमण, कर रहे हो ?

प०—मैं एक सामान्य प्रजा के भाँति दिल बहलाने और भ्रमण करने के निमित्त निकला हूँ, और राह का पास जो मुझे वायना* में मिला था, उसमें मेरा नाम चार्ल्स हेमेल लिखा हुवा है। यह देखो !

यह कह कर पथिक ने एक लपेटा हुवा कागज अपनी जेब से निकाल कर जज के हवाले करदिया।

फ्री०—(ताने की राह से) एक सामान्य प्रजा के भाँति! अजी यहाँ आने पर तो सामान्य और असामान्य सबही सामान्य हो जाते हैं! हाँ तो तुम्हारी इच्छा रोज़ेन्थेल के दुर्ग में जाने की है ? और तुम्हें यह भी मालूम हुवा कि तुम यहाँ किसलिये बुलाये गये हो ?

प०—(घमण्ड से भरी हुई आवाज़ में) मुझे क्या मालूम" ! उसी समय एक मेम्बर ने इस्के हाथ में एक लिपटा हुवा कागज दे दिया, जिसे इसने बड़े ही शौक से खोल के देखना प्रारम्भ किया।

लगभग आध घण्टे पर्यन्त के युवक उस कागज को देखता रहा, बीच २ में कभी तो उस्का चेहरा लाल और कभी सुफेद हो जाता था, अन्त उस्के चहरे से एक भारी हैरानी टपकती जान पड़ने लगी।

---

* आष्ट्रिया की राजधानी का नाम वायना है।

पथिक भी अपनी बात का एक ही था, उसने जो सूँ खींची तो फिर दम तक न लिया।

इससमय सबके नेत्र उत्सुकता से कैदी की ओर लग रहे थे कि देखें अब इसके बारे में क्या फैसला होता है, और उधर फ्रीकौएट ने नीचे लिखी इबारत जोरसे पढ़नी प्रारम्भ की:—

"आज एक कैदी जो अपने को कारणों वश चार्ल्स हेमेल के नाम से पुकारा जाना पसन्द करता है मेरे इजलास पर खञ्जर और रस्सी के नाम से बुलाया गया; और उसके सामने कुछ देश की हितकारक बातें अदालत के कुछ मेम्बरों की इच्छा से और उन्हीं के सामने, स्वीकार करने निमित्त उपस्थित की गईं। इसपर बड़ी ही निरादरता से उसने उन बातों को अस्वीकार किया। इसलिये मैं उपरोक्त अपराध में उसे दोषी ठहराता हूँ, उन देशहितकारक बातों के अस्वीकार करने का दोष तो हई है, परन्तु मैं अदालत की मानि हानि का भी उसपर दोष लगाता हूँ, कारण यह कि उस कागज को जिसमें वह बातें लिखी हुई थीं बड़ी ही निरादरता से इसने पृथ्वी पर फेंक दिया। इसलिये यह अदालत, जिसे ऊँचे से ऊँचे अधिकार मिले हैं यह आज्ञा देती है कि दोषी; मनुष्य—जाति मात्र से बहर करदिया जावे। क्योंकि सत्य असत्य का ज्ञान, न्याय, मेल, सभ्यता, और देश में शान्ति रखने का ध्यान, इत्यादि, जो भूषण ईश्वर ने मनुष्य को दिये हैं उन्हें मैं उसमें नहीं पाता। मैं आज्ञा देता हूँ कि इसके कुल अधिकार मिटा दिये गये, और अब जब यह दोषी ठहराया जा चुका है तो प्रत्येक मनुष्य उससे वैसाही व्योहार कर सक्ता है जैसा कि एक दोषी के साथ करना चाहिये। मैं इसके माँस तथा [illegible] पर श्राप देता हूँ, इसका शव गाड़ा भी न जाय, वरन् उसे कौवे और गिद्ध नोच२ कर खायें। और मैं यह भी आज्ञा देता हूँ कि इसकी गरदन में रस्सी बाँधकर [illegible] लटका दिया जाये और इसका शरीर जल स्थल, के पशुओं के काम आये। परन्तु [illegible] निमित्त मैं ईश्वर से प्रार्थना तो करता हूँ, यदि वह उसे स्वीकार [illegible] खोल के देख

लगभग आध घ[illegible]

कभी तो अदालत विम के फैसले वास्तव में बड़े ही भयानक होते थे। एक हाल ही [illegible] भारी हैरहुई जर्मनी भाषा की पुस्तक के एक पर्व में इस अदालत पर बहुत कुछ लिखा [illegible]ह, ग्रन्थकर्ता और भी बहुतसी भयानक तथा विचित्र घटनायें इस अदालत की लिखकर लिखते हैं "इस अदालत के फ्रीकौएट या जज दोषियों को केवल अनुमान

पथिक भी अपनी बात का एक ही था, उसने जो सूँ खींची तो फिर दम तक न लिया ।

इससमय सबके नेत्र उत्सुकता से कैदी की ओर लग रहे थे कि देखें अब इस्के बारे में क्या फैसला होता है, और उधर फ्रीकौण्ट ने नीचे लिखी इबारत जोरसे पढ़नी प्रारम्भ की:—

"आज एक कैदी जो अपने को कारणों बश चार्ल्स हेमेल के नाम से पुकारा जाना पसन्द करता है मेरे इजलास पर खञ्जर और रस्सी के नाम से बुलाया गया; और उस्के सामने कुछ देश की हितकारक बातें अदालत के कुछ मेम्बरो की इच्छा से और उन्हीं के सामने, स्वीकार करने निमित्त उपस्थित की गईं । इस्पर बड़ी ही निरादरता से उसने उन बातों को अस्वीकार किया । इसलिये मैं उपरोक्त अपराध में उसे दोषी ठहराता हूँ, उन देशहितकारक बातों के अस्वीकार करने का दोष तो हई है, परन्तु मैं अदालत की मानि हानि का भी उस्पर दोष लगाता हूँ, कारण यह कि उस कागज को जिस्में वह बातें लिखी हुई थीं बड़ी ही निरादरता से इसने पृथ्वी पर फेंक दिया । इसलिये यह अदालत, जिसे ऊँचे से ऊँचे अधिकार मिले हैं यह आज्ञा देती है कि दोषी; मनुष्य—जाति मात्र से बहर करदिया जावे । क्योंकि सत्य असत्य का ज्ञान, न्याय, मेल, सभ्यता, और देश में शान्ति रखने का ध्यान, इत्यादि, जो भूषण ईश्वर ने मनुष्य को दिये हैं उन्हें मैं उस्में नहीं पाता । मैं आज्ञा देता हूँ कि इस्के कुल अधिकार मिटा दिये गये, और अब जब यह दोषी ठहराया जा चुका है तो प्रत्येक मनुष्य उस्से वैसाही व्योहार कर सक्ता है जैसा कि एक दोषी के साथ करना चाहिये । मैं इस्के माँस तथा [illegible] पर श्राप देता हूँ, इस्का शव गाड़ा भी न जाय, बरन् उसे कौवें और गिद्ध नोच २ कर खायें । और मैं यह भी आज्ञा देता हूँ कि इस्की गरदन में रस्सी बाँधकर य[illegible] लटका दिया जाये और उस्का शरीर जल स्थल, के पशुओं के काम आये । परन्[illegible] [illegible] निमित्त मैं ईश्वर से प्रार्थना तो करता हूँ, यदि वह उसे स्वीका[illegible]

खोल के देख[illegible]

लगभग आध घ[illegible]

कभी तो अदालत विम के फैसले वास्तव में बड़े ही भयानक होते थे । एक हाल ह[illegible] भारी हैरहुई जर्मनी भाषा की पुस्तक के एक पर्व में इस अदालत पर बहुत कुछ लिख[illegible] है, ग्रन्थकर्ता और भी बहुतसी भयानक तथा विचित्र घटनायें इस अदालत की [illegible]कर लिखते हैं "इस अदालत के फ्रीकौण्ट या जज दोषियों को केवल अनुमा[illegible]

वह किसी से, यहाँ के गुप्त भेदों का समाचार दें इसमें चाहे दोषी ; उनका भाई, वा पिता ही क्यों न हो । वस लेजाओ इसे ।

यह सुन्ते ही अदालत के नौकरों ने उसे शीघ्रता से अदालत के बाहर किया। और अब वह उस छोटी राह से होते हुये किले के भीतर चले। पथिक की आँखों पर अब पट्टी न बँधी थी कारण यह कि नौकरों ने समझ लिया था कि अब तो वह कुछ ही देर में मारा जायगा इस्से कुछ छिपाना व्यर्थ है ।

चाँद इससमय पूरी २ ऊँचाई पर चमक रहा था। उस्का शीतल और कोमल प्रकाश अनगिनती सितारों के साथ चारों ओर छिटक रहा था, मानों किसी गहेरे रङ्ग के नीले मखमली शामियाने में बहुत से जवाहिरात टाँक दिये गये थे ।

बेचारे पथिक ने एक बार जो ऊपर दृष्टि उठाई तो दृढ़ बुर्ज और जङ्गी फसीलों को, काला कपड़ा पहने बड़ेही सन्नाटे में अपनी ओर देखते पाया ।

[illegible] अदालत का [illegible] चुकी थीं। उस्का हथियार उस्से लेलिया
कागज़ों की कुल आशायें उस्से विदा हो [illegible] ती है [illegible]
गया था, और छः म्यान से बाहर तलवारें उस्पर चारों ओर से अपना साया डाल रहीं थीं।

बेचारे युवक को अब ईश्वर के सिवा और कोई न याद आता था; और उसी को हृदय में जपता वह आगे बढ़ता जाता था ।

आई हुई राह सब पीछे छूट गई, किले का फाटक एक शब्द के साथ फिर खोला गया, पुल गिरा, और दुःखी पथिक अपने भयानक साथियों के साथ किले के बाहर हुवा।

अब उन गुप्त सभा के मनुष्यों में से एक, एक मोटी जलती हुई मशाल लेकर आगे बढ़ा, जिस्का गँदला प्रकाश दूर २ तक जाता था और जिस्का बेतौर निकलता हुवा धुँवा इस्के पीछे आनेवालों के मुँह पर लग रहा था ।

राह में एक शब्द भी किसी ने किसी से न कहा ।

अन्त वह छोटा झुण्ड उस सनोबर के वन में धँसा जिस्से होकर यह आया था और वह एक व्यक्ति मशाल लिये इन्हें राह दिखाता जाता था ।

कुछ ही देर के उपरान्त यह झुण्ड उस खुले हुये स्थान में पहुँच गया जहाँ वह छोटा गिरजा बना था ।

यहां पहुँच कर यह ठहर गया और उसके अफसर ने पथिक से एक बड़े वृक्ष की ओर उँगली उठाके कहा, यही स्थान है कि जहां तुम मारे जाओगे। अब तुम

यदि इस अन्तिम समय में ईश्वर की कुछ वन्दना तुम्हें करनी हो तो इस छोटे गिरजा में जाके तुम कर सकते हो।"

चार्ल्स यह सुनकर कुछ न बोला और बड़ी ही दृढ़ता से पैर उठाता उस स्थान पर आया जहां वंदना की जाती थी। यह स्थान लोहे के ठोस खम्भों से घिरा हुआ था; जिन में लोहे की जञ्जीरें लगी हुई थीं।

यहाँ आकर उसने घुटने टेक दिये और कुछ मिनिटों तक ईश्वर की वन्दना करता रहा, जब से वे सिपाही इसे अपनी आधी गोलाई में घेरे खड़े रहे।

अन्त वह उठा और एक ऐसी आवाज में अफसर से कहने लगा जिस्से किसी प्रकार की घबराहट न प्रगट होती थी। "मैं प्रस्तुत हूं।"

अफसर—तुम एक वीर पुरुष जान पड़ते हो।

हेमेल—नहीं मैं केवल इतनाही जनाता हूं कि तुम्हारी इस अत्याचारी अदालत की आज्ञा पालन करने के बदले में प्राण त्यागना पसन्द करता हूं।

अब उनमें से एकने, वृक्ष की निकली हुई एक डाल में, अपने अफसर की अनुमति से रस्सी डाल दी, उसका एक सिरा तो उनलोगों के हाथ में रहा और दूसरे सिरे में फन्दा बनाकर युवक की गर्दन फँसाई गई। तबसे दूसरे दो आदमियों ने मिल कर उसके हाथ बांध दिये।

इसपर भी उस व्यक्ति ने अपनी जबान से उफ न निकाली, हां केवल उसके होठों से ईश्वर की प्रार्थना निकलती सुन पड़ती थी।

अब पथिक के मृत्यु का सब सामान ठीक हो गया। बेचारे के छुटकारे का अब कोई रास्ता दिखाई न पड़ता था।

परन्तु उसी समय, जब उन सिपाहियों में से दो, युवक को उस डाल में, जो इसके ओर पर लटक रही थी खींच देने को तैयार थे, तो एक लम्बी शकल जो एक स्याह लबादा ओढ़े हुये थी एक ओर से पृथ्वी में से प्रगट हुई।

"अपना शिकार छोड़ दो!" यह आज्ञा एक बड़े भारी अधिकारी की भांति उस शकल ने दी और फिर शीघ्रता से आगे बढ़ कर और अपनी चमकीली तलवार म्यान से बाहर निकाल के उस रस्सी को उसने एक हलकी चोट में काट दिया।

अफ०—[चिल्ला कर] इसे पकड़ना! हम उसे दिखा देंगे कि अदालत निम के काम में विघ्न डालनेवालों को क्या फल मिलता है।

यह सुनकर सिपाहियों में से दो ने तो युवक को पकड़ रक्खा, और बाकियों ने उस शकल पर आक्रमण किया।

"उजड्ड ; पाजियों" यह उस शकल ने एक बड़ीही घृणायुक्त आवाज़ में कहा और फिर बोला "तुम नहीं जानते कि तुम किसपर आक्रमण कर रहे हो। पीछे हट-कर खड़े हो!"

हेमेल इससमय बड़ेही आश्चर्य में था, उसने अनुमान किया था कि ये सिपाही क्षण भर में शकल के टुकड़े २ करके पृथ्वी पर डाल देंगे। परन्तु नहीं, उसके इन शब्दों में बला का असर भरा हुवा था जिसे सुन्तेही सिपाही पीछे हट गये और काँपते हुये हाथों से उन्होंने हथियार रख दिये, मारे भय के उनके हाथ से मशाल भी छुट गई, जो पृथ्वी पर गिरकर जलती रही।

तदुपरान्त वह व्यक्ति बिना हिचकिचाये ठीक उसी मनुष्य की तरह आगे बढ़ने लगा कि जिसे किसी बात की कोई परवाह न हो और बैरी के किसी रुकावट का खटका न हो। धीरे २ पैर उठाता वह हेमेल के निकट पहुँचा, यहाँ आकर उसने उन दोनों मनुष्यों को, जो उसे पकड़े हुवे थे हटा कर अलग कर दिया, और अपनी तलवार से उस रस्सी को भी काट दिया जिस्से युवक के हाथ बँधे थे।

श०—हमारे पीछे चले आइये!

यह कह कर वह जङ्गल की ओर चला, उसे तनिक भी खुटका न जान पड़ता था कि कोई पीछे आता होगा, क्योंकि वह अपनी सामान्य चाल से धीरे २ आराम से पैर [illegible] आगे बढ़ रहा था। इतने बड़े भयानक काम पर भी, अर्थात् अदालत बिम का कैदी छुड़ा देने पर भी उसके चित्त में कोई धड़कन न जान पड़ती थी।

चार्ल्स बड़ेही आश्चर्य से उसके पीछे २ यह देखता चला जाता था कि अदालत बिम के नोकर इस समय मूर्तियों के समान खड़े थे मानों किसी मन्त्र ने उनके पैर पृथ्वी से जकड़ दिये थे। परन्तु उस पृथ्वी पर की पड़ी हुई और जलती मशाल के प्रकाश में उनके चेहर से भय, आश्चर्य, और नितान्त व्यग्रता भी झलक रही थी।

चा०—महाशय, अब हम लोगों को शीघ्रता करनी चाहिये नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि वे फिर आकर हमें पकड़ लें।

श०—वह तो क्या यदि एक पूरी फौज भी चढ़ आवे तो हम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ सक्ती।

यह शब्द पूरी गम्भीरता से कहे गये थे, शब्द के एक २ अक्षर से सचाई बरसती थी जिसे सुनकर हेमेल पर भी उस अजनबी का रोब बैठ गया ।

इससमय वह आपही आप यह अनुमान कर रहा था कि कौनसी अनूठी बात इस मनुष्य में हैं जिससे यह तनिक भी किसी बात से भय नहीं खाता, सोचते २ उसने अनुमान किया कि कदाच् यह कोई अदालत विम का बहुत बड़ा अफसर है जिसने प्रत्यक्ष में तो कुछ नहीं कहा परन्तु गुप्त रीत से कोई ऐसा चिन्ह दिखाया हो जिससे उन सिपाहियों की वह दशा हो गई हो ।

हेमेल यही सब सोचता उस शकल के साथ बन में पहुँचा; उसे उस शकल से कोई प्रश्न करने का साहस न पड़ता था ।

जब ये लोग चलते २ केम्बेर्ग कसबे के निकट पहुँच गये तो सहसा वह स्याह शकल ठहर गई और पलट कर इससे बोली—

"आप कुछ देर लों यहीं ठहरें मैं आपका घोड़ा अभी लिये आता हूँ ।"

यह कहकर वह शीघ्रता से आगे बढ़ा और कुछही देर के उपरान्त दृष्टि से बाहर हो गया ।

अपने को फिर अकेला पाकर हेमेल बहुत ही भयभीत हुवा, सहस्रों प्रकार के ध्यान उस्के चित्त में आ २ कर बिच्छी की तरह डङ्क मारने लगे । वह मृत्यु से भय नहीं खाता था, वरन् उसे खुटका तो इस्का था कि अदालत विम के अफसरों से कहीं फिर न साक्षात हो जाय । इस्के उपरान्त वह उस आश्चर्ययुक्त मनुष्य के बारे में सोचने लगा जिस्के एक २ काम उसे बेतरह हैरान किये डालते थे ।

फिर वह यह सोचने लगा कि यदि मैं शीघ्रता से दुर्ग रोज़ेन्थेल की ओर दौड़ूँ तो आशा तो है कि शीघ्रही वहाँ पहुँच जाऊँगा, और फिर वहाँ पहुँचने पर किसी प्रकार का भय मुझे नहीं है ।

परन्तु साथही फिर उसे यह भी ध्यान आया कि बेरेन रोज़ेन्थेल के नाम जो सिफारसी चिठ्ठियाँ मैं लाया हूं वह तो सरायही में पड़ी हुई हैं, फिर भला बिना उनके मैं वहां जाही के क्या करूंगा ।

इस ध्यान पर उस्के चित्त ने अभी किसी प्रकार का फैसला न किया था कि सहसा इस्के कानों में टापों की आवाजें आने लगीं, और कुछही देर के उपरान्त वही रहस्यमय व्यक्ति इसके सामने आ खड़ा हुवा ।

रहस्यमय व्यक्ति स्वयं तो एक बड़े कद के काले घोड़े पर सवार था, और हेमेल के घोड़े की लगाम वह अपने हाथ में लिये था।

शकल—सवार हो जाओ !

हेमेल ने बड़ीही प्रसन्नता से उस्की आज्ञा मानली; परन्तु जब उसने घोड़े की ज़ीन और उस्के दोनो ओर के खानों में दृष्टि दौड़ाई तो यह देख के उसे बड़ाही आश्चर्य हुवा कि काली शकल, उस्की कोई वस्तु भी सराय में नहीं छोड़ आया था।

चार्ल्स—आवश्यकीय कागज, चिठ्ठियां, छोटा बेग कुछ भी तो आपने नहीं छोड़ा।

शकल—(ला-परवाही से) भली भांति फिर से देख लीजिये कोई वस्तु छूटी तो नहीं है।

चार्ल्स—परन्तु मुझ पर इतना तो प्रगट होने दीजिये, कि जो उदारचरित महाशय मेरी इतनी सहायता कर रहे हैं उनका नाम क्या है ? जिसमें उसी नाम से मैं उनको धन्यवाद तो दे सकूं।

श०—(गंभीरता से) मैं फिर मिलूंगा और उस समय सब कुछ बता दूंगा।

चार्ल्स—(बहुतही हैरान होकर) फिर मिलेंगे ? परन्तु यह मिलाप होगा कहां ?

श०—दुर्ग रोजेन्थेल में ! आप वहीं जातेही है यह राह तीर की तरह सीधी दुर्ग के द्वार पर पहुँचती है। अब किसी अन्य दुर्घटना से आप निश्चिन्त रहिये, क्योंकि आप का बचाव एक बड़ेही उत्तम रूप से किया गया है (ज़ोर से हँसकर) यद्यपि आपको यह नहीं मालूम पर मैं यह बताये देता हूं कि आज के सातवें दिन दुर्ग रोज़ेन्थेल में एक बड़ा भारी उत्सव होने वाला है, और उसी में मैं भी आऊंगा।

यह कहकर उस शकल ने अपने लम्बे चौड़े काले घोड़े की लगाम मोड़ी और वह निरालाकार और बलिष्ट जानवर आंधी की तरह रास्ते पर उड़ता हुवा जाने लगा, और देखते २ घोड़ा तथा सवार दोनों ही चार्ल्स के नेत्रों के सामने से लोप हो गये।

तीसरा बयान।

दुर्ग रोज़ेन्थेल।

घमण्डी बेरेन रोज़ेन्थेल का अधिकार, दुर्ग रोज़ेन्थेल पर, कुछ उन्हीं के समय से नहीं बरन् उनके पुरखों से चला आता था। यह दुर्ग, नगर विटेनबर्ग के समीपही एक ऊंची जमीन पर बना था।

दुर्ग रोज़ेन्थेल उन्हीं पुरानी इमारतों में से एक था जिनके खंडर और दूर तक के फैले हुये ईंट पत्थर आज पर्यन्त जरमनी के पहाड़ों पर पाये जाते हैं।

इस दुर्ग रोजेन्थल का घेरा लगभग एक चौथाई मील के था, और दुर्ग की दीवारों के भीतर ही भीतर एक छोटा परन्तु भरा पुरा कसबा आबाद था। यथार्थ में इस दुर्ग की रक्षा के निमित्त भी जो आवश्यकीय वस्तुयें होनी चाहियें वह सब उसमें उपस्थित थीं। इसमें अनाज के इतने गाड़, (खजाने) हथियार, तथा मनुष्य थे, कि यदि बैरी एक वर्ष पर्यन्त लगातार दुर्ग को घेरे रहता, और चारों ओर से रसद पहुँचने के द्वार बन्द कर देता, तो भी एक सहस्र मनुष्य बिना किसी आपत्ति के इसमें रह कर उनका जवाब दे सक्ते थे।

उस समय एक घमण्डी और बली बेरेन, (राजा) दुर्ग रोजेन्थेल का अधिकारी था। इस्का राज्य बहुत दूर लों फैला हुवा था, और उस्की प्रजा भी कुछ कम न थी। खज़ाने इस्के, हर समय रुपयों अशरफियों से भरे रहते, और इस्की प्रतिष्ठा और अधिकार ऐसे बढ़े चढ़े थे कि उस्की बेटी थेरिज़ा की मगँनी, राजकुमार आर्कडिउक लिउपोल्ड के साथ जब वह बच्चाही था तो हो गई थी।

परन्तु एक कारण ऐसा भी था कि जिस्से बेरेन रोज़ेन्थेल को हर समय एक खटका सा लगा रहता था, और वह यह, कि उस्के बलिष्ट पड़ोसी, लिंसडोर्फ के कौण्ट (नवाब) मेनफ्रेड से उस्से एक गहिरी अदावत हो गई थी।

कारण इस शत्रुता का यह कहाजाता था कि कौण्ट मेनफ्रेड ने, बेरेन रोज़ेन्थेल से, थेरिज़ा से अपने व्याह के निमित्त कहलाया था। परन्तु प्रथम तो कौण्ट मेनफ्रेड पचास वर्ष का बूढ़ा और अपनी प्रजा में अपने अत्याचारों के हाथों बहुत कुछ बदनाम हो चुका था, दूसरे, लेडी थेरिज़ा की, मँगनी जरमनी के राजकुमार, आर्कडिउक ल्युपोल्ड के साथ भी हो चुकी थी, इसलिये बेरेन रोज़ेन्थेल ने इस मँगनी को अस्वीकार करदिया, बस उसी समय से (अर्थात् दोवर्ष हमारे इस उपन्यास के प्रारम्भ के पहले से) कौण्ट ने अपने दिल में बेरेन की ओर से शत्रुता का बीज बो लिया था।

इस्के उपरान्त, दोनों राज्यों की प्रजा में भी परस्पर मारधाड़ चल पड़ी, एक ने दूसरे को लूटना प्रारम्भ किया, अन्त यह बैर यहां लों बढ़ा कि आये दिन अब इधर बेरेन को यह खटका लगा रहता, कि कौण्ट की फौजें चढ़ाई के लिये आती होंगी और उधर कौण्ट यह सोचता कि बेरेन अपने दलबादल सहित पहुँचा दाखिल है।

बेरेन रोज़ेन्थेल की स्त्री उसी समय चल बसी थी, जब प्यारी थेरिज़ा अभी बिलकुलही बच्चा थी। इस्के उपरान्त उसने अपना दूसरा व्याह नहीं किया। वह अपनी बेटी को हृदय से चाहता था, और यही ध्यान उसे व्याह करने से रोकता था, कि जब हमारी स्त्री आयेगी तो फिर हमारी पूरी जायदाद थेरिज़ा के हाथ न आ सकेगी इस्में उस्का हिस्सा भी कुछ अवश्यही होगा।

इस्के पहले कि हम अपना उपन्यास आगे बढ़ायें यहां यह लिखदेना आवश्यक समझते हैं कि यद्यपि थेरिज़ा की मँगनी डिउक लिउपोल्ड के साथ बचपनही में हो चुकी थी परन्तु आजलों, उन्होंने एक दूसरे की सूरत न देखी थी, और बेरेन रोज़ेन्थेल ने भी अपने दामाद को जभी देखा था कि जब उस्का वयस अभी केवल छ सातही वर्ष का रहा होगा।

ससुर दामाद, पति पत्नी, की यह अवस्था थी जब हमारा यह उपन्यास प्रारम्भ होता है।

अब हम अपने पाठकगण से यह निवेदन करते हैं कि वह यह समझलें कि प्यारी थेरिज़ा दुर्ग रोज़ेन्थेल के एक बड़ेही सजे सजाये कमरे में बैठी है।

उसी के निकटही उसकी प्यारी सहेलियां एडा और मेरिया बैठी ऊन का कोई उत्तम काम काढ़ रही हैं।

थेरिज़ा वास्तव में एक अनुपम सुन्दरी थी। उसका कद लम्बा (बहुत लम्बा भी नहीं) हलका, सांचे का सा ढला हुआ और बड़ाही सुडौल था; उसकी कुरती उस्के उभरी हुये गुलाबी सीने और मुलायम शरीर पर, बड़ीही चुस्त बैठा करती थी, उसकी कमर में उन दिनों के रीत्यनुसार एक स्याह छोटा कमरबन्द बंधा हुआ था, और कमरबन्द से लेकर पैरों पर्यन्त जो बहुमूल्य जूते और रंगीन मोजों में छिपे थे एक चुस्त साया अपनी बहार दिखा रहा था। जब वह चलती तो उसके पैरों का शब्द ठीक वैसाही मुलायम २ सुन पड़ता कि जैसे कोई फूल की पँखड़ियों पर अपनी राह बनाये चला जा रहा हो। और जिस समय वह * नाचने उठती उस समय उसका शरीर उस गुलाब की पँखड़ी

* यद्यपि कुलीन घराने की बाला का नाचना बहुतही निन्दनीय है, परन्तु उस देश की तो यह प्रथाही है इस लिये तर्जुमा करती समय मैं इसे निकाल नहीं सकता क्योंकि जबलों उस देश का पूरा २ रीति व्यौहार मैं न लिखूंगा, तब तक मेरे उपन्यास में वह आनन्द आही नहीं सक्ता, इसलिये लाचारी है। (अनुवादक)

की तरह इधर उधर फिरता दिखाई देता जो किसी ऊंचे स्थान से वायु के झोकों में छोड़ दी गई हो। या यह एक वह परी मालूम होती थी जो वायु में अठखेलियां करती चली जाती हो।

उसके सुनहले और नर्म २ बालों की कुछ लटें तो सामने छूटी रहतीं और बाकी एकत्रित करके पीछे की ओर बांध दी जातीं थीं।

इसके चेहरे का रंग गुलाब के फूल का सा था, इसके ऊंचे और देदीप्यमान ललाट में कान्ति बुद्धिमत्ता और गंभीरता झलकती थी, उसकी आंखें नीली और चमकदार थीं, हाँ ऐसी चमकदार मानों सूर्य चन्द्र और सितारों के प्रकाश ने उन्हीं में घर कर लिया था, नाक बड़ीही सीधी, गुलाबी गाल चांद के टुकड़े जान पड़ते थे होंठ ऐसे लाल थे कि लाले-बदखशां को भी मात करते थे, इसके ऊपर के होंठ छोटे थे जो चेहरे पर एक प्रकार का घमण्ड झलका रहे थे । दाँतों की लड़ियां मोतियों की तरह चमकदार और सुफेद थीं, इसके अतिरिक्त छोटा सा चिबुक इस सुन्दरता को और भी विलक्षण कर रहा था।

एडा तथा मेरिया की भी माधुरी मूरत देखनेही योग्य थी, परन्तु राजकुमारी के मुखचन्द्र के सामने उनका सौन्दर्य चमकते हुये नक्षत्रों से विशेष न जँचता था। दोनों का वयस सत्रह तथा उन्नीस के बीचों बीच था। स्वभाव की दोनोंही बड़ी सरल थीं। और अपनी प्यारी सखी के सुख से सदाही सुखी रहा करती थीं!

ऐडा का गेहुवां रंग था, इसके बाल साफ और काले थे। इसके नेत्र भी काले, और बड़े २ थे। इसका शरीर सुडौल था। मेरिया, अपनी राजकुमारी की तरह सुन्दर थी बाल हलके मुलायम, नेत्र नीले २ और शरीर दुबला पतला, वयस कदाच सत्रह वर्ष का होगा।

यह तीनों क्वारियां उसी बड़े कमरे में बैठी हुई थीं जिसका उल्लेख अभी हमने ऊपर किया है। समय दोपहर का था; सूर्य देव की चमकती किरनें खिड़की के लगे शीशों से छन २ के कोठरी के साफ और मुलायम फर्श पर पड़ रही थीं।

दोनों देर तक अपने २ काम में लगी थीं और थेरिज़ा भी चुप चाप बैठी कुछ सोचती रही अन्त जब उसने देखा कि दोनों ने दम लेने के लिये अपने २ काम को रख दिया तो इसने पूछा, "भला कहो तो उस मेहमान के बारे में, जो हमारे यहां आया है, तुम्हारा क्या विचार है?"

एडा—मैंने भोजन करती समय जब उसका चेहरा देखा था तो मुझे वह पीला जान पड़ा, कदाच इसका कारण राह का कष्ट और थकावट हो।

थेरि०—ऐसा जान पड़ता है कि रात को केम्बर्ग के कसबे में उसे कोई भारी कष्ट मिला है। परन्तु क्या कष्ट मिला, यह वह नहीं प्रगट करता। हुआ कुछ न कुछ अवश्य ही है।

ऐडा—बूढ़ा चौकीदार फ्रिज़, कहता था कि जब उस मनुष्य ने रात तीन बजे आकर द्वार खोलने के लिये बिगुल बजाया, तो वह मुर्दों की तरह सुफेद हो रहा था, उस्के चेहरे से प्रतीत होता था कि वह बड़ाही भयभीत था।

मेरिया—हमारी जान तो वह सनोबर के वन में से आती समय अन्धकार में, भय खा गया होगा।

ऐडा—क्या आप कृपाकर मुझे यह बता सक्ती हैं कि यह हेमेल महाशय किस श्रेणी के मनुष्य हैं?

थे०—उस्के घराने का हाल तो मेरे पिता को भी नहीं मालूम है। हां जो कुछ वे उस्के बारे में जानते हैं वह केवल एक पत्र से; जिसे हेमेल, शाहंशाह के मन्त्री के पास से ले आये हैं, उस्में लिखा है "इस व्यक्ति, अर्थात् चार्ल्स हेमेल की भली प्रकार मान मर्यादा करो, जहां उस्की इच्छा हो, जाने तथा रहने दो इस्की मेहमानी में खबरदार कोई बात उठा न रक्खी जावे—यह एक बड़ेही कुलीन घराने का मणि है और चित्तविनोदार्थ न अकेलाही भ्रमण को निकला है"

एडा—तो आप के पिता ने भी इसकी मेहमानी में कोई कसर बाकी न रक्खी होगी।

थेरिज़ा—यह तो उनका कर्तव्यही था [मुस्कराकर] परन्तु तुम्हें उनका वृत्तान्त जानने की इतनी क्यों गुद् गुदी हो रही है, एडा? कहीं अपना चित्त तो उसे नहीं दे बैठीं?

एडा—(गंभीरता से) नहीं राजकुमारी! मैं प्रेम से बड़ाही भय खाती हूं। कारण यह कि मरदों की बात का कोई विश्वास नहीं।

थेरिज़ा—(दुखित होकर) वास्तव में ऐसाही है! तुम दोनों को भली भांति मालूम है कि किस्की प्रतिमा को मैंने अपने हृदय के सिंहासन पर स्थान दिया है किसके रंग में मैं रंग चुकी हूं, वही बेचारा विद्यार्थी जिसे अबलों में हृदय से चाहती हूं।

एडा—आह प्यारी, क्या उसने अपने को अयोग्य तथा अप्रतिष्ठित प्रमाणित नहीं कर दिया ? फिर उसका प्रेम कैसा ?

थेरिज़ा—मैं इतना शीघ्र इसका विश्वास नहीं कर सकती । क्योंकि अभी इन्हीं छ महीनों से मुझ से उससे साक्षात नहीं हुई । लोग तो कहते हैं कि वह मर गया होगा परन्तु उसका प्रेम अबलों मेरे हृदय में जीवित है । मेरे पिता ने मुझ से कहा था कि वह यहां से भाग गया और किसी अन्य देश में जाकर किसी नीच कुल की स्त्री से उसने व्याह कर लिया है इसबात पर कदाच तुम दोनों ने विश्वास भी कर लिया होगा ।

एडा—कारण यह कि वह कहाही एक ऐसे व्यक्ति के मुँह से गया था कि जिसे सुन कर अवश्यही विश्वास हो जाये ।

थे०—परन्तु मैंही एक ऐसी हूं कि जिसने इस्बात पर विश्वास नहीं किया । ईश्वर !—मैं अपने पिताही पर संदेह कर रही हूं इसलिये मुझे क्षमा करना । क्या जाने क्यों मेरे चित्त में ऐसा होता है कि "अबलों वह जीवित है और मुझे चाहता है" मैं कदापि धोखे में नहीं हूं । परन्तु—हे इश्वर, मुझे इस्की सचाई न जाने कब मालूम होगी ? । तुम दोनों को स्मरण होगा कि जब किसी ने आकर ये समाचार पहुँचाये थे, कि फोस्ट कुछ भयानक अपराधों के बदले फांसी पर लटकाया जायगा और छः मास पर्यन्त वह विटेनबर्ग के बन्दीखाने में कैद भी रहा है । हाय ! वह मनहूस दिन जिस्की सुबह को उस बेचारे के लिये फाँसी खड़ी की गई थी, जिसे बचाने के निमित्त मैं अपने जान पर खेल जाने पर तैयार थी ।

मे०—(प्यार से, परन्तु डरते २) तो आपको वह प्राणों से भी अधिक प्यारा है ?

थे०—सखी ! तू तो जानतीही है कि मुझे उसके साथ कैसा प्रेम है ! एक दिन मैं अपनी कोठरी में बिछौने पर लेटी उस्की तस्वीर देख रही थी—वही तस्वीर जो तेरे भाई ने एडा!—बिना राबर्ट के जाने खींची थी। मुझे उसे देख कर राबर्ट की सच्ची तस्वीर याद आती थी । उसी समय एक बड़ीही आश्चर्ययुक्त घटना हुई । मुझे क्या दिखाई दिया कि मानों फोस्ट बड़ी दूर से खड़ा मुझे देख रहा है । और उस्के आकार से एक प्रकार का क्रोध झलक रहा है—यह तमाशा क्षणेकही पर्यंत रहा और फिर लोप हो गया जिसे मैं केवल अपना अनुमानही अनुमान समझती हूं ।

एडा—(आश्चर्य से) बड़ी आश्चर्ययुक्त बात है!

मेरिया—कैसी कुछ।

थेरिज़ा—परन्तु! वह मोहनी मूरत बहुतही शीघ्र नेत्रों से छिप गई। उसी समय मेरे पिता भी मेरी कोठरी में आये और यह लोमहर्षण समाचार उन्होंने मुझे सुनाया कि फोस्ट अभी फाँसी दिया जायेगा, फाँसी उस्के लिये विटेनवर्ग के मैदान में खड़ी की जा चुकी है। आह! यह सुन्तेही मेरे शरीर में ज्वाला सी उठने लगी और मैंने बेधड़क अपने पिता को टेढ़ी सीधी सुनानी प्रारंभ की; मैंने कहा कि आपही उसकी मृत्यु के मुख्य कारण हुये हैं। इस्पर उन्होंने बड़ेही क्रोध में आकर इस बात से इनकार किया जिस्पर मैं अचेत होकर उनके चरणों पर गिर गई।

एडा—तब उन्होंने हम दोनो को बुलाया और हमने उठा के आप को पलँग पर लिटा दिया, जिस्पर आप घंटों तक बेसुध पड़ी रही थीं।

थे०—और हां उस्समय मुझे कैसी प्रसन्नता हुई थी जब मेरे आंख खोलतेही तुमने यह शुभ समाचार सुनाया कि फोस्ट न जाने कैसे कारागार से अन्तर्ध्यान हो गया।

एडा—और अबलों किसी को भी उस्के लोप हो जाने का कारण न मालूम हुवा।

मेरिया—और कुल हाकिम भी तो इसबात को छिपाते हैं।

थेरिज़ा—अनुमान दो सप्ताह के इस बात को भी तो बीते हुये परन्तु अबलों उसकी मोहनी मूरत देखने में न आई।

एडा—और सखी मैंने यह भी सुना है कि फोस्ट दिन दहाड़े विटेनवर्ग की राह हाट में घूमता हुआ दिखाई दिया है परन्तु किसी का साहस उसके पकड़ने का नहीं पड़ता।

थेरिज़ा—ईश्वर; तू उसकी सहायता कर।

तीनों सखियों में यह मीठी २ बातें घुल घुल कर होही रही थीं कि सहसा एक ऐसी घटना हुई कि जिस्से तीनों का हृदय कांप गया।

चौथा बयान।

आक्रमण।

थेरिज़ा और उसकी दोनों सहेलियों की बातें एक हथियारबन्द जवान के आने से रुक गईं।

हथियारवन्द—राजकुमारी ! मुझे यों बे-धड़क चले आने पर क्षमा करना; मैं एक बड़ाही शोचनीय समाचार लाया हूँ।

यह सुन्तेही थेरिज़ा अपने स्थान से उठ बैठी और अपने पिता की फौज के सेनापति का घबराया हुआ चेहरा देख कर यह स्वयं भी घबराहट से पूछने लगी। "क्यों डेविज़, कुशल तो है ?"

सेना—आपको शीघ्रही महल के निचले भाग में चले जाना चाहिये कारण यह कि थोड़ी ही देर में दुर्ग की दीवारों पर से कड़ी लड़ाई होगी। आश्चर्य नहीं कि कोई गोला बैरी का इस कोठरी तक भी चला आये।

थेरिज़ा—(घबड़ाकर) बैरी ?

सेना—हां, भय न खाइये ! आज घमण्डी लैंसडार्फ का कौन्ट एक बड़ी सेना लिये बढ़ता चला आता है, इसलिये आप लोग निचले भाग में जा बैठिये, वह स्थान सुरक्षित है।

थेरिज़ा—(बूढ़े सेनापति की बाँह पकड़ कर) और मेरे पिता ?

सेना—वे फसील पर से बैरी का सामना करने की तैयारी में लगे हुये हैं। उन्हीं ने तो मुझे यह समाचार देकर भेजा है। हेमेल महाशय भी उन्हीं के साथ हैं और कदाच वे भी इस लड़ाई में हम लोगों का साथ देंगे।

यह कहकर सेनापति ने राजकुमारी को सलाम किया और शीघ्रता से कोठरी के बाहर हो गया। उस्की लम्बी तलवार सीढ़ियों पर ज़ोर से टकरा उठी जिसे सुन के तीनों सुकुमारियों का हृदय काँप उठा।

थेरिज़ा भी फिर उस कोठरी में एक क्षण न ठहरी, तुरन्त नीचे उतर गई।

इतनीही देर में कौन्ट लेन्सडार्फ की ओर का, एक सवार बरछी पर सुफेद झण्डी उड़ाता दूर से आता दिखाई दिया और कुछही देर में दुर्ग रोज़ेन्थेल के द्वार पर आ खड़ा हुवा और किसी अफसर से बात चीत करने की उसने इच्छा प्रगट की।

यह सुन्तेही बेरेन रोज़ेन्थेल चार्ल्स के साथ, उस बुर्ज पर, जो द्वार के निकट था आ खड़े हुये और सवार से तेज़ आवाज़ में पूछा कि तुम क्या कहना चाहते हो।

स०—मैं श्रीमान् कौन्ट लिन्सडोर्फ की ओर से यह समाचार लाया हूं कि एक व्यक्ति जिस्का नाम चार्ल्स हेमेल है और तुम्हारे पास आया है उसे शीघ्रही हमारे साथ कर दो, इस्के लेजाने के बहुत से कारण हैं, जिन्हें मैं इस्समय प्रगट नहीं किया चाहता।

वेरेन - तेरे सरदार का, चार्ल्स ने चाहे कुछही अपराध क्यों न किया हो, परन्तु इस समय तो वह मेरे मेहमान हैं, और मरतेदम तक उनकी रक्षा करना हमारा धर्म है इसलिये मैं उन्हें कदापि तेरे साथ नहीं कर सक्ता, जा यही अपने स्वामी से कह दीजिये।

स०—तो मैं ललकार के कहता हूं कि आप लड़ाई के लिये तैयार हो जाँय।

यह कहकर उसने अपने दाहिने हाथ से लोहे का दस्ताना उतारकर जोर से किले की दीवार पर फेंका जिसे तुरन्त वेरेन रोज़ेन्थेल ने उठालिया और कहा "मैं समर स्वीकार करता हूँ"।

चार्ल्स—(वेरेन से) मान्यवर ! मेरी ऐसी इच्छा नहीं है कि केवल मेरेही लिये इतने मनुष्य और उनकी प्यारी जानें नष्ट हों; परन्तु साथही मैं यह भी आपसे शपथ-पूर्वक कहता हूं कि आज पर्यन्त मुझे कभी भी कौन्ट के साक्षात का अवसर नहीं मिला, फिर न जाने क्यों मुझ से वह इतने क्रुद्ध हैं। यदि मैं आपका—"

वेरेन—(बात काट कर) मैं इन बातों का धन्यवाद देता हूं। परन्तु आप मेरे मेहमान हैं और आपकी रक्षा करना मेरा धर्म है। इसके अतिरिक्त आप देश के बड़े २ हाकिमों के नाम चिट्ठियाँ लाये हैं और मेरे लिये भी एक अतिरिक्त पत्र। इसलिये मैं भी भली भांति आप पर विदित कर दूंगा कि मेहमानदारी किसका नाम है। और मुझे आशा है कि आप भी इस समर में मेरी सहायता करेंगे।

चार्लस०—(तलवार के कब्ज़े पर हाथ रख कर) मरते दम पर्यन्त, और महाशय, आप विश्वास रखियेगा कि इस वीरता का ऐसा बदला मैं—"

वेरेन युवक की बातें सुनने के लिये वहां न ठहरे और फसील पर आकर एक रण देखे हुये सिपाही की भांति अपने मातहतों को आज्ञा देने लगे।

वेरेन; एक लम्बा चौड़ा तथा हृष्ट पुष्ट मनुष्य था। उस्का वयस लगभग पचास वर्ष के था। उस्के चेहरे से वीरता झलकती थी, और इसलिये कि वह स्वयं एक बड़ा निर्दयी पुरुष था उसे खून खराबे का कुछ भी ध्यान न था।

उस्के सिरपर इस्समय कलग़ीदार लोहे की टोपी थी, जिस्की चमकती पालिश सूर्य की किरनों में चमक रही थी। और पैर से गरदन पर्यन्त लोहे का पहिनावा पहने हुवा था जिस्पर जनेऊ की भाँति एक मोटी सोने की जंजीर लटक रही थी। इस्के कमरबन्द से लगी एक बहुत लम्बी दो धारा तलवार लटक रही थी और इस्के दाहिने हाथ में एक बहुत बड़ी कड़ाबीन थी।

बेरेन—(सेना पति से) डेविज़, अब तैयारी का क्या हाल है?

डेविज़—श्रीमान को फसीलों पर दृष्टि दौड़ातेही सब विदित हो जायगा। बीस तोपें तो मैंने बैरी की ठीक राह के सामने लगवा दीं हैं, और बाकी सब स्थान २ पर रखवा दी हैं।

बेरेन - तुम्हारे पास कितने अदमी इससमय तैयार हैं?

डेविज़—तीन सौ सात मनुष्य! हाँ एक अदमी बिटेन वर्ग के सरदार के पास श्रीमान की ओर से सहायतार्थ भेज दिया गया है और दूसरा दुर्ग रोज़ेन्थेल की प्रजा को जुटाने और हथियार बँधवाकर मैदान में लाने के लिये रवाना किया गया है।

बेरेन—बहुत ठीक; अच्छा अब यह बताओ कि बैरी की सैन्य कितनी है?

डेविज़—पहले जिस मनुष्य ने समाचार दियाथा वह तो उनकी गिनती केवल नौ सौ बतलाता था परन्तु अब एक दूसरे जासूस ने खबर पहुँचाई है कि बैरी का दल सहस्र मनुष्यों से किसी प्रकार कम नहीं है।

बेरेन—कोई चिन्ता नहीं, अन्त यह जो बादल दूरही से घहराया करते थे इन्हें बरसनाही था तो बस आजही इसका अन्त हो जाय तो अच्छा!

डेविज़—श्रीमान का अनुमान बहुतही ठीक है, और तनिक हमारे सहायक मनुष्यों को तो आ लेने दीजिये फिर देखिये मैं दुर्ग के बाहर निकलकर उनलोगों से कैसा भिड़ता हूं।

बेरेन—शाबाश! तुम्हारी हिम्मतों से ऐसीही आशा की जाती है, परन्तु वह देखो बैरियों की सैन्य आ पहुँची, झंडा दिखाई देता है।

यथार्थ में बैरी आ गये थे और उनकी पैदल फौज का एक दस्ता जङ्गल में से निकलकर सामने आता दिखलाई दिया; और कुछही मिनटों के उपरान्त उनसे दाहने यही कोई तीन हज़ार गज़ के अन्तर से तोपखाना धीरे २ आता दिखलाई दिया। और कुछही दूर आगे बढ़कर यह तोपखाना छितरा गया और अब एक बहुत बड़ा घेरा बाँधकर यह आगे चला।

पाव घण्टे के उपरान्त अब; एक सहस्र मनुष्यों की दृढ़ फौज आती दिखाई दी और इसके कुछही पीछे उसी राह से जिस्पर से तोपखाना आया था पचास या साठ जवानों का रिसाला आता दिखाई दिया।

डेविज़—वह देखिये कौन्ट स्वयं हथियार लगाये अपने (नाइटों) हथियारबन्द सवारों के बीच में आ रहा है।

पहले तो सेनापति बैरी के फौज की चाल देख रहा था और जब उसने देखा कि वे और भी निकट आगये तो उसने तुरन्त अपने आदमियों को इशारा किया।

इशारा पातेही गोलन्दाज़ों ने तोपों पर बत्तियाँ रखदीं; जिनकी घननाद से एक प्रकार का महाप्रलय सा मच गया तोपों पर धुंवे के बादल छा गये, और रंजक की चमक उस्में बिजली की तरह लपकने लगी प्रतिध्वनि की आवाज़ कोसों तक गूंज रही थी।

बेरेन—(यह देखकर कि बैरी की सैना में एक प्रकार की हलचल सी पड़ गई) हमारे गोलों ने जाकर वहाँ अच्छा काम किया।

डेविज़—(शान्त भाव से) वास्तव में हमारी तोपें अच्छी मार कर रही हैं।

अब बैरियों का दल भी शीघ्रता से तीन भागों में बँट गया और अपनीं तोपों से आग बरसाता हुवा जल्दी २ दुर्ग की ओर बढ़ने लगा।

बेरेन—(नेत्र गड़ाकर) कौन्ट ने धोखा खाया, यदि वह सामने न बढ़कर दाहिने ओर बढ़ता तो उसे कुछ आशा थी।

डेविज़—नहीं महाशय, हमारी जान तो उसने हमलोगों की सैना की कमी को जान लिया है, इसीलिये वह कुल सैन्य लिये द्वारही की ओर बढ़ता चला आता है।

बेरेन—ठीक है, अच्छा तोपखानेवालों को आज्ञा दो कि वे अपना काम और भी शीघ्रता से करें।

यह आज्ञा तुरन्तही दी गई और गोलें और भी शीघ्रता से बैरियों पर बरसने लगे। परन्तु इतनीही देर में कौन्ट की फौज ने किलें के सामने एक ऊँचे स्थान पर अपना तोपखाना जमा दिया, और वहाँ से जो बेरेन के तोपखाने पर बाढ़ मारी तो ये सब एकबेर घबरा उठे।

बेरेन—अब तो इनका तोपखाना भी पूरी आग बरसाने लगा।

बेरेन ने यह कहाही था कि एक गोला गरजता हुवा इस्से पचास गज दाहिने गिरा, जिस्से कई आदमी ढेर हो गये।

डेवि०—अब तो इनकी फौज और भी निकट आ गई। मैं अब दीवार की लगीं तोपों को भी दागने का हुकुम देता हूँ।

यह कहकर इसने उनलोगों को भी इसारा किया और अब दीवार की तोपों से भी गोले उतरने लगे।

इतनेही में वैरी के ओर से एक झुण्ड दृढ़ सिपाहियों का निकलकर सीढ़ियाँ लिये हुये दुर्ग की ओर झपटा, और देखते २ खन्दक के उस्पार तक पहुंच गया।

इस्समय दुर्ग रोज़ेन्थेल से उन सिपाहियों पर गोलों और कड़ाबीनों की गोलियों की एक अच्छी वृष्टि हुई, परन्तु उन धुन के पक्कों ने एक की भी परवाह न की और शीघ्रता से कुछ तख्ते रस्सियों से बाँधकर खन्दक में तैरा दिये और उहींपर चढ़कर इस्पार उतर आये ; इतनेही में कौन्ट के तोपखाने का एक टुकड़ा एक छोटी फौज के साथ और भी आगे बढ़ा।

अब लड़ाई बड़ीही घमसान की होने लगी, खन्दक के उस्पार पहुँचनेवाले वीरों ने तीनबार सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ने का उद्योग किया परन्तु तीनोंही बेर वे हानि के साथ पीछे हटा दिये गये।

बेरेन, हेमेल, और डेविज़ खूबही जान तोड़ २ कर अपनी सैना को लड़ा रहे थे परन्तु वैरियों की विशेषता ने इनके छक्के छुड़ा दिये, और भारी हानि तो वैरी के तोपों के गोले आकर कर रहे थे जो सामनेही एक ऊँचे स्थान से पड़ रहे थे।

अब वैरियों ने चौथी बेर फिर आक्रमण किया जिस्से बेरेन के सिपाहियों में बेतौर घबराहट फैल गई, और साथही यह समाचार किले की दीवारों की लड़ती हुई फौज के कानों में पहुँच गया कि बाँये ओर की दीवार पर वैरियों ने अधिकार कर लिया।

कुछही मिनटों के उपरान्त उपरोक्त समाचार की दृढ़ता भी हो गई, अर्थात् एक घायल सिपाही दौड़ता हुवा बेरेन के पास आया और चिल्लाकर बोला "महाशय हार गये, लिंसडोर्फ के सिपाहियों ने राजमहल पर भी आक्रमण कर दिया है"।

बेरेन—(पागलों की तरह चिल्लाकर) मेरी बच्ची, हाय उस्के बचाने के निमित्त दौड़ो!

परन्तु इस्की इस्बात को कोई न सुन सका कारण यह कि डेविज़ तो अपने छितराये हुये सिपहियों के एकत्रित करने में लग रहा था और चार्ल्स हेमेल वैरियों के उन दो झुण्डो में घिरा हुवा था जो सहसा सीढ़ी लगाकर इस्के दाहिने और बाँये ओर से किले की दीवार पर चढ़ आये थे।

कुछ विशेष रक्त के निकल जाने से हेमेल बड़ाही कमजोर हो रहा था। इसके सामनेही दो सिपाही खड़े इस्पर तलवार चला रहे थे; कुछ देर लों तो यह उसपर भी जमा उनका सामना करता रहा, पर अन्त इसके पैर लड़खड़ाये और उन सिपाहियों में से एक ने बढ़कर चाहा कि इसका सिर उतार लें कि इतने में एक नाइट (वीर) जो सिर

से पैर तक चमकती हुई ज़िरह वक्तर में छिपा हुआ था दुर्ग की दीवार पर प्रगट हुआ।

इसने आतेही अपनी चमकती हुई तलवार म्यान से बाहर निकाल कर एक बेर उन दोनों सिपाहियों की ओर, जो हेमेल का प्राण लियाही चाहते थे केवल इशारा मात्र कर दिया जिसे देखतेही दोनों बेतरह भयभीत हुये और घबराकर पीछे हटेही थे कि खन्दक में जा रहे।

अब वह वीर अपनी तलवार चमकाता हुआ शीघ्रता से किले की दीवार पर आगे बढ़ा, जिसे देखतेही वैरियों की फौज, जो दीवार पर चढ़ आई थी घबरा कर खन्दक में गिरने लगी, और इधर दुर्ग रोज़ेन्थेल के सिपाहियों में मानों फिर प्राण से आ गये, और उन लोगों ने भी जो अपने २ हथियार सँभाले तो क्षणेकही के उपरान्त फसीलें वैरियों से साफ थीं।

इस्के उपरान्त वह वीर इतने बड़े ज़िरह वक्तर के पहन रहने पर भी बड़ीही शीघ्रता से दुर्ग के दाहिने ओर की दीवारों की ओर बढ़ा जिधर वैरी अपना पूरा २ अधिकार जमाये हुये थे और वहाँ पहुँचकर यह पहिली बार थी कि उसने ललकार कर आवज़ दी "मारो"।

यह शब्द सुनतेही रोज़ेन्थेल के सिपाहियों के हृदय में मानों वीरता का समुद्र उमड़ आया और उन लोगों ने तलवारें खींच २ कर बे तरह वैरियों को काटना प्रारम्भ किया।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि उस नाइट ने किसी को छूवा तक नहीं ; केवल अपनी चमकती तलवार लिये दूर खड़ा रहा और देखते २ वैरी काट छाँट कर साफ कर दिये गये।

अब बेरेन की फौज ने समर जीत लिया।

जिससमय सूर्य भगवान अपनी स्वर्णमयी और इस्के उपरान्त रक्तमयी किरणों से पृथ्वी को रँगते अस्ताचल को सिधारे उससमय दुर्ग रोज़ेन्थेल में वैरियों का एक भी जीवित सिपाही न था।

परन्तु खेद का विषय है कि इस समर में बेरेन, की भी एक बड़ी भारी हानि हुई।

वैरियों के थोड़े से झुण्ड ने राजमहल पर जब आक्रमण किया था और उस्पर अधिकार भी पा गये थे तो उस्में का और माल अस्बाब लूटने के साथही साथ बेरेन रोज़ेन्थेल की इकलौती बेटी थेरिज़ा को भी वे उड़ा ले गये थे।

अब सबका ध्यान उस नाइट की ओर भी गया जिस्के आने से इस समर के रङ्ग ने पलटा खाया था, परन्तु उसका कहीं दुर्ग में निशान भी न था, और न कोई यहही

जानता था कि वह कौन था ! कहाँ से आया था ! और अब कहाँ चला गया !—लोग उस्के बारे में अनेकानेक प्रकार के विचित्र अनुमान दौड़ा रहे थे ।
हां—केवल चार्ल्स हेमेल का ध्यान एक दूसरे ओर जा रहा था, परन्तु जब वह कुछ कहने लगता तो न जाने कौन उस्का मुंह बन्द सा कर देता ! परन्तु मनही मन वह यह अनुमान करने से भी न चूकता कि जिस व्यक्ति ने मुझे अदालत विम के भयानक पंजे से छुटकारा दिलाया था कदाच यह वही व्यक्ति न हो ।

अभी वह यह सब सोचही रहा था कि सहसा एक व्यक्ति इसे, डेविज़ तथा अन्य अफसरों को सभा में लिवा जाने के लिये आया जिसे बेरेन अपनी बेटी के छुटकारा के निमित्त किया चाहता था ।

पाँचवाँ बयान ।

चार्ल्स हेमेल और सेनापति डेविज़ ।

बेरेन—(जब सभा बैठ चुकी) मेर प्यारे मित्रों और वफादार भाइयों ! इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इस आपत्ति का मुख्य कारण पाजी और घमण्डी कौन्ट लिसडोर्फ है । कारण यह कि एडा जो मेरे लड़की की प्रीय सहेली है कहती है, कि मेरे सामने कौन्ट के छः सिपाही भीतर घुस आये और पहले तो वे हम तीनोंही को बाहर ले गये परन्तु इस्के उपरान्त उन्होंने केवल थेरिज़ा को तो ले लिया और हमें छोड़दिया। आपलोगों को स्मरण होगा कि एकबार उसने, मुझ से थेरिज़ा से अपने व्याह के लिये कहा था, परन्तु मैंने उसे साफ जवाब दे दिया, बस यही कारण है कि समय पाकर वह उस अनुपम माण को लूट ले गया जो यथार्थ में एक राजकुमार का धन था ।

डेविज़—श्रीमान् ! प्रातः काल नगर के हाकिमों ने दो सौ सिपाहियों के देने की प्रतिज्ञा की है । और चारों ओर से आप की प्रजा भी एकत्रित होती जाती है जिस्से आशा कैसा निश्चय है कि कल सुबह तक बारह सौ हथियार बन्द जवान आपके झण्डे के नीचे हो जायँगे। बस यदि श्रीमान् उचित समझें तो इस सेना के साथ मुझे भी जाने की आज्ञा दें और मैं जाकर या तो राजकुमारी को छुड़ा लाऊंगा और या अपने प्राणही दे आऊंगा ।

[बे]रेन—और जो इतनी देर में वह पाजी मेरी बेटी से जबरदस्ती व्याह कर ले तब ?

हेमेल—क्या उसे यह नहीं मालूम कि थेरिज़ा की मँगनी शाहंशाह जरमनी के चिरंजीव के साथ हो चुकी है ?

वेरेन—यह तो उसे अच्छी तरह मालूम है, परन्तु वह अपने सामने जब किसी को कुछ समझे तब ना—किसी रहस्यमय कारण से उसके अधिकार बहुतही बढ़े चढ़े हैं और बड़े २ सामर्थी लोग उसके मित्र हैं, इसी कारण वह प्रायः डींगं हाँका करता है कि आज दिन शाहंशाह जरमनी भी उसके सामने कोई वस्तु नहीं है।

हेमेल—(घृणायुक्त मुस्कान से) तुच्छ व्यक्ति और इतना घमण्ड! (फिर कुछ सोचकर) यह जितना कष्ट आपको हुवा केवल मेरेही कारण, अब मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं स्वयं उस पाजी के पास उपस्थित हो जाऊं।

वेरेन—युवक, आप व्यर्थही अपने प्राण के पीछे पड़े हैं, जाने आने के स्थान कृपाकर यह बताइये कि आप से और उससे कहाँ से वैर उत्पन्न हुवा है।

हेमेल—मैं जहाँ लों सोचता हूं मुझे इसके अतिरिक्त और कोई बात जान नहीं पड़ती कि कस्बे केम्बेर्ग में एक पादड़ी से उसके बारे में मैंने कुछ बातचीत की थी कदाच् वही उसके कानों तक पहुँची हो जिससे उसे क्रोध आया हो।

इसके उपरान्त ही उसे ध्यान आया कि कदाच अदालत विम से कौन्ट कोई संबंध रखता हो, परन्तु यह विचार वह अपना लोगों के सामने प्रगट न कर सकता था।

वेरेन—मैं समझ गया! यथार्थ में वह मेरी लड़की को ले जाने का कोई समय ढूँढ़ता था। जब उसने देखा कि मेरे यहां मेहमान आया है और मैं मेहमान को कदापि न दूंगा तो इसी बहाने से उसने लड़ाई खड़ी की और उसे ले गया।

डेविज़—श्रीमान अब चाहे कुछ ही क्यों न हो परन्तु अब तो लोहे को लोहे ही से उत्तर देना चाहिये।

वेरेन—(जोर से टेबुल पर हाथ पटक कर) तो ईश्वर की सौगन्ध डेविज़ अब तो यह गुँथी हुई; तलवार ही कुछ अच्छी तरह सुलझावेगी। जैसा तुमने कहा है वैसाही कर दिखाओ, कल प्रातःकाल वैरी पर चढ़ दौड़ो, मैं भी थेरिजा के छुड़ाने के लिये तुम्हारे साथही साथ रहूंगा।

इतना कह कर वेरेन उठ खड़ा हुआ और सभा भङ्ग हुई।

सन्ध्या समय खा पी कर सब लोग प्रातःकाल की लड़ाई की तैयारियां करने लगे। और इसी समय सेनापति डेविज़ अपने कामों से एक आध घण्टे के लिये निश्चिन्त हो

कर चार्ल्स को साथ लिये दुर्ग की फसील पर टहलने लगा क्योंकि चार्ल्स की वीरता देख कर डेविज़ उसे बहुत ही प्यार की दृष्टि से देखने लगा था।

चार्ल्स—आपकी जान प्रातःकाल की लड़ाई का क्या परिणाम होगा?

डेविज़—मुझे तो पूरी २ आशा है, यदि हमारे सिपाही मुस्तैद रहे तो सन्ध्या से पहले दुर्ग रोज़ेन्थेल का लाल झण्डा आप दुर्ग लिंसडोर्फ पर उड़ता हुआ देखेंगें।

चार्ल्स—क्या दुर्ग लिंसडोर्फ भी जङ्गी सामानों से लैस और दृढ़ है?

डेविज़—हां है तो अच्छा परन्तु दो चार स्थान से कमजोर भी है, और फिर इसके अतिरिक्त उसके निकट ही वन भी है जिसकी आड़ पकड़के हम बहुत कुछ कर सकते हैं।

चार्ल्स—यह दुर्ग है किस ओर?

डेविज़—केम्बर्ग से छः मील पूरव उत्तर के बीचों बीच।

यह सुनतेही उसने अपने पर की बीती सब बातें याद कीं और घबराहट से पूछने लगा "हाँ तो उसके अतिरिक्त और भी कोई दुर्ग उसके चारों ओर कहीं है?"

डे०—कोई नहीं।

चा०—(और भी घबरा कर) तो क्या उसके बड़े द्वार पर एक गोल, और बहुतही दृढ़ बुर्ज बना है जिसपर दुर्ग का झण्डा उड़ा करता है?

डे०—बहुत ठीक! कदाच आपने उस दुर्ग को देखा होगा!

इसपर चार्ल्स ने कोई उत्तर न दिया वरन् वह यह सोचने लगा कि अदालत विम् निश्चय कौन्ट के दुर्ग के भीतरही है, और यही एक मुख्य कारण है कि जिस्से मुझपर कौन्ट रुष्ट होकर अपनी सेना लिये चढ़ दौड़ा था, परन्तु इतना जानने पर भी उसका साहस सेनापति से कुछ कहने का न पड़ा क्योंकि उसे यह ध्यान था कि कहीं सेनापति भी उसी अदालत का मेम्बर न हो और इसके अतिरिक्त कहीं कोई अन्य व्यक्ति न सुन ले, इसी ध्यान से वह चुपका हो रहा और फिर कुछ देर के उपरान्त कहने लगा "क्यों कौन्ट के बारे में कई विचित्र बातें भी विख्यात हैं"?

सेना—(जोर से) ईश्वर की सौगन्ध मैंने भी इस प्रकार की बहुत सी बातें सुनी हैं, और मैं तो उसे तब से जानता हूं, जब से वह फौज में एक छोटा सा अफसर था, इस बात को भी कितने ही वर्ष बीते।

चार०—कितने वर्ष?

सेना—कोई अट्ठारह या बीस वर्ष। स्वर्गवासी लिंसडेर्फ के अधिकारी के दो पुत्र थे एक तो सिगिसमंड और दूसरा यही मेनफ्रेड। सिगिसमंड एक बड़ाही दयालु धार्मिक और सुयोग्य व्यक्ति था और यह मेनफ्रेड बचपन ही से इतना पाजी और बदमाश था कि इसके पिता ने इसकी कुचालों से दुखी होकर इसे घर से निकाल बाहर किया। यद्यपि इसके निकाले जाने का मुख्य कारण तो किसी को मालूम नहीं परन्तु लोगों का कथन है कि उसने अपने पिता और बड़े भाई को विष देने की तदबीर की थी परन्तु वह प्रगट हो गई, और इसी लिये यह मकान से निकाल दिया गया। जब यह घर से निकला तो इसका वयस बीस वर्ष का था और उसने जाकर शाही फौज में नौकरी कर ली। हम और वह बराबर ही के ओहदे पर थे परन्तु मेरी उसकी बराबरी कैसी? मैं एक सीधा साधा सिपाही और वह एक बड़ेही काट फाँस का धूर्त।

अभी मेनफ्रेड को नौकरी करते कोई चारही वर्ष बीते होंगे कि उसके पिता ने स्वर्गवास किया और उनके स्थान पर इसका बड़ा भाई कौन्ट सिगिसमेन्ड राज्याधिकारी हुआ। राज्य पाने पर उसने एक बड़ीही स्वरूपवान स्त्री से व्याह कर लिया जिस से एक पुत्री भी उत्पन्न हुई और दोनों, अर्थात् पतिपत्नी बड़ेही सुख से जीवन निर्वाह करने लगे। परन्तु महाशय चार्ल्स! इसके उपरान्त यह कहानी बड़ीही दुखःमय है, यदि आप कहें तो इसे मैं यहीं से छोड़ दूं।

चार्लस—मैं आप से निवेदन करता हूं कि कृपा कर इसे पूरीही कर दीजिये मुझे बड़ाही कौतुक इसके सुने से हो रहा है।

डेविज़—मैंने अभी २ आप से कहा है कि वे दोनों बड़ेही आनन्द से अपना समय व्यतीत करते थे, और उनके यहां एक बालिका भी उत्पन्न हो गई थी परन्तु खेद का विषय है कि यह आनन्द स्थायी न था। एक दिवस सिगेसमेंड आखेट करने गया और आखेट का पीछा करने में अपने साथियों से पृथक् हो गया और कुछही घण्टों के उपरान्त लिंसडोर्फ दुर्ग से दो कोस के अन्तर पर उसका मुर्दा पाया गया।

चार—और फिर मारनेवाले न पकड़े गये?

यह सुन कर डेविज़ कुछ देर तो सन्नाटे में रहा फिर बहुतही धीरे से बोला, "रस्सी और खञ्जर उसके शरीर में खोंसे हुये थे।"

यह सुनकर हेमेल भी काँप उठा और फिर बोला, "हे भगवान ! फिर भला मृतक की स्त्री और उसकी बच्ची की क्या दशा हुई होगी।"

डेविज़—ऐसा सुना जाता है कि इसी मेनफ्रेड के अत्याचारों के भय से पहले तो उस्की स्त्री ने अपनी बालिका को मारा और फिर स्वयं आत्महत्या कर ली।

चार्ल्स—(बड़ेही दुःख से) मैं समझ गया ! उसने अपनी पुत्री को जीवित छोड़ना उचित न समझा।

डेविज़—ऐसा सुने में आता है कि दो जनाज़े [रथी] एक साथही निकालें गये, एक तो कौन्ट सिगेसमेण्ड का और दूसरा उसकी स्त्री और उसकी बच्ची का; इसके उपरान्त लग भग सोलह वर्ष से वह अपने भाई की कुल जायदाद का अधिकारी है। परन्तु चार्ल्स हमें ऐसी ला-परवाही से अपना समय न नष्ट करना चाहिये, वरन चलके पहरा चौकी देखना चाहिये कि कौन कहां और किस अवस्था में है।

यह कह कर और सलाम बन्दगी के उपरान्त डेविज़ तो एक ओर चल दिया और चार्ल्स राजमहल के उस ओर फिरा जिधर इस्को रहने का स्थान दिया गया था।

अभी यह कुछही दूर आगे बढ़ा होगा कि सहसा इस्के कानो में किसी स्त्री के रोने का कन्ठस्वर सुन पड़ा। यह सुन्तेही वह खड़ा हो गया और इधर उधर देखनें लगा तो उसे दाहिने हाथ पर एक अधखुला फाटक दिखलाई दिया जिसमें से प्रकाश बाहर आ रहा था।

यह देख कर वह फिर अपनी राह लगने पर था कि सहसा फिर वैसीही रोने की आवाज़ और उसी फाटक के भीतर से आई, जिसपर वह उस दुःखनी के सहायतार्थ, फाटक खोल कर भीतर घुस गया, अब भीतर आकर इसने अपने को दुर्ग के एक छोटे गिरजे में पाया।

गिरजे के दूसरे कोने पर दो मोमबत्तियाँ टिम टिमा रही थीं जिनके बीच में हेमेल ने एक स्त्री को घुटना टेके ईश्वर की बन्दना करते पया।

स्त्री हेमेल की ओर पीठ किये रो २ कर प्रार्थना कर रही थी जिसे भली प्रकार सुने के लिये हेमेल और उस्के पास चला गया।

स्त्री—(मृदु सम्भाषण में जिस्का स्वर बीणा के बोल से भी कहीं मधुर था) हे ईश्वर ! मेरी प्यारी सखी को दुःख से बचाइयो—आजलों उसेने किसी का भी हृदय दुखी नहीं किया है ! दयासिन्धु ! तू उस अबला बालिका पर दया कर !

इतना कह कर वह ढाढ़ें मार २ के रोने लगी।

हेमेल इस्से कुछही अन्तर पर चुप चाप खड़ा यह सोच रहा था कि कहीं मेरा यों चले आना इस्के हृदय पर ठेस न पहुँचाये।

कुछही देर के उपरान्त वह स्त्री अपने स्थान से उठी, और अब जो हेमेल ने देखा तो जान पड़ा कि वह एक अलौकिक छटा की सुन्दरी है, उस्की नीली २ आँखें, स्वर्णमय केश, गुलाबी पतले २ होंठ बड़ेही सुन्दर जान पड़ते थे।

वह स्त्री एक मर्द को यों खड़ा देख कर झभक के पीछे हटी परन्तु साथही चार्लस आगे बढ़ा और यों बोला " मेरी इस ढीठता को क्षमा करें, अभी मैं इस राह से जा रहा था कि सहसा मेरे कानों में रोने की आवाज़ आई जिस्का कारण जानने के निमित्त मैं यहाँ चला आया "।

इसपर मेरिया ने [जो राजकुमारी की सहेली थी] उत्तर दिया कि मैं अपनी प्यारी सखी के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी।

चा०—(उस्की मोहनी मूरत को हृदय में स्थापित करके) तो जान पड़ता है कि आप अपनी प्यारी सहेली की बड़ीही मनभाई हैं।

मेरि०—"कारण यह कि हम दोनो बचपनहीं से एकत्रित रही हैं, मेरिया ने कुछ लजा कर यह कहा और फिर बोली "वे भी तो मुझ पर बड़ी दयालु रहती हैं, यदि उनके प्रेम का इतना भी फल न हो, तो मेरे समान नीच प्रकृति वाली कोई नहीं।"

चा०—ईश्वर तुम्हारे निवेदन को अवश्यही स्वीकार करेगा, और जब तुम्हारी वन्दना स्वीकृत हुई तो उस्का फल प्राप्त होते भी कुछ विलम्ब न लगेगा।

मेरि०—(नेत्रों में जल भर कर) मुझे भी आशा है कि ईश्वर मेरी विनती सुन लेगा, परन्तु हाय ! मैंने सुना है कि लार्डलिन्सडार्फ बड़ाही धूर्त और अत्याचारी व्यक्ति है, इससे मुझे अपनी प्यारी की कुशल नहीं दिखाई देती।

चा०—जो कुछ उस्का पिता उस्के छुटकारे के निमित्त कर सक्ता है वह कल प्रातःकाल करेगा; ईश्वर की सहायता और मनुष्यों की शक्ति, इन दोनों से तुम्हारी सखी कल छुड़ा ली जायगी।

मे०—मेरी भी वन्दना आप की सहायक होगी, क्योंकि मैं और किस योग्य हूँ—"

इतना कह कर उसने लज्जा से सिर झुका लिया और फिर गिरजे के बाहर चली गई।

उस्की भुवनमोहनी मूरत ने चार्ल्स हेमेल के चित्त पर एक बड़ा भारी प्रभाव डाला और वह उससमय तक टकटकी बाँधे उसे देखताही रहा जबलों वह दृष्टि से बाहर न हो गई।

उस्के चले जाने के उपरान्त चार्ल्स भी वहाँ से निकला और अपने कमरे में चला गया।

समर की भारी तयारी फौजी सिपाहियों में रात भर होती रही।

परन्तु उन सिपाहियों की चाल में, जो दुर्ग रोजेन्थेल की फौज में मिलने के लिये दूर से आते थे कोई गुप्त बल बाधा डाले देता था।

छठाँ बयान।

दुर्ग लिन्सडोर्फ।

प्यारे पाठक गण! अब हम आप को कुछ हाल थेरिज़ा का वहाँ से दिखाते हैं जब वह दुर्ग रोजेन्थेल से जबरदस्ती निकाली गई थी।

राजकुमारी को अचेतावस्था में लिये दो सिपाही महल से बाहर निकले, इन दोनो के चारों ओर और बहुत से सिपाही थे जो मारते काटते जिस्तरह बना दुर्ग के बाहर निकल गये।

बाहर आकर इनलोगों ने उसे एक बड़ेही शीघ्रगामी घोड़े पर सवार कराया जिसे लिये खन्दक के निकटही एक व्यक्ति खड़ा था।

घोड़े पर सवार होने के उपरान्त एक झुण्ड, हथियारबन्द सवारों का जो इसी के लिये तैयार था खड़ा था इस्के चारों ओर आगया और फिर उसे लिये सबके सब एक ओर को चले।

कुछ देर के उपरान्त जब थेरिज़ा चैतन्य हुई तो उसने सवारों से पूछा कि उसे वे कहाँ लिये जाते थे?

एक स०—तुम्हे शीघ्रही मालूम हो जायगा! परन्तु भय न खावो हमसे कोई क्षति तुम्हें नहीं पहुँचेगी!

थेरिज़ा ने सोचा कि अब इन सवारों से किसी प्रकार का प्रश्न करना व्यर्थ है, इस लिये वह अपने भाग्य पर निर्भर हो चुपकी हो रही, हाँ वर्तमान अवस्था पर दृष्टि

पात करतेही उसपर यह तो भली प्रकार प्रगट हो गया था कि इस दुःख का कारण अत्याचारी कौन्ट मेनफ्रेडही है। और यथार्थ में बात भी ऐसीही थी।

कुछही देर में दुर्ग लिन्सडोर्फ के ऊँचे २ बुर्ज इसे वृक्षों के बीच में से दिखाई पड़ने लगे। और उससमय उस्का हृदय काँप उठा जब वह दुर्ग के उठौवा पुल पर से भीतर जाने लगी, परन्तु अब इससे क्या हो सक्ता था।

अब यह झुण्ड इसे लिये दुर्ग के आँगन में पहुँचा, और यहाँ आतेही सवारों ने बागें रोंकी और उनमें से एकने अपने घोड़े पर से उतर कर लेडी थेरिज़ा को घोड़े से उतार लिया।

घोड़े से उतर कर थेरिज़ा को लिये वह चुप चाप आगे बढ़ा और फिर एक छोटे द्वार को उसने खोला जो एक चौखूटे बुर्ज में बना था।

बुर्ज की तंग सीढ़ियों पर, जिसका द्वार उस सवार ने खोला था थेरिज़ा चढ़ने लगी इसका सुन्दर जूता बुर्ज की दृढ़ सीढ़ियों पर पड़ के बोल रहा था और तब से इसके साथी सवार ने बुर्ज का द्वार बन्द किया और फिर इसके पीछे २ चढ़ने लगा।

इस ऊँची चढ़ाई के समाप्त करने के उपरान्त अब यह लोग सीधी भूमि पर पहुँचे और वहां उस सवार ने एक द्वार को अपने तलवार के कब्जे से जोर से भड़ भड़ाना प्रारम्भ किया।

इसके भड़भड़ाते ही द्वार खोल कर एक बुढ़िया निकल आई जिसके आकार से गंभीरता और पहिनावे से जान पड़ती थी कि वह एक उच्चश्रेणी की नौकर है।

यथार्थ में इसके अधिकार बहुत चढ़े बढ़े थे, कुल राजमहल की चाबियाँ इसके पास रहतीं और इस नये लार्ड अर्थात् मेनफ्रेड के समय से तो और भी इसके अधिकार न जाने क्यों बहुतही उन्नति पर थे।

सवार—बीबी विनिफ्रेड, यह लो! यह वही मेहमान है जिस्के लिये समर में जाने के पहले हम लोगों ने प्रतिज्ञा की थी। और आप तो स्वयं बुद्धिमान हैं, उस्के बारे में आप से कहनाही क्या है कि इस स्त्री की कैसी आव भगत और यत्न से रक्षा होनी चाहिये जिस्पर हमारा सरदार प्राण देता है।

यह कह कर उस व्यक्ति ने थेरिज़ा को सलाम किया और फिर वहाँ से लौट गया।

बुढ़िया—राजकुमारी भीतर आ जावो!

थेरिज़ा उस बुढ़िया के पीछे हो ली, और वह उसे लिये एक सजे सजाये कमरे में जा पहुँची जिसमें एक टेबुल पर भिन्न २ प्रकार की उत्तमोत्तम मदिरायें और भाँति २ के सूखे तथा ताज़े मेवे रक्खे हुये थे।

बुढ़ि०—यदि इनमें से कोई वस्तु आप के रुचि की हो तो उसमें से ले लें और नहीं तो जिस वस्तु की आवश्यक्ता हो उसके लिये मुझे आज्ञा दें।

थेरि०—परन्तु माई! मुझे इतना तो बता दे कि मैं यहां किस लिये लाई गई हूँ?

डेम—कुमारी! मैं केवल तुम्हारी सेवा के लिये नियुक्त की गई हूं, बातों का उत्तर देने के लिये नहीं।

आशा के विपरीत इस उत्तर को सुन कर थेरिज़ा वहीं की एक चौकी पर बैठ गई और शोचसागर में डूब आत्मविस्मृत सी हो गई।

डेम—(कुछ देर ठहर कर और एक ओर इंगित करके) इस द्वार के भीतर जितनी कोठरियां हैं उन सबकी अधिकारिणी आप हैं और अब यदि मेरी कोई आवश्यकता न हो तो मुझे आज्ञा दीजिये।

थेरि—मुझे विश्रामागार दिखा दो, फिर इसके उपरान्त तुम जा सकती हो।

यह सुन कर बुढ़िया ने लम्प उठाया और द्वार के भीतर ले जाकर उसने थेरिज़ा को तीन कोठरियां दिखाईं, पहली तो बैठने उठने के लिये और दूसरी सोने, तथा तीसरी ईश्वर की बन्दना के लिये।

प्रत्येक कमरे का सामान बता रहा था कि यह बहुतही पुराना है और कोठरी की अवस्था देख प्रतीत होता था कि अनेक दिवसों के उपरान्त यह खोली गई है। दीवारों पर और इधर उधर घास तथा छोटे २ फूलदार पौधे उगे हुये थे, कुछ प्राचीन काल की सजावट की चीजें कोठरी में लगी हुई थीं, और स्थान २ की शीघ्रता में बदली हुई भी जान पड़ती थीं। विश्रामागार तथा बैठक में आग जलाई गई थी सच तो यों है कि वह कोठरियां कुछ रहने योग्य न थीं कोठरियों में एक २ खिड़कियां भी थीं जो बरसों बन्द रहने के कारण जकड़ सी गई थीं इन सब सामानों को देख कर बेचारी राजकुमारी के दुःख पर एक और ठेस लगी।

बुढ़िया ने यहां आकर विश्रामागार में की एक मेज़ पर लम्प रख दिया और कहा, "यदि आपको आवश्यकता होगी तो मुझे बुला लीजियेगा मैं आप के द्वार के सामने वाले कमरे में हर समय उपस्थित रहूंगी जिसे आप देखही चुकी हैं। और यदि आपको

ये कोठरियां पसन्द न आती हों तो श्रीमान कौन्ट महाशय से इन्हें बदल देने के लिये निवेदन कीजियेगा जो थोड़ी ही देर में वा प्रातःकाल पर्यन्त यहां आयेंगे, और जिस समय वे आप के इस अलौकिक कान्ति का निरीक्षण करेंगे तो आशा तो है कि उसी समय आपको यहां से ले जाकर अपने उत्तमोत्तम महलों में जो निकट ही हैं स्थान देंगे।" इतना कह कर बुढ़िया धीरे २ बाहर चली गई।

बुढ़िया की इस लम्बी चौड़ी व्याख्या पर थेरिज़ा बिलकुल चुप रही, हां नहीं कुछ भी उसने न कहा, परन्तु जब वह चली गई तो इसने उठ कर भीतर से अपनी कोठरी का द्वार बन्द किया और रोती हुई आकर पलङ्ग पर बैठ गई और फिर बोली:—

"दैव! तूने इस अभागिनी के भाग्य में क्या लिखा है? हाय! मेरे पिता की दशा क्या हुई होगी? उनका दुर्ग लुट गया होगा उनकी प्रजा और सैन्य परास्त हो गई होगी उनका वह घमंड मान मर्यादा सहित चूर्ण हो गया होगा और उनकी पुत्री उनसे छीन ली गई है! हाय! कैसी भयानक घटनायें आज के दिन हुई हैं!"

"भागें! यहाँ से हवा होने की तदबीर करें!" यह कह कर वह एक मिनिट तक कुछ सोचती रही और फिर बोली "हाय! कैसी बेवकूफ मैं हूं! जिस पक्षी को व्याध से इतने परिश्रम से पकड़ा है उस्के पिंजड़े का कोई स्थान क्या वह इस असावधानी से खुला छोड़ देगा कि जिस्में पक्षी निकल जाय? कदापि नहीं!"

यह कह कर वह फिर फूट २ के रो पड़ी, और कुछ देर रोते रहने के उपरान्त आपही आप फिर बोली "परन्तु बड़ी सावधानी से काम करने म भी कभी २ चूक अवश्यही हो जाती है, क्या आश्चर्य है कि निर्दयी कुल स्थानों के बन्द करने में भी एक आध भूल गया हो जिससे ईश्वर हमें छुटकारा दे दे!"

बस यह चित्त में स्थिर करके उसने लम्प हाथ में उठा लिया और कुल कोठरियों की परीक्षा करने के लिये उठ खड़ी हुई।

विश्रामागार में उसे कोई विशेषता न जान पड़ी, और बैठक में भी यही बात हुई। हाँ उस्के सामान पर जब इसने दृष्टि गड़ा कर देखा तो जान पड़ा कि ये सब बड़ेही सुन्दर और बहुमूल्य हैं, परन्तु कुरसियों का पेंदा पुराना होने के कारण बड़ाही कमज़ोर हो रहा था, और परदे तो दो एक इनमें इतने पुराने थे कि हाथ लगातेही, हाथ भर, हाथ में आजाते थे, लकड़ी की कुल वस्तुओं में कीड़ों ने छेद बना दिया था, झूलेदार कोचों की कमानियाँ तितिर बितिर हो गई थीं जिन्हें किसी ने आजही एकत्रित करके

फीते से बाँध दिया था, चलती समय थेरिज़ा की वायु से, धूल का एक बादल सा उमड़ने लगता था।

तीसरी कोठरी लम्बाई चौड़ाई में औरों से बहुत छोटी थी, इसमें थोड़ी सी वन्दना करने की वस्तुयें रक्खी हुई थीं। सामनेही तीन सीढ़ियों की ऊँचाई का एक चबूतरा बना था जिसपर मखमल से मढ़ी एक सेजदागाह (सिर नवाने का स्थान) बनी थी, सेजदागाह के दोनों ओर चाँदी के दो शमादान रक्खे थे, जिनपर मोम बत्तियाँ गल सक्ती थीं।

सेजदागाह के एक कोने में मनुष्य की ऊँचाई के बराबर एक तस्वीर लगी थी। यद्यपि यह भी गर्द में लतपत थी परन्तु जब थेरिज़ा ने एक तिपाई पर चढ़के उस्के मुंह पर का गर्द साफ किया तो जान पड़ा कि यह एक बड़ेही स्वरूपवान युवक की तस्वीर है, और इस्के वस्त्रादि से जान पड़ता था कि यह अवश्य किसी राज्य का अधिकारी है।

इसी तस्वीर के ठीक दूसरी ओर थेरिज़ा ने एक सुन्दर स्त्री की मूरत को खड़े देखा जिस के वस्त्र बड़ेही बहुमूल्य जान पड़ते थे और जिस्का प्यारा २ मुखड़ा इसे बड़ाही सुन्दर जान पड़ा यह देखते ही इसने इस तस्वीर के सामने से तिपाई उठाई और उस मूरत के सामने, जो मानों बोलाहीं चाहती थी जा लगाई। अब जो इसने इस मूरत को इतने निकट से देखा तो इसे स्मरण सा होने लगा कि मानों इसे मैंने कहीं देखा है। इसके चेहरे पर भी गर्द पड़ी हुई थी जिसे पोंछने के लिये थेरिज़ा ने अपना रूमाल निकाला और एक हाथ से दीवार का सहारा लेकर चाहती थी कि तिपाई पर चढ़े कि सहसा, जिस स्थान पर इसका हाथ पड़ा था वह पीछे हटा और फिर किसी द्वार के पल्ला के पीछे हट जाने पर वहीं एक चोर द्वार प्रगट हो गया, इसके खुलते ही भीतर से एक ऐसा कड़ा झोंका वायु का आया जिस्से कि इसका लम्प बुझते २ रह गया।

थेरिज़ा यह देखतेही मारे भय के पीछे हट गई, वह सोच रही थी कि कदाच इसमें से कोई निकल न आये, परन्तु अन्त कोई आता न दिखाई दिया।

जब इस्का वह एक खटका मिट गया तो इसने साहस किया और धीरे २ आगे बढ़ी और द्वार को भली भाँति देखने लगी तो जान पड़ा कि यह एक कमानी के दबाने से खुलता था परन्तु मोरचा लग जाने के कारण कमानी कमजोर हो गई थी इस लिये तनिक से के धक्के में द्वार आप से आप खुल गया।

जब थेरिज़ा को उस्के खोलने की तरकीब भली भाँति मालूम हो गई तो उसने द्वार फिर बन्द कर दिया और अपने चित्त में यह स्थिर कर कि भीतर का हाल आधी रात को मालूम करूंगी अपनी कोठरी में लौट आई, क्योंकि उसे किसी के आजाने की भी शङ्का तो लग रही थी।

परन्तु जैसेही उसने अपनी कोठरी में आकर लम्प को टेबुल पर रक्खा है वैसेही उस्के दूसरे कोने से किसी की तद्दिण साँस लेने की आवाज़ सुनाई दी, और अब जो उसने भयभीत होकर उस ओर दृष्टि डाली तो उस व्यक्ति को खड़े पाया जिस्का चित्र वह सदैव अपने हृदय में अङ्कित रखती थी।

इसके सामने इस्समय फोष्ट खड़ा था।

क्षणेक पर्यन्त तो थेरिज़ा यही सोचती रही कि यह कोई आत्मा है वरन् इसी भय से वह पीछे भी हट गई और उधर उस्की यह दशा देख कर फोष्ट बहुतही धीरे २ बोला "वह अब अपनी आंखें भी मेरे सामनें नहीं करती, वह जानती है कि मैंने कितना प्रबल आघात फोष्ट के हृदय पर किया है" इतना कह कर वह आगे बढ़ा और ऊँची आवाज में कहने लगा "थेरिज़ा! क्या तू एक अपने मित्र को अपने निकट खड़ा देखना पसन्द नहीं करती?"

इतना सुन्तेही थेरिज़ा ने जोर से कहा "आह! यह तो वही है" और झपट कर अपने प्यारे की गोद में जा पड़ी।

फोस्ट—(चूम कर) थेरिज़ा अब तू फिर एक बार मेरी है!

थे०—फोस्ट! प्यारे फोस्ट! तुम यह तो बताओ कि यहां कैसे आये? क्या तुम भी मेरेही समान कैदी हो?

फोस्ट—कोई वीर वा कोई शाहंशाह संसार में ऐसा नहीं दिखाई देता जो फोस्ट को कैद कर सके।

थे०—(उसके कहने का दूसराही तात्पर्य समझ कर) हां प्यारे हां! मैं तुम्हें जानती हूं कि तुम एक बड़ेही साहसी और वीर पुरुष हो, परन्तु यह तो बताओ कि यहां तुम कैसे आ गये?

फोस्ट—यह प्रश्न और उत्तर का समय नहीं है थेरिजा—मुझ से सुनो! कुछही देर के उपरान्त घमंडी कौन्ट मेनफ्रेड यहां आयेगा यहीं इसी कोठरी में!

थे०—(दोनों हाथ आकाश की ओर उठा के) ईश्वर मेरी रक्षा कर।

फोस्ट—(किसी गुप्त वेदना से पीड़ित हो के) थेरिज़ा मुझ से सुनो ! मुझ में इतनी शक्ति है कि मैं तुम्हें यहां से निकाल—"

थे०—[बाधा देकर] तो चलो २ फोस्ट ! शीघ्रता करो ! सुस्ती में सब काम बिगड़ जाँयगे ।

फोस्ट—हां मैं तुम्हें यहां से ले चल सकता हूँ—तुम्हें छुटकारा दिला सकता हूं उस अत्याचारी की जिस ने तुम्हें यहां बन्द किया है कुल सावधानी तथा पहरा चौकी को मिट्टी में मिला सकता हूं—परन्तु थेरिजा ! इसके उपरान्त क्या तुम मेरी हो जाओगी ? क्या फिर तुम मेरे साथ एक ऐसे देश में भाग चलोगी जहां तुम्हारे पिता वा अन्य किसी बाधा दायक का ध्यान भी न आ सके ।

थे०—फोस्ट ! क्या तुम मुझसे ऐसे कुसमय में प्रतिज्ञा कराते हो ? तुम से ऐसी आशा न थी ।

यह कह कर थेरिज़ा रोने लगी और साथही फोस्ट आगे बढ़ा और उसे अपनी छाती से लगा कर अनेक चुम्बन लेने लगा, जिस्से थेरिजा झिझक कर कुछ पीछे हट गई ।

थे०—इस प्रतिज्ञा कराने का कारण यह है प्यारी कि मैं तन मन धन तीनों ही से तुम पर आशक्त हूँ ।

थे०—(कांपते हुये स्वर में इससमय उसके गाल तिमतिमा उठे थे) नहीं फोस्ट मैं तुम्हारे लिये भी अपने पिता को न छोड़ूँगी ।

फोस्ट—(सकोप) तब तो मैं तुम्हें नहीं ले जाता; यहीं पड़ी रहो—मुझे यदि अपना बनाओ अपने हृदय में स्थान दो ।

फोस्ट यह कहताही था कि सहसा एक जोर का शब्द दूसरी कोठरी में हुआ ।

फोस्ट—कौन्ट मेनफ्रेड ! अच्छा तो थेरिज़ा अब भी बतलाओ तुम मेरी हो जाओगी ? बोलो—शीघ्र उत्तर दो ।

थे०—मुझे बचालो ! प्यारे मुझे बचाओ !

फोस्ट०—अभी ! परन्तु शपथ करो कि इस्के उपरान्त तुम मेरी हो जाओगी,

थेरिज़ा—हाय ! यह तो नहीं होना ! मैं अपने पिता का श्राप नहीं लिया चाहती !

फोस्ट—(चिढ़ कर) तब मैं तुम्हें यहीं छोड़े जाता हूं ! परन्तु डरो मत मैं कल, फिर आऊँगा । कौन्ट से, बात के बिचारने के लिये दो दिवस की मुहलत माँग लेना ।

थेरिज़ा—(धीरे से) हाय ! अब तो वह मुझे छोड़े जाता है। "इतना कहकर वह फोस्ट के आगे घुटने टेक कर बैठ गई और हाथ जोड़ कर अपना सिर नीचा कर लिया।"

फो०—मेरी बात का विश्वास मानों, मैं कल फिर आऊँगा।

यह शब्द तो थेरिज़ा के कानों में भली भाँति सुन पड़े परन्तु जब इसने सिर उठा कर देखा तो वहाँ फोस्ट का कहीं चिन्ह भी न था।

इसी समय, कोठरी का द्वार खुला और कौन्ट मेनफ्रेड ने कमरे में प्रवेश किया।

इस्के चेहरे से एक प्रकार का गम्भीर सोच प्रगट होता था साथही क्रोध से रंग रक्त वर्ण हो रहा था और होंठों से एक बनौवा मुस्कराहट प्रतीत होती थी।

कौन्ट—(नर्म आवाज़, बनाकर) अरी तू मेरे सामनें घुटने टेके क्यों बैठी है? घुटना टेकना और मिन्नत करना तो मेरा काम था, परन्तु खेद का विषय है कि मैंने यह सब सीखाही नहीं। लड़कपन से अबतक मेरा समय; लड़ाई और समर भूमिही देखते २ व्यतीत हुवा परन्तु उस्पर भी मुझे आशा है कि इस त्रुटि को मैं अपनी चाकरी से पूरा करदूँगा। ले उठो !

इतना कहकर उसने थेरिज़ा का हाथ पकड़कर उठा लिया क्योंकि वह समझता था कि यह मेरी मर्यादा रख रही है।

थेरिज़ा—(अपने बैरी को बड़ीही घृणायुक्त दृष्टि से सिर से पैर पर्यंत देखकर) महाशय ! आप मुझ से क्या चाहते हैं ?

कौन्ट—हे भगवान ! यह कैसा अच्छा प्रश्न है, परन्तु मुझे व्यर्थ बातें बनानी नहीं आतीं ! कल तुम्हें मेरे साथ यदि इच्छा पूर्वक हो तो अच्छी बात हैं नहीं जबरदस्तीही गिरजा में चलना होगा। और वहाँ मैं तुम्हारे साथ व्याह करूंगा।

थेरिज़ा (चिल्लाकर) क्यों महाशय कलही ! तो क्या आप ने यह अनुमान किया था कि मैं इस्के लिये तैयार बैठी हूँगी।

कौन्ट—[प्रसन्नता से] तो क्या इसमें तुम कुछ समय चाहती हो ?

थे०—महाशय ! मुझ से इतना शीघ्र तो उत्तर नहीं दिया जाता (फोस्ट की बात सोच कर) मुझे थोड़ा सा समय प्रदान कीजिये—केवल दो दिवस बस इतने में मैं आप के प्रस्ताव पर भली भांति विचार कर लूंगी।

कौन्ट—(कुछ सोच कर) युवती मैंने इसे स्वीकार किया !

इतना कह कर वह शीघ्रता से कोठरी के बाहर चला गया । और जब द्वार पूर्ववत फिर बन्द हो चुका तो इसने आपही आप कहा "हाय ! मेरे पिता का तो इसने कोई समाचार ही न दिया और मुझ निगोड़ी को भी इतनी सुध न रही कि उससे पूछ तो लेती।" इतना कह कर वह एक कुरसी पर बैठ गई और सोच २ कर बालकों की तरह रोने लगी ।

सातवाँ बयान ।

पर्वत ब्रोकेन ।

प्रातःकाल का समय है और सूर्यदेव पूर्व दिशा से निकलते दिखाई पड़ रहे हैं । एक बलुवे देश के ऊपर से होता हुवा पर्वत ब्रोकेन, आकाश के समीप तक उठता चला गया है ।

इस पर्वत में अनेकानेक धातु ; जैसे सोने, चाँदी ताँबे, पीतल की कानें पाई जाती हैं और इस्के विशाल शरीर पर सैकड़ोंही जल के श्रोते इधर उधर बहते, दिखाई देते हैं, और स्थान २ पर जल की चादरें भी हैं, जो किसी ऊँचे स्थान से गिरती हैं, और उनका शब्द दूर २ तक घहराता रहता है ।

दृश्य वास्तव में बड़ाही विशाल है जिस्के देखने से चित्त पर एक प्रकार की गम्भीरता सी आ जाती है । इस्की ऊँची से ऊँची चोटी पर चढ़ने पर कदाच् मनुष्य स्वर्ग में सरलता पूर्वक जा सक्ता है । इस्के चारों ओर स्वच्छ नीलवर्ण का आकाश है जो पृथ्वी की ओर झुकते २ अन्त एक गहरे अन्धकार में लोप हो जाता है ।

उक्त पहाड़ की ऊँचाई समुद्र के किनारे से चार हज़ार फीट की है, जिस्पर चढ़ने और चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर एक सौ पचास मील के भीतर की वस्तु चारों ओर की दिखलाई पड़ सक्ती हैं । और सचमुच इस्का सा विचित्र दृष्यवाला और ऊँचा पर्वत योरोप भर में कोई नहीं है ।

स्थान २ पर पर्वत के बड़े २ टुकड़े तीक्ष्ण आँधियों के आने से टूट २ कर नीचे पड़े हैं । पर्वत के निचले भाग में तो बेल बूटे और जङ्गली बड़े २ वृक्ष दिखाई पड़ते हैं परन्तु जितना ऊपर चालिये उतनाही वह बीहड़ और उजाड़ मिलता जाता है ।

मनुष्यों के शब्द की प्रतिध्वनि यहाँ बड़ीही भयानक जान पड़ती है, यहाँ लों कि अनुमान कुल पर्वत एक डेरावने शब्द से गूँज उठता है और ऐसा जान पड़ता है कि मानों पहाड़ों पर के बैठे हुये प्रेत बोलियों को सुन कर उस्की नकल उतार रहे हैं।

इस्के ऊपर जाने की राह ऐसी भयानक और कठिन है कि तनिक भी पैर फिसले तो फिर मनुष्य कोटि जतन किये पर भी नहीं बच सक्ता।

राह के दोनों ओर भयानक भाड़िया हैं और स्थान २ पर राह इतनी गहरी घाटियों तथा गारों के ऊपर से होकर गई है कि जिनका अन्त दिखाईही नहीं देता। इससमय यदि दूर से देखिये तो इस पहाड़ की सब से ऊँची चोटी पर दो मनुष्य की प्रतिमायें, जो दूरी के कारण बहुतही छोटी २ जान पड़ती हैं हिलती और चलती मालूम हो रहीं हैं।

अब निकट पहुँचने पर ऐसा मालूम होता है कि उन दोनों में से एक तो छाती पर अपने दोनों हाथ बाँधे स्थिर दृष्टि से उस दूसरे को खड़ा देख रहा है और दूसरा पहले से कुछही अन्तर पर खड़ा बड़ेही आश्चर्य से अपने चारों ओर के दृश्य पर दृष्टिपात कर रहा है।

पिशाच—क्यों फोस्ट! अभी लों तुम्हारी वही इच्छा है?

फोस्ट—बेशक! मैंने तो तुमसे पहलेही कह दिया कि कि जिस तरह बने, आज बेरेन रोज़ेन्थेल की फौज कौन्ट मेनफ्रेड के दुर्ग के ओर बढ़ने न पावे!

पिशाच—(ताने की राह से हँसकर) मुझे तेरी इच्छा मालूम करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है, क्योंकि मेरा काम तो केवल तेरी आज्ञा के पूरा करने का है।

फोस्ट—तो बस मेरी आज्ञा तो यही है कि बेरेन रोज़ेन्थेल आज किसी प्रकार अपनी पुत्री को छुड़ाने के लिये सैन्य न ले जा सके।

पि०—(घृणा से) तो क्या तुझे मैंने जितनी शक्ति दी है उससे तू रोज़ेन्थेल की फौज को नहीं रोक सकता।

फोस्ट—एक क्षण में, एक फूँक में मैं कुल फौज को उलट सकता हूं। परन्तु वह शक्ति तूने न तो मुझी को दी और न स्वयं तेरेही में है कि जिस्से किसी क्वारी बाला का चित्त किसी पर पिघल सके। क्यों ठीक है न?

"हां ठीक है!" इतना कह के वह मुँह बिगाड़ के मुस्कराने लगा।

फोस्ट—मुझे तो अपनी नामवरी दिखलाने की इच्छा है, और जो इसी प्रकार दिखलाई जा सकती है कि जब यह सैन्य आगे न बढ़े! परन्तु तू क्यों हिचकिचाता है, और मुझे इतनी दूर, और इस स्थान पर लाने से तुझे क्या लाभ?

पि०—तेरा कार्य यहीं से सिद्ध होगा और इसी कारण मैं तुझे यहाँ लाया हूँ, परन्तु मुझे विचार इस्बात का है कि यदि मैं तेरी इच्छानुसार काम करता हूँ तो यह मनोहर दृश्य जो सामने झलक दिखा रहा है बिलकुलही वरबाद हो जायगा।

फास्ट—किसी के प्राण न जायें और चाहे जो कुछ हो जाय मुझे कोई परवाह नहीं; परन्तु अब शीघ्रता कर! नहीं तो वेरेन की सैन्य बैरी की ओर चल खड़ी होगी।

और यथार्थ में सूर्यदेव अब उस स्थान से झलक दिखा रहे थे जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिलते जान पड़ते थे।

"तेरी आज्ञा से मैं गर्दन नहीं फेर सकता" यह कह कर उसने अपना मुँह उत्तर की ओर फेरा और दाहिना हाथ उठा कर निम्नलिखित मन्त्र वह पढ़ने लगाः—

"ओ तूफानी भूतो! उड़ कर उत्तर से आओ इस आन।
छोड़ो अपने २ घर को जो हैं काले ओ सुनसान ॥
आरी! आरी! ठण्डी आंधी छोड़ अब अपना वरफिस्तान।
शोर मचाती नगर उड़ाती दिखलाती सब अपनी शान ॥
जलते बलते-पानी वाले भूतो तुम भी आ जाओ।
फिर—ठण्ढे २ पालेवाले आ के ओले बरसाओ ॥"

एक कौतुकभरी दृष्टि से फोस्ट उस ओर देखने लगा जिधर हाथ उठा कर पिशाच यह भयानक मन्त्र पढ़ रहा था।

पिशाच के बोलतेही उत्तर दिशा का वह नीला और स्वच्छ आकाश, जिस पर पूर्व दिशा से उठते हुये सूर्य भगवान की सुनहली किरनें पड़ रही थीं—क्रमशः धुँधला होने लगा, पहले तो वह कुछ योंही सा जान पड़ा परन्तु अब वह गहरा होने लगा और थोड़ीही देर में फोस्ट ने देखा कि एक बहुत बड़ी काली घटा सूर्य के प्रकाश को दबाती उसी की ओर बढ़ती आती थी।

फोस्ट—तूने गरज और बिजली को तो नहीं बुलाया है?

पि०—(भयानक स्वरूप बनाकर जिसे देख कर फोस्ट भी काँप उठा) तुच्छ मनुष्य! बादल और बिजली केवल उसी के अधिकार में हैं जिस का नाम मैं ज़बान से नहीं निकाल सकता।

इसके उपरान्त कुछ देर लों फोस्ट नीची दृष्टि किये खड़ा रहा, कुछ लज्जा से नहीं वरन पिशाच का विकराल स्वरूप देखने के भय से, जो इससमय खड़ा अपनी पिछली मान मर्यादा तथा अधिकार को याद कर २ के घबराहट से बहुत ही भयानक हो रहा था।

अन्त कुछ देर के उपरान्त फोस्ट ने सिर उठाकर उत्तर की ओर दृष्टि की ओर फिर पिशाच से कहने लगा "क्या तू अपना काम कर चुका?"

पि०—तो क्या आगे प्रारम्भ करूं ? तू आज्ञा देता है ?

फोस्ट—हां, हां !

पि०—अच्छी बात है !

इतना कह कर उसने फिर कहना प्रारम्भ किया:—

"उड़ो चारों तरफ तुम ओ भयानक आँधियाँ यकसर।
उखाड़ो जङ्गलों को तुम उड़ादो भोंपड़े ओ घर ॥
रहे सरदी भी वह उसमें कि पानी जमके हो पत्थर।
पहाड़ों को गिरा दो बुर्ज ढा दो तुम अभी मिल कर ॥"

इतना कहतेही ठण्डे वायु का एक हलका झोंका उत्तर की ओर से आया और साथही फिर एक कड़ा झोंका पहुँचा और अब क्रमशः वायु बढ़ने लगी और कुछही देर में भयानक आंधी चिंघाड़ मारती चारों ओर बहने लगी।

अब वह भयानक आंधी पूरे वेग से बह रही थी जिसका वृत्तान्त कुल तवारीखों में पाया जाता है। १४६८ की यह आँधी उस प्रांत में अपना नाम छोड़ गई। इसी के वेग से नदी एलबी का जल इतना छितरा गया था कि इसकी दोनों बहती हुई धारों के बीच में जितने नगर पड़े थे वे सब वह गये।

पर्वत ब्रोकेन की ऊँची चोटी पर से इसका वेग भली भांति दिखाई देता था।

वे विशाल शरीर के पर्वत जिन्हें सहस्त्रों व्यक्ति उत्तमोत्तम औज़ार की सहायता से महीनों में भी न हिला सकते थे क्षण भर में टूट २ कर एक महा भयङ्कर नाद के साथ गहिरे २ ग़ार में गिरते थे।

और जिससमय वे ऊँचाई से; एक के उपरान्त दूसरी चट्टानों पर से लुढ़कते हुये नीचे आने लगते उससमय सहस्त्रों वृक्ष टूट २ कर ठीक इसी तरह छितरा जाते जैसे किसी बालक के नीचे नाचे फूल इधर उधर जा पड़ते हैं—इनके नीचे गिरती समय चट्टानों से लगातार चोटों की प्रतिध्वनि ऐसी जान पड़ती जैसे सहस्त्रों तोपों पर एक साथही बत्ती रख दी गई है।

और जब वे पत्थर गहराई में बहते हुये श्रोते में, ऊपर से लुढ़कते जा पड़ते तो उनका जल इतनी जोर से छितरा के उड़ता कि मानों कोई बहुत बड़ा ज्वालामुखी पर्वत फट गया है।

वही स्थान जिसपर से बड़ाही मनोहर दृश्य, अभी कुछ ही देर हुये कि दीख पड़ता था अब उजाड़ हो गया, और उजाड़ भी ऐसा कि कोई झाड़ी पर्यंत नाम को भी न रह गई।

बड़े २ वृक्ष अपने स्थान से उखड़ कर ऐसे उड़े चले जाते थे कि मानों उनमें पर लग गये हैं।

पानी की मोटी २ धारें चारों ओर भयानक शब्द के साथ दौड़ रही थीं।

पृथ्वी जोर से हिलती जान पड़ती थी।

पर्वत ब्रोकेन का भी वह विशाल शरीर कांप रहा था।

लोम हर्षण दृश्य !

चारों ओर जहां लों दृष्टि पहुंचती थी एक प्रचण्ड तूफान, अपने घनघोर चीत्कार से प्राणी मात्र को त्रास दिलाता बह रहा था।

गाँव और कसबे उड़ गये थे, बड़े २ मकान पृथ्वी पर लम्बे पड़े थे, दृढ़ और प्रशस्त दुर्गों की छतें उड़ गई थीं। ऊँचे २ गिरजों के घण्टे बुर्ज सहित नीचे आ पड़े थे। कमरों की उत्तमोत्तम-सजावट की चीजें यहां वहां सड़कों पर बिथरी पड़ी थीं।

यह भयानक तूफान छः घण्टे तक चलता रहा और इतनी देर में इसने वह हानि की, कि जिस्के विवरण से एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो सकता है।

परन्तु जिससमय यह आंधी प्रारम्भ हुई उसी समय पर्वत की चोटी पर से फौस्ट अन्तर्धान हो गया, केवल पिशाच खड़ा रह गया था, जो बार २ हाथ उठाकर कुछ कह उठता, जिससे तूफान और भी भड़क उठता था।

आठवां बयान।

दुर्ग लिन्सडार्फ के गुप्त भेद।

तूफान प्रारम्भ होने के कुछ पहिलेही थेरिज़ा जाग उठी, कुछ देर लों तो उसे ऐसा अनुमान होता रहा कि कल की घटना केवल एक स्वप्न मात्र थी।

परन्तु जब उसकी आंखें अच्छी तरह खुलीं और उसने उस कोठरी की सड़ी गली वस्तुओं पर दृष्टि डाली, और साथही उसे फौस्ट तथा कौन्ट की साक्षात और उनकी बातों की सुध आई तो उसे निश्चय हो गया कि स्वप्न नहीं वरन यथार्थ में मैं कैद हूँ।

इसके उपरान्त उसने अपने पिता को स्मरण किया और उनका कोई समाचार न पाने से यह और दुखी हो गई।

चित्त को उलझाने वाले इन्हीं ध्यानों में डूबी हुई वह अपने स्थान से उठी और शीघ्रता से वस्त्रादि उतार कर स्नान करने लगी।

स्नान करते २ उसके चित्त में ये बातें आती थीं कि "केवल दो दिवस के उपरान्त, उसे कौण्ट को उत्तर देना पड़ेगा। यद्यपि प्यारे फोस्ट ने उस से पुनः साक्षात् की आशा दिलाई थी, परन्तु क्या यह संभव था कि वह इतने वैरियों में और ऐसे बे-धड़क चला आयेगा? और हां—एक बात यह भी तो थी कि उसके चित्त में अब उसका प्रेम पूर्ववत् नहीं था, नहीं तो ऐसे कठिन समय में वह उस से इस बात की प्रतिज्ञा कदापि न कराता।"

इतना सोच कर वह रोने लगी।

इसके उपरान्त जैसेही वह स्नानादि से निवृत्त हुई वैसेही डेम विनफ्रेड ने इसकी कोठरी में प्रवेश किया और कहा "राजकुमारी भोजन तैयार है।"

इस्समय वह भयानक आँधी जिस का वृत्तान्त ऊपर के बयान में हो चुका है प्रारंभ हो गई थी; और वायु का भयानक चीत्कार, चारों ओर के द्वार और खिड़कियों की घोर फटफटाहट, कान पड़ी बात नहीं सुन्ने देती थी।

वायु की चौड़ी चद्दर जो दुर्ग लिन्सडोर्फ की ऊंची दिवारों से टकराती थी, तो उस्का शब्द ऐसा सुन पड़ता था मानो बहुत से देव मिल कर कोई भयानक राग गा रहे हैं।

अब डेम विनफ्रेड ने पुनः वही बात राजकुमारी से कही, क्योंकि पहिली बार वायु के कोलाहल से उसे वह सुन न पड़ी थी, जिसे सुनतेही, थेरिज़ा बुड्ढी के पीछे २ भोजनागार में पहुँची, और एक कुरसी पर टेबुल के सामने बैठ गई, जिस्पर अनेकानेक प्रकार के भोजन सोने चाँदी तथा शीशों के पात्रों में रक्खे हुये थे। परन्तु इस्की क्षुधा तो मारे दुःख के लोप हो गई थी बेचारी खाती क्या, दो चार ग्रास कठिनता से पानी के सहारे पेट में किये और इस्के उपरान्त थाली से उसने अपना हाथ खींच लिया।

डेम०—आपने तो कुछ भी न खाया! कदाच् मेरे यहाँ रहने से ऐसा हुवा हो, परन्तु मैं तो इस ध्यान से यहाँ ठहरी रही कि जिस्में आप घबरा न जायें। और या इस भयानक आँधी ने आपको भयभीत कर दिया हो?

थेरि०—क्या तू यह देख कर हैरान है कि मैं उदास हूं ? अरी जिस के घर में दिन दहाड़े आग लगा दी जाय जिसे जिसके प्यारे पिता से बलात् छुड़ा कर एक पराये स्थान में बन्द कर दिया जाय तो उसका चित्त उदास हो कि न हो।

बु०—और यह न कहोगी कि उस पराये स्थान का स्वामी भी तुम पर जान दिये देता है ! अरी बेवकूफ है तू ! जो ऐसे बीर, बुद्धिमान, और तेजस्वी पुरुष के साथ व्याह करने से इनकार करती है। पर तू क्या करे तेरा चित्त तो विटेनवर्ग के एक गरीब विद्यार्थी पर लट्टू हो रहा है और—"

थेरि०—(शीघ्रता से) क्या बुआ ! तुम उस विद्यार्थी को जानती हो ?

बु०—केवल नाम मात्र ! हां यह भलेही सुना है कि उसका सा स्वरूपवान व्यक्ति इस प्रान्त में कोई दूसरा नहीं है। परन्तु ईश्वर बचाये ! क्या भयानक आंधी चल रही है !

थेरि०—(घबरा कर) तो क्या तुमने उसे कभी नहीं देखा ?

बु०—एक तुच्छ विद्यार्थी के निमित्त इतनी उत्सुक क्यों हो रही हो ! वह भी क्या कोई राजा महाराजा है जिसे देखने मैं जाती ! वर्षों हो गये कि यहां से बाहर कहीं मैंने पैरही नहीं रक्खा।

यह सुनकर थेरिज़ा क्षणैक पर्यन्त तो सिर झुकाये कुछ सोचती रही और फिर बोली "भला कल सन्ध्या को कौण्ट, तुम्हारे स्वामी के आने के कुछ पहले कोई तुम्हारी कोठरी से आया था ?"

बु०—कोई भी नहीं ! परन्तु राजकुमारी ! तुम्हारे चित्त में यह कैसी बातें समाई हुई हैं ?

थेरि०—एक बात और—! बस एक प्रश्न का मेरे और उत्तर दे दो कि इस कमरे में आने की तुम्हारे कमरे के अतिरिक्त और कोई दूसरी राह भी है ?

बु०—प्यारी लड़की ! मैं फिर वही उत्तर देती हूं कि कोई भी नहीं (फिर थेरिज़ा पर दृष्टि गड़ा कर) मेरी सुन्दर कोकिला ! मैं अनुमान करती हूँ कि रात को वह विद्यार्थी स्वप्न में तुम्हारे पास आया होगा—परन्तु अब मेरी सलाह मानों तो एक बात करो, कि उस विद्यार्थी का ध्यान चित्त से बिलकुल निकाल दो और वहीं कौण्ट की माधुरी मूरत को स्थापन करो, इसी में तुम्हारा कुशल है।

थेरि०—(घमण्ड स) तुझ से वह बात कुछ सलाह लेने के लिये मैंने नहीं पूछी थी। हां यदि तुझे मेरी सेवा करनी है और उस से तू मुझे प्रसन्न रक्खा चाहती है तो जो मैं पूछती हूं उसका उत्तर स्पष्ट रूप से दे।

बु०—सुनूँ भी तो ! कि वह बात क्या है ।

थे०—तुझसे अपने पिता का समाचार मैं जाना चाहती हूँ और मेरी यह भी जानने की इच्छा है कि कल के उस भयानक समर का क्या परिणाम हुवा ?

बु०—यदि इस्के सुन्ने से आप सुचित हो जायँ तो मैं—"

थे०— (बाधा देकर) हाँ हाँ ! मैं सुचित हो जाऊँगी और फिर इस कैद की भी इतनी परवाह न करूंगी, इतना मुझपर प्रगट हो जाना चाहिये कि मेरे पिता, कुशल मङ्गल से अपने दुर्ग में हैं ।

बु०—तो लो " वह कुशल मङ्गल से हैं " हमारे कौएट ने जब देखा कि हमारा मतलब हो गया, अर्थात् तुम उनके हाथ आ गई ! तो फिर तुरन्तही उन्होंने अपनी सैन्य को लौटने की आज्ञा दे दी ।

चालाकी से बुढ़िया ने वह बात छिपा रक्खी कि जिस रहस्यमय बल से इस्के स्वामी की फौज परास्त हुई थी ।

थेरि० तो मेरे पिता अपने दुर्ग में कुशलपूर्वक हैं ! [फिर धीरे २] फिर मुझे काहे की चिन्ता है वह अवश्यही आकर इस अत्याचारी के हाथों से मुझे छुड़ा ले जायँगे ।

बु०— (सुन कर) अब यह आशा अपने चित्त से निकाल दो !

परास्त होने के कारण तुम्हारे पिता का बल बिलकुल ही टूट गया है । हां कदाच् वे इस बात पर सुलह कर लेंगे कि तुम्हारा ब्याह इच्छापूर्वक वे कौएट के साथ कर देंगे ।

इसपर थेरिज़ा ने कोई उत्तर न दिया क्योंकि ऐसी बातें व्यर्थ थीं । और इसके अतिरिक्त उसकी यह इच्छा भी थी कि अकेले बैठ कर कोई निकल भागने की तदबीर करे । बुढ़िया ने भी इसके मौन धारण करने पर कोई और बात अपनी ओर से न छेड़ी और सच तो यों है कि उसका शरीर इस ठण्डी और भयानक आंधी के चलने से कांप रहा था और वह भी विचार रही थी कि चल के किसी गिरजा में, इस आंधी के कम होने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये । इस लिये वह तो उधर चल दी और इधर थेरिज़ा भी अपने स्थान से उठी और पास की कोठरी में चली गई ।

यहाँ आतेही वह फिर अपने सोच विचार में पड़ गई और साथही उसे उस मूरत का भी ध्यान आया जिसे कल गिरजा में वह देख चुकी थी ।

इसका ध्यान आतेही वह तुरन्त अपने स्थान से उठी और बाहर के द्वार पर ज-ञ्जीर चढ़ा, कि जिसें कोई कोठरी में आ न जावे, गिरजा में पहुँची।

जिससमय उसने गिरजा में पैर रक्खा तो इसे ऐसा जान पड़ा मानों वह स्त्री की मूरत इसकी ओर देख २ कर मुस्करा रही है, यद्यपि यह केवल एक दृष्टि का धो-खाही धोखा था, परन्तु थेरिज़ा के चित्त पर उस धोखेही ने इतना असर डाला कि वह भी पुतली की भाँति खड़ी पुतली को देखती रही।

जिससमय थेरिज़ा उस तस्वीर को देख रही थी तो उसे क्रमशः उसे देख २ कर एक ध्यान सा आने लगा और कुछही देर में उसे निश्चय हो गया कि यह तस्वीर इसकी सहेली मेरिया की है, परन्तु फिर वह सोचने लगी कि कल लम्प के प्रकाश में तो यह तस्वीर मेरिया की नहीं मालूम हुई और आज यह उस की कैसे हो गई इसके उपरान्त फिर वह कुछ ठहर कर बोली।

"आश्चर्य—बड़ा ही आश्चर्य! अब मुझे विश्वास लानाही पड़ा! क्योंकि नेत्र वही-बाल वही—मुस्कराहट वही— कपोतों किसी ग्रीवां वही, तात्पर्य यह कि कुल सांचा उसी का है। परन्तु हे भगवान! मैं कैसे विश्वास लाऊँ कि यह तस्वीर उसी की है अरे, कहां, वह एक गरीब किसान की बालिका और कहां यह एक उच्चश्रेणी की, राजकुमारी।"

इसके उपरान्त वह नीची दृष्टि कर कहने लगी कि माना मैंने कि यह मेरिया ही की तस्वीर है, परन्तु फिर उसे इस दुर्ग में लाने और ऐसे एक गुप्त गिरजा में रखने से क्या लाभ!

आंधी अभी बड़ेही वेग से वह रही थी जिससे उसका कलेजा धड़क रहा था और यही कारण था कि वह इधर उधरकी वस्तुओं से चित्त बहला रही थी अन्त उसनें सोचा तो जान पड़ा कि उसका सोच वृथा है क्योंकि कोठरी की दीवारें इतनी छोटी और दृढ़ थीं कि आधी से कोई क्षति उन्हें नहीं पहुँच सकती थी।

यह सोच हिचकिचाते हुये उसने अपनी उँगली को उस खटके से लगाही दिया जिससे वह रहस्यमय द्वार तुरन्त खुल गया।

इसके खुलतेही पहले तो यह झिझकी परन्तु फिर इसने अपने को सँभाल के द्वार के भीतर की वस्तु देखना प्रारम्भ किया, इसके सामनेही एक लम्बी और संकरी राह थी जिसमें दाहिने बांये बहुत से छेद बने हुये थे और उनसे होकर प्रकाश भीतर आ रहा था।

अब उसने द्वार में प्रवेश किया और लग भग बीस फीट जाने के उपरान्त, उसे एक और द्वार दिखाई दिया। यह इस द्वार से बिलकुल सट गई और कान लगाके सुन्ने लगी परन्तु भीतर से कोई शब्द न सुन पड़ा। अब धीरे से एक धक्का इसने दिया जिस से जान पड़ा कि द्वार में ताला लगा है। परन्तु उस स्थान की लकड़ी जिसमें कि वह ताला लगा था, बहुतही सड़ी हुई थी, जो इसी एक हलके धके से चिरचिरा गई और फिर जो दूसरा धक्का उसने लगाया तो वह लकड़ी टूट गई और द्वार खुल गया।

थेरिज़ा ने अब अपने को एक छोटी कोठरी के सामने पाया जिस में एक पलङ्ग बिछा हुआ था, और साथही उसके इधर उधर अन्य वस्तुयें भी रक्खी हुई थीं परन्तु वह सब इतनी पुरानी थीं कि जिनका अनुमान करना कठिन हो रहा था।

परदे मसहरी के फटे हुये और गर्द में लतपत थे। ऐसा जान पड़ता था मानों बरसों से यहां कोई आयाही नहीं, बिछौने के पुराने कपड़े इस तरह सिकड़े हुये पड़े थे कि जैसे कोई सोता २ उठ के गया था।

पलङ्ग के निकटही एक टेबुल और एक कुरसी रक्खी हुई थी, टेबुल पर भोजन का बचा हुआ भाग रकाबी में रक्खा हुआ था जिस के निकटही एक तह किया हुआ रूमाल रक्खा था और उसी के निकट मोरचे से छिपे हुये छुरी और कांटे रक्खे हुये थे।

एक जल की सुराही भी इसी टेबुल पर थी जिसपर मकड़ी ने जाला तान दिया था और इन सब वस्तुओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानों इस अन्तिम भोजन को चुने गये अनेकानेक वर्ष बीत गये थे।

इस कोठरी को देख २ के बहुत से भयानक ध्यान चित्त में आते थे, परन्तु जब थेरिज़ा ने एक छोटी खिड़की को देखा जिस में लोहे के डण्डे लगे हुये थे तो यह समझ गई कि निश्चय यह कोई गुप्त बन्दीखाना है।

इतना चित्त में आतेही उसका सारा शरीर कांपने लगा, फिर जब उसे ध्यान आया कि किसी बेचारे ने यहां रात की कठिन और भयानक घड़ियां तड़प २ के व्यतीत की होंगी तो इसके चित्त पर भय बैठ गया और बदन का रक्त ठण्ढा पड़ गया, घबरा कर वह वहां से भागनेही को थी कि सहसा उसकी दृष्टि एक अधखुले द्वार पर पड़ गई जो उस पलङ्ग के पांयते बना हुआ था।

कांपते हुये शरीर को सम्भाल कर और धड़कते हुये चित्त को दोनों हाथों से द-बाकर थेरिज़ा ने कोठरी में कौतुक वश प्रवेश किया।

थेरिज़ा ने कोठरी में पहुंच कर जब चारों ओर दृष्टि जमा के देखना प्रारम्भ किया तो जान गई कि इसमें कोई स्त्रीही कैद की गई थी।

साथही उसे यह भी ध्यान हुवा कि ईश्वर जाने कैसा कष्ट बेचारी को दिया गया होगा।

अभी वह, इतना सोचही रही थी कि आंधी के प्रबल वेग से दुर्ग का बड़ा झण्डा दो टुकड़े होकर एक बड़े धमाके के साथ भूमि पर गिर पड़ा।

इस शब्द के होतेही थेरिज़ा का हृदय कांप गया और वहां से वह पलटाही चाहती थी परन्तु फिर उसके शौक ने उसके पैर पकड़ लिये और वह ठरहकर एक बार कोठरी को गहरी दृष्टि से देखने लगी।

देखते २ सहसा उसकी दृष्टि एक लपेटे हुये कागज़ पर पड़ी जो बिलकुल ही गर्द से छिपा हुआ कोठरी की गच पर पड़ा था। उसे देखतेही इसने तुरन्त उठा लिया तो जान पड़ा कि कागज़ के चारों ओर तार लपेटा हुआ है और बाहरी भाग पर बड़ीही गर्द जमी हुई है, और इसका एक सिरा भी बिलकुलही गल गया है।

थेरिज़ा नें कागज़ को झाड़ कर उन लिपटे हुये तारों को खोल दिया और फिर कागज़ की परत जो खोली तो जान पड़ा कि इसमें कुछ लिखा हुआ है।

पहले तो इसकी इच्छा हुई कि उसे पढ़े परन्तु फिर उसने अनुमान किया कि मुझे अपनी कोठरी से आये देर हुई ऐसा न हो कि बुढ़िया आ जाय।

बस इतना सोचतेही यह झट पट कोठरी के बाहर आ गई और वहां से इस गुप्त द्वार के बाहर हो, तुरन्तही द्वार बन्द कर दिया, और उस कागज़ को वहीं गिरजा में छिपा, जल्दी २ अपनी कोठरी में आ गई।

यह राह में सोचती आती थी कि कागज़ को किसी स्वतंत्रावस्था में देखूंगी।

आंधी अभी तक बड़ीही प्रचण्डता से बह रही थी। दुर्ग के कुल संतरी अपना २ पहरा छोड़ के हट गये थे। दुर्ग की भारी से भारी तोपें उलट गई थीं चारों ओर एक महाप्रलय का सा दृष्य उपस्थित था—इस समय थेरिज़ा ने धीरे २ कहना प्रारम्भ किया "प्रभो! बेचारे झोंपड़ियों में रहने वालों की रक्षा कीजियो! हाय! इस आंधी ने न जाने कितने घरों को उजाड़ दिया होगा और नकी को मालम होगा कि उनमें रहने वाले बेचारों की क्या दुर्गति हुई होगी।"

अभी थेरिज़ा यही कह रही थी कि सहसा द्वार पर पैरों के शब्द सुन पड़े और इसके उपरान्तही फोस्ट कोठरी में आ गया।

नवां बयान।

भेद।

थेरि०—(फोस्ट की ओर दौड़ के) प्यारे! तुम यथार्थ में अपनी बात के बड़े धनी हो।

फोस्ट—(बड़े चाह से गले लगाकर) प्यारी! तो तुम क्या मुझे स्मरण करती थीं? मेरी बाट जोह रही थीं?

थेरि०—(तुच्छता से) तो क्या तुम्हें इसमें कोई सन्देह है? हाय! जब से मैंने तुम्हारी मोहनी मूरत देखी तभी से तुम्हें हृदय में मैं स्थान दिये बैठी हूं।

फोस्ट—तो क्यों प्यारी उस दरिद्र विद्यार्थी को जब वह तहखाने में कैद था, तो तुमने उसे चित्त से नहीं भुलाया था।

थेरि०—(जोश से) कदापि नहीं! एक क्षण के निमित्त भी नहीं। यद्यपि मुझसे यह सब कहा गया था कि तुम एक नीच स्त्री को लेकर विटेनवर्ग से भाग गये और अपनी फजूल ख़र्चियों से यहां बहुतसा क़र्ज़ भी कर गये और अपने मित्रों को भी धोखा देत गये, इसके अतिरिक्त और भी अनेकानेक प्रकार की बातें एसी कही गई थीं कि जिनसे मेरा चित्त तुह्मारी ओर से हट जाये, परन्तु मैंने एक बात का भी विश्वास न किया, और मैं तुह्में अपने हृदय से वैसाही चाहती रही जैसा कि पहले, और कभी प्यारे स्वप्न में भी मुझे इसबात की शङ्का न हुई कि तुम मुझे धोखा दोगे।

फो०—आह! यदि तुह्मारी बातें सच होतीं—"

थे०—(जोर से) क्या तुम मेरी बातों पर संदेह करते हो? क्या मैंने तुमसे कभी भी कोई झूठ बात कही थी? क्या मैंने तुह्में कभी कोई धोखा दिया था? या मेरा कोई ऐसा काम हुवा है जिससे तुम्हें संदेह मात्र भी हो?

फोस्ट—(मलामत से) और उस तस्वीर की तो कहो जिसे तुम ऐसे प्यार से देखा करती थीं—"

थे०—(जोर से चिल्लाकर) क्या तुह्में मालूम है?

फो०—थेरिज़ा ! मैं सब कुछ जानता हूँ, मुझे यह भी मालूम हैं कि तू अपनी कोठरी में अकेली बैठी हूई उस तस्वीर को बड़ेही चाह से देखा करती थी। और हाँ प्यारी ! इतने चाह से, कि आश्चर्य न था कि केवल तेरी शौक भरी दृष्टि से ही तस्वीर में प्राण पड़न आते और वह खिलखिला के हँस पड़तीं।

थे०—तो तुम बस इसी बात पर मुझसे घृणा करते हो ? "इतना कहकर थेरिज़ा, फोष्ट को बड़ीही हैरानीं से देखने लगी।"

फो०—हाय ! थेरिज़ा तुमने मुझे, नीच, दारिद्री और विश्वासघाती समझा है, इतना कहकर फोष्ट उससे कुछ अन्तर पर हट गया और बड़ेही शान से कहने लगाः—

"प्यारी ! यदि तू ऐसा प्रेमी चाहती है कि जो संसार की कुल वस्तुओं को एक क्षण में तेरे सामने उपस्थित करदे, और संसार के उत्तमोत्तम रत्न, जिनकी कांक्षा बड़े २ सम्राट करते हैं तेरे अलङ्कारों की शोभा बढ़ाने के लिये ला दे; और यदि तू ऐसे व्यक्ति की अर्धाङ्गिनी हुवा चाहती है जो भारी से भारी रियासत और ऊँचे से ऊँचे सजे हुये महलों का अधिकारी हो और सहस्रों लौंडी बाँदियाँ तेरी सेवा के निमित्त रख सके, और यदि तू शाहंशाह बेगम का सा अधिकार, मान, मर्यादा और शान दिखाया चाहती है तो मुझे आज्ञा दे—तनिक ज़बान हिला दे और फिर तमाशा देख, कि कैसे मैं तेरी बड़ी से बड़ी आज्ञा का क्षण भर में पालन करता हूं, और कैसे मैं उन तेरी आशाओं को जिनका पूरा होनां मनुष्य की शक्ति से बिलकुल बाहर है पूरा करता हूं"

जिस्समय फोष्ट ऊपर लिखी बातें कह रहा था उस्समय एक हार्दिक वेग से उस्का कुल शरीर गरम और चेहरा लाल हो रहा था, उस्के नेत्रों से अग्निस्फुलिङ्ग वहिर्गत हो रहे थे। इस्समय वह एक; बड़ा सम्राट् जान पड़ता था जिस्के अधिकार में पृथ्वी के समस्त खजाने हों और जिस्के सामने बड़े से बड़े बादशाह गरदन झुकाये खड़े हों;—उस्के एक एक शब्द से एक अनोखी शान टपक रही थी। इस्से थेरिज़ा डर गई।

एक क्षण के निमित्त तो उसे जान पड़ा कि उस्का प्रेमी विक्षिप्त हो गया है, परन्तु नहीं,—फोष्ट के एक २ अक्षर से सचाई की बू पाई जाती थी, जिस्से यह बड़ेही आश्चर्य में आई।

थे०,—फोष्ट ! तुमने तो इस्समय ऐसी बातें कीं जिनसे जान पड़ता है कि तुम मुझे एक स्वार्थी समझे हुये हो, खेद का विषय है कि तुमने भारी चूक की, और मुझे भली

भाँति पहचान न सके। अरे, चाहे तुम कैसेही क्यों न हो, और कोई क्यों न हो, जैसा कि तुमने अबलों मुझसे छिपा रक्खा था–परन्तु मैंने तो एक दरिद्री विद्यार्थी ही समझकर तुम्हें हृदय में स्थान दिया था! इसलिये तुम्हें भी मुझपर पूरा भरोसा रखना चाहिये।

थे०—परन्तु जब मैं कारागार में डालदिया गया था—और जब मेरे ऊपर वह झूठे दोष लगाये गये थे—तब—तबतो थेरिजा! तुमने बेचारे विद्यार्थी को बिलकुलही भुला दिया था।

थेरि०—फोस्ट! इसमें मेरी बड़ी बे इज्जती है, इतना बड़ा दोष मुझ पर न लगाओ!

फोस्ट—तो क्या तुमने अभी २ यह नहीं कहा था कि मैं उस तस्वीर को देखा करती थी फिर—"

थेरि०—हां मैंने कहा तो था! और फिर भी वही कहती हूं, परन्तु यदि तस्वीर का देखना एक बुरी बात थी, तो तुम्हें तो ऐसा न कहना चाहिये था।

फोस्ट—(दुखी होकर) तो फिर और किसे कहना चाहिये था? क्या तेरे उस प्यारे को, जिसे यह नहीं मालूम कि मैं तेरे पास हूं।

थेरि०—(धीरे से) कौन प्यारा? प्यारा कैसा?

फोस्ट—(जोर से) वही प्यारा जिस्की तस्वीर देखने के विषय में हम अभी बातचीत कर रहे थे।

थेरि०—(नेत्रों में जल भरकर, जोर से) यह बात! यहां लों जा पहुंची! प्यारे! कभी ऐसा भी हुआ है कि प्रेमी की तस्वीरही प्रेमी की बैरी हो।

फोस्ट—(क्रोध से) वाह बात बनाने का भी कितना अच्छा ढङ्ग तुम्हें मालूम है। भला हमारी तस्वीर तुम्हारे पास कहां से आई?

यह बात सुन्तेही थेरिज़ा क्रोध से लाल हो गई, परन्तु फिर वह अपने वेग को बहुत कुछ सम्भाल कर बोली "महाशय! यदि मैं तुम्हारी बात सच समझती, तो फिर उसका उत्तरही क्यों देती! अस्तु! तो मैं अपने ऊपर मिथ्या दोष भी नहीं लिया चाहती और इस रहस्य को खोले देती हूं। तुम्हें याद होगा कि तुम्हारा एक मित्र आटू तुम्हारे साथ स्कूल में पढ़ता था।"

फोस्ट—याद क्यों नहीं है, अरे वही ना; जिसकी बहिन एडा तुम्हारी सहेलियों में है, और, जिस्के द्वारा मुझ से तुम्हारा प्रथम साक्षात हुआ। फिर उस से तुम्हारा क्या तात्पर्य?

थेरि०—अच्छा ! तो तुम्हें यह भी याद होगा कि आटू एक बड़ा भारी चित्रकार है । और फिर इसके उपरान्त क्या यह कोई आश्चर्य की बात है कि मैंने उसकी वहिन एडा से तुम्हारी एक तस्वीर खिंचवा मँगाई ?

फोस्ट—थेरिज़ा ! तुम्हें यह नहीं मालूम, कि कितना असर तुम्हारी बातों का हमारे चित्त में होता है । अब तुम मुझे इस्वात का साफ २ उत्तर दो कि जैसे—"

थेरि०—(बात काट कर) कि जैसे कोई ईश्वर के सामने सच सच कहता है क्यों फोस्ट ?

फोस्ट—[कांप कर] नहीं—ऐसे नहीं—ऐसे नहीं—वरन् जैसे कोई अपने पिता के सामने या जब वह मृत्यु शय्या पर पड़ा हो तो पादड़ी के सामने सच सच बताता है—तो हां तुम यह सच २ कहती हो ?

थेरि०—फोस्ट ! यद्यपि मैं तुम्हें इतना चाहती हूं, परन्तु मुझसे तुन्हारी ऐसी बातें सहन नहीं की जा सकतीं ।

फोस्ट—(जोर से) और तस्वीर वह तस्वीर कहां है ?

थेरि०—यह है !

यह कहकर थेरिज़ा ने अपनी छाती के कपड़ों में से वह तस्वीर निकाली और फोस्ट के हाथ में देकर बोली "उसका स्थान यही है ।"

फोस्ट ने वह चित्र हाथ में लेकर एक दृष्टि उसपर डाली और साथही उसके चेहरे का रङ्ग बदल गया ।

फोस्ट—हाय ! मुझे धोखा दिया गया-धोखा-बड़ेही बुरे तौर से धोखा दिया गया ! और इस धोखे ने मेरी यह गति कर दी ।

थेरि०—प्यारे ! यथार्थ में तुमने धोखाही खाया है ! जिन्होंने तुम्हें मेरी ओर से इतना रुष्ट करा दिया है वह वास्तव में बड़ेही बुरे हैं ।

फोस्ट—[जोर से] अब मैं सब समझ गया ! हाय ! यदि जो मैं यही जानता कि यह तस्वीर मेरीही है तो यह दुर्गति काहे को होती !

थेरि०—फोस्ट ! तुमने तो मुझे डरा सा दिया ! तुम्हारी बातें कुछ बड़ीही बहकी २ हुई, कहीं तुम विक्षिप्त तो नहीं हो गये ? और यह तो बताओ कि तुमने वह बादशाहों की सी बातें किस अवस्था में कही थीं ? और तुम यहां आ जा कैसे सकते हो ?

फोस्ट—(चौंक कर) थेरिज़ा ! इसका अब समय नहीं है कि मैं तुमसे सब बातें भली प्रकार समझा के कह सकूं परन्तु तू मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारी है और मैंने तुझे किसी समय भी विस्मृत नहीं किया था ।

थेरि०—(बड़े जोश से) क्यों नहीं प्यारे ! मुझे भी तुम से ऐसीही आशा थी ।

फोस्ट—तो प्यारी ! अब सब तेरे प्रेम पर मैं निर्भर करता हूं । मुझे अब किसी प्रकार के शपथ वा प्रतिज्ञा कराने की आवश्यकता नहीं हैं ! प्यारी तेरे प्रेम ने मुझे तेरा कौड़ियों का खरीदा गुलाम बना रक्खा है "इतना उसने धीरे से कहा और फिर जोर से बोला" मैं तुम्हें इस बन्धन से मुक्त करूंगा थेरिज़ा—मैं तुम्हें इस कष्ट से आजही उद्धार करूंगा—क्योंकि मुझमें इतनी शक्ति है । अच्छा ! आज आधी रात को तुम तैयार रहना मैं आऊंगा और तुम्हें तुम्हारे पिता के पास पहुचा दूंगा ।

इतना कहकर फोस्ट ने थेरिज़ा को चूम लिया जिसपर वह एक बांकी अदा से फोस्ट की ओर देख के बोली " फोस्ट तू मेरा प्राण है तेरे स्नेह में मैं निसदिन बत्ती की तरह जला करती हूं "

फोस्ट—आधीरात को थेरिज़ा – आधीरात को—मैं अवश्य तुम्हें छुड़ाने यहां आऊंगा !

इतना कहकर फोस्ट शीघ्रता से उस रास्ते से निकल गया जो बुढ़िया की कोठरी से होकर बाहर जाता था और बुढ़िया अभी गिरजा में बैठी प्रार्थना कर रही थी ।

थेरि०—(आपही आप प्रसन्नता से) आधी रात को वह निश्चय यहां आयेगा, और फिर मैं यहां से निकल के अपने पिता से जा मिलूंगी । परन्तु आश्चर्य तो यह है कि वह यहां लों बे रोक टोक आ जा कैसे सकता है ।

दसवाँ बयान ।

लिखावट ।

आँधी अबलों, उसी प्रचंड वेग से चल रही थी । दोपहर के समय बुढ़िया भोजन रखने के निमित्त इस्की कोठरी में आई और फिर भोजन रखके तुरन्तही गिरजे में प्रार्थना के निमित्त लौट गई ।

थेरिजा अब भोजन करने के उपरान्त, द्वार इत्यादि दृढ़ता से बन्द कर विश्रामागार में गई। उसका चित्त अब छुटकारे के वादे से प्रसन्न हो रहा था और निश्चिन्तता पूर्वक उसने उस कागज को जिसे गिरजा में छिपा आई थी निकाला और एक कुरसी पर बैठ के वह पढ़ने लगी।

यह हम पहिलेही लिख आये हैं कि वर्षहा वर्ष की लिखावट होने के कारण कागज का एक कोना गल गया था और इसलिये लिखावट के सिलसिले में बहुत सी सतरें मिट गई थीं। इस कागज के लिखे अक्षरों से प्रतीत होता था कि किसी स्त्री के हाथ के हैं।

जो कुछ कि थेरिजा उस कागज में पढ़ सकी उसका हम एक २ अक्षर नीचे अनुवाद किये देते हैं जिसे देखकर उसके आश्चर्य, भय, और कौतूहल, की सीमा न रही।

पत्र की लिखावट।

संसार में इस से बड़ी दगाबाजी और क्या हो सकती है। एक सुनसान कोने में पड़े रहना और अपनी भविष्य की भयानक अवस्था का पूरे २ तौर से अनुमान न करना बड़ाही कष्टदायक बोध होता है। हाय! दारुण दुख उपस्थित है! असैह वेदना प्राणों को बोध होती है! भला इसका तात्पर्य क्या है? क्या वह मुझ असहाया के रक्त से अपने हाथ रँगेगा?—परन्तु एसा नहीं हो सकता - यदि उसे मुझे मारही डालना था तो एकही दिन में वह मुझे मार सकता था क्योंकि मैं सर्वतोभाव से उसके वश में हूं! और अब तो छः भयानक और महा दुःख दायी सप्ताह व्यतीत हो चुके हैं! केवल दुःखदायीही नहीं वरन् उस समय जब किसी के पैरों का शब्द और द्वार के खुलने की चरचराहट सुन पड़ती है तो मैं बेद की तरह कांपने लगती हूं। मेरी मृत्यु मेरे सामने खड़ी दिखाई पड़ती है। हाय इन सब आपत्तियों ने तो मुझे एकदम विक्षिप्त कर दिया-मेरे माथे में चक्कर आता है - मेरे नेत्रों के सामने अनेकानेक प्रकार की भयानक मूरतें घूमती दिखाई पड़ती है मेरे कानों में लोमहर्षण चीत्कार सुनाई पड़ते हैं। भला यह कबलों रहेगा? क्या मेरे भाग्य में यही सब लिखा था? क्या संसार मेरे लिये उजाड़ हो गया? क्या अब मेरे लिये कुछ भी नहीं है? भगवान! जब . . . . रस्सी और खञ्जर उनके मृत्यु के चिन्ह हैं तो मैं कैसे निर्णय कर सकती हूं कि किस हत्यारे ने उनका

वध किया। परन्तु खेद तो मुझे मेरे प्यारे बच्चे का है। मैं ढ़ाड़ें मार २ के रोतीही रही और मेरी प्यारी बच्ची मुझ से पृथक कर दी गई। हाय! यह कितना बड़ा अत्याचार है! और फिर मेरे ऊपर, जिस कभी किसी का हृदय नहीं दुखाया है। जिसने कभी उस अतुल सम्पत्ति को देखके जो उसके चारों ओर मिट्टी की तरह बिछी रहता थी घमण्ड नहीं किया। मैं गरीब दुखियाओं के झोपड़ों में जा २ के उनके रोगियों को देखती और सामर्थ भर उनकी सेवा सुश्रुषा कर धैर्य धराती घर को लौटती थी। मैं अपने कुल नौकरों में प्यार और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखी जाती थी इसका कारण यह कि मैंने कभी भी उन्हें कटु वाक्य न कहे। मैं जो . . . . प्यारी बालिका क्या मैं तुझे फिर एक बेर देख सकूंगी? हाय यदि मेरा पकड़ने वाला केवल मुझे किसानोंही के झोंपड़ों में जाके अपने जीवन के दिवस व्यतीत करने दे तो मैं बड़ी प्रसन्नता से इसे स्वीकार करूंगी परन्तु आजकी साक्षात ने तो मेरी कुल अशाओं पर पानी फेर दिया है। अब उसके कुटिल हृदय के निकले हुये भयानक विचार सब मुझे मालूम हो गये अब मैं इस से भी भली भांति अवगत हो गई कि उसने इतने दिवसों पर्यन्त मुझे क्यों न मारडाला और उसने कैसी गंभीरता से आके मुझ से कहा कि संन्सार तो मुझे मृतक समझता है और इसके अतिरिक्त और मेरे जीवन की कोई राह नहीं है कि मैं अपने स्वर्गवासी पति के भांति उस से भी प्रीति करूं।

परन्तु उसने क्या कहा? मेरे कानों ने सुन्ने में धोखा तो नहीं खाया मेरी भलाई इसी में है कि संसार को मुँह न दिखाऊँ। इसपर मेरा बच्चा भी मुझे दिया जायगा और अनेक प्रकार के आराम की वस्तुयें भी मेरे निमित्त एकत्रित की जाँयगी परन्तु मुझे छुटकारा नहीं मिलेगा जबलों कि मै अन्त में अपने मुँह में कालिख लगाने का साहस न कर लूं—अपने प्रीय पति के नाम को कलुषित न कर लूं—मैं अपनी बेचारी बच्ची को बे इज्जत न कर लूं—और उस्की बेहयाई से कही हुई कुल बातों को स्वीकार न कर लूं—मुझे आश्चर्य है कि उसे इतनी बातों के कहने का साहस कैसे हुवा? इस घृणा युक्त विषय को उसने कैसे मेरे सामने उपस्थित किया? परन्तु उस्की बातों को जब मैंने अस्वीकार किया तो कैसा क्रोध से लाल हो के वह मुझे घूरने लगा। साथही मैंने जो उसे धिक्कारना प्रारंभ किया तो और भी वह अङ्गारों पर लोटने लगा। अब मुझे उससे, किसी प्रकार की भलाई की आशा नहीं रखनी चाहिये, मैं अब मृत्यु

के निमित्त प्रस्तुत हूं, जिससमय मैं पैरों का शब्द सुनूं तो मुझे अपनी आत्मा को ईश्वर के सुपुर्द कर देनी चाहिये क्योंकि आश्चर्य नहीं कि उस्के दूसरे क्षण में मैं समाप्त कर दी जाऊँ परन्तु इसपर भी एक ध्यान मुझे बड़ाही दुखी किये हुये है, यदि मुझे मेरी प्यारी बच्ची का ध्यान न होता तो मैं सुख पूर्वक प्राण विसर्जन करने को प्रस्तुत हो जाती।

अपने जीवन की आशा केवल इसलिये मैं करती हूं कि एक बार कदाच् मेरी प्यारी बच्ची से मुझसे पुनः साक्षात् हो जाये। ह्यूगो, वह व्यक्ति, जो मेरा भोजन लाया करता है, और जिसने मेरी हीन अवस्था पर दुखित होके मुझे लेखनी और कागज ला दिया है जिस्से मैं अपना यह वृन्तान्त लिख रही हूं—उस्का हृदय, मेरी ओर से बिलकुलही नरम हो रहा है, इसलिये उस्के स्वामी ने उसपर भी कुछ कड़ाई की है। यद्यपि मैंने उससे कहा है कि अपने छुटकारे पर मैं तुम्हें बहुत कुछ पारितोषिक दूंगी परन्तु यह क्या संभव है? वह बेचारा मुझे कैसे यहाँ से निकाल सक्ता है? मैंने व्यर्थ ही अपने हृदय में आशा अंकुर को स्थान दे रक्खा है, क्या कभी वह फूट के वृक्ष होने वाला है? . . . . मैं पुनः

ह्यूगो के पैरों पर गिर पड़ी। गिड़ गिड़ाई विनती की—धमकी भी दी—परन्तु उस्का कोई फल न हुआ। वह मुझे अपने पैरों पर पड़ा पाके रोने लगा; और उस समय वह और भी दुखी हुवा जब मैंने अपनी बच्ची के लिये कहा। कदाच वह भी लड़के वालों वाला है, और यही कारण है कि वह मुझपर बड़ाही अनुग्रह करता है। परन्तु उस्के मौनावलम्बन से मेरा दम घबराता है। वह मेरे प्रश्नों के उत्तर में केवल सिर हिला देता है परन्तु कोई उत्तर स्पष्ट नहीं देता। जब मैं लिखने की सामग्री एकत्रित कर देने पर उसे धन्यवाद देने लगी तो उसने क्या जाने क्यों द्वार की ओर इंगित करके नाक भौं चढ़ाई और शीघ्रता से बात को काट दिया। अच्छा! अब मैंने लक्ष किया कदाच वह अविश्वासी ठहराया गया है इससे जब वह मेरी कोठरी में आता है तो कदाच् कोई दुसरा मनुष्य उस्की निगहबानी करने के लिये उस्के साथ २ द्वार तक आता है, कदाच् उस्के मौनधारण का यही कारण है! और हाँ यथार्थ में ऐसा हैही। यदि उस्की रक्षा के लिये कोई व्यक्ति और साथ न आता होता तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह मेरे निकलने का कोई प्रबंध अवश्य करता। और कदाच् वह मुझसे बात चीत करने का कोई स्वतंत्र समय ढूंढ़ता है! हमें तो उस्की चालों से

ऐसाही बोध होता है। परन्तु जब मैं दिन भर का वृत्तान्त लिखलेती हूं तो मेरे कष्ट का बोझ हलका क्यों हो जाता है ? और भला यह बातें मैं लिखती ही क्यों हूं ? हाय ! यदि मैं उसकी आज्ञा से, या उसके हाथ से जिसने मुझपर इतने अत्याचार किये हैं मारी भी जाऊं तो भी यह लिखावट योंहीं यहीं पड़ी रहेगी और कदाचू किसी दिवस किसी ऐसे सक्ति के हाथ आ जावे जो मेरे मृत्यु के उपरान्त इसे पढ़के मेरा बदला लेवे। हाय ! मुझे यह क्या हो गया है आज मेरे हृदय में बदले का विचार क्यों आ रहा है—मैं समझी ! ऐसे आनन्द और सुख के स्थान से गिराये जाने पर मनुष्य मात्र का चित्त, विना बदले के ध्यान के किसी प्रकार उस दुःख को सहन नहीं कर सक्ता। . . . .

. . . एक दिवस और व्यतीत होगया, परन्तु आज मध्यान्ह काल में जब वह पिशाच आया और पुनः वैसेही बातें उसने प्रारंभ कीं तो मैं किस प्रकार काँप उठी हूं, जब मेरा चेहरा क्रोध से लाल हो गया और मैंने सकोप गरज कर कहा "क्या तू मुझे ऐसी तुच्छ और नीच समझता है कि मैं इस मंदिर में तेरे हांथ से हाथ मिलाऊँ और फिर वह हाथ भी कौन ? जिसने अभी कुछ दिवस हुये मेरे प्यारे पति का रक्त बहाया है" मेरे इतना कहतेही वह भी चिल्ला के बोला "मूढ़ स्त्री ! क्या तू नहीं जानती कि यदि तूने मेरी बात को अस्वीकार किया तो इसका बदला तुझसे कैसे लिया जायगा ? तेरा पति एक बड़ी भारी अधिकारी अदालत की आज्ञा से मारा गया है कारण यह कि उसने गुप्त सभा की आज्ञा को अस्वीकार किया था"। इसपर मैंने चिल्ला के कहा "क्या गुप्त सभा ने यह कार्य न्याय से किया ? क्या उक्त सभा ने हमारे स्वामी को अदालत में उपस्थित होने की आज्ञा भेजी थी ?" इसपर उसने उत्तर दिया मैं तुझ से वादाविवाद करने नहीं आया हूं मैं तो केवल कुछ नियम तेरे सामने उपस्थित करने आया हूं यदि उन्हें तू स्वीकार करेगी तो तेरे प्राण बचेंगे तेरी लड़की भी तुझे दे दी जायेगी" यह सुन्तेही मैंने चिल्ला के कहा "प्राण ! अरे इसकी लालच तू मुझे क्या देता है ऐसे जीवन को लेके मैं क्या करूंगी जब वह मेरा चाहनेवालाही इस संसार से चल बसा तो मैं अब जीवित रह कर क्या करूंगी मुझे तू मारही डाल" इसपर उसने उत्तर दिया "मैं तुझे पुनः तीन दिवस का अवकाश देता हूं परन्तु इतना ध्यान रखियो कि पुनः जब मैं आऊं तो इस प्रकार की बातें न सुनूं" इतना कहकर वह चला गया। . . . . .

. . . . ह्यूगो आया, परन्तु उसके मुखड़े से और दिनों

की अपेक्षा आज, कुछ विशेष दया झलक रही थी इसको देखतेही मैं उसके चरणों पर गिर पड़ी और बहुत गिड़गिड़ा कर बोली कि मुझे इस बन्धन से छुटकारा दो। इसपर उसने धीरे से उत्तर दिया "तुम्हारी इस अवस्था पर मुझे सचमुचही बड़ा खेद होता है जो तुम्हें भली भांति प्रतीत भी हो चुका होगा। मैं इस सरकार में बड़ा वफादार माना जाता था परन्तु अब मुझपर विश्वास नहीं रहा। कारण यह कि अब मुझपर एक रक्षक नियुक्त किया गया है, आज कठिनता से समय पाके तुम्हारे पास चोरी से उपस्थित हुआ हूं इसपर मैंने पूछा "मेरे बच्ची की क्या अवस्था है ह्यूगो ?" इसका उसने उत्तर दिया "शुभे तुम्हारी बालिका एक सुरक्षित स्थान में भली भांति रक्खी गई है परन्तु वह ऐसे मनुष्यों के पास है जो . . . .

. . . . अब केवल मुझे यही एक आशा रह गई कि यह मेरा दुखों से भरा कागज किसी ऐसे व्यक्ति के हाथ तले आये कि जो हमारा बदला लेके दोषियों को दण्ड देवे। ह्यूगो की बातों से प्रतीत होता है कि मेरी प्रिय पुत्री के प्राण बचे रहेंगे, कदाच वह पापाणहृदय पापिष्टी एक अनजानबालिका का रक्तपात न करेगा, जगदीश्वर ऐसाही करें और हमारी प्यारी बच्ची अपने हक को पहुंच जाये।

मृत्यु के भय से तो मैं कभी उस दुष्ट की बातों को न स्वीकार करूंगी। वह पहले तो मेरे स्वर्गवासी पतिका हत्याकारी है दूसरे कितनी वेदना उसने मुझे पहुंचाई है। और अभी कुछ घण्टों के उपरान्त अन्तिम उत्तर वह मुझ से लेने आयेगा। परन्तु अब मृत्यु के निमित्त तैयार रहना चाहिये। आज कुशगुन भी कैसे भयावने हो रहे हैं। ह्यूगो के स्थान अब एक दूसरा व्यक्ति मुझपर नियुक्त किया गया है जो मेरे प्रश्नों का उत्तर पर्यन्त नहीं देता। निर्दयी देखने में भी बड़ाही भयानक है। और फिर वह छोटी चिड़िया जो सदैव प्रातःकाल आके इन झरोखों पर बैठा करती तथा अपनी प्यारी बोली मुझे सुनाया करती थी आज वह भी मुझे देखके भड़कती है मेरी सूरत से भय खाके उड़ जाती है। हाय यह लिखावट जिसे मैं मानों अपने नेत्रों के रक्त से लिख रही हूं मेरी अन्तिम लिखावट होगी इस लिखावट के प्रारम्भ में तब मैंने उन कुल घटनाओं का उल्लेख किया जो . . . .

इसके उपरान्त की लिखावट बिलकुल ही न पढ़ी गई, परन्तु जान पड़ता था कि आगे दोही चार पंक्तियां होंगी जो बहुतही पुराने होने के कारण बिलकुल ही मिट गई थीं।

अब थेरिज़ा ने आपही आप कहा "हाय! बेचारी स्त्री बड़ेही बुरी भांति दुखित की गई, और यह लेख भी उसका पूरा वृत्तान्त प्रगट नहीं करता कारण यह कि इसमें बहुत से इशारे ऐसे किये गये हैं कि जो वे स्पष्ट रूप से लिखे जाते तो इस लिखावट से कहीं बढ़ जाते परन्तु खेद का विषय है कि लिखावट के प्रारम्भ का भाग बिलकुलही नष्ट हो चुका है। और यदि ये कुल कष्ट जो उस स्त्री ने सहन किये सत्य हैं तो वास्तव में बेचारी पर बड़ाही अत्याचार किया गया।"

इसके उपरान्त भांति २ के सन्देह थेरिज़ा के चित्त में इस लिखावट पर होने लगे। सोचते २ उसने कौन्ट लिन्सडर्फ की कहानी को पुनः स्मरण किया जिसे बचपन में एक बेर उसने सुना था।

अब क्रमशः उसने, उस कहानी और इस लिखावट का मिलान करना प्रारम्भ किया तो सहसा उसे ध्यान आया कि इस लेख का लिखनेवाला कौन्टेस एडिगरेडा के अतिरिक्त और कोई नहीं जिस्का सुशील स्वामी सिगिसमेन्ड था जो अदालत विम की आज्ञा द्वारा मारा गया था और जिसके उत्तम आचार व्यौहार का चरचा अबलों लोगों की जिह्वा पर है। अब थेरिज़ा यह भी समझ गई कि वह अत्याचारी, जिसने इस दुखियारी पर भयानक अत्याचार किये, कौन्ट मेनफ्रेड के अतिरिक्त और कोई नहीं।

थेरिज़ा ने जो कुछ ऊपर अनुमान किया, वह अब दृढ़ता से उसके हृदय में बैठ गया।

अब वह कौन्ट पर पहले से भी कुछ विशेष घृणा करने लगी। उसके कोमल हृदय पर कौन्ट के अत्याचारों के प्रतिबिम्ब ने एक बड़ाही बुरा असर डाला।

इसके उपरान्त वह फोस्ट के आगमन की प्रतीक्षा चिन्तित हृदय से करने लगी, क्योंकि उसके आने का समय अब बहुत निकट आ गया था।

ग्यारहवां बयान।

अर्ध निशा।

एक गहरी और गूंजनेवाली आवाज़ से दुर्ग की घड़ी ने बारह बजाये।

बेचारी थेरिज़ा बड़ेही कष्ट से बैठी हुई फोस्ट के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। कोठरी का रक्खा लम्प टिमटिमा रहा था। ऐसे समय बारह बजे। दुर्ग की दीवारों

पर के संतरियों ने पहरे बदलवाये; और ठीक उसी समय द्वार खुला और फोस्ट ने कोठरी में प्रवेश किया।

फोस्ट—प्यारी! देखो मैं अपने कथनानुसार आ पहुंचा।

थेरि०—मेरे प्यारे! मुझे मालूम था कि तुम अवश्यही आओगे। परन्तु यह तो बताओ कि मुझे यहां से तुम निकाल कैसे सकोगे? यद्यपि तुम्हारी बातों पर मुझे बहुत कुछ ढाढ़स है परन्तु फिर भी जब मैं सोचती हूं कि दुर्ग से जहां इतने पहरे पड़ते हों निकल जाना मनुष्य की शक्ति से बाहर का काम है तो मेरा धैर्य छूट जाता है।

फोस्ट—(जल्दी से) थेरिज़ा! मैंने पहरेदारों को भारी रकमें घूस की चुका दी है। और वह बुड्ढी मजदूरनी पड़ी खर्राटे ले रही है बस अब तुम निधड़क चली आओ!

यह सुन्तेही थेरिज़ा के चित्त की चिन्ता मिट गई और वह बे खटके उठके अपने प्यारे के साथ चल खड़ी हुई।

फोस्ट ने अपना लबादा उतार के थेरिज़ा को पहना दिया जिसे उसने भली भांति ओढ़ लिया और उसकी जेब में वह लेख रख दिया और फिर बोली "हां अब मैं प्रस्तुत हूं।"

फोस्ट—अच्छा तो मैं अब तुम्हारे आगे २ चलता हूं, मेरे पीछे २ चली आना कोई तुम्हारी बाट नहीं रोकेगा।

यह बात जिस स्वर में फोस्ट ने कही उससे थेरिज़ा को बहुत ढाढ़स हो गया।

अब ये दोनों वहां से निकल के बुढ़िया की कोठरी में आये, जहां वह पैर फैलाये खर्राटे ले रही थी।

इसके उपरान्त जब ये और आगे बढ़े तो द्वार पर एक सिपाही मिला जो हाथ में सङ्गीन लिये पहरा दे रहा था।

थेरिज़ा इसे देखतेही भयभीत हुई, झझक कर पीछे हटी परन्तु साथही फोस्ट ने आगे बढ़ के इसका हाथ पकड़ लिया और अपने होठों पर ऊंगली रखके उसे चुप रहने को इंगित किया और फिर सीढ़ियों की ओर बढ़ा।

हथियारबन्द सिपाही अपने पहरे के स्थान में इधर से उधर टहलता रहा उसे तनिक भी न जान पड़ा कि मेरे निकट से कोई गया है। और इसी समय थेरिज़ा को एक आश्चर्य युक्त बात मालूम हुई अर्थात् उसने ध्यान दिया तो जान पड़ा कि न तो उसके

और न फौस्टही के, कपड़ों का शब्द सुन पड़ता है और न पैरोंही की धमक सुनाई देती है।

चारों ओर घोर सन्नाटा फैला हुआ था।

इस अचांचक के ध्यान ने थेरिज़ा को बहुतही घबरा दिया, अब उसे फोस्ट की कही हुई वह घमएड की बातें भी याद आ गईं जिसे सोचतेही थेरिज़ा अचेत हो गई और लड़खड़ा कर गिरने लगी।

परन्तु साथही फोस्ट ने उसे अपने हाथों पर सँभाला और एक दृष्टि ऐसी उसपर डाली कि जिस्से उसकी घबराहट बहुत कम हो गई तदुपरान्त वे दोनों, उस सीढ़ी से उतर के नीचे पहुंचे।

यहां एक बड़ा द्वार मिला जिसकी जंजीर फोस्ट ने खोली और उसमें से निकल के फिर द्वार बन्द कर दिया।

अब ये दोनों दुर्ग के बड़े आंगन में थे।

दुर्ग की दीवारें, बुर्ज, लड़ाई के अन्यान्य स्थान एक सन्नाटेमें सिर उठाये खड़े थे। आकाश बिलकुल निर्मल था जिस्में सुन्दर चांद, अपनी स्वच्छ चांदनी चारों ओर छिं-टका कर दिन का सा प्रकाश कर रहा था।

पूर्ववत् अब वे बिना किसी शब्द के आगे बढ़े और आंगन को समाप्त कर, दुर्ग के फाटक के सामने जा पहुंचे जो बन्द था,—जिसपर जंजीरें चढ़ी हुई थीं और लोहे का डण्डा लगा हुआ था।

फोस्ट ने निकट पहुंच के फाटक की खिड़की की जंजीर खोल दी और लोहे के डण्डे को, जो बड़ाही भारी था और जो एक मनुष्य से नहीं उठाया जा सकता था निकाल के एक ओर कर दिया। यह दोनों काम निःशब्द हुये, न तो जंजीरही खुलने में कोई कड़ाका हुआ। और न डंडेही के हटाने में किसी प्रकार का शब्द हुआ।

यहां भी दो हथियारबन्द सिपाही पहरे पर उपस्थित थे, जो अपनी बातों में लगे रहे, उन्हें इसका ध्यान तक भी न हुआ कि हमारे निकट से कोई जा रहा है वा दुर्ग के द्वार की खिड़की खोली जाती है।

यहां थेरिज़ा का हृदय फिर धड़कने लगा उसके चित्त में भांति २ की भयानक क-ल्पनायें उठने लगीं एक बेर उसने भयभीत दृष्टि से उन दोनों सिपाहियों को भी देखा।

ऐसे समय फोस्ट ने उसका हाथ पकड़ लिया और बड़ीही शीघ्रता से उसे लिये फाटक की खुली हुई खिड़की से बाहर निकल गया।

जैसेही फोस्ट बाहर निकला वैसेही खिड़की फिर आप से आप बन्द हो गई।

अब वे द्वार के बाहर एक पुश्ते पर खड़े थे, इनके सामनेही बहुत बड़ी, जल से भरी एक खन्दक लहरा रही थी और उसका पुल उठा हुआ था।

यह देखके फोस्ट ने पार उतरने के लिये कोई राह इधर उधर ढूढ़नी प्रारम्भ की। इतनेही में उसकी दृष्टि एक वस्तु पर जा पड़ी और उसने थेरिज़ा से कहा "हमें अब इसी नाव पर से पार उतरना होगा जो हमारे लिये प्रतीक्षा कर रही है।"

फोस्ट ने यह कहा और शीघ्रता से थेरिज़ा को गोद में उठाके उस पुश्ते से फिसलता हुआ छोटी डोंगी में कूद पड़ा।

थेरिज़ा नाव में बैठ के कांप रही थी, अभी उसका हृदय पूरे २ तौर से निश्चिन्त नहीं हुआ था वह अभी भी अपने को आपत्ति के मुँह मेही समझती थी।

फोस्ट ने धीरे से उसके कान में कुछ धैर्य के शब्द कहे और अब डोंगी को दुर्ग की दीवार से ढकेल दिया जो तुरन्तही उसपार जा लगी।

दूसरा किनारा जहां नाव जाके लगी थी ठीक वही स्थान था जहां पुल का तख्ता आके जमता था। इसलिये वहां कुछ लट्ठे इत्यादि भी गड़े हुये थे। फोस्ट ने थेरिज़ा को तो अपनी गोद में लिया और इन लट्ठों में से एक को पकड़ के वह किनारे पर चढ़ गया।

अब वे दोनों, दुर्ग लिन्सडर्फ के बाहर खाई के उसपार खड़े थे।

फोस्ट—थेरिज़ा, प्यारी थेरिज़ा; अब तुम स्वतन्त्र हो!

इसबात के सुनतेही थेरिज़ा का हृदय प्रसन्नता से धड़कने लगा। अब इस समय उसके हृदय से वह भयानक कल्पनायें एक बारगी मिट गई थीं।

फोस्ट—प्यारी! तुम मेरी बांह का सहारा लिये चली आओ, हम से कुछ ही दूर पर वन में, दो घोड़े कसे कसाये तैयार खड़े हैं।

फोस्ट का कहना ठीकही हुआ कुछ ही देर में दोनों एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे जहां दो घोड़े तैयार खड़े थे, परन्तु उनके निकट और कोई मनुष्य न था।

फोस्ट ने यहां पहुँच कर पहले थेरिज़ा को घोड़े पर चढ़ाया, फिर अपने घोड़े पर कूद कर वह आ गया, और थेरिज़ा के घोड़े की लगाम भी अपने हाथ में लेके जङ्गली छतनीर वृक्षों के नीचे से जाने लगा।

थेरिज़ा को इस समय अपार आनन्द आ रहा था। उसका प्यारा फोस्ट तो उस्की

बगल में था, और वह अपने पिता से मिलने के निमित्त आगे बढ़ रही थी, इन दोनों बातों ने मानों उसके गये हुये प्राण फिर उसके तन में पहना दिये। इस समय उसका चेहरा प्रसन्नता से खिला जाता था ऐसे समय उसने मुस्कुरा के कहा—

"प्यारे ! तुम सोचते होगे कि मेरी बुद्धि बड़ीही मन्द है, परन्तु मैं क्या कहूँ कि दुर्ग में रह २ कर मेरे चित्त में कैसे ध्यान आ जाते थे, एक आध स्थान पर तो मैं उन्हीं ध्यानों में अचेत सी हो गई थी।"

फोस्ट—(बड़ेही प्रेम से अपनी प्यारी के मुखारविन्द को निरख के, जो चांद के प्रकाश में बड़ीही शोभा को प्राप्त हो रहा था) क्यों प्यारी ! सुनूँ तो सही कि तुम्हारे हृदय में कैसे २ ध्यान आ रहे थे ?

थेरि०—नहीं—वह केवल एक विडंबना मात्र थी।

फोस्ट—वह कुछ ही क्यों न हो परन्तु सुनूँ तो सही !

थेरि०—नहीं—फिर तुम मुझ पर हँसोगे, और सोचोगे कि इसमें बड़ाही लड़कपन भरा है।

फोस्ट—नहीं थेरिज़ा; यह तो बँधी हुई बात है कि जब मनुष्य आपत्ति में पड़ता है तो उसके ध्यान में सैकड़ोंही प्रकार की विचित्र बातें आन उपस्थित होती हैं।

थेरि०—तब तो मुझे किसी प्रकार का दोष नहीं लगाया जा सकता। बात यह हुई कि जब मैं दुर्ग में से आ रही थी तो मैंने देखा कि न तो हमारेही पैरों की धमक सुनाई देती है और न तुम्हारेही पैरों के शब्द आते हैं कपड़ों की सड़सड़ाहट भी मालूम नहीं होती, और फिर ताला खुलने का शब्द भी न सुन पड़ा इसके उपरान्त इतनी भारी जंजीर खोली गई परन्तु कोई शब्द न हुआ यहा लों कि हमारे सांस पर्यन्त की आवाज़ हमें नहीं सुन पड़ती थी, बस इसी से मैं भय भीत हुई और वह तो बेहोश होके मैं गिरही पड़ती लेकिन तुमने मुझे सँभाल लिया।

फोस्ट—आह ! प्यारी ! तो जान पड़ता है कि तुम बड़ीही भयभीत हो गई थीं।

इतना कह कर फोस्ट देर तक थेरिज़ा की ओर देखता रहा और फिर मुस्करा के बोला "परन्तु अब हमलोगों को विलम्ब न करना चाहिये, हमारे घोड़े भी अब दम ले चुके हैं और मैं आशा करता हूं कि आधे घण्टे में दुर्ग के द्वार पर हम लोग जा खड़े होंगे।"

इतना कहतेही दोनों ने घोड़ों की बागें ढीली कीं और वे वायु से बातें करने जाने

लगे। दोनों ओर के दृश्य इनके पीछे की ओर दौड़ते दिखलाई देने लगे और कुछ ही देर में ये लोग दुर्ग रोज़ेन्थेल के द्वार पर जा पहुँचे।

थेरि०—(उस समय, जब फोस्ट उसे घोड़े से उतार रहा था) फोस्ट! ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।

यह सुन्तेही फोस्ट भय से काँप गया और उसने जोर से थेरिज़ा का हाथ दबा दिया।

थेरि०—(उसके भयभीत चेहरे पर दृष्टिपात करके) हे भगवान! फोस्ट तुम बीमार हो क्या?

फोस्ट—(जल्दी से) नहीं–नहीं एक चरण के निमित्त मेरे सिर में दर्द सा हो गया था, परन्तु अब मैं अच्छा हूं। हां तो अब तो आशा है कि तुम अपने पिता से यह कहने में न हिचकिचाओगी कि फोस्ट, उसी दरिद्री विद्यारथी ने तुम्हें बन्धन से मुक्त किया, और आशा है कि हम शीघ्रही फिर मिलेंगे क्योंकि तुम्हारे पिता कुछ ही दिवसों के उपरान्त एक बहुत बड़ा उत्सव करेंगे जिस्की इच्छा उन्होंने बहुत दिनों से कर रक्खी थी बस उसी में मैं भी योग दूंगा।

इतना कह कर फोस्ट ने एक नरसिंघा जो खांई के इस्पार लटक रहा था उठाया और होंठों से मिला कर जोर से बजाया।

इसके कुछ ही मिनटों के उपरान्त एक हथियारबन्द सिपाही दुर्ग की दीवार पर आया। इसके प्रश्न का थेरिज़ा ने स्वयंही उत्तर दिया। सिपाही थेरिज़ा के कण्ठस्वर से परिचित था, उसका स्वर सुन्तेही उसने तुरन्त पुल लटका के फाटक खोल दिया।

फोस्ट—(प्रेम से उसका हाथ दबा कर) तो प्यारी थेरिज़ा, अब हम बिदा होते हैं। ईश्वर चाहेगा तो अपने कथनानुसार फिर हम तुम से मिलेंगे।

थेरि०—अच्छा प्यारे तब तक मैंने तुम्हें ईश्वर के सुपुर्द किया।

इतना कह कर थेरिज़ा तो दुर्ग के भीतर चली गई और फोस्ट, एक घोड़े पर आरूढ़ हो कर और दूसरे की बाग अपने हाथ में लेके धीरे धीरे विटेनबर्ग की ओर चल पड़ा।
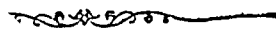
बारहवां बयान ।

उत्सव ।

दोही दिवस के उपरान्त, दुर्ग में बड़ा भारी उत्सव उपस्थित हुआ ।

नगर विटेनवर्ग के हाकिम, रईस, अमीर, सभी अपने बाल बच्चों सहित इस उत्सव में निमन्त्रित किये गये ।

यथार्थ में इधर एक समय से उतना बड़ा उत्सव उस दुर्ग में नहीं हुआ था । फौज परा बाँध के वहां एकत्रित हुई, क्योंकि वैरी पर चढ़ाई के लिये वेरेन ने जो फौज एकत्रित की थी वह अभी सब दुर्गही में थी । कमरे, भांति २ के साज़ सामान से सजाये गये । रङ्ग विरङ्गी झंडियाँ चारों ओर लगाई गईं । फूलों के गुलदस्ते प्रत्येक कोठरियों में चुने गये । रसोंई घर में तरह २ के स्वादिष्ट भोजन बनने लगे और सर्वोत्कृष्ट मदिरायें बिल्लौर की सुराहियों में, जिन पर मीना किया हुआ था भरी गईं ।

सन्ध्या के पांच बजे डेविज़ सेनापति ने गार्ड आफ आनर के सिपाहियों की दोहरी कतारें द्वार के इधर और उधर खड़ी कर दीं । दुर्ग का पुल खन्दक़ पर छोड़ दिया गया और दुर्ग के प्रथम श्रेणी के दारोग़ः ने उस कागज़ को, जिसमें मेहमानों के नाम लिखे थे हाथ में लिया और दुर्ग के द्वार पर जा खड़ा हुआ ।

इसी समय थेरिज़ा ने भी बड़ाही बनाव सिङ्गार कर और अपनी पदवी के योग्य एक बड़ाही उत्तम कपड़ा पहिन अपनी दोनों खवासों एडा और मेरिया के साथ उत्सवागार में पदार्पण किया ।

चार्ल्स हेमेल पहलेही से बना ठना, अपनी बहुमूल्य टोपी को हाथों में लिये उसी कमरे में बैठा था, और जब थेरिज़ा भी उस कमरे में पहुंची तो अभिवादन के लिये वह उठा और फिर मेरिया की बगल में बैठ गया । जिसे उसने एक बड़ीही प्रेम की दृष्टि से देखा ।

थेरिज़ा एक बड़े काउच पर उस खिड़की के सामने बैठ गई, जिस्से मेहमानों का आना स्पष्ट रूप से दिखलाई देता था । अब हमारे प्यारे पाठकगण स्वयंही अनुमान कर सकते हैं कि उस समय उसके हृदय पर कैसी बीत रही थी । उसके पीले गालों, खेद युक्त दृष्टि, और धड़कती हुई छाती से प्रत्यक्ष प्रतीत होता था कि रमणी किसी की प्रतीक्षा कर रही थी ।

कुछ ही मिनटों के उपरान्त, वेरेन जरमनी के उच्चश्रेणी के सभ्य व्यक्तियों का

सा वस्त्र पहिने, और सोने का तौक़ गले में डाले, जिस्से जान पड़ता था कि यह कोई उच्च पदाधिकारी है अपने दो नौकरों सहित इस कोठरी में आये ।

थेरिज़ा से कुछही देर की बात चीत में बेरेन को मालूम हो गया कि वह किसी गम्भीर सोच सागर में डूबी हुई है । यह मालूम करते ही इसने धीरे से उसके कान में कहा "थेरिज़ा ! तुम उदास क्यों हो । क्या तुम प्रसन्नता पूर्वक अपने पिता के मेहमानों की अगवानी न करोगी ?"

थेरि०—(बड़े ही अदब से) श्रीमान् ! मैं आप की आज्ञा से किसी प्रकार बाहर हो सकती हूं ? एक ध्यान था जो आके मुझे बे चैन किये हुआ था परन्तु मैं मेहमानों की अगवानी के निमित्त प्रस्तुत हूं ।

बे०—अहा ! मैं अनुमान करता हूं थेरिज़ा कि तुम इस लिये दुःखी होगी कि मैंने उस बेचारे विद्यार्थी को; जो इतने दिवसों पर्यन्त तुम्हारी इच्छा करता था नहीं बुलाया !

थेरि०—और जिसने मुझे लार्ड लिन्सडोर्फ के से अत्याचारी व्यक्ति के पञ्जे से छुड़ाया था ।

बे०—हां बेटी, हां, मैं उस्की इस सेवा को भी स्वीकार करता हूं। मैंने अपने सेनापति डेविज़ को उसके मकान पर इसलिये भेजा था कि वह उससे पूछे कि वह इसके बदले में क्या पारितोषिक चाहता है और यह भी बताये कि कितना रुपया उसने चौकीदारों को घूस का दिया है । परन्तु यह बात मेरे हृदय में नहीं धँसती कि एक दरिद्र विद्यारथी इतना रुपया घूस के लिये कहां से पा गया ।

थेरि०—(अपने पिता की बातों में बाधा देकर) पिताजी यह तो मैं मानती हूं परन्तु उसकी इस बात का एक बहुत बड़ा सबूत भी तो सामने है उसके लिये आप क्या कहते हैं, क्या लार्ड लिंसडार्फ के दुर्ग से, सिपाहियों के पहरे में से वह मुझे नहीं निकाल लाया ?

बे०—परन्तु मुझे उस से क्या मैंने तो उसके सामर्थ से कहीं बढ़ के पारितोषिक देने के निमित्त उसे बुला भेजा था, और यह भी साथही कह दिया था कि तेरे पिछले कुल दोष क्षमा कर दिये जायेंगे और भविष्य में भी अब तुझ से कोई न बोलेगा; परन्तु उसने इन सब बातों को अस्वीकार किया जिस से सेनापति को तो निश्चय हो गया कि या तो वह कोई विक्षिप्त है और या निरा घमण्डी "

बेरेन अभी यह कह ही रहे थे कि एक नौकर ने आकर शीघ्रता से द्वार खोला और पुकारा कर बोला कि श्रीमान् महाशय किचर साहब, चीफ जज विटेनवर्ग के पधारते हैं"

इस सभ्य व्यक्ति का वयस्, लग भग पचास वर्ष का होगा। इनका चेहरा सुन्दर परन्तु शरीर से दुबले पतले थे। उनके बाल बहुतही भूरे थे, उनकी आखों से चालाकी प्रगट थी, और उनके होठों पर एक ऐसी मुस्कुराहट थी जिसे देखके प्रतीत होता था कि यह व्यक्ति बडाही निर्दयी है।

जब वह थेरिज़ा के प्रणाम और अपने आशिर्वाद से निवृत्त हो चुके तो बेरेन उन्हें एकान्त में ले गये और यों कहने लगे।

बे०—मेरी बेटी अबलों उसी विद्यार्थी को अपने हृदय में स्थान दिये हुये है, जो कुछ ही दिवस बीते कि न जाने किस प्रकारबन्दी खाने से अन्तर्ध्यान हुआ था।

इन शब्दों के सुनतेही, जो बड़ीही गम्भीरता से कहे गये थे जज महाशय के चेहरे पर घबराहट और भय के चिन्ह प्रगट होने लगे, और उन्होंने कहा "श्रीमान्! अब दोबारा मैं उस युवक के बखेड़े में नहीं पड़ा चाहता!"

बे०—अहा! अब मैं उसे कष्ट देने के लिये आप से नहीं कहता, क्योंकि उसने एक बडी भारी सेवा हमारी की है, मेरी बेटी को वह कौन्ट लेन्सडार्फ के बन्धन में से निकाल लाया है। परन्तु मेरी इच्छा केवल इतनी है कि वह इस देश में न रहने पाये और जैसे आप उचित समझें यह काम चुपके २ कर डालें।

ज०—ईश्वर की सौगन्ध! कृपासिन्धु, अब मैं उसके बीच में कदापि हस्तक्षेप न करूंगा क्या आप अनुमान करते हैं कि बन्दीखानें से निकल कर जब वह खुल्लम खुल्ला बाजारों हाटों में घूमता है और हमारे अधिकार पर हमारेही सिपाहियों के सामने हँसी उड़ाता है, हमारे कानून की कोई परवाह नहीं करता तो मैं उसे ऐसे अपनी बे इज्जती करने देता? परन्तु करूं क्या, कई कारण ऐसे आ पड़े हैं जिन से कि मैं विवश हो गया हूँ।

बे०—सुनें तो सही वे कारण क्या हैं?

इसपर कुछ मिनटों पर्यन्त जज महाशय निस्तब्ध रहे, परन्तु उनके चेहरे से प्रतीत होता था कि उन्हें हृदयही हृदय असह्य बेदना हो रही है, अन्त उन्होंने कहा, "श्री-

मान् ! जब मैं मृत्यु शय्या पर पड़ा हूंगा और पादरी आ कर मुझ से, मेरे दोषों को पूछेंगे, जब भी इस भेद को मैं न बताऊंगा ।

इतना कह कर जज, इस बात का सिलसिला तोड़ने के लिये एक ओर को शीघ्रता से चल दिये, और बेरेन भी इधर उधर अपने मेहमानों की अगवानी करने तथा उनके बिठाने में तत्पर हुआ ।

उसी समय बहुतसी—बड़ीही स्वरूपवती स्त्रियां और बड़े २ बांके जवान और सभ्य व्यक्ति कोठरी में आये । इनके साथही स्कूल के प्रोफेसर, और म्युनिस्पेलिटी के मेम्बरगण, तथा अन्यान्य पदाधिकारी भी आ पहुंचे । अब इस स्थान में ऐसा जान पड़ता था कि बहुतसी परियों को पर काट २ के छोड़ दिया है, परन्तु उन स्त्रियों में कोई भी सुन्दरी थेरिज़ा के समान सुन्दर न थी ।

इतने ही में दुर्ग का बड़ा घण्टा बजने लगा जिस्का तात्पर्य यह था कि भोजन टेबुल पर चुन दिया गया ।

ऐसे समय एक व्यक्ति सादे कपड़ें पहने कमरे में आया और तीनबार झुक के उसने कोठरी के बैठने वालों को सलाम किया । यह प्रथा जरमनी की थी कि भोज़न चुने जाने के उपरान्त एक व्यक्ति उन्हें इस इशारे से बुलाने आता था ।

जिसपर यह मंडली उठी और चीफ जज थेरिज़ा का हाथ पकड़े आगे बढ़े और उस्के पीछे २ अन्यान्य व्यक्ति और स्त्रियां भी पृथक २ एक दूसरे का हाथ पकड़ भोजनागार की ओर चले । चार्ल्स मेरिया के साथ थे, कारण यह कि उन दिनों उच्चश्रेणी की खवासें भी मेहमानों के साथ भोजन किया करती थीं ।

भोजनागार भी अनेकानेक लम्पों से जग मगा रहा था । प्रकाश चारों ओर ऐसा फैल रहा था कि दिन का धोखा होता था । साफ, सुन्दर, और चमकीले टेबुल पर भिन्न २ प्रकार के भोजन और अनेक प्रकार की शराबें चुनी हुई थीं । सामनेही हलकी २ रकाबियों में सूखे और ताज़े मेवे रक्खे हुये थे ।

बेरेन टेबुल के सिरे पर एक ऊँचे स्थान पर बैठा, उसके दाहिने उसकी बेटी थेरिज़ा थी और इसके उपरान्त कुल मेहमान जो गिनती में एक सौ से कम न होंगे एक के उपरान्त दूसरे अपने २ स्थान पर बैठ गये थे । इस समय थेरिज़ा ने अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाई, परन्तु हाय, जिस के लिये उसने दृष्टि दौड़ाई वह वहां न था इससे यह लोकारण्य भोजनागार उसे एक जन शून्य स्थान जान पड़ा और उसका चित्त और भी उदास हो गया ।

चार्ल्स की यदि इच्छा होती तो वह भी एक ऊँचे स्थान पर बैठ सकता था। क्योंकि प्रथम तो वह एक बड़ाही प्रतिष्ठित व्यक्ति था और दूसरे स्वयम् बेरेन का मेहमान था परन्तु उसने मेरिया के लिये उसी के निकटवर्ती स्थान को उत्तम समझा।

इस प्रकार बैठ कर जब सब लोग आपस में कुछ बात चीत कर रहे थे, तो चार्ल्स भी मेरिया के कान में धीरे २ कुछ कह रहा था जो लज्जा युक्त प्रसन्नता से उसकी बातें सुन रही थी।

अब क्रमशः शराब पी जाने लगी और मेहमानों के सामने मेवों की रकाबियां चुनी गईं। अब चार्ल्स और मेरिया बहुतही घुल २ के बातें करने लगे, और इनके भाग्य वश वह व्यक्ति भी किसी कारण से वहां से उठ गया जो इनके निकट बैठा था और अब उन्हें बात चीत करने में पूरी स्वतन्त्रता हो गई।

चार्ल्स—प्राणाधिके! हमारी तुम्हारी साक्षात हुये अभी कुछ ही दिवस बीते हैं परन्तु जितना मैं तुम्हारा निर्मल चरित्र देखता जाता हूं उतनाही मैं तुम पर और भी मुग्ध होता जाता हूं। मैं न तो धनाढ्य ही हूं और न कोई उच्च वंशाधिकारीही हूं परन्तु हां लौकिक व्यवहार से मैं भली प्रकार विज्ञ हूं जिससे भविष्य में बहुत कुछ भलाई की आशा है।

मेरिया—यह कहना तो मानों मेरी निन्दा करनी है। आप जानते ही हैं कि मैं एक दरिद्री किसान की अनाथ पुत्री हूं, और थेरिज़ा की माता ने दया कर के मुझे—"

चार्ल्स—(बात काट के बड़ेही उद्वेग से) प्यारी, यदि तुम एक टूटी झोपड़िया में भी क्यों न होतीं, और मैं जरमनी का राजकुमार ही क्यों न होता तब भी तुम्हारे प्रेम पर मैं घमंड करता। परन्तु यह तो कहो! प्यारी मेरिया-इतना तो बताओ-! क्या तुम भी उस बेचारे को प्यार की दृष्टि से देखती हो जो तुम पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर चुका है?

सुन्दर बालिका ने इस बात का जिह्वा से तो कोई उत्तर न दिया परन्तु उसने उसपर कुछ ऐसी प्रीति से भरी दृष्टि डाली कि जिसे देखतेही उसका प्रेमी उसकी हार्दिक कांक्षा को समझ गया और मारे प्रसन्नता के गद्गद हो गया। मेरिया के प्रेम की जिह्वा ने उसे एक ऐसा मीठा उत्तर दे दिया कि अब और कुछ उससे पूछने की इसे आवश्यकता न रही।

उसी समय मेरिया शीघ्रता से उठके कोठरी के बाहर चली गई। उस्का हृदय, प्रसन्नता, आशा, और प्रेम में इस्समय, इतना भर गया था कि वह आत्मविस्मृत हो रही थी उस्के नेत्रों से प्रसन्नता के आँसू लुढ़के पड़ते थे।

अभी चार्लर्स के नेत्रों से उस्की प्यारी मेरिया ओट हुई थी कि सहसा उस्के कन्धे पर किसी ने हाथ रख दिया।

हाथ पड़तेही वह चौंक पड़ा और अपने चारों ओर जो दृष्टि दौड़ाई तो अपने पीछे की कुरसी पर एक बड़ेही स्वरूपवान, हाथ पैर से तैयार युवक को बहुमूल्य वस्त्र पहने बैठे पाया, चार्लर्स हेमेल ने अनुमान किया कि यह वही मेहमान है जो अभी इस कुरसी से उठके गया था परन्तु दूसरी दृष्टि में उसे मालूम हो गया कि यह व्यक्ति कोई दूसराही है।

अजनवी—(धीरे से) क्या तुम इस स्त्री को चाहते हो जो अभी तुम्हारे पास से उठ के गई है ?

हेमेल—(क्रोध से घूर के) यदि मैं चाहताही हूं तो तुम्हें क्या ?

अजनवी—(शान्त भाव से) मैं अभी तुम्हे बताये देता हूं ! कदाच् तुम्हे वह व्यक्ति न भूला होगा जिसने एक शब्द में तुम्हें मृत्यु के मुंह से बचाया था जब तुम उस गिरजे के समीप मारे जाने वाले थे !

यह सुन्तेही चार्लर्स का क्रोध शान्त हो गया और उसने बड़ीही इच्छा से कहा " हाँ महाशय ! उस व्यक्ति को मैं कैसे भूल सक्ता हूं और न वह दिवसही मुझे विस्मृत हो सक्ता है, आह कैसी भयावनी वह सन्ध्या थी !"

अजनवी—अच्छा उसे जानेदो, क्या दुर्ग की दीवार पर, जब तुम बेतौर आहत थे और सिपाही तुम्हारा सिर उतारा चाहते थे तो किसी व्यक्ति ने तुम्हारे प्राण नहीं बचाये थे ?

हेमेल—यथार्थ में आप ठीक कहते हैं और यदि आप मेरे छुड़ाने वाले को—"

अजनवी—एक क्षण के निमित्त सब्र करो। हां तो इन दोनों स्थानों से तुम बचाये गये थे न ?

हेमेल—हां हां और फिर भी मैं कहता हूं कि—"

अजनवी—लम्बा और काला लबादा ओढ़े हुये एक व्यक्ति था जिस ने—"

हेमेल—जिस ने मुझे अदालत विम से बचाया !

अजनवी—और वह हथियारबन्द व्यक्ति जो सिर से पैर पर्यन्त लोहे के कपड़ों में छिपा था उसने—"

हेमेल—मुझे दुर्ग की दीवारों पर बचाया !

अजनवी—हां तो वे दोनों एक ही व्यक्ति हैं ।

हेमेल—तब तो मैं उस व्यक्ति का इतना अनुगृहीत हूं कि बयान से बाहर। वह रहस्यमय आश्चर्ययुक्त व्यक्ति जिस ने—"

अजनवी—मैं व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट नहीं किया चाहता अब वह समय आन उपस्थित हुआ है जिस्में तुम अपने बचाने वाले के अनुगृहों का प्रतिफल भली भाँति दे सको ।

हेमेल—(शीघ्रता से) मेरा बचाने वाला ! परन्तु वह है कहां ?

अजनवी—वह यहीं है और मैं ही तुम्हारा बचाने वाला हूं !

हेमेल—तुम ?

अजनवी—(शान्त भाव से) हां मैं !

हेमेल—तो मेरे प्यारे, प्राण बचाने वाले, बतलाइये कि आप क्या चाहते हैं ? मैं सौगंध खा के कहता हूं कि—"

अजनवी—(बाधा देके) नहीं २ वह कार्य बड़ाही सहल है और उससमय जब तुम थेरिज़ा को छोड़ के मेरिया से प्रेम करते हो !

इतना कह कर उसने अपने कपड़ों में से एक लिपटा हुवा काग़ज़ निकाला जिसे खोल के उसने चार्ल्स के हाथ में देदिया ।

चार्ल्स ने उस कागज को लेके बड़ीही आश्चर्ययुक्त दृष्टि से देखना प्रारम्भ किया और जब वह उसे पढ़ चुका तो और भी आश्चर्य से उस अजनबी की ओर देखने लगा ।

अजनवी—मैं तुम्हें भली भाँति जानता हूं परन्तु यह न बताऊँगा कि कैसे ! मैं तुम्हारी दो बार सेवा कर चुका हूं परन्तु यह न कहूंगा कि क्यों ! हां तो अब तुमसे मैं यह तुच्छ आशा अपने हृदय में रख सक्ता हूं कि तुम इस कागज पर हस्ताक्षर कर दोगे ?

हेमेल—तुमने मेरी दो बार जान बचाई—मैं तुम्हारी किसी बात को अस्वीकार नहीं कर सक्ता, परन्तु मसि और लेखनी के लिये तो हमें अपनी कोठरी मे जाना होगा !

अजनबी—नहीं २ आपको इतना कष्ट न उठाना पड़ेगा, हमारे पास ये दोनोंही वस्तुयें उपस्थित हैं।

इतना कह कर उसने अपने लबादे में से एक छोटी दावात और लेखनी निकाल के इनके सामने कर दी।

चार्ल्स—परन्तु यहाँ मेहमान लोग देखेंगे—और दूसरे बेरेन हमारे इस व्यवहार पर ईश्वर जाने क्या सोचेंगे—"

अजनबी—अजी देखो तो सही कोई भी इधर देखता है—मेहमान लोग अपनी २ बातों में लगे हैं और जो टेबुल के उस सिरे पर बैठे हैं वे तन मन से जज महाशय से एक कहानी सुन रहे हैं—किसी का भी ध्यान हमलोगों की ओर है?

एक सरसरी दृष्टि जो चार्ल्स ने इधर उधर डाली तो देखा कि यथार्थ में अजनबी का कहना ठीक है।

बस इसके उपरान्त एक क्षण भी विना बिलम्ब किये उसने क़लम उठाई और उस अजनबी के दिये हुये पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

इसके उपरान्त अजनबी ने वह काग़ज़ टेबुल पर से उठा लिया और एक दूसरे व्यक्ति को जो वहीं से जा रहा था दे दिया।

इस पर चार्ल्स ने एक आश्चर्ययुक्त दृष्टि से उस अजनबी को देखा।

अ०—मैंने इस काग़ज़ को अपने भृत्य को दे दिया है जिसे वह एक सुरक्षित स्थान में रख आवे।

हेमेल इस्त्रात का कुछ उत्तर देनेही को था कि टेबुल के दूसरे सिरे पर एक बड़ीही भयानक चीत्कार सुन पड़ी और साथही बेरेन की लोमहर्षण चिल्लाहट ने सब को चौकन्ना बना दिया और सब अपने २ स्थान पर चौंक २ के उठ खड़े हुये।

तेरहवां बयान।

उत्सव भङ्ग।

इस अचांचक घटना के संघटित होने का कारण बताने के निमित्त पहले हम उन बातों का उल्लेख करना चाहते हैं जो टेबुल के दूसरे सिरे पर उस समय हो रही थीं; जिस समय चार्ल्स और वह अजनबी आपस की बात चीत में लगे थे।

बेचारी थेरिज़ा अपने हृदय पर पत्थर रख कर ऊपर से तो अपने मेहमानों के साथ बात चीत करती तथा हँस बोल रही थी परन्तु यथार्थ में उसके हृदय में एक बड़ीही वेदना हो रही थी कभी तो उसका चेहरा लाल हो जाता था और कभी पीला, क्योंकि प्रतीक्षा ने उसे बहुत ही दुःखित कर रक्खा था और वह बार २ सिर उठा कर अपने चारों ओर फोस्ट के निमित्त दृष्टि दौड़ाती थी।

चीफ जज ने आज बहुतही ठूस २ के खाया था और अब उसके हज़म करने के निमित्त वे लगातार शराब भी चढ़ाने लगे। इनके साथही साथ बेरेन थेरिज़ा, तथा अन्य मेहमान लोग भी थे और जब चीफ जज का नशा कुछ तेज हुआ तो उन्होंने अपने साथ के बैठे कुल व्यक्तियों को अपनी ओर झुकाया और बोलेः—

"आप सब लोग अबलों हँसी और ठट्ठे की कहानियों के कहने और सुने में लगे हुये थे, परन्तु यदि अब आप लोगों की इच्छा हो और यदि आप आज्ञा दें तो मैं एक बड़ीही उत्तम सच्ची कहानी सुनाऊँ जिसे सुनके आशा है कि आप लोग बड़ेही प्रसन्न होंगे"।

बेरेन—(ज़ोर से) अच्छा अब आप लोग श्रीमान् की ओर ध्यान दें!

यह सुनतेही पूरा सन्नाटा चारों ओर छा गया। और तब चीफ जज ने अपनी कहानी प्रारम्भ की, जिसपर दूर के बैठे हुये आदमी भी उनके निकट आ गये और उस बड़ीही मनोरञ्जक कहानी को हृदय के कानों से सुन्ने लगे, जिसे जज महाशय ने यों कहना प्रारम्भ किया:—

"जहां लों मैं अनुमान करता हूं आज से चौदह वर्ष बीते हैं जब मैं वायना के शाही दरबार में रजिष्ट्रार की पदवी पर आरूढ़ था। मेरा कर्तव्य केवल शाही रजिष्टरों के रखने का था। अभी इस पदवी पर आरूढ़ हुये, मुझे कोई एक वर्ष बीते होंगे, कि सहसा एक दिवस, सन्ध्या समय मैं आर्कडिउक के महलों में शीघ्रता से बुलाया गया। आर्कडिउक वर्तमान सम्राट के सगे भाई थे। वहां पहुंचने पर एक बहुत बड़े कमरे में मैं ठहराया गया जिस्में वहां के बड़े २ पदाधिकारी गण उससमय उपस्थित थे, अब वहां मुझे मालूम हुआ कि आर्कडिउक के यहां संतान उत्पन्न होने वाला है। यह सुन्तेही मैंने अपना रजिष्टर इस शुभ कार्य के निमित्त तैयार कर लिया। इस बड़े कमरे के तीन द्वार थे पहिला तो वह जिस्में होके मैं आया था और जिस्के उपरान्त एक बहुत बड़ी सीढ़ी थी और दूसरा द्वार उस कोठरी में खुलता था जिस्में आर्कडिउक की

खी पड़ी हुई थी और तीसरा द्वार ठीक उसी कोठरी के सामने था जिस्में एक कोठरी थी और जिस्में एक पालना पड़ा हुआ था। मैं जहां लों अनुमान करता हूं कि आप लोग उन रसमों से, जो जरमनी में किसी राजकुमार के उत्पन्न होने पर की जाती हैं बिल्कुलही अविज्ञ होंगे। इस लिये मैं आप लोगों से उसका वृत्तान्त और पालने की कोठरी का हाल सुनाये देता हूँ। जिस समय कोई राजकुमार या राजकुमारी वहां उत्पन्न होती है तो दाई उसे उसकी माता के गोद में से लेकर उसी के निकट वाले बड़े कमरे में उपस्थित होती है। यहां पर यह बालक वहां के एकात्रित कुल व्यक्तियों तथा पदाधिकारियों को दिखाया जाता है। और उसी समय उसकी उत्पत्ति रजिस्टर में चढ़ाई जाती है और साथही उस बालक का हुलिया, वह रोगी है वा चङ्गा, वा और कोई चिन्ह डाक्टर की आज्ञानुसार लिख लिया जाता है। यह लिखाई इस लिये होती है कि यदि अवसर पड़े तो वह बालक भली प्रकार पहचान लिया जा सके।

" जब यह रसम हो चुकती है तो दाई बालक को उस पालने की कोठरी में ले जाती है। और यहाँ वह प्रातःकाल पर्यन्त बालक के साथही साथ रहती है। इसी समय गारद का एक सिपाही जिस्का नाम, रमल का पासा डाल कर निकाला जाता है द्वार के पहरे पर खड़ा किया जाता है। अब मानो वह बालक उसी की रक्षा पर निर्भर किया जाता है। और यदि सन्तरी पहरे पर सो जाये या डाक्टर के अतिरिक्त और किसी को भीतर जाने दे तो इस्का दण्ड मृत्यु है। प्रातःकाल होतेही कुल फौज परा बाँध कर उस महल के सामने जिस्में बालक उत्पन्न हुवा है खड़ी होती है। और फिर वह सिपाही जिस्का नाम पासे में निकलता है और जो रात भर पहरा देता है बच्चे को गोद में लेकर कुल लोगों के सामने आता है। इस्के उपरान्त वह सिपाही कोई ऊँचा पद और कुछ पारितोषिक पाता है फिर इस्के उपरान्त मानों पालने की कोठरी की रसम पूरी हो जाती है।

बहुत से मनुष्य—भला यह रसम होती कब से है ?

चीफ—यह रसम बहुत दिवसों से होती आई है और अब, जब आपको इस रसम के और वृत्तान्त भली भाँति मालूम हो गये हैं तो आप मेरी कहानी को भली प्रकार समझ सकेंगे। हाँ तो मैं इतःपूर्व कह चुका हूँ कि आर्कडिउक के यहाँ सन्तान उत्पन्न होने वाला था। हम लोगों को योंहीं बैठे कुछ काल न बीते होंगे कि आर्कडिउक महाशय भी इसी कोठरी में आये और हम लोगों में बैठ ग-

थे। एक घण्टा पर्यन्त हम लोग बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्त उस कोठरी का द्वार खुला और बड़े डाक्टर ने कमरे से निकल के सब को यह सुसमाचार सुनाया कि आर्कडिउक के यहाँ राजकुमार उतपन्न हुये हैं। वह राजकुमार यही वर्तमान राजकुमार ड्यूकलिउपोल्ड हैं।

वेरेन— (घमण्ड से) जिस्के साथ मेरी बेटी की मँगनी हो गई है और जो आशा है कि कुछही दिवसों के उपरान्त व्याह करने तथा अपनी स्त्री को यहाँ से ले जाने के निमित्त आयेंगे।

इस्बात से थेरिज़ा के हृदय पर आघात हुवा और उसने कठिनता से अपने को रोका।

चीफ— हाँ तो जिससमय डाक्टर ने आकर यह सुसमाचार सुनाया हम सब ने मिलके श्रीमान् आर्कडिउक महाशय को राजकुमार के उतपन्न होने पर बधाई दी। इस्के उपरान्त ड्यूक ने एक बड़ीही बहुमूल्य अँगूठी डाक्टर को पुरष्कार के तुल्य दी। इस्के उपरान्त डाक्टर, श्रीमती की कोठरी में पुनः लौट गया और फिर एक घण्टे के उपरान्त उसी कोठरी से, एक दाई बच्चे को गोद में लिये इस कोठरी में आई। मैंने तुरन्तही अपना कर्तव्य पालन किया, यह बालक हृष्ट पुष्ट था इस्का चेहरा बिलकुल आर्कड्यूक से मिलता था। इसी समय सेनापति के नाम एक पुरजा गया कि उस सिपाही को; जिस्का नाम पासे मे निकला है शीघ्र पालने की रखवाली के लिये भेजो। कुछही क्षण के उपरान्त वह सन्तरी आ पहुँचा। यह एक तीस वर्षीय लम्बा और सुन्दर युवक था—इस्की जन्मभूमि हेंगरी थी। और इसका नाम अलरिक किनिस था। परन्तु उसकी सूरत में ईश्वर जाने क्या बात थी कि देखते ही मुझे उस्से घृणा हो गई-और यद्यपि मुझे मालूम न था कि क्यों? परन्तु इतना मेरे चित्त में जम गया कि अवश्य यह धोखा देगा। अस्तु उस समय मैं चुपका हो रहा और बाकी की कुल रसम भी समाप्त हुई। दाई बच्चे को गोद में लिये हुये खटोलने की कोठरी में गई। द्वार बन्द कर दिया गया और संतरी द्वार पर खड़ा कर दिया गया। आर्कड्यूक अन्य पदाधिकारियों सहित बड़े कमरे से बाहर निकले, जिन के पीछेही पीछे मैं भी वहां से चला और एक दूसरी कोठरी में जा पहुंचे, जहां सब लोगों के लिये भोजन चुना हुआ था, परन्तु मैं शीघ्रही भोजन पर से उठ गया, क्योंकि मैं व्यग्र था—और आज लों मुझ पर यह

बात न प्रगट हुई कि उसे अलरिक किनिस पर क्यों बार २ मुझे सन्देह होता रहा।

बेरेन—(हँस के) कदाच उसकी सूरत भली न होगी इस कारण आप उसे पसन्द न करते होंगे।

जज—श्रीमान् पर अभी विदित हो जायेगा कि मेरा सन्देह उसपर ठीक था या नहीं। मैं चुप चाप भोजनागार से चल दिया और फिर उस बड़ी कोठरी में पहुंचा जिसमें वह संत्री पालने के द्वार पर खड़ा था, मेरे लिये उस कोठरी में जाने की कोई रोक न थी वरन् यह मेरा कर्तव्य था कि मैं उस कोठरी में जा के अपना सन्तोष कर लूँ कि संतरी पहरे पर सो तो नहीं गया है। मैं बहुतही धीरे से उस कोठरी में पहुँचा, लम्प पूरे प्रकाश से जल रहे थे और जिनका प्रकाश कोठरी के लगे बहुत से शीशों की आभा से और भी बढ़ रहा था। मुझे बड़ाही आश्चर्य हुआ जब मैंने अलरिक किनिस को द्वार पर न पाया। अब मैं पालने की कोठरी की ओर बढ़ा तो साथही उसके भीतर से किसी के बात चीत करने का शब्द सुनाई पड़ा आधी रातको, एक स्वर यह कहते सुन पड़ा और जिसे मैं भली भांति पहचान गया कि यह स्वर डाक्टर का है, "महल में चारों ओर सन्नाटा होगा और किसी से रोके जाने का भी भय उस समय न रहेगा" इतना दाई ने कहा, और इसके उपरान्त ही अलरिक किनिस ने कहा, "और फिर मेरा इनाम"? इसपर डाक्टर ने उत्तर दिया "यह है! मैं तुम्हें यही अँगूठी दूँगा जिसे श्रीमान् ड्यूक महाशय ने हमें पुरस्कार के भांति दिया है, परन्तु यह दी उसी समय जायगी, जब यह अदला बदला हो जायगा और मुझे यह मालूम हो जायगा कि तुम मेरे और मेरी बहिन के सच्चे हितैषी हो" 'अच्छी बात है, इस नियम पर मैं सब कुछ करने को प्रस्तुत हूं' इतना अलरिक किनिस ने कहा और फिर दाई बोली-'और फिर मैं और मेरे पति दोनोंही सदैव के निमित्त हर एक काम में तुम्हारे मित्र बने रहेंगे,-इसपर डाक्टर ने भी कहा.'हां, मैंने तो अपनी सारी पूंजी इसी के निमित्त अर्पण कर रक्खी है और यही कारण है कि मेरी स्त्री ने दाई का काम उठाया है नहीं तो उसे इसकी क्या आवश्यकता थी, इसपर अलरिक किनिस ने उत्तर दिया 'तो आप निश्चिन्त रहें सब काम आप की इच्छानुसारही किया जायगा और मैंने तो आप से, दोपहरही को; जब मेरे नाम का पासा निकला था यह कह दिया था कि मैं केवल

धन का भूखा हूं वह चाहे कैसेही मिले मैं अस्वीकार न करूंगा,' इसपर डाक्टर ने कहा 'वास्तव में यही बात है और तुम इस एक अंगूठी से भारी धनाढ्य भी हो सकते हो' इसके उपरान्त मुझे ऐसा शब्द सुन पड़ा, मानों संतरी कोठरी के बाहर आया चाहता है और अब जब मैं उस भयानक जाल की एक २ कड़ी से विज्ञ हो गया था तो इसके उपरान्त वहां ठहरना उचित न समझ शीघ्रता से कोठरी के बाहर निकल गया।

बेरेन—अब कहानी में आनन्द बढ़ता जाता है तनिक धैर्य धर के सुनते जाइये।

परन्तु अभी कठिनता से बेरेन का यह शब्द समाप्त हुआ होगा कि सहसा उनकी ऊँची पीठ की कुरसी के पीछे से किसी व्यक्ति ने शीघ्रता से एक खञ्जर टेबुल पर जोर से गाड़ दिया।

यह काम ऐसा अचांचक किया गया और उसके साथही सब लोग इतने घबरा उठे कि खञ्जर के गाड़नेवाले को कोई भी न देख सका और वह साफ निकल गया।

इसपर बेरेन बड़ेही क्रोध से चिल्ला उठा और उसके साथी और सब उसके सुने वाले भय से चीत्कार कर उठे।

कारण यह कि खञ्जर के मुठिये के चारों ओर एक रस्सी लपेटी हुई थी जो अदालत विम का चिन्ह था और उस रस्सी में के लिपटे हुये एक कागज को देखके जिसपर तीन खञ्जरों का चिन्ह बना था निश्चय होता था कि यह अदालत विम का चिन्ह है।

बेरेन—(चिल्लाकर) ईश्वर की सौगन्ध यह किसी बड़ेही वीर का काम है ! अच्छा ! बहादुरो, शीघ्र जाके दुर्ग का पुल उठवा दो, और दुर्ग की दीवार के सन्तरियों को अभी २ दोहरा कर दो; और देखो सावधान, कोई व्यक्ति भी दुर्ग के बाहर न जाने पाये नहीं इसके बदले तुमलोगों के प्राण जायेंगे।

हथियारबन्द व्यक्तियों की श्रेणी, जो द्वार के निकटही खड़ी थी दूर गई, और वे छितरा के राजाज्ञा के पालन करने के निमित्त शीघ्रता से चले गये।

बेरेन—अच्छा अब हमें देखना चाहिये कि इस कागज में कौन सी बेहूदी आज्ञा भेजी गई है।

यद्यपि लार्ड रोज़ेन्येल ने ये बातें बड़ीही वीरता से कीं परन्तु फिर भी उसका हृदय धड़क रहा था और पुरजे को पढ़ती समय उसके होंठ कांप रहे थे। उस पुरजे की लिखावट यह थी।

रस्सी और खञ्जर के नाम से तुम्हें आज्ञा दी जाती है कि अतवार के दिवस, जो इस आज्ञापत्र पहुंचने के उपरान्त आयेगा मध्यान्हकाल में वालिन्सटेन नामी पहाड़ी पर नीबू के वृक्ष के नीचे आन उपस्थित हो। परन्तु सावधान! तुम अकेलेही आना किसी अन्य को अपने साथ न लाना और न कोई हथियारही अपने साथ लाना, देखो इसमें किसी प्रकार की त्रुटि न हो।

यह पढ़तेही बेरेन के नेत्रों से, अग्निस्फुलिङ्ग वहिर्गत होने लगे और उसने सकोप कहा "मैं शपथ खा के कहता हूं कि जो व्यक्ति उस मनुष्य को पकड़ लायेगा जिसने यह काम किया है, उसे मैं अपनी शक्तिभर जो कुछ वह माँगेगा देने में त्रुटि न करूंगा। और यह बात जरमनी के एक उच्चश्रेणी के सभ्य व्यक्ति द्वारा कही जाती है जिसे अपने सिर के साथ वह प्रतिपालन करेगा।

जज़—भगवान आपका मनोर्थ सिद्ध करे!

"इस काम को मैं पूरा करूंगा"

इतना कहके वही अजनबी व्यक्ति जो चार्ल्स हेमेल की कुरसी के पीछे बैठा था अपनी पूरी उँचाई में तन के खड़ा होगया, इससमय उसका वह बहुमूल्य वस्त्र और सुन्दर मुखड़ा प्रकाश में चमक उठा।

बेरेन—क्या? फोष्ट! यही चिल्ला के बेरेन ने कहा और अपने मेहमानों में उस युवक, विद्यार्थी को बड़ेही आश्चर्य से देख के कहने लगा "अच्छा, तुम्हीं इस कार्य को सम्पादन करो"

थेरिज़ा—(बहुतही धीरे से, होठोंही होठों में) आह, फोष्ट!

इतना कहतेही उसके हृदय में आशा रूपी अङ्कुर ने फिर स्थान कर लिया और उसे अपना भविष्य सुखमय बोध होने लगा।

चौदहवाँ बयान।

तीन रुकावटें

यह तो आप लोगों पर भली प्रकार प्रगट हो गया होगा कि इस घटना से कुल मेहमानों पर एक प्रकार का भय हो गया और घबड़ाहट सी छा गई।

अब सबकी दृष्टि फोष्ट पर पड़ी, और चार्ल्स हेमेल को भी अब मालूम हो गया कि जिस्के दिये हुये पत्र पर हमने हस्ताक्षर किये थे, उस्का नाम फोष्ट है।

परन्तु यह जोश कुछ क्षणों के उपरान्त मिट नहीं गया वरन् वह और भी बढ़ गया, जब फोष्ट ने हाथ के इशारे से लोगों को वहीं ठहरने की आज्ञा दी और आप शीघ्रता से बाहर चला गया।

कुछ देर तक यहां बिलकुलही सन्नाटा रहा, परन्तु फिर इस्के उपरान्त यहां और वहां आपस में कानों २ में बात चीत होने लगी। परन्तु इस फुसफुसाहट को भी शीघ्रता से द्वार के खुलने के धड़ाके ने एकदम लोप करदिया और इस्के उपरान्तही फोष्ट ने इस बड़े कमरे में प्रवेश किया।

बड़ीही गम्भीरता से फोष्ट, टेबिल के सिरे की ओर बढ़ता गया और फिर वहां पहुंच और ठहर के इसने कहा "वह अपराधी पकड़ा गया और इस्समय, आप के हथियारबन्द सिपाहियों के पहरे में है।

बेरेन—मैं आपका बड़ाही अनुगृहीत हुवा और मैं अभी इस अपराधी को दण्ड देके अपने शपथ को पूरा करूंगा।

भाग्यवश चीफ़ जज महाशय भी यहीं वर्तमान हैं और उनके फैसले से अभी निर्णय हो जायगा कि ऐसी दुष्ट और नकली अदालतों को प्रतिष्ठित व्यक्तियों के धमकाने का कहां लों अधिकार है।

जज—मैं एक सरकारी अदालत का उच्चश्रेणी का पदाधिकारी होने के कारण, ऐसी नकली अदालतों के कानून से बिलकुलही विरुद्ध हूं और यही कारण है कि गुप्त अदालत के मेम्बरों को अपनी सरकार का बागी समझता हूं।

यद्यपि चीफ़ जज महाशय ने इन शब्दों को बड़ीही कड़ाई से कहडाले परन्तु सामने के उपस्थित कुल व्यक्तियों का हृदय उसे सुन के कांप गया। उनलोगों ने गुप्त अदालत की कार्य्यावाही सुनी थी, जिससे बड़े २ वीरों की छाती भी दहल उठीं।

बेरेन—निस्सन्देह, अब गुप्त अदालत के अत्याचार अपनी सीमा से बहुत विशेष बढ़ गये हैं। और इस्में भी कोई सन्देह नहीं कि यह सम्मन लार्ड लेंसडार्फ हमारे वैरी का जारी किया हुवा है क्योंकि यह तो सभी पर प्रगट है कि वह, इस अदालत का कोई उच्च पदाधिकारी है और अब जब वह, समर में मुझ से पराजित हुवा तो मेरे प्राण लेने की उसने यह एक दूसरी तदबीर निकाली है। (जज

महाशय से) भला इस पाजी को क्या दण्ड देना चाहिये जो इससमय हमलोगों के हाथों में है।

जज यह तो निश्चय हो गया है कि यथार्थ में उसी व्यक्ति का यह काम है?

फोष्ट—वह इसवात को अस्वीकार थोड़ाही करता है वरन् इसपर तो वह घमण्ड करता है, और उसके पास से गुप्त अदालत के और भी बहुत से आज्ञापत्र निकले हैं।

जज—जो यह बात है तो अपराधी को यहां लाने की कोई आवश्यक्ता नहीं है क्योंकि उसे देख के यहां की बैठी स्त्रियां बहुतही घबराँयगी इसके अपेक्षा यह उत्तम होगा कि श्रीमान—उसे, दुर्गके फाटक पर फाँसी लटकवा दें जिस्में आने जाने वाले सभी उसे देख सकें और गुप्त अदालत के लोगों को भी एक पूरी शिक्षा हो जाये।

बेरेन—(चिल्ला के) डेविज़! उस अपराधी को वहीं दण्ड दो जो जज महाशय ने अभी कहा है। देखो इस्में हिचकिचाना मत—उसपर किसी प्रकार की दया न दिखाना वह चाहे कोई हो उसे तुरन्त फाँसी लटका दो।

जज—देखो सेनापति! हमारी आज्ञा शीघ्रही प्रतिपालन की जाय।

यह आज्ञा जज ने बड़ीही बीरता से दी थी: यद्यपि उस्का हृदय, अदालत विम के अधिकार से काँपा जाता था। उस्की आज्ञा से एक ऐसी झलक प्रगट होती थी जो प्रायः जरमनी के जजों में पाई जाती है "बिना हिचकिचाये—बिना बिलम्ब के—बिना दया दिखाये उसे फाँसी पर चढ़ा दो" इतना कहते २ उसके नेत्रों से एक चमक प्रगट हुई उस्के होठों से निर्दयता प्रतीत होती थी "और यदि इस समय यहाँ कोई उस झूठी और नकली अदालत का मेम्बर उपस्थित है तो उसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।"

इतना सुन्तेही डेविज़ ने सलाम किया और शीघ्रता से बड़े कमरे के बाहर चला गया।

बेरेन तथा चीफ जज की इस कार्यवाही पर किसी मेहमान—वा किसी स्त्री का साहस न हुवा कि उस अपराधी के प्राणरक्षा की प्रार्थना करे।

केवल थेरिज़ा ने पिता की ओर दयाभिक्षा के निमित्त देखा, परन्तु उसने बड़ीही कड़ी दृष्टि से उसे घूरा जिसे देखतेही थेरिज़ा ने दृष्टि नीची कर ली और सिर झुका दिया।

बेरेन—(फोष्ट से) अच्छा तो विद्यार्थी महाशय! अब मैं अपनी प्रतिज्ञा का प्रतिपालन किया चाहता हूं। मैंने शपथ किया था कि जो व्यक्ति इस अत्याचारी अदालत

के मेम्बर को मेरे पास लायेगा वह मुँहमाँगी मुराद मुझ से पायेगा, और अब मैं इस प्रतिज्ञा से हटना भी नहीं चाहता, जिस्में देखनेवालों को प्रतीत हो जाये कि जैसा मैं दण्ड देने में कड़ा हूं वैसाही पारितोषिक देने में भी पूरा हूं; परन्तु विद्यार्थी महाशय ! यह भी स्मरण रहे कि मेरी इस प्रतिज्ञा के साथ एक नियम और भी है और वह यह कि जो वस्तु मेरे अधिकार में होगी उसी को तुम्हें मैं दूंगा।

फोट—हाँ हाँ मैं समझा ! श्रीमान् के मुंह के निकले यही वाक्य थे कि जो व्यक्ति उस अपराधी को पकड़ लायेगा वह मुँह माँगी मुराद पायेगा परन्तु जिस्का पूरा करना मेरे वश में हो।

बेरेन—यथार्थ में—तुम्हारी स्मरणशक्ति बहुत अच्छी है। और मैं तुम्हारे एक दूसरे अनुग्रह से और भी अनुगृहीत हूं। मेरी पुत्री थेरिज़ा को भी तुम लोर्ड लिंसडार्फ के बन्धन से निकाल लाये थे, बस तुम विना रुकावट के कोई ऐसा इनाम मुझसे माँगो जिस्से तुम्हारे इन दोनों अनुग्रहों का भली प्रकार बदला हो जाये।

फोट—इस्के पहले कि श्रीमान् से मैं अपनी इच्छा प्रगट करूं यह कहदेना उचित समझता हूं कि एक छोटी सी सेवा और भी श्रीमान् की मैंने की है, जिस्के छिपाने की अब कोई आवश्यक्ता नहीं है। उसदिन जब लिंसडोर्फ के सिपाही आपके दुर्ग पर धावा कर रहे थे और फिर दुर्ग की दीवारों पर पहुंच कर आपकी सैन्य को वे चल विचल कियेडालते थे, तो मैं ही सिर से पैर तक हथियारों से लदके आया था और मेरेही एक तनिक से इशारे पर आपकी जय और वैरियों की पराजय हुई।

बेरेन—(ताने से) विद्यार्थी महाशय ! कदाच यह बात तुमने कहीं से सुन पाई है जिसे ऐसे बयान करते हो। नहीं तुमसे ऐसी वीरता का होना असम्भव है।

फोट—(चिल्लाके, इस समय उस्का चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था) क्या आप मुझपर सन्देह करते हैं ? मैं श्रीमान् को इस्का भली भाँति विश्वास दिला सक्ता हूं—परन्तु नहीं ; मैं चार्ल्स महाशय से निवेदन करता हूं कि वेही इसबात की शाक्षी दे दें।

चार्ल्स—मैं किसी प्रकार का इनपर सन्देह नहीं करता ! इस वीर पुरुष ने दो बार नितान्ति दुर्गम्य स्थानों में अकेले पहुँचके मेरी प्राणरक्षा की है।

बेरेन—अच्छा तो विद्यार्थी महाशय ! मैं तुम्हारे इस अनुग्रह को भी स्वीकार करता हूं। और साथही यह भी कहता हूं कि विना विलम्ब के कोई ऐसा एक इनाम मुझसे माँगो जो इन तीनों का प्रतिफल हो सके।

फोष्ट—ऐसाही होता है (ऊँचे स्वरों में) मैं श्रीमान् तथा अन्य सभ्य व्यक्तियों से निवेदन करता हूं कि क्या वह व्यक्ति, जिसने रोज़ेन्थेल के घराने को, अत्याचारियों के हाथ से बरबाद होने से बचाया हो—और जिसने श्रीमान् की प्रिय पुत्री को, जिस्का छुटकारा आपके सैन्य के आक्रमण पर निर्भर था (और कौन जानता था, कि कदाच आपही की पराजय उस से हो जाती) वैरी के बंधन से निकाला, और आपकी गोद में उसे डाल दिया—और जिसने उस वैरी को भी, जिसने आपके मेहमानों के सामने आपकी ऐसी मर्यादा भङ्ग की थी पकड़ लिया, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि वही व्यक्ति जिसने यह सब किया यदि आप से इतनी प्रार्थना करे कि आप की प्रिय पुत्री थेरिज़ा उस से विवाह दी जाय तो क्या यह कुछ अनुचित होगा?

इस समय कुल नेत्र बेरेन की ओर फिरे और जिसे देख के वे थेरिज़ा पर जा पड़े। कुछ काल पर्यन्त बेरेन की पलकें झुकी रहीं परन्तु उसने बड़ेही उद्योग से अपने बढ़ते हुये क्रोध को रोक लिया।

थेरिज़ा लज्जा से पानी २ हो गई और उसने अपना सिर नीचे झुका लिया।

बेरन—विद्यार्थी महाशय! जो सेवा तुमने हमारी की है वह कुछ ऐसी ऊँची तथा श्रेष्ठ है कि मुझे कड़े शब्दों को जिह्वा पर लाते भी लज्जा आती है। अभी तुम्हीं ने कहा था कि मैं केवल उन बातों को कर सक्ता हूं जो मेरे वश में हैं और थेरिज़ा पर तो मेरा कोई वश नहीं है इस्से मैं तुम्हारी इस प्रार्थना को सर्वतो भाव अन्यथा समझ के अस्वीकार करता हूं।

फोष्ट—(गम्भीरता से) श्रीमान्, और साथही अन्य सभ्य गण से भी निवेदन है; कि मेरी बातों को वे भली प्रकार सुनें। केवल तीन रुकावटें ऐसी हैं कि जिनसे श्रीमान्, थेरिज़ा का व्याह मुझसे नहीं कर सक्ते। प्रथम तो यह कि मैं एक दरिद्री अर्थहीन विद्यार्थी हूं मेरे वंश और कुल का भी कोई विशेष ठिकाना नहीं है—दूसरे यह कि कदाच थेरिज़ा मुझे स्वीकार न करे मुझ पर वह घृणा करती हो—तीसरे यह कि उस्की मँगनी एक अन्य व्यक्ति के साथ की जा चुकी है।

बेरेन—फोष्ट, यथार्थ में यही बातें हैं जो तुमने न्याय की दृष्टि से देख स्पष्ट रूप से प्रगट कीं, और कदाच् इस से साफ चीफ जज महाशय भी न कह सक्ते जैसा तुमने इस समय कहा है।

फोष्ट—(घमण्ड से) अच्छा तो अब इधर देखिये। आप लोग सभी जानते हैं कि

एक बड़ा भारी राज्य और दुर्ग ओरेना के नाम से ; राजधानी वायना के निकटही वर्तमान है। उस राज्य के इस ओर रोज़ेन्थेल की सीमा सटी हुई है, और उस राज्य के अधिकारी को भी ठीक उसी भाँति शाहंशाह जरमनी के दरबार से कौन्ट की उपाधि प्रदान की गई है जैसा कि श्रीमान्—आपको।

बेरेन—परन्तु विद्यार्थी महाशय! इससे आपका क्या तात्पर्य्य है? मैं भली भाँति जानता हूं कि वह राज्य लावारिस होने के कारण वर्षों से गवरमेन्टजरमनी के अधिकार में है, परन्तु जरमनी में इतना बड़ा धनाढ्य कौन है जो उसे खरीद सके?

फोष्ट—वह धनाढ्य मैं हूं अब मेराही अधिकार उस राज्य पर है।

इतना कहके उसने अपने जेब से एक पत्र निकाला और खोल के जज महाशय के सामने रख दिया और बोला "श्रीमान् तो कुछ दिवसों पर्यन्त शाहंशाही दरबार में रजिष्ट्रार रह चुके हैं आप इसबात को भली भाँति जान सक्ते है कि यह लिखावट वा मुहर इत्यादि जाली तो नहीं हैं।"

मिष्टर किरचर ने एक सरसरी परन्तु आश्चर्य से भरी हुई दृष्टि उस कागज पर डाली और फिर बोलेः—

"यह बिलकुल ठीक और सच्ची लिखावट है, मैं शाहंशाह के हस्ताक्षर को भली भाँति पहचनता हूं।"

बेरेन—(इस बात से लज्जित होके) श्रीमान्, कौन्ट ओरेना महाशय! आपका स्थान इस टेबुल पर है, आप हमलोग से कहीं ऊँचे हैं, मुझे अब आप पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहा, और अब यह भी सम्भव है कि आप से व्याह करने में मेरी पुत्री किसी प्रकार की अरुचि न दिखाये। परन्तु वह तीसरी बात! जो श्रीमान् ने स्वयंही मुझसे कही है बड़ीही कठिन है। मेरी पुत्री थेरिज़ा की अन्य के साथ मँगनी हो चुकी है।

फोष्ट—परन्तु अब वह मँगनी टूट भी चुकी है।

बेरेन—(चिल्लाके) यह श्रीमान् को कैसे मालूम हुवा?

फोष्ट—अभी देखिये इस बात को मैं निर्णय किये देता हूं। जितने महाशय यहाँ उपस्थित हैं उन सबको मालूम होगा कि "मैं कुछ दिवस हुये निकटस्थ नगर विटेनवर्ग में वन्दीवत् रक्खा गया था। मैं वहां से एक ऐसे व्यक्ति द्वारा छुड़ाया "

इस स्थान पर चीफ जज सिर से पैर पर्यंत कांप उठे।

फोष्ट एक ऐसे व्यक्ति द्वारा छुड़ाया गया जो अतुल सम्पत्ति और असीम अधिकार का स्वामी था। उसने मुझपर बड़ीही दया दिखाई और मुझे केवल बन्दी से ही नहीं छुड़ाया वरन् कृपा कर अपने धन से वह दुर्ग, राज्य सहित मेरे लिये खरीद दिया। इस्के उपरान्त वह, दिन रात भ्रमण करके वायना में पहुंचा और वहा कुछही घंटों में उसने अपना कर्तव्य साधन किया। वहां उस्से आर्क ड्यूक लिउपोल्ड से भी साक्षात हुई जिन्होंने उसे एक पत्र बेरेन रोज़ेन्थेल के नाम लिख दिया। दिन और रात चल के वह पुनः विटेनवर्ग में आ पहुंचा। अब वह कुछ ही घण्टों में यहां आया है और श्रीमान् को वह पत्र लाके दियाही चाहता है।

इसी समय एक लम्बा और हृष्ट पुष्ट व्यक्ति, सुफेद कपड़े पहिने कमरे के एक ओर से उत्पन्न हुवा और एक मुहर लगा हुवा लिफाफा बेरेन के सामने उसने रख दिया।

जब बेरेन उस पत्र को खोल रहा था तो फोष्ट, जो अब टेबुल के ऊंचे सिरे की ओर आ गया था, थेरिज़ा की कुरसी पर झुका और धीरे से उसने उस्के कान में कहा "प्यारी! अब तू निश्चय मेरी हो जायगी।"

लिफाफा खोल के, बेरेन ने पत्र निकाला, और शीघ्रता से उसपर दृष्टि दौड़ाई और फिर खेदयुक्त मूर्ति बनाके उसने पत्र को मेज़ पर डाल दिया और धीरे २ कहने लगा "आर्कड्यूक अपने हाथों से थेरिज़ा की मंगनी को तोड़ते हैं।"

इस्के उपरान्त चीफ जज ने उस लिखावट को उठालिया और भली भांति देख के बोले:—

"श्रीमान् ड्यूक महाशय ने इसमें बड़ीही सभ्यता प्रगट की है, वे लिखते हैं कि मुझे जानपड़ा है कि कुमारी थेरिज़ा किसी अन्य व्यक्ति पर आशक्त है, और वह स्वयं भी किसी अन्य स्त्री पर आशक्त हैं जिसने बिलकुलही उनके हृदय पर अधिकार पा लिया है इस से वे इस मंगनी को तोड़ते हैं।"

फोष्ट—(कुछ काल लों प्रतीक्षा करके) तो अब मेरे निवेदन के बारे में श्रीमान् की क्या आज्ञा होती है?

बेरेन कौन्ट ओरेना! तूने हमारी सब रुकावटों को तोड़ दिया।

यह सुन्तेही फोष्ट, कुमारी थेरिज़ा की ओर बढ़ा; जिसने प्रेम से अपना हाथ इसकी ओर बढ़ा दिया और जिसे इसने बड़ेही प्रेम से चूम लिया और उसी समय चारों ओर से बधाई की आवाजें आने लगीं।

पन्द्रहवाँ बयान ।

प्रतिज्ञा—बदला ।

प्यारे पाठकगण ! ये घटनायें जिनका उल्लेख पिछले बयान में हो चुका है इतनी शीघ्रता से हुईं कि वहां के उपस्थित मनुष्यों का ध्यान पहिली बात से पृथक् होता जाता था और नई २ बातों में लगता जाता था।

इसी प्रकार जब अचांचक रस्सी और खंजर टेबुल पर दीख पड़े, तो लोगों के हृदय से चीफ जज की उस कोठरी वाली कहानी बिलकुलही भूल गई, और फिर इसके उपरान्त जब, चीफ जज तथा बेरेन ने मिल के गुप्त अदालत के एक मेम्बर को फांसी का दण्ड दिया तो लोगों के हृदय में उस पहिली बात के स्थान, भय और कंपकंपाहट आ जमी और वह पिछली बातें सब भूल गईं ! और इस्के उपरान्त जब फोष्ट ने थेरिज़ा के निमित्त बेरेन् से प्रार्थना की और उसकी तीनों रुकावटों को भङ्ग कर के थेरिज़ा का कर थांभा, तो लोगों के हृदय से वह पहिली सभी बातें मिट गईं और उन्हें फोष्ट और थेरिज़ाही दीख पड़ने लगे।

इसके उपरान्त कौन्ट ओरेना तथा कुमारी थेरिज़ा के निमित्त एक २ प्याला शराब का पीके कुल स्त्रियां इस बड़े कमरे के ऊपर के कमरे में चली गईं जहां अनेक प्रकार की मिठाइयां तथा मेवे प्रतिष्ठित लोगों के योग्य चुने हुये थे।

इसी समय फोष्ट भी कोठरी के बाहर हुवा । परन्तु वह उन मेहमानों के साथ ऊपरवाले कमरे में न गया। वह सीधा दुर्ग की दीवार की ओर झपटा चला जाता था और जब वह वहां पहुँचा तो उसने एक शकल को अपनी प्रतीक्षा करते हुये वहां खड़ा पाया।

पिशाच—कहो फोस्ट अब तो तुम कृतकार्य हुये ?

उसकी प्रतीक्षा करने वाला यह पिशाचही था जिसने फोस्ट से एक भयानक स्वर में यह प्रश्न किया।

कौन्ट ओरेना—वास्तव में मैं कृतकार्य हुआ और आज के तीसरे दिवस व्याह की रसमें भी पूरी कर दी जायेंगी। परन्तु क्या तुम उस भयानक नियम को जो तुमने मुझ से कराई है कम न करोगे ?

पि०—किसी मनुष्य की सामर्थ्य ऐसी नहीं है जो उस वाक्य को बदलवा दे। तुच्छ

मनुष्य ! तू भूतपूर्व बातों के लिये वृथा क्यों शोक करता है। जो कुछ सोचना हो भविष्य के निमित्त सोच !

फोस्ट—भविष्य के निमित्त ! हाय ! बस यही एक ऐसा ध्यान है जो मेरा हृदय कँपाये देता है।

भूत—अच्छा तो अब वर्तमान् अवस्था की बातों परही विचार कर। थेरिज़ा अब तेरी होगी अब कोई तुझे उस से पृथक् नहीं कर सकेगा। तूने लार्ड रोज़ेन्थेल के गर्व को चूर्ण किया और उस से भली प्रकार बदला लिया, और चीफ जंज से तो तूने इस भयानक तरह से बदला लिया है कि मानों उसकी कमरही तोड़ दी।

फोस्ट—सच कहते हो परन्तु अभी तो वह इस बात से अविज्ञ है परन्तु मैं उसपर शीघ्रही प्रगट कर दूंगा।

इतना कहके फोस्ट बड़ाही प्रसन्न हुआ। वह अपने इस बदले से प्रसन्न और अपने असीम सामर्थ पर घमण्ड से फूल गया।

भूत—क्यों ! मेरी सलाह कैसी बुद्धिमानी और तेरे दिल की थी ! मैंने कैसे समय और कैसी बुद्धिमानी से तुझे उस व्यक्ति के बचाने की सलाह दी, जो गुप्त अदालत के मेम्बारों द्वारा मारा जाने को था ! और क्या मैंने इसमें भी बुद्धिमानी नहीं की जब तुम्हें उसी व्यक्ति को दुर्ग रोज़ेन्थेल की दीवारों पर बचाने के लिये सलाह दी ? और क्या मेरी इस सलाह में तुम्हारी भलाई नहीं हुई जब मैंने लार्ड लिन्सडर्फ की जय होने और थेरिज़ा को उठा ले जाने देने के लिये तुम से कहा था ? मूढ़ मनुष्य ! यदि तू मेरी सलाह पर चला होता, तो इस आंधी के बुलाने की भी कोई आवश्यकता न होती, जिसने इतने हरे भरे स्थानों को चौपट कर दिया। जब तूने यह देखा कि थेरिज़ा का अचल धर्म तेरी चिकनी चुपड़ी बातों से किसी प्रकार नहीं डिगता, तो तुझे उसी समय उसे छुड़ाना था जो अन्त तुझे करनाही पड़ा।

फोस्ट—(प्रेत की बातों से बड़ाही रुष्ट होके) बेईमान ! क्या तूने मुझे यह विश्वास दिला के धोखा नहीं दिया कि थेरिज़ा परपुरुष पर आशक्त है ? और क्या तूने उस तसवीर को अन्य की बता के मुझे अँधेरे कुयें में नहीं ढकेल दिया ?

प्रेत—(ज़ोर से हँस के और चिल्ला के) हां-हां-यह तो सब हुआ। मैंने तुझे अपने वश में करनेही के लिये यह सब किया था परन्तु अब क्या मैं एक ईमानदार सेवक

के भांति तेरी गुलामी नहीं करता हूं ! हां तो तीन दिवसों के उपरान्त तेरे व्याह की रसमें पूरी होगी? क्यों फोस्ट!

फोस्ट—हां तीन दिवसों के उपरान्त प्यारी थेरिज़ा मेरी होगी। परन्तु अब मैं हिचकिचाता हूं-हां मैं तेरे इस भयानक नियम को स्वीकार करते हिचकिचाता हूं कि अपना पहला बेटा जन्मतेही तेरे हाथों में दे दूं।

पिशाच—देखो फोस्ट ! व्यर्थ मुझे ताने न दो और न ऐसे समय अपने असीम आनन्द ही को हाथ से जाने दो।

फोष्ट—भला तुझे नहीं तो और किसे मैं ताने दूं?

पिशाच—अपने को तुम्हें यह सब उस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के पहले, सोचना चाहिये था, जिस्से पहले चौबीस वर्ष के निमित्त तो मैं तुम्हारा गुलाम बना हूं फिर इस्के उपरान्त, तुम्हें मेरे वश में होना पड़ेगा।

फोष्ट—(कष्ट से) हाय कैसा उत्तम होता यदि मैं प्रत्येक विषय पर भली प्रकार विचार करके तब तुझे उत्तर देता। (आपही आप) परन्तु यह हो कैसे सक्ता था चाण्डाल के फन्दे से मैं कहां बच के जा सक्ता था।

पिशाच—(ज़ोरसे हंसते हुये) यथार्थ में! परन्तु अब अपनी इस वर्तमान् अवस्था पर दृष्टिपात करो! पिछली बातों का पीछा छोड़ो। और इसी पर बात चीत करके इसे इस समय निर्णय करदो। हां तो हमारे एकरारनामे का नियम एक यह भी है कि तुम, कभी किसी गिरजा वा किसी पुजेरी के मकान में किसी धार्मिक रसम को भी संपादन करने न जाओगे, और यदि तुमने इस नियम को भङ्ग किया और किसी धार्मिक स्थान में गये तो मैं तुरन्तही तुम्हारी कुल शक्तियों को छीन के तुम पर अधिकृत हो जाऊंगा। अच्छा! इसका उद्योग करके भी तो तुम देखही चुके हो कि थेरिज़ा अपने पिता की आज्ञा कदापि भङ्ग न करेगी और उसे छोड़ के वह तुम्हारे साथ कभी न भागेगी। इस लिये तुम्हें उसे अपना करने के लिये उचित और सभ्य रास्तों पर चलनाही होगा और यही कारण है कि तुम गिरजा में जाते और थेरिज़ा के साथ व्याह करते घबराते हो?

फोष्ट (पागलों के भांति) घबराना! मैं किस लिये घबराता हूं, क्या तू नहीं जानता। हाय! यह नियम जो तू स्वीकार करने को मुझसे कहता है इसी से मैं घबराता हूं, अर्थात् यदि मैं गिरजा में जाके थेरिज़ा से व्याह करूं, तो तुझे अपने पहले

पुत्र पर वही अधिकार दे दूं जो तुझे मुझपर है। अरे अत्याचारी (क्रोध से लाल होके) अरे पाखण्डी! क्या मैंने सर्वस्व अपना तुझे नहीं दे दिया है? अब तू मुझसे और क्या माँगता है— और वह भी इतना **ज्यादा?**

पिशाच—(बहुतही ठंढे स्वभाव और गम्भीरता से) मुझे मनुष्य पर विजय पाके कभी तृप्ति नहीं होती।

फोष्ट—(बड़ेही क्रोध से चिल्लाके) पाजी! निर्दयी! अत्याचारी! बेईमान! तू एक ऐसे व्यक्ति को विवश करता है कि जिसका अभी व्याह लों भी नहीं हुवा है— अरे उसके होनेवाले पुत्र की आत्मा तथा शरीर को अपने वश में करने के लिये तू उससे प्रतिज्ञा करा रहा है।

पिशाच—हां करा रहा हूं। मेरे दस्तावेज़ का एक नियम ही यही है।

फोष्ट—(निराशा से मिले हुये क्रोध से) हाय! क्या कुल नरकवासी तेरेही सदृश हैं? जहां से तू आया है क्या वह स्थान तेरेही जैसे पिशाचों से भरा हुवा है। हाय२! भाग्य ने हमें किस निर्दयी के हाथों डाल दिया! यदि मुझे इस समय का स्मरण मात्र भी इसके पहले होता—यदि मैं तनिक भी जानता कि भविष्य में मेरा क्या होने वाला है—यदि तेरे अत्याचारों का तनिक भी अनुभव मुझे हो जाता; तो मैं लाखबार इस जीवन से; उस दुःखमय जीवन को श्रेष्ट समझता,—यह एक क्षण की प्रसन्नता है जो मुझे प्राप्त होती है—यह सुख आकाश की चमकती बिजली के सदृश है कि चमकी और अन्तर्धान हुई धिक्कार है हमारे इस कुछ क्षण के अधिकार पर, कि आज है और कल नहीं। और फिर उसके उपरान्त हमारा परिणाम! हाय वह कितना दुःखद है कि एक तुझ ऐसे नीच के साथ सदैव के लिये नरक की जलती बलती अग्नि में मुझे जलना होगा।

पिशाच—तेरा क्रोध अब व्यर्थ है। अच्छा अब अपने आनन्द और सुख के समय की एक तस्वीर मुझे खींचने दे। चारों ओर सुन्दर हरे भरे बाग हैं, जहाँ पृथ्वी के यावत् फल तथा स्वादिष्ट मेवे लगे हुये हैं। जिनके सामनेही एक बहुत बड़ा हरा भरा मैदान है, जिस में अनेकानेक चाँदी के से चमचमाते श्रोते, अपने छोटे२ किनारों के बीच से बहते चले जाते हैं, जिनमें अनेकानेक सुन्दर२ पशु इधर उधर चरते तथा किलोलें करते फिरते हैं। जहाँ लों दृष्टि जाती है अर्थात् जहां पर आकाश और पृथ्वी मिलते दिखाई देते हैं वहां लो केवल मनोहर घासों

का हरा भरा एक मखमली फर्श बिछा दिखाई देता है और वायु सुरीले पक्षियों के गान, तथा सुगन्धित पुष्पों के सुगन्धि से बसी हुई इधर उधर हिलोरें लेती फिरती है— इस आनन्द दायक और मनोरञ्जक स्थान के बीचों बीच एक बहुत बड़ा और सुन्दर महल, आकाश से बातें करता हुवा खड़ा है। इस महल की दीवारों के भीतर आनन्द और सुख की यावत् वस्तुयें जो पाई जा सक्ती हैं सब उपस्थित हैं बसन्त के मौसिम में मीनाकारी का बड़ा कमरा, सफाई से चमचमा रहा होगा। फुहारों के छूटने का मनोहर दृश्य जिनके किनारे, फूलों से भरे होंगे तुम्हारे सामने होगा। जाड़े के दिनों में वे बड़े २ कमरे, अङ्गीठियों से गरम होंगे, जिनसे मुश्क और अम्बर इत्यादि की गमक चारों ओर फैल रही होगी। ऐसे मनोहर दृश्यों के बीच में; जब तन्दुरुस्ती की सच्ची लालिमा तेरे गालों पर चमक रही होगी, उस समय तू एक स्त्री का हाथ अपने हाथों में दिये, और स्त्री भी कौन ! जो संसार भर की सुन्दर कामनियों से बढ़ के है—उन्हीं महलों में इधर से उधर; टहलता हुवा दिखाई देगा। तू उसके साथ बड़े और ठंढे कमरों में उस समय विहरता होगा जब गरमी के दिनों में, सूर्य की किरनें कड़ी हो जाती हैं, वायु भारी हो जाती है। और जाड़े के दिनों में तू उन बड़े २ सजे कमरों में विहार करता होगा जिनमें कृतृम गरमी का मौसिम बनाया गया होगा, जिनमें तू आनन्द पूर्वक विचरता होगा—फोष्ट अब कह तो सही कि इससे बढ़के संसार में और क्या आनन्द मिल सक्ता है ?

फोष्ट—(प्रसन्नता से) आह। यह तस्वीर तो बड़ीही सुन्दर है।

फोष्ट का वह सब पिछला क्रोध पिशाच की गरम और चमचमाती हुई लालच की किरनों के डालने से पाले के भांति, पिघल गया।

पि०—वह दृश्य और यह महल जिस्की तस्वीर अभी मैंने तेरे सामने खींची है ओरेना की है, और वह सुन्दर स्त्री, जिस्के साथ तू विहार करता होगा, थेरिज़ा है।

फोष्ट—बस ठीक है—ठीक है ! अब मैं तुह्मारे नियम को स्वीकार करता हूं, और अब लाओ मैं उस काग़ज़ पर हस्ताक्षर भी कर दूं।

पिशाच—अच्छी बात है।

इतना कहके उसने एक लपेटा हुवा कागज और लिखने की सामग्री निकाल के फोष्ट के सामने रख दी। चन्द्रमा का साफ और स्वच्छ प्रकाश इस स्थान पर पड़ रहा

था, जिस कारण उस भयानक कार्य के सम्पादन करने में उन्हें किसी लम्प की आवश्यक्ता न पड़ी।

जब फोष्ट हस्ताक्षर कर चुका, तो पिशाच एक ओर चल दिया, और फोष्ट ने दूसरे ओर की राह पकड़ी।

कुछही मिनटों के उपरान्त, फोस्ट, फाटक के निकट पहुँचा।

फाटक के बीचों बीच, जिस्के दोनों ओर दो बुर्ज थे एक लाश जंजीरों में जकड़ी झूल रही थी। वायु के चलने से, लाश हिलने लगती थी, और जिस्के साथही जंजीर की कड़कड़ाहट भी सुन पड़ती थी।

लाश इधर उधर हिल रही थी, और प्रत्येक झोंके में उस्के चेहरे पर चाँद का प्रकाश आ २ के पड़ रहा था।

इसी समय फोस्ट के निकट से एक स्वर सुन पड़ा, "इस अत्याचारी अदालत के मेम्बर से ऐसाही वर्ताव करना उचित था।"

"इसमें क्या सन्देह" इतना कहके कौण्ट ओरेना ने मुड़के देखा तो जान पड़ा कि पूर्वोक्त बात के कहनेवाले जज महाशय हैं।

फो०—क्या आप इस दुष्ट को जो फाँसी पर लटक रहा है, जानते हैं?

जज०—मैं? भला यह श्रीमान कैसे अनुमान करते हैं, कि मैं इसे जानता हूं?

फोस्ट—अच्छा तो आइये तनिक चलके इसे देख तो लें।

इतना कहके फोस्ट शीघ्रता से एक बुर्ज पर से ऊपर चढ़ने लगा और क्षण भर में छत पर जा पहुँचा।

इस्के साथही साथ चीफ जज भी थे।

फोस्ट—(ईर्षा भरे स्वर में) अबतो आप इस मुर्दे का पीला चेहरा भली प्रकार यहाँ से देख सके हैं?

यह सुनके चीफ जज और निकट चला गया। और एक पूरी दृष्टि लाश के चेहरे पर डाली। लाश का चेहरा देखतेही एक सनसनाती हुई चीख़ उसके मुँह से यह कहते निकल गई।

"मेरा पुत्र—मेरा इकलाता पुत्र!"

इतना कहके वह वहीं बेहोश होके गिरपड़ा।

फोष्ट—अत्याचारी और निर्दयी जज ! आज उस अत्याचार का वदला पूरा हुवा जो तूने एक वेचारे विद्यार्थी पर किया था, और जिसे तू निरपराध फाँसी पर चढ़ाने को था ।

अभागा पिता तो पुत्र शोक में पत्थर पर वेहोश पड़ा हुवा था, और इधर फोष्ट वदले के प्रसन्नता से हर्षित होता, धीरे २ नीचे उतरने लगा ।

सोलहवाँ बयान ।

महल की सैर ।

हमारा उपन्यास अब कुछ सप्ताह आगे से प्रारंभ किया जाता है और पाठकगण को अब हमारे साथही साथ, वायना की ओर चलना होगा ।

नगर के एक वहुतही अँधेरे, मैले, तथा सँकरे महल्ले की एक छोटी और गन्दी कोठरी में जिसमें साज समान नाम मात्र को था, चार्ल्स हेमेल और उसकी प्यारी स्त्री मेरिया को हम वैठा पाते हैं ।

सन्ध्या का समय था । एक छोटा लम्प टेवुल पर जल रहा था, जिसपर कुछ सामान्य भोजन भी रक्खा हुवा दिखाई देता था ।

भोजन करती समय, चार्ल्स, अपनी प्यारी स्त्री के चेहरे को उसका हार्दिक भाव जानने के निमित्त वहुतही दृष्टि गड़ा २ के देख रहा था, परन्तु प्रायः जव उसकी दृष्टि भी इसके ओर उठजाती थी तो यह झट इधर उधर देखने लगता था जिसमें मेरिया के चित्त में किसी प्रकार का सन्देह न उत्पन्न होने पाये ।

परन्तु मेरिया का चेहरा इस वात की शाक्षी दे रहा था कि वह वड़ीही प्रसन्न है, एक मुस्कराहट जो हार्दिक प्रसन्नता के कारण थी, उसेक होठों पर अपना स्थान वनाये हुई थी । उसकी आँखें हर्ष से चमक रही थीं, इसका कारण क्या था ?—वस यही कि वह अपने प्यारे पति की प्यारी वनी हुई उसके निकट वैठी आनन्द से अपना आनन्दमय समय व्यतीत कर रही थी ।

चार्ल्स—प्यारी ! हमें वायना में आये आज दस दिवस वीते । परन्तु तुमने एक वेर भी यहां के वड़े २ मकानों तथा मनोहर स्थानों के देखने की इच्छा प्रगट न की । और न हमनेही आजलों नगर के किसी उत्तम भाग की सैर की ।

मेरिया — प्यारे, जब मैं बाहर जाती हूं तो मुझे ऐसा बोध होता है कि मानों मैं अपने घरही में बैठी हूं। मेरे कानों में तुम्हारे स्वर के अतिरिक्त और कोई कण्ठस्वर नहीं बसता। मैं जिस ओर देखती हूं तुम्हाराही प्यारा मुखड़ा मुझे दिखाई देता है। प्यारे! जब तुम मुसकराते हो तो मैं बड़ीही प्रसन्न होती हूं और अनुमान करती हूं कि मेरे लिये अब इससे विशेष सुख और किसी प्रकार नहीं मिल सक्ता।

चार्ल्स—परन्तु क्या मेरे होते भी, तुम इस सन्नाटे में रहना पसन्द करोगी?

मेरिया—क्यों? बस यही तो मेरी इच्छाही है।

चार्ल्स—(जोश में चिल्ला के) प्रिये! धन्य तेरे हृदय की स्वच्छता! आह! कैसा निर्मल तुम्हारा हृदय है! तुम्हारे मुखड़े से कभी भी यह प्रतीत न हुवा, कि मैंने तुम्हें कैसा धोखा दिया।

मेरिया—(चार्ल्स का हाथ पकड़ के और उसे प्रेम से दबा के) धोखा! क्यों प्यारे धोखा कैसा? भला यह कभी संभव भी है! तुमने कदापि मुझे धोखा नहीं दिया— और न कदापि मुझे तुम धोखा दोगे! आह! भला इस गूढ़ शब्द का तात्पर्य क्या है प्यारे?

चार्ल्स—नहीं इन शब्दों का अर्थ तो कुछ भी नहीं, परन्तु ये शब्द तुम्हें अपने चारों ओर देखने पर रहस्यमय जान पड़ेंगे। क्यों प्यारी! मैंने तुम्हें उस संध्या को, दुर्ग रोजेन्थेल में, जब तुमने अपना प्रेम मुझपर प्रगट किया था और मैंने अपनी वेदना तुम्हें कह सुनाई थी तो साथही यह भी नहीं कह दिया था कि मैं एक धनाढ्य पुरुष हूं और मेरी आय बहुत अच्छी है?

मेरिया—(मुसकरा के) तो तुमने अपने कथनानुसार सभी कुछ तो प्रस्तुत कर दिया! क्या रहने को हमें मकान नहीं है? उदर पूर्ति के लिये भोजन नहीं मिलता और सबसे विशेष आनन्द तो हमें इसका है कि तुम हमारे पास हो।

सुन्दरी के इस कथन पर हमें किसी कवि क कहा एक बरवा याद आगया उसका भी तात्पर्य ठीक मेरिया के कथनानुसारही है इस कारण उसे यहां लिखदियाः—

टूट टाट घर टपकत खटियो टूट। पिय की बांह उसिसवां सुख कर लूट॥

मेरिया की बात सुनके और आपही आप पुलकित होके फिर चार्ल्स ने कहा।

चार्ल्स — आह मेरिया! तो तुम्हें अभीलों यही विश्वास है कि मैंने तुम्हें कोई धोखा

नहीं दिया! अच्छा जब तुम अपने चारों ओर इन टूटी फूटी दीवारों—टूटी फूटी वस्तुओं और इस भोजन को देखती होगी तो तुम अपने आप अवश्यही कहती होगी कि दोनों आंखों के अन्धे और नाम नैनसुखदास—वहां से तो वह आडम्बर बांध के लाये और यहां इनका यह हाल है।

मेरिया—चार्ल्स—प्यारे चार्ल्स! मैं परमेश्वर को बीच में डाल के तुम से शपथ पूर्वक कहती हूँ, कि उन सामानों की, और बड़े आडम्बरों की, न तो कोई मुझे आवश्यक्ताही है और न उन्हें पाके मैं प्रसन्नही हूंगी। मैं अनुमान करती हूं कि संसार की कुल स्त्रियों से मैं विशेष सुखी हूं—स्वयं मेरी अवस्था, जब आपने पहले पहल मुझ से साक्षात की थी तो क्या थी?—केवल एक लौंडी—"

चार्ल्स—(बात काट के) माना मैंने परन्तु उस समय तुम एक राजमहल में रहती थीं और अपनी प्यारी सहेली राजकुमारी के साथ संसार भर की उत्तमोत्तम आनन्द दायकवस्तुओं को व्यवहार में लाया करती थीं।

मेरिया—(रोती हुई और जोर से) हाय चार्ल्स तुम मेरे स्वभाव से भली प्रकार परिचित नहीं हो—यदि तुम एक किसान होते और दिन रात कठिन परिश्रम से तुम्हारी कटती होती!—साथही मुझे तुम्हारी प्रत्येक प्रकार की सेवा करनी पड़ती और उसपर भी भोजन के निमित्त एक टुकड़ा रोटी और पीने को श्रोते का जल मिलता—और यदि हमलोगों का कोई घरबार न होता केवल इधर उधर इस विशालाकार मेदनी मण्डल में घूमते होते—और न हम यही स्थिरकर रहते कि प्रातःकाल हमारा निवास कहाँ होगा वा संध्याही को किस स्थान पर हमें डेरा जमाना पड़ेगा—भोजन हमलोगों को बिना दिन भर के कठिन परिश्रम के प्राप्तही न होता—और संसार हमलोगों के लिये शून्य होता! अपना कहने के लिये भी कोई यहां न होता। और कोई स्थान अपनी रक्षा के निमित्त हमलोगों को न मिलता—आह! तब-तब भी, प्यारे चार्ल्स तुम मेरे होठों पर मुसकराहट, और नेत्रों से प्रसन्नता प्रगट होते पाते—परन्तु उस समय भी ये तभी प्रगट होते जब तुम्हें भी मैं मुसकराता पाती और जब तुम्हारे नेत्रों से भी मैं प्रन्नता की झलक देखती।

चार्ल्स—मेरी प्यारी—धर्मज्ञ—कोमल हृदया, और पतिव्रता स्त्री! "इतना कहके चार्ल्सने मेरिया का हाथ पकड़ के अपने गोद में लेलिया और छाती से लगा लिया" आह! यह मैं नहीं कह सक्ता कि कब! परन्तु हमलोगों की बात चीत

के तीसरे दिवस; जब कोन्ट ओरेना और थेरिज़ा का व्याह हुवा, उसी समय प्यारी, हमारे तुम्हारे भाग्य भी एकही बन्धन में बांधे गये—उस समय मुझे केवल इतनाही बोध हुवा था कि मानों मैंने एक बहुमूल्य मणिपाई। परन्तु अब तो यह निश्चय हो गया कि उक्त मणि केवल बहुमूल्यही नहीं वरन् संसार की यावत् मणियों से श्रेष्ठ और अ-द्वितीय है।

मेरिया—(अपने प्यारे पति की भौं को चूम के बहुतही धीरे २) जब तुम यह बातें मुझ से कहते हो चार्ल्स! तो मैं अनुमान करती हूं कि एक सम्राट की अपेक्षा, जिस से हृदय न मिला हो एक भिखारी से जिस से प्रीत हो गई हो व्याह करलेना बड़ाही लाभदायक है। आह! अब ईश्वर के निमित्त, मुझ से कदापि धोखा जाल इत्यादि की बातें न करना! तुमने मुझसे सदैव के निमित्त दृढ़ प्रीत रखने की प्रतिज्ञा की है, और उसे तुम पूरा भी कर रहे हो; यदि तुम मुझे एक वृहत् अट्टालिका में ले जाने की आशा दिलाते और फिर एक टूटी झोपड़ी में जा उतारते तो जबलों तुम मुझ से प्रीत करते रहते, मुझे कदापि इसका ध्यान भी न आता!

चार्ल्स—प्यारी मेरिया! तुम्हारे इस प्रेम और अटल पातिव्रत का भगवान प्रतिफल देगा। अब मैं देखता हूं कि स्त्रियों का प्रेम, केवल किस्से कहानियों तथा मनोहर गीतोंही भर में नहीं है वरन् कामनियों के हृदय में अब भी वह वर्तमान है। मेरिया! प्राणाधिके! मैं तुम से बड़ाही सन्तुष्ट हुवा ईश्वर की सौगन्द बड़ाही सन्तुष्ट हुवा। यद्यपि यह कोठरी—बड़ी सूनी और टूटी फूटी है। और वह पुराना लम्प अपना गँदला प्रकाश चारों ओर फैला रहा है। परन्तु तुम्हारे होते, हमें यह सब सुन्दर, भरा पुरा और देदीप्यमान जान पड़ता है। तुम्हारी मुसकराहट बड़े २ और लाखों के सामान से सजे हुये कमरों से भी कुछ विशेष आनन्द देती है—तुम्हारे नेत्रों से वह निर्मल प्रकाश प्रगट होता है कि बहुमूल्य से बहुमूल्य लम्पों का प्रकाश उसके आगे मिट्टी है। हां मेरिया—आज मैं इतना प्रसन्न हूं कि जैसा कदापि न हुवा था।

मेरिया—और फिर तुमने भी कदापि मुझे दुःखित नहीं किया है।

इस देवी तुल्य युती स्त्री की बातों में इतनी सच्चाई भरी थी कि उसपर अविश्वा-सता का ध्यान करना भी एक बड़े भारी पाप की गिनती में था। मेरिया, संसार के

उन सुन्दर कुसुमों में से थी जिन्हें सूर्य की गरमी और रात की ठंढक के सिवा और कुछ मालूमही न था।

कुछ देर ठहर के चार्ल्स हेमेल ने पुनः बात चीत का सिलसिला छेड़ा।

चार्ल्स—प्यारी! न तो मेरी ऐसी इच्छाही है और न मैं जानबूझ के इस टूटे मकान में रहता हूं। करूं क्या दुर्दिन ने इसी में रहने पर विवश किया है। नगर के भिन्न २ भागों में अनेकानेक उत्तम दृश्य के मकान, तथा स्थान बने हुये हैं, जहां लोग जाते हैं और उन्हें देख के चित्त को सन्तोष देते हैं। ऐसे दृश्य यथार्थ में चित्त को प्रसन्न और आत्मा को एक सच्चे सुख का अनुभव कराते हैं। प्रातः काल, मेरी प्यारी मेरिया; हम वायना के एक शाही महल की सैर को चलेंगे। जो आज कल उसके स्वामी के न होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के देखने के लिये एक विशेष दिवस पर खोला जाता है, और वह दिवस कलही है। सुन्दर चित्रकारी, और शिल्प के उत्तमोत्तम उदाहरण देखने की तुम्हें बड़ी कामना रहती है, वह महल भी इन सब कारिगरियों से भली भांति विभूषित है जिसे जिसे देख के तुम बड़ीही प्रसन्न होगी।

मेरिया—तुम्हारे भुजाओं का सहारा लिये और तुम से बातचीत करने में मैं उससे भी विशेष प्रसन्न हूँगी। परन्तु यह तो बताओ कि वह महल है किसका?

चार्ल्स—डूचक लिउपोल्ड का!

मेरिया—अच्छा तो वही डूचक जो लार्ड रोजेन्थेल के दामाद होने को थे?

चार्ल्स—हां वही! परन्तु जान पड़ता है कि उनका प्रेम किसी दूसरे से होगया जिससे उन्होंने व्याह कर लिया और इसी कारण यह मँगनी तोड़ दी। परन्तु क्यों प्यारी तुम्हारी दृष्टि में उनका यह काम क्या कुछ अनुचित हुवा?

मेरिया—(उद्वेग से) नहीं नहीं! वरन् यदि वह हमारी राजकुमारी से, जिसे उन्हो ने देखा भी नहीं था अपनी प्यारी से प्रेम तोड़ के व्याह करलेते तो मैं उनपर आक्षेप करसक्ती थी परन्तु अबतो मैं उन्हे और भी मर्यादा की दृष्टि से देखने लगी हूं।

चार्ल्स—तुम ठीक कहती हो मेरिया! अच्छा अब प्रातःकाल हमलोग आर्कडूचक के महल में चलेंगे। परन्तु मेरी इच्छा वहां इन मैले कपड़ों में जाने की नहीं है। वरन् उत्तम होगा यदि तुम वही जोड़ा पहिन लेतीं जो व्याह के दिवस पहना था और उन आभूषणों को भी पहिन लो, जो तुम्हारी प्यारी थेरिज़ा ने प्रेम से तुम्हारे व्याह पर दिये थे।

मेरिया—यदि आप इसी में प्रसन्न हैं तो मुझे अस्वीकार कब है !

इन बातों के उपरान्त यह प्रेम रस से पगी युगल मूर्ति निकटही के शयनागार में उठके चली गई।

दूसरे दिवस मेरिया ने बहुमूल्य और सुन्दर वस्त्र शरीर पर धारण किए, आभूषणों को भी अङ्ग २ पर स्थान दिया। और आज की सी सुन्दर, वह अपने प्यारे पति की दृष्टि में इससे पहले और कभी नहीं जँची थी।

आज चार्ल्स ने भी उत्तमोत्तम वस्त्र पहने थे। और जो कोई उन्हें देखता यही अनुमान करता कि यह स्वरूपवान जोड़ा योंही हाथ में हाथ दिए सीधा वैकुंठ से चला आता है।

प्रातः काल के भोजन के उपरान्त दोनों राजप्रासादभिमुख चल खड़े हुये। यह स्थान शाहंशाह से दूसरे दरजे के व्यक्ति के रहने योग्य बनाया गया था।

यह लोग शीघ्रही महल के सदर द्वार पर जा पहुंचे, और इस युगल मूर्ति ने बिना किसी से एक प्रश्न किएही द्वार के भीतर प्रवेश किया।

इनके चारों ओर सुन्दर विशाल और मनोहर दृश्य था। एक बहुत बड़ा कमरा दरबारियों से भरा हुवा था, उनके वस्त्र बड़ेही बहुमूल्य और चमकीले थे; जिसे पार करते हुए, और संङ्गमरमर की एक सीढ़ी पर से होते हुए, बहुत सी कोठरियों के सामने दोनों आन उपस्थित हुए जिन में एक२ सुन्दर पुतले मनुष्य के आकार के खड़े किये गए थे।

इन सब की कारीगरियों के देखने में बहुत सा समय व्यय हुवा और फिर यहां से एक बहुत बड़े कमरे में वे आये जिस का नाम "रसम का कमरा" था।

इस बड़े कमरे से दो द्वार दो अन्य कोठरियों में खुलते थे।

चार्ल्स—(हाथ से बता के) वह द्वार पालने की कोठरी का है।

इसके उपरान्त उसने मेरिया से, उस कोठरी का तात्पर्य भली भांति समझा दिया जिससे पाठकगण अनभिज्ञ नहीं हैं!

चार्ल्स—(उसके उपरान्त) इस कोठरी के बारे में एक विचित्र बात सुने में आई है। और वह यह कि जब डिउक लिउपोल्ड उत्पन्न हुये तो डाक्टर ने, जो उनकी माता की सेवा में नियुक्त था यह विचार किया कि अपनी बहिन के बच्चे से, जो उसी समय उत्पन्न हुवा था इस राजकुमार को बदल ले। और इसी कारण उसने अपनी स्त्री को डिउक की माता की सेवा के निमित्त नियुक्त करा दिया था। और

फिर उसने उस सिपाही को भी मिला लिया, जो, उस रात को डिउक की कोठरी के पहरे पर खड़ा किया गया था। ये लोग अपनी इस दगाबाजी और नीचता में निश्चय कृतकार्य हो जाते, परन्तु न जाने क्या ईश्वर को मंजूर था कि उसने रजिष्ट्रार के हृदय में शंका डाल दी और उसने छिप के डाक्टर, उसकी स्त्री, अर्थात दाई, और सन्तरी की कुल बातें सुनीं। बस उसे सुनतेही वह उलटे पैर वहां से फिरे और जाके डिउक को कुल बातों से अवगत कर दिया।

अर्ध निशा को, एक स्त्री को, जिसके गोद में बच्चा था और जो इस रहस्य से अवगत थी डाक्टर ने महल में प्रवेश कराया। परन्तु वहां तो यह भेद पहलेही से खुल गया था, लोग घात में लगेही हुए थे, तुरन्तही उस स्त्री को चारों का के साथ पकड़ लिया। जो पकड़े गये उनकी दशा क्या हुई? सो तो मैं तुमसे नहीं कहता, परन्तु तुमसे यह प्रश्न करता हूं, कि वह रजिष्ट्रार कौन था? वह मिष्टर किरचर वही चीफ जजही थे, जिन्हें इसके बदले में बहुत भारी इनाम मिला, और उनका ओहदा बदल के चीफ जज का स्थान प्रदान किया गया।

मेरिया—(काँप के) हाय! वही अभागा! जो उस रात से पागल होगया—"।

हेमेल—जब उसका इकलौता पुत्र दुर्ग रोजेन्थेल के द्वार पर उसी की आज्ञा से फाँसी पर लटकता दिखाई पड़ा था! वह इस आपत्ति से बच सक्ता था, परन्तु वहां तो उसी की आज्ञा ने बेचारे युवक के प्राण लिए थे।

मेरिया—और क्या कौन्ट ओरेना यह जानते थे कि उस खंजर और रस्सी का लानेवाला जज का पुत्रही है?

हेमेल—हमारी जान तो ऐसा नहीं है। क्योंकि उन्होंने केवल बेरेन की आज्ञा का प्रतिपालन किया था और फिर उन्होंने दो एक स्थान पर हमसे ऐसा सभ्य व्यवहार किया है कि जिससे हमें उनपर आक्षेप करने का साहसही नहीं पड़ता।

इसके उपरान्त चार्ल्स अपनी पत्नी को पालने की कोठरी में, जो बड़ेही साज सामान से सजाई गई थी, ले गया। फिर वहाँ से पलट के ये बड़े कमरे में आए और तदुपरान्त अन्य कोठरियों की ओर बढ़े!

मेरिया इन सब सामानों तथा बहुमूल्य वस्तुओं को देख २ के बड़ीही चकित हो रही थी। वह अभी ला रोजेन्थेल के दुर्ग ही को इन्द्रपुरी समझे हुई थी, परन्तु अब डिउक के महल के सामने दुर्ग रोजेन्थेल, अशरफी में एक पैसा उसे जान पड़ा!

खिड़कियों पर बड़ेही बहुमूल्य और सुन्दर परदे पड़े हुए थे। उत्तमोत्तम ज़रबफ्त की कालीनें नीचे बिछी हुई थीं। सोने चाँदी की कुरसियां, मोतियों तथा अन्यान्य जवाहिरों से जड़ी हुई थीं। पृथ्वी के पूर्वीय खण्ड के चाल के विशाल और मनोरञ्जक पलँग चारों ओर लगे हुये थे। बड़े २ आईने—उत्तमोत्तम फूलदान् जो गमकते हुए फूलों से भरे हुये थे—कमरों की शोभा बढ़ा रहे थे। इनके अतिरिक्त और भी अनेकानेक आल्हाद की वस्तुयें वहां एकत्रित थीं, जिन्हें देखके मनुष्य मात्र के हृदय में आनन्द की नदी हिलोरें लेने लगती थी।

परन्तु चार्ल्स के चित्त पर इन सब वस्तुओं वा दृश्य का कोई भी विशेष प्रभाव न उत्पन्न हुआ। उसने इन सब वस्तुओं को एक सरसरी दृष्टि से देखा और जब मेरिया उनके विषय में कोई विशेष प्रश्न करती तो चार्ल्स इस विज्ञता से उसे समझा के स्पष्ट रीति से उत्तर देता मानों वह इस महल में पहले कई बेर आ चुका है।

इसी प्रकार इन्हें घूमते तथा देखते अनुमान तीन घण्टे के व्यतीत हुए। तब चार्ल्स ने मेरिया से कहा; प्यारी अब एक उत्तम वस्तु तुह्मारे देखने को शेष बच रही है। और वह तस्वीरों की कोठरी है। वहां तुम्हें शाही घराने की बहुतसी तस्वीरें दिखाई देंगी। और बहुत से राजकुमारों को भी तुम देख सकोगी, जिन्हें तुम जानती हो। और यदि मेरी स्मरणशक्ति ने धोखा नहीं दिया तो तुम आर्क डिउक लिउपोल्ड की तस्वीर भी वहां देख सकोगी, जिनका वृत्तान्त अभी मैंने किया था।

मेरिया—तो प्यारे, अब उधरही चलो, क्योंकि मुझे उस प्रतिष्ठित व्यक्ति के देखने की बड़ीही उत्कंठा है जिसकी मँगनी मेरी सहेली थेरिज़ा से हुई थी।

चार्ल्स—[मुस्कराकर] परन्तु मुझे वहाँ ले चलते इस बात का संकोच आता है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम उनकी मोहनी मूरत देख के उन परमोहित हो जाओ।

मेरिया—(चार्ल्स की भुजाओं का सहारा ले के) वाह प्यारे! हमारे इस सच्चे और अछूते प्रेम पर तुम्हें हँसी न करनी चाहिये।

इसपर हेमेल केवल मुस्करा के रह गया, मेरिया की बात का कोई उत्तर उसने न दिया।

अब वे तस्वीरों के कमरे में जा पहुँचे;—यह कमरा सब कमरों से बड़ा और सबसे विशेष सजा हुवा था। इसकी प्रत्येक दीवारों पर, शाहंशाह के घराने के राजकुमार, तथा राजकुमारियों की तस्वीरें लटक रही थीं।

चार्ल्स हेमेल— डिउक लिउपोल्ड के विषय में मुझे कुछ आश्चर्ययुक्त बातें मालूम हैं। ऐसा मालूम हुवा है कि आर्क डिउक के पिता ने अपने पुत्र से थेरिज़ा की मँगनी का वृत्तान्त बिलकुलही गुप्त रक्खा था, और जब उनका देहान्त हो गया तब उस समय यह हाल राजकुमार पर विदित हुवा। इसबात को भी डेढ़ वर्ष व्यतीत होगये। अब वह समय आया कि राजकुमार अपने पिता की गद्दी पर बैठा और राज्य का कारबार देखने लगा। उस समय सहसा राजकुमार के चित्त में यह ध्यान आया कि गुप्त रीति से चलके, अर्थात् अपना नाम और अलय इत्यादि बदल के अपनी भविष्य पत्नी को एकबेर देख आए। यही सोच के वह एक सामान्य व्यक्ति की भांति दुर्ग रोज़ेन्थेल में पहुंचा; परन्तु वहां पहुंचने पर इसे मालूम हुवा कि थेरिज़ा तो दूसरे के प्रेम में पगी है। अब यहां यह बात; उसे आवश्यकीय जान पड़ी कि किसी अन्य कामिनी को अपने व्याह के लिये वह ठीक करे! अन्त ढूढ़ते २ कुछ दिनों में एक ऐसी कामिनी और रूप राशि की कान जो सर्व गुणसम्पन्ना थी उसे मिल गई, कि उसने थेरिज़ा का ध्यान तक अपने चित्त से भुला दिया और उसी को हृदयेश्वरी बना हृदय के सिंहासन पर स्थान दिया।

"आह चार्ल्स!" मेरिया ने अपने पति के साथ बढ़ते २ यह कहा। और जिसका आश्चर्य इस समय अपनी सीमा से बाहर हो के पागलपने की सीमा पर्यन्त जा चुका था! इस लिये कि हेमेल से बात करती और बढ़ती हुई वह एक तस्वीर के सामने आ गई थी जिसके पहचानने में मेरिया की भ्रान्ति सर्वतो भाव से असम्भव थी। "आह चार्ल्स" इतना कहके वह चार्ल्स के भुजाओं पर झुक गई, "यह मैं क्या देखती हूं? ठीक तुम्हारी सूरत से मिलती हुई यह तसवीर यहां है! हां—यह वही है—यह तुम्हीं हो। आह मुझे भय जान पड़ता है—मैं भयभीत हो रहीं हूं—मुझसे शीघ्र कहो! इसका तात्पर्य क्या है?"

इतना कहके वह घुटनों के बल गिर पड़ती यदि चार्ल्स उसे शीघ्रता से न सम्भालता और अपने हाथों के सहारे न खड़ा कर देता।

इसके उपरान्त चार्ल्स अपनी पूरी ऊँचाई में खड़ा हो गया। इस समय उसके सुन्दर चेहरे पर प्रसन्नता और आनन्द का समूह हिलोरें मारता दिखाई देता था, अब उसने मेरिया की ओर देख कर कहा:—

"प्रिये ! तुम पूछती हो कि इसका तात्पर्य क्या है ? इसका तात्पर्य यह है कि परीक्षा और दुःख का समय व्यतीत हुवा और पुरस्कार तथा आनन्द का समय अब आन उपस्थित हुवा ! इसका तात्पर्य यह है मेरिया कि अब तुम आज से संसार के उचश्रेणियों के व्यक्तियों में गिनी जाओगी; तुम्हारे नेत्रों के कोर से लोगों को राजा महाराजा की पदवियां मिला करेंगी—तुम्हारे सिर पर बेगम का ताज रक्खा जाएगा जिसपर इसके पहलेही तुम्हारे श्रेष्ट गुण, बहुमूल्य माणिकों से भी बढ़के चमक मार रहे हैं। इसका तात्पर्य यह है, मेरी प्यारी; कि तुम आज से जरमनी के राजकुमार, डिउक लिउपोल्ड की प्राण से भी प्रिय पत्नी हुई !

"मेरे महाराजाधिराज—श्रीमान शाहज़ादा—"

इसके उपरान्त मेरिया और कुछ न कह सकी । उसने अपने पति की बांह छोड़ दी और उसके पैरों पर गिर पड़ी । इस समय उसका हाथ राजकुमार के चूमने तथा स्वयं उसके बहते हुये आंसुओं से भीगा जाता था ।

डिउक लिउपोल्ड—मेरी प्यारी ! हृदयेश्वरी ! उठो—आज से तुम्हारा यह मकान है । और मुझे क्षमा करना, मैंने तुम्हारे हृदय को, परीक्षा तथा गरीबी के सामानों में डालके बहुत कुछ दुःखित किया। मैं फिर भी तुम से क्षमा का प्रार्थी हूँ। मैंने केवल तुम्हारे प्रेम की परीक्षा के निमित्त इतना कुछ किया! और आह! "इतना कह के उसने मेरिया को अपने हृदय से लगा लिया!" यदि मैं इतनी भलाई करने का अधिकार रख कर भी कभी प्रसन्न हुवा हूं और यदि मैं उस भलाई पर घमण्ड करके मुस्कराया भी हूं तो वह केवल आजही । अच्छा; तो अब मेरिया – हां अब से, मेरी प्यारी मेरिया, मैं तुम्हें इस महल का मालिक बनाता हूं जिसमें कि तुम एक अजनबी के भांति सैर करने के लिये आई थीं। और अब मैं जरमन देश की आर्क डचेज कहके तुम्हें मुबारकबाद देता हूं ! अच्छा अब आज से हमें पिछली कुल बातों को चित्त से भुला देनी चाहिए । और ऐसा भी अनुमान न करना कि मैंने अपने नकली नाम से तुम से व्याह किया था। नहीं; वरन् उस पादड़ी को जिसने हम लोगों का व्याह कराया मैंने अपने प्राकृतिक अल्य तथा नाम से भली भांति परिचित कर दिया था। और उस पाक रजिष्टर में हमारा वही नाम लिखा गया है जो हमारे पिता ने रक्खा था। अब हम लोगों को उस बड़े कमरे में चलना चाहियें जहां पालने की कोठरी है। इतना कह कर डिउक

लिउपोल्ड ने—(जो अब चार्ल्स न रह गया था) अपनी प्यारी स्त्री का हाथ पकड़ लिया और उसे रसम के बड़े कमरे में ले आया।

उस कमरे का द्वार तुरन्त खुल गया जो जरमनी के श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित पदाधिकारी गण तथा उच्चश्रेणी की स्त्रियों से भरा हुआ था।

जब राजकुमार अपनी सुन्दर और लज्जाशील स्त्री को लिये बड़े कमरे के दूसरे ओर पहुंचा तो उसी समय सिपाहियों ने बन्दूकों—तथा तोपखाने ने तोपों से सलामी दी। और कुल सामने के उपस्थित व्यक्तियों ने अपनी टोपियां अपने हाथों में लेलीं और स्त्रियों ने अपना सिर झुका दिया और सबने दूल्हा और दूलहिन को राजमहल में प्रवेश करने पर मुबारकबाद दी।

सत्तरहवाँ बयान।

दो घराने।

उन्हीं दिनों में कौण्ट और कौण्टेस, ओरेना भी, ओरेना के, आकाश से बातें करते हुए महल में; जो वायना के निकटही था जा बसे थे।

पिशाच ने इस महल तथा इसके चारों ओर के मनोहर दृश्य की वर्णना करती समय कुछ अपनी ओर से घटाया बढ़ाया न था। वरन् वह महल तथा वह स्थान; यथार्थ में वैसाही था जिसकी एक सच्ची तसवीर फोष्ट के सामने उसने खींच दी थी।

थेरिज़ा इस समय प्रसन्न थी आह! केवल प्रसन्न नहीं - वरन् अपने पति के साथ रहने से वह बड़ीही गद्गद थी।

फोष्ट ने उस व्यक्ति का असली नाम तथा सभी हाल बता दिया था जिसे अबलों वह चार्ल्स हेमेल के नाम से जानती थी। और यह सुनके लोर्ड रोज़िन्थेल की स्वच्छ-हृदया बेटी ने सुशीला मेरिया से किसी प्रकार की ईर्षा न की, वरन् यह सुन के वह और भी प्रसन्न हुई और उसने अनुमान किया कि भगवान ने उसके भाग्य में यह पहिलेही से लिखदिया था।

अब यह भी सरलता पूर्वक अनुमान किया जा सक्ता है कि इन दोनों घरानों में बड़ाही प्रेम और बड़ीही मैत्री थी। आर्कडिउक अपने को फोष्ट का बड़ाही अनुगृहीत समझते थे जिसने दो बेर उन्हें जीवन-दान दिया था। और उधर मेरिया भी

थेरिज़ा की असीम अनुगृह को कभी चित्त से न भुलाती, क्योंकि उसे वह दिवस उ-सके सामनेही दिखाई देता था जिसमें वह बिना माता पिता की एक किसान की वालिका थी और लार्ड रोज़ेन्थेल ने दया करके अपनी वेटी के साथ उसे कर दिया था, और फिर थेरिज़ा ने उसे हाथों हाथ लेके सहेली की भांति और प्राण से भी प्रिय करके अपने साथ रक्खा था।

इसी प्रकार प्रायः कौएट तथा कौएटेस आर्कडिउक के महलों में उनसे मिलने आया करते थे और जब तब राजकुमार लिउपोल्ड भी मेरिया को साथ लिए ओरेना में आ पहुंचते थे और कौएट की भेंट से अपनी तृप्ति करते थे।

शाहंशाह जरमनी, मेक्समिलियन ने भी अपने भतीजे के एक अपरिचित स्त्री से व्याह कर लेने पर कोई खेद न प्रगट किया, कारण यह कि वह अपने भतीजे से बड़ाही प्रेम करते थे और यही कारण था कि वह डिउक की प्रसन्नता से प्रसन्न हुवा करते थे।

इसी प्रकार दोनों घरानों के आनन्द में विघ्न डालनेवाली कोई वस्तु दिखाई न पड़ती थी।

परन्तु आह ! फोष्ट के हृदय में, एक न निकलने वाला काँटा प्रत्येक समय चुभा करता था—या एक न बुझनेवाली आग थी जो प्रत्येक समय उसके हृदय को जलाया करती थी।

इसपर भी वह अपने दुःख को किसी प्रकार थेरिज़ा पर प्रगट होने न देता था। थेरिज़ा ने कभी उसके मुखड़े पर खिन्नता की साया न देखी। फोष्ट से वह बड़ा प्रेम करती और उसे भी अपने ऊपर तन मन धन, अर्पण करते देख के उसके आनन्द की सीमा न रहती। और उधर बेचारे फोष्ट को उसके हृदय की जलन और आत्मा के निराशा के अतिरिक्त और कोई धैर्य धराने वाला न था।

इसके उपरान्त फोष्ट के हृदय के छिपे हुये बिच्छू ने और भी शीघ्रता से डंक मारना प्रारम्भ किया जब कुछ महीनों के उपरान्त उसे यह मालूम हो गया कि हमारे और थेरिज़ा के प्रेम के सम्बन्ध से एक नया फूल और संसार में खिलने वाला हैं।

और ठीक इसी का विपरीत दूसरे घराने में हुवा। अर्थात् जब आर्क डूयक ने अपनी प्यारी मेरिया के गर्भ धारण का समाचार पाया तो वह मारे प्रसन्नता के अपने आपे में न रहा।

जब फोष्ट का चित्त बहुत चंचल होता था तो वह कुछ बहाना करके एक स्वतंत्र कोठरी में चला जाता, जहां कई घंटे बैठ के अपने भाग्य पर फूट २ के वह रोया करता और इस प्रकार मानो वह अपने हृदय के आवेग को कुछ हलका किया करता था।

एक दिवस फोष्ट उसी अकेली कोठरी में बैठा आपही आप कह रहा थाः—

"आह! कैसा अभागा मैं हूं!" इतना कह के उसने बड़ेही जोर से अपना हाथ अपने सिर पर मारा, "मेरा पुत्र—वह पुत्र जो अभी थेरिज़ा के गर्भ में है—वह पहलेही पिशाच के हाथों दिया गया – मैं बड़ाही दुष्टात्मा हूं। मैंने केवल अपने सांसारिक आनन्दों के वास्ते इतना बड़ा अत्याचार किया,—इतना बड़ा अत्याचार—एक अनजान बालक पर—जिसने अभी लों संसार का प्रकाश पर्यन्त भी नहीं देखा है! और जिसे यदि यह सब मालूम हो जाता तो कभी उत्पन्न होने की इच्छा भी न प्रगट करता! मैं पागल हूं। आह! मुझे तो अभी से इतना कठिन दंड मिलने लगा—और अभी तो मृत्यु के उपरान्त मुझे सदैव के निमित्त असह्य वेदना भोगनीही है! आह! यदि मैं प्रार्थना कर सक्ता—यदि मैं प्रार्थना कर सक्ता तो उससे यही प्रार्थना करता कि तू मुझे इस नरक के अन्धकूप से निकाल! हां—एक ध्यान मुझे आता है! मैं किसी सिद्ध को ढूंढूं और अपनी आत्मा के निमित्त उससे प्रार्थना करने के लिये निवेदन करूं—मैं अपने कुल हृदय की जलन और चित्त के आवेग, तथा छिपे हुये सभी भयानक वृत्तान्त को उसके सामने प्रगट कर दूं! नहीं—मैं किसी पाक गिरजे के पादड़ी को ढूंढूंगा—और कुछ गरीब मनुष्यों को एकत्रित करूंगा—और उन ऋषियों के आश्रम में जाऊंगा जो संसार से अलग हो गुफाओं में धूनी जमाये बैठे हैं, जिनका आहार बन के फल हैं और जिनके पीने को श्रोते का जल है! हां इन लोगों को मैं शीघ्रही ढूंढ़ निकालूंगा और उनसे अपने बचने के निमित्त प्रार्थना करने के लिये निवेदन करूंगा! आह! मैं अपने पुत्र को अवश्य बचाऊँगा—मैं उस भोले और अनजान बालक की प्राणरक्षा अवश्यही करूँगा जो मुझे कुछ दिवसों के उपरान्त पिता कहके पुकारेगा!"

"और ठीक उसी समय जब तुम अपना पैर किसी पाक मनुष्य के मकान में रक्खोगे, या ऋषियों के कन्दराओं में जाने की चेष्टा करोगे बस उसी समय तुम अपना सर्वस्व गँवा बैठोगे—अपनी लिखी दस्तावेज के अनुसार तुम हमारे हाथ में हो जाओगे!"

इतना पिशाच ने गहरी कर्कश और मर्म भेदी आवाज में कहा ।

फोष्ट—(क्रोध और दुःख से उन्मत्त होके) अरे ! तू हमारे बिना बुलाये क्यों आया ? तूने क्यों अकारथ आके हमारे ध्यान में बाधा दिया ?

पिशाच—मैं तुम्हें मुबारकबादी देने आया हूं कि कुछ दिवसों के उपरान्त तुम बाल बच्चे वाले हो जावोगे ।

पिशाच ने यह बात गम्भीरता और ताने से भरे हुए स्वर में कहा जिससे फोष्ट की दहकती हुई क्रोधाग्नि और भी जोर से भभक उठी ।

फोष्ट—आह ! अब तू मूझे ताना देने—मुझे धिक्कारने आया है । अब तू मुझ पर उस कष्ट की अवस्था में हँसने आया है जिसे तूनेही मेरे चारों ओर फैला दिया है" इसके उपरान्त फोष्ट क्रोध से चिल्ला के बोला; इस समय उसके मुँह से मारे क्रोध के कफ निकल रहा था "पिशाच ! नीच ! दुष्टात्मा ! जिसमें दया का नाम मात्र भी नहीं है ! चल दूर हो यहाँ से ! मैं कहता हूं । हट जा यहाँ से—"

इस पर भी जब पिशाच उसी प्रकार अपने स्थान पर अड़ा खड़ा रहा तो फोष्ट का क्रोध पहले से भी कुछ विशेष प्रज्वलित हुवा और उसने अपनी कमर की लगी तलवार शीघ्रता से खींच ली और पिशाच की ओर चिल्लाता हुवा दौड़ा ।"

"दुष्ट ! तू मूझे रक्त पात करने पर विवश करता है ! ले मैं भी उसके लिये तैयार हो गया—अब मैं मारूंगा—या मर जाऊँगा—निकाल तलवार— बचा अपने को—यह मेरा हाथ पड़ा ।"

इतना कह और क्रोध से अन्धा होके फोष्ट ने पिशाच पर तलवार का एक कड़ा वार किया ।

पिशाच ने इसपर केवल अपना हाथ हिला दिया जिससे तलवार के दो टुकड़े हो गए । "अभागे, दुर्बुद्धि, क्या हमारे बल से तू अवगत नहीं है ?—क्या तू अनुमान करता है कि मैं अस्थायी हूं जैसे सब सामान्य मनुष्य; संसार में बुल्लों के भाँति उत्पन्न होते और मिटते जाते हैं ! क्या तूने उन्हीं में मुझे भी गिन रक्खा है ? परन्तु आह ! यदि मैं अस्थायी होता ! यदि मुझे भी मृत्यु गहरी नींद सुला सक्ती !" इतना कहते २ पिशाच का क्रोधमय स्वर दुःख से बदल गया ।

इसके इस कहने पर फोष्ट एक मुलायम बिस्तरे पर गिर पड़ा और दोनों हाथों से अपना मुंह छिपा के चिल्ला के कहने लगा। "यथार्थ में मैं अभागा और निर्बुद्धि हूं क्योंकि मैं व्यर्थही तुमसे पृथक होने का उद्योग कर रहा हूं।"

पिशाच कुछ क्षणों पर्यन्त खड़ा फोष्ट की ओर देखता रहा। उसके उस भयानक चेहरे पर पुनः ईर्षा घृणा और प्रसन्नता की साया दिखाई पड़ने लगी। और फिर वह क्रमशः लोप होते २ वायु में मिल गया।

कुछ काल पर्यन्त फोष्ट इसीतरह भाँति २ के दुखदाई ध्यानों में डूबा पड़ा रहा अन्त जब उसने सुना कि डिउक लिउपोल्ड उससे मिलने आए हैं तो वह सावधान होके तुरन्त उठ बैठा।

लिउपोल्ड—मेरे प्यारे काउएट; आज हम तथा मेरिया; दोनोंही आप के कामों में बाधा देने के लिये आन उपस्थित हुये हैं। हमलोगों के आने का मुख्य कारण एक बड़ाही सुखसमाचार है जिसे सुनाने हम आप के पास उपस्थित हुये हैं। आर्कडचेज् तो थेरिज़ा के पास गई हैं और मैं आप के पास उपस्थित हुवा हूं। सच तो यों है "इतना कह कर डिउक महाशय एक कोच पर बैठ गये और फिर बोले" सच तो यों है कि इस समय मैं बड़ाही सुखी हूं। और मैं इस प्रसन्नता में योग देने के लिये अपने मित्र को भी विवश करने आया हूं क्योंकि मैं तुम्हें अपना एक मित्र समझता हूं कोन्ट!—और केवल मित्रही नहीं, वरन् अपने कुल मित्रों में एक श्रेष्ठ मित्र अनुमान करता हूं।

कौन्ट—और मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूं कि श्रीमान् मुझ पर इतने दयालु हैं! यह उत्तर देते २ फोष्ट; अपने उन हार्दिक कष्टों को दबा रहा था जो उमड़ २ के अपना प्रतिबिम्ब उसके चेहरे पर डाला चाहते थे।

लिउपोल्ड—हाँ तो मैं सचमुचही बड़ा प्रसन्न हुवा हूं। हमलोगों के प्रेम से बँधे जोड़े में कोई नयाही फूल खिलनेवाला है।

फोष्ट—(ज़ोर से) सचमुच श्रीमान्? तो मुझे भी अब यह जता देने में बड़ाही आनन्द आयेगा कि वही हाल इधर भी है!

आर्कडिउक—(ज़ोर से) "आहा! तब क्या मेरा पागलों का सा ध्यान पूरा हो जायगा। क्यों मित्र तुम भी सुनोगे" इतना कह के वह कुछ ठहर गया और फिर बोला "मैंने गत रात्रि को ऐसा अनुमान किया है कि मानों हम दोनों के यहाँ एकही दिनों में दो

सन्तान उत्पन्न हुए हैं। तुम्हारे यहाँ तो एक लड़की हुई है और हमारे यहाँ एक लड़का। इसके उपरान्त मानों एक क्षण में वर्षों का समय व्यतीत हो गया और वे दोनों लड़के युवा हुये। उनकी योग्यता पर हम दोनों को घमण्ड है। इसके उपरान्त पुनः दृश्य का परिवर्तन होता है और मैंने देखा कि मेरे बेटे और तुम्हारी बेटी, एक दूसरे पर मोहित हुये हैं और फिर इन दोनों का व्याह गिरजा में हो गया है। यह देख के मैं प्रसन्न हुवा हूं। मैंने आपही आप अनुमान किया है कि:—**"हम लोगों की मित्रता हमारे सन्तानों के संबन्ध से और भी दृढ़ हो गई।"**

फोष्ट—इससे बढ़के और प्रसन्नता मुझे किसी प्रकार होही नहीं सक्ती।

इतना कहके फोष्ट को अपने एकरारनामे का ध्यान आ गया जिसके ध्यान मात्रही ने इसे शोक की प्रतिमूर्ति बना दिया।

डिउक—आहा! उससे विशेष शुभ की घड़ी कोई और होही नहीं सक्ती, जब मैं अपनी प्यारी मेरिया के बच्चे को पालने की कोठरी में देखूंगा परन्तु इसबार मैं स्वयंही बड़ा सावधान रहूंगा जिस्में कोई धोखाबाजी हमारे बच्चे पर न की जाय जैसा कि मेरे उत्पत्ति के समय की जानेवाली थी।

फोष्ट—(जिसका शोक डिउक की बातों के सुन्तेही बहुत बढ़ गया था) मैं श्रीमान् की बात का बिलकुलही तात्पर्य न समझ सका।

डिउक—तो क्या तुमने वह विचित्र कहानी अभी लों नहीं सुनी। कुछ मास बीते इससे मेरिया को मैं अवगत कर चुका हूं—जब उसे मैंने महल की कोठरी दिखाई थी। और इसके पहले मुझे बेरेन रोज़ेन्थेल द्वारा यह भी मालूम हुवा था कि जब उनके यहाँ उत्सव में सहसा खंजर और रस्सी आ पड़े थे तो चीफ जज उस समय वही कहानी कह रहे थे;—परन्तु हम और तुम उस पत्र के और जिस्पर मुझसे तुमने हस्ताक्षर कराए, ऐसे लगे हुए थे कि जज महाशय की कहानी का कोई भाग भी न सुन सके। अच्छा अब मैं तुम्हें उस कोठरी का वृत्तान्त सुनाता हूं।

इतना कह के लिउपोल्ड ने कुल बातें स्पष्ट रूप से स्वयं फोष्ट से कह सुनाई जिसे हमें यहाँ लिखने की कोई आवश्यक्ता नहीं है क्योंकि पाठकगण इससे पहिलेही उन्हें जान चुके हैं।

जब आर्कडिउक अपनी कहानी समाप्त करचुके तो वे दोनों उठ के उस बड़े कमरे में गये जहाँ मेरिया और थेरिज़ा बैठी बड़ीही प्रसन्नता से बातचीत में लगी हुई थीं।

आज का यह दिन दोनों घराने ने एकही स्थान में ठहर के बड़ीही प्रसन्नता से बिताया।

परन्तु वह पालने की कोठरी की कहानी सुन के फोष्ट के हृदय में एक दूसराही ध्यान जम रहा था।

अठारहवाँ बयान।

वाटिका।

प्यारे पाठकगण भी हमारी इसबात से सम्मति प्रगट करेंगे कि रमणी के रमन के उपरान्त प्रेमी के चित्त में प्रेम का वह पूर्ववत् आवेग बाकी नहीं रह जाता। बस ऐसीही दशा इस समय फोष्ट तथा थेरिज़ा की थी।

वह अब भी उससे प्रीति करता था—वह अब भी उस पर विश्वास करता था—उससे एक गहिरा प्रेम निबाहे जाता था; और प्रेम भी सच्चा था—यहाँ लों कि यदि कोई दृष्टि उठा के भी थेरिज़ा की ओर देखता तो उससे बदला लेने के निमित्त फोष्ट अपने प्राणों पर खेल जा सकता था।

परन्तु उसकी आत्मा को स्थिरता न थी—उसका चित्त चलायमान था—अपने सुख में कण्टक-स्वरूप एक भयानक गुप्त दुःख उसे प्रतीत होता था—वही गुप्त दुःख जिसे विवश होके उसने अपने हृदय में स्थान दे रक्खा और जिसका कोई अंश भी वह किसी से प्रगट करने का साहस न करता था। उसका वह इन्द्रपुरी का सा महल; सदैवही राग रङ्ग से गूँजा करता था। वायना के सभ्य प्रतिष्ठित और बड़े २ घमण्डी पदाधिकारी उसकी मैत्री की इच्छा किया करते थे। और उनकी बेटी, बहिन और स्त्रियां सदैवही थेरिज़ा को घेरे उसकी खुशामद में लगी रहा करती थीं।

परन्तु दो बातें कुछ ऐसी थीं कि जो थेरिज़ाही को आश्चर्य में नहीं डाले हुई थीं वरन् फोष्ट के समस्त जान पहचान उनसे आश्चर्य में आते थे। यहाँ लों कि आर्कडिउक और मेरिया भी उसे सुनके चकित होते थे।

इसमें पहिली बात तो यह थी कि फोष्ट के महल में कोई भी धार्मिक पुरुष जो धर्म पथ का अगुवा हो नहीं रहता था। और दूसरे, फोष्ट किसी धर्म के स्थान में न उपस्थित होता था।

उस समय में प्रत्येक धनाढ्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के यहाँ कम से कम एक पादड़ी अवश्यही रहता था। और वे घराने जिन में पादड़ी रहते थे एक प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते थे। अस्तु! तो इतने बड़े आवश्यकीय कार्य के न करने पर अर्थात् किसी धर्मपथ के अगुवा को अपने महल में न रखने पर कौन्ट ओरेना को लोग आश्चर्य की दृष्टि से देखने लगे थे।

मेरिया ने अन्त एक दिवस बड़ीही सभ्यता से बातेंही बातों में थेरिज़ा पर यह प्रगटही कर दिया और साथही यह भी जता दिया कि लोग तुम्हारे इस चलन पर बड़ीही निन्दा करते हैं। जिसपर थेरिज़ा ने प्रतिज्ञा की कि मैं फोष्ट को अवश्य इसबात पर विवश करूंगी।

इसी भांति एक दिन प्रातःकाल को, जब वे दोनों एक बड़े कमरे में एकत्रित बैठे हुए थे और उनके सामने एक बड़ाही मनोहर दृश्य उपस्थित था। फूल चारों ओर खिले हुए थे, और हरे २ पौधे ओस में भीगे झूम रहे थे क्योंकि यह जाड़े का मौसिम था—तो थेरिज़ा ने अपने पति का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़ेही प्रेम से उसकी ओर देख के कहने लगी, आगामि अतवार को वायना के (बड़े पादड़ी) आर्कबिशोप महाशय सेन्ट ष्टिफेन के गिरजामें पधारेंगे। क्या हमलोग भी एकत्रित वहाँ चलेंगे?—और चलके होनेवाले बच्चे के निमित्त भगवान से प्रार्थना करेंगे?

फोष्ट—(शीघ्रता से) थेरिज़ा—तुम आर्कडिउक के साथ सेन्ट स्टीफन को जा सक्ती हो। मैं इस अतवार को किसी कारण वश तुम्हारे साथ नहीं जा सक्ता।

थेरिज़ा—(बड़े२ नेत्रों में जल भर के) मुझे क्षमा करना प्यारे! यदि मेरे इन वाक्यों से तुम्हें कष्ट हुवा हो तो मैं क्षमा की प्रार्थी हूं मैं अब इस विषय में तुमसे कभी न कहूंगी। परन्तु जिस दिवस से कि हमारा तुम्हारा हाथ गिरज़ा में; पिता के सामने पकड़ाया गया उस दिवस के उपरान्त फिर हम **एकत्रित** कभी गिरजा में न गये। देखो प्यारे! हमें उस करुणाशील को धन्यवाद देना भी तो अवश्यही उचित है जिसकी कृपा से हम दोनों बिछुड़े हुये मिले और अब सुख से आनन्द संभोग कर रहे हैं।

फोट—(बनौवा मुस्कराहट से) प्यारी ! यह तो मुझे मालूमही है कि तुम प्रायः गिर-
जा में जाया करती हो; फिर कृपा कर मेरी ओर से भी प्रार्थना कर दिया करो।

थेरिज़ा—आह प्यारे ! धर्म के विषय में हँसी ठट्ठा उचित नहीं। भला यह तो अनुमान करो कि आज से छः मास पूर्व हम लोग कैसे निराश हो गये थे परन्तु उस दीनदयालु ने कैसी दया दिखाके कैसी करुणा प्रगट करके हम लोगों की आशा पूरी की—तुम उसी की दया से मृत्यु से बचालिये गये जिसे चीफ जज तु-म्हारे लिये स्थिर कर चुका था;—तुम ठीक उसी समय बन्दीखाने से मुक्त कर दिये गये थे, जब फाँसी तुम्हारे लिये प्रस्तुत की जा चुकी थी—! आह ! जब मुझे वह भयानक समय याद आता है तो मेरा रोंगटा २ काँप उठता है। तुम पर ईश्वर बड़ाही दयालु था कि उसने एक सामर्थवान व्यक्ति को तुम्हारी सहा-यतार्थ भेजा—जैसा कि तुम मुझ से प्रायः कहा करते हो—जिसने अपनी दया से तुम्हें उच्चश्रेणी पर पहुँचाया और उसी के कारण डिउक ने भी अपनी मँग-नी मुझ से तोड़ ली। और अन्त उसी करुणासागर ने करुणाकर हमारे पिता के स्वभाव को भी ठंडा किया जिसने अन्त इच्छा पूर्वक तुम्हारे साथ हमारा व्याह कर दिया।

फोट—(घबरा के) हाँ—हाँ, थेरिज़ा, मैं यह सब जानता हूं परन्तु अब उन बातों के दोहराने से क्या तात्पर्य; जो हम दोनों के हृदय पर खुदी हुई हैं।

थेरिज़ा—इससे यह तात्पर्य है मेरे प्यारे पति—मेरे प्यारे देवता !—कि यह जो कुछ हुवा, अर्थात् जितनी कुछ प्रसन्नता हम लोगों को प्राप्त हुई वह केवल उसी जगदीश्वर की आज्ञा से। आह यह कितना बड़ा अन्याय है—यह कितनी बड़ी चूक की बात है की जिसने हमपर इतनी दया प्रगट की उसका धन्यवाद पर्यंत हम न देवैं। हम उसके आगे प्रार्थना पर्यंत न करें ! नहीं—मैं ईश्वर की प्रतिमा चारों ओर विराजमान देखती -"

फोट—(जोर से) थेरिज़ा ! थेरिज़ा !

फोट के इस कहने का स्वरही कुछ दूसरे प्रकार का था—उसका स्वर ऐसा विनीत और ऐसा दया का प्रार्थी था कि जैसा संसार में कदाचही किसी का दया भिक्षा पर होता हो।

थेरिज़ा—(अपने पति का हाथ अपने अपने हाथों में दबा के) प्यारे तुम मुझे क्यों

इन बातों से रोकते हो ? तुम्हारे चेहरे से इतने भय के चिन्ह क्यों प्रगट होते हैं ?—और केवल भयही नहीं जिसको दूसरे शब्दों में मैं पागलों का सा महा भय कह सक्ती हूं। क्यों प्यारे ऐसा क्यों है ?—आह ! मुझ से प्रगट कर दो ! क्यों प्यारे क्या तुम्हारा उस सर्व शक्तिमान जगदीश्वर पर विश्वास नहीं है जो इस सब श्रृष्टि का उत्पत्ति करनेवाला और पालनहारा है ?

फोष्ट—(काँप कर) विश्वास—आह ! ! ! हाँ—थेरिज़ा मैं विश्वास करता हूँ और भय खाता हूं !

थेरिज़ा—सहस्रों धन्यवाद है उस परमेश्वर का ! भला तुम उसपर विश्वास तो करते हो ! और उससे भय भी तो खाते हो। जैसा कि एक दृढ़ धर्मावलम्बी को उचित है। मैं संसार से यह नहीं सुना चाहती कि मेरा स्वामी ईश्वर को मानताही नहीं। या वह उन व्यक्तियों में है कि जो भस्म रमाए गुदड़ियों पर बैठे रहते हैं। तो बस अब यही तुम्हें चाहिए कि ईश्वर के उन अनुग्रहों का, जो उसने तुमपर किये हैं, धन्यवाद दो और प्रार्थना करो कि वह भविष्य में भी हमपर इसी तरह दयालु रहे।

फोष्ट—(दुःखित हो के) अच्छा थेरिज़ा ! मैं सामर्थ भर तुम्हारेही कथनानुसार काम करने का उद्योग करूंगा। परन्तु आगामि अतवार को मैं तुम्हारे साथ किसी तरह से नही चल सक्ता। दूसरे समय—किसी अन्य भविष्य अतवार को जब मुझे कोई काम न रहेगा—"

फोष्ट ने इतना कहा और शीघ्रता से उस कोठरी के बाहर निकल गया। वह सीधा महल के पीछे वाले बाग में; स्वच्छ वायु में टहलने के लिये चला। इस समय उसकी आत्मा उसी पर घृणा प्रगट कर रही थी।

फोष्ट—(आपहीं आप) हाय! कैसा अभागा मैंहू। क्या अब मेरी ज़हरीली साँस बेचारी थेरिज़ा की शरीर को कोई हानि पहुंचाएगी ? क्या अब वह मुझे बे-एतबार तथा ईश्वर से विमुख समझेगी ? और क्या मुझे उससे यह प्रगट करना पड़ेगा कि ईश्वर की प्रार्थना मैं नहीं कर सक्ता; मैं अब इस योग्यही नहीं रहा हूं ? नहीं—नहीं यह कदापि न होगा ! हाय ! जब उसने मेरे इस अधिकार तथा सम्पत्ति को ईश्वर के अनुग्रह करके दी हुई बताई ! और जब उसने इसी लिये मुझे भगवान का धन्यवाद करने के लिये कहा, हाय तो उस समय मेरा हृदय आपही आप

कैसा काँप रहा था—कैसा मेरा माथा उस समय घूम गया—कैसा मेरा हृदय उस समय उछलने लगा क्योंकि मैं उस समय इस ध्यान में था—इसबात का मुझे भय लग रहा था कि कोई भयानक आवाज़ गरज के उससे न कह दे कि यह जो कुछ तुम्हारे सामने है वह ईश्वर का दिया हुवा नहीं; वरन् पिशाच का दिया हुवा है। आह! अभागा! बड़ा भारी अभागा मैं हूं!.

इतना कहके फोष्ट; क्रोध तथा दुःख से ज़ोर २ से दाँत पीसने लगा। इस लम्बे चौड़े बागीचे में एक ओर एक शीशे का गरम मकान भी था जिसमें अनेक प्रकार के गरम देशों के वृक्ष जैसे नीबू नरङ्गी आम, लीची, इत्यादि लगे हुए थे और जो उस मकान की बनौवा गरमी से फूलते फलते और बहार दिखाते थे।

फोष्ट धीरे २ उसी गरम मकान की ओर चला और जब उसके निकट पहुँचा तो एक रमणी मूर्ति उसमें इसे दिखाई दी; जिसे देखतेही यह पहचान गया कि थेरिज़ा की यह एक प्रथम श्रेणी की ख़वास ऐडा है।

एडा इस समय फूलों को ऐंकत्रित करके एक गुच्छा बना रही थी जिससे कुछ काल पर्यंत उसे तनिक भी सुध न हुई कि कोई खड़ा उसे देख रहा है।

इतः पूर्व फोष्ट के चित्त में स्वप्न में भी कभी यह ध्यान न आया था कि एडा परम सुन्दरी है। परन्तु अब जो इसने उसके सुन्दर मुखड़े पर दृष्टिपात की— उसके साँचे में के ढले हुए सुकुमार शरीर को देखा,—और उसने उसकी छोटी और काली २ बल खाती हुई लटोंओं को उसके गालों के गिर्द लटकते पाया—और जब उसके गुलाबी होठों के भीतर मोतियों की सी दातों की श्रेणी को देखा—तो उसका चित्त चंचल हो गया—वह तन मन से उसपर आशक्त हो गया।

इतनेही में एडा की दृष्टि भी उठ गई, और उसकी आँखें फोष्ट की अपने ऊपर गड़ी हुई दृष्टि से मिल गई!

उसका चेहरा यह देख के पसीने २ हो गया। उसकी दृष्टि, एकदम नीची हो गई। परन्तु एकदम से नहीं—कुछ देर तक वह आशा तथा प्रसन्नता से फोष्ट की ओर देखा की—और फिर लज्जा से उसने दृष्टि नीची कर ली।

फोष्ट के हृदय पर भी इस दृष्टि ने कुछ कम असर न किया, वह मृगनयनी की चितवनों से, एक विशेष तात्पर्य निकाल के बिना हिचकिचाये उस मकान में घुस गया।

फोष्ट—(उसकी ओर चित्त में चुभ जानेवाली एक दृष्टि से देख के और बड़े प्रेम से) प्यारी एडा ये पुष्प जो चारों ओर खिले अपने सौन्दर्य के घमण्ड में इतरा रहे हैं, सच तो यों है कि वे तुम्हारे मुख कमल के सामनें बिलकुलही उदास जान पड़ते हैं।

एडा—श्रीमान—"

इतना कहके एडा ने एक बेर फोष्ट की ओर देखा और फिर लज्जा से उसका मुखड़ा लाल हो गया और उसने सिर झुका लिया।

इसके उपरान्त फोष्ट ने आगे बढ़के एडा का हाथ पकड़ लिया, जिसपर पहले तो उसने उसे छुड़ाने का उद्योग किया परन्तु जब यह निरर्थक हुवा तो अपना हाथ उसने ढीला कर दिया और फोष्ट ने उसे अपने हाथों में दबा के बड़ीही नम्रता से कहाः—

"प्यारी ! जो मैं कहता हूं, वह मिथ्या नहीं है ! सच मुच तुम्हें एक बेर देख के तृप्ति नहीं होती बरन् पुनर्वार देखने की इच्छा चित्त को गुदगुदाती है ! और किसी पादड़ी या ऋषि मुनि को भी मैं एसा नहीं पाता जो तुम्हें देख के चंचल न हो जाय और तुम्हारे प्रेम का बीज उस के हृदय में अङ्कुर न उत्पन्न कर ले।"

एडा—श्रीमान् ! आप कैसी बातें कर रहे हैं ! इन बातों से मेरी महारानी ! मेरी स्वामिनी आपको बड़ाही तुच्छ बोध करेंगी—परन्तु—परन्तु—यदि मैं श्रीमान् की बातों को हृदय के कानों से सुनूं तो श्रीमान् मेरे बारे में क्या अनुमान करेंगे ?

फोष्ट—(उसके हाथों को चूम के) प्यारी मैं अपने को बड़ाही भाग्यवान समझूंगा— प्यारी एडा मुझे बड़ीही प्रसन्नता होगी—क्योंकि तुम प्रिये—पूजा करने के योग्य हो।

एडा—(हिचकिचा के) श्रीमान्—श्रीमान् ! आप मेरी प्रकृति की परीक्षा करते हैं— हाय आप इसबात का परिचय लेते हैं कि मैं आप की देवी तुल्य स्त्री की सेवा योग्य हूं वा नहीं। श्रीमान्—हाय ! यह बड़ा अत्याचार है। इन बातों को जाने दीजिये !

इतना कहतेही एडा के नेत्रों से अश्रुधारा निकलने लगी।

फोष्ट—अपने सिर की सौगन्ध एडा मैं तुझसे छल कपट नहीं करता ! बरन् सचमुच; मैं तेरी मोहिनी मूरत पर मोहित हो गया हूं। मेरा तुझ पर निष्कपट और सच्चा प्रेम है।

एडा - आह ! यदि यह सत्य होता ! क्या ?

इतना कहके फोष्ट को बड़ेही प्रेम से एडा देखने लगी। इस समय भी उसके नेत्रों के निकलते हुए आँसू बन्द न हुए थे।

फोष्ट—(चिल्ला के) सत्य है! सुन्दरी यह बिलकुलही सत्य है कि मैं तुम पर सभी कुछ अर्पण करने पर प्रस्तुत हूं! और अब मैं भी तुम्हारे नेत्रों से; तुम्हारे चेहरे से एक प्रेम की झलक देख रहा हूं—देखो तुम्हारा दम फूल रहा है—और यह कोमल हाथ जिन्हें मैं पकड़े हुवा हूं थरथराए जाते हैं—इन सब चिन्हों को देखके मैं—मेरी प्यारी एडा! क्या यह हृदय में स्थान दे सक्ता हूं कि तुम भी दया कर मुझे चाहती हो वा मुझे अपने हृदय में स्थान दोगी?

एडा—आह! कृपासिन्धु! (लज्जा से) मैं आपको एक क्षण भी अपने हृदय से पृथक् नहीं करती! अनेक दिवसों से मैं आप को अपने हृदय के सिंहासन पर स्थान दे चुकी हूं! यदि मैं बुद्धिमती होती—यदि मैं दूरदर्शिनी होती—यदि मैं दृढ़ होती—तो मैं तुरन्तही आप से पृथक होके किसी ओर की राह लेती; पन्तु हाय! श्रीमान्—मैं हीनबुद्धि हूं—मुझ में दूरदर्शिता का नाम मात्र भी नहीं है - मैं कोई बलिष्टा भी नहीं हूं:—और प्यारे अब तुम मेरे हृदय के गुप्त भेद से भी अवगत हो गये कि—"

जिस समय एडा यह कह रही थी उसका मस्तक उसकी छाती पर झुक गया था उसकी आवाज़ से एक कँपकँपाहट बोध होती थी।

फोष्ट—प्यार करती हो—तुम मुझे चाहती हो?

इतना कहके, मृगी के भांति चौंकती चमकती एडा को अपने हृदय से जोर से फोष्ट ने लगा लिया।

एडा—(धीरे २) प्यारे सचमुच मैं तुम्हें चाहती हूँ; बहुत दिवसों से मैं तुमपर आशक्त हूँ। परन्तु अब ईश्वर जाने तुम हमें कैसा अनुमान करते होगे?

फोष्ट—(एडा से पृथक होके दो चार पग पीछे हट गया और फिर उसकी ओर देख के बड़ीही गम्भीरता से, धीरे २ कहने लगा।) सुनो! प्यारी एडा! एक तूही संसार में वह स्त्री है जो मुझे आनन्द दे सक्ती है। मुझे बराबर कहते चलने दो; मुझे रोकना मत! अब यहाँ पर तू यह सोचती होगी बरन् तुझे इसबात का आश्चर्य होगा कि मुझे किसी बात का अवश्यही कष्ट है—मैं—जिसके सामने संसार के कुल आनन्द और भोग विलास की सामग्री उपस्थित हैं, दुःखित हूं!

परन्तु यह बात ठीक है । यहाँ यहाँ, एडा, "इतना कहके उसने एडा, का हाथ जोर से अपनी छाती पर गड़ा लिया" ठीक इसी स्थान पर एडा एक विषैला सर्प बैठा है जो प्रत्येक समय मुझे काटा करता है—हाय ! यहाँ पर एक वह जलती बलती अग्नि शिषा है जो प्रत्येक समय मेरे हृदय को जलाए देती है—! परन्तु वह मुझे दिखाई नहीं देती—प्रत्यक्ष में नहीं भड़कती ! बस मेरा हृदयहीं है जो उसके कष्ट का भली प्रकार अनुभव किया करता है। मैं थेरिज़ा को चाहता हूं—मैं उससे एक परम मित्र की भाँति प्रीत करता—या एक बड़ेही विश्वासपात्र के तुल्य उसे चाहता हूं। परन्तु मैं उससे अपने चित्त की व्यथा सुना के उस्का जीवन दुःखमय नहीं किया चाहता—उसकी निर्मल आत्मा को कलुपित नहीं किया चाहता। क्योंकि कोई आश्चर्य नहीं कि इससे उसके जीवन का दीप निर्वाण हो जाये ! और इसी लिये मुझे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यक्ता है कि जिसके कानों में मैं अपने भयानक गुप्त भेद को डाल सकूं—एक ऐसे व्यक्ति की मुझे आवश्यक्ता है कि जो मेरी बातें सुनके मुझ से घृणा न करे; वरन् दिलासे से मेरे हृदय में बोध उपजाए—जो मेरे उस भयानक बोझ के उठाने में भाग ले या योग दे; जो अब मुझ अकेले से नहीं उठ सक्ता है ! आह ! एडा क्या यह सब तुम मेरे साथ कर सक्ती हो ? आह ! मैं फिर तुझ पर विश्वास कर सक्ता हूं—फिर हमारी तुम्हारी एक सच्ची और ऐसी न्यारी प्रीत होगी कि जिस प्रीत से और थेरिज़ा की प्रीत से कोई संबन्धही न होगा—आह प्यारी यदि तुम चाहो और स्वीकार करो तो हमारा यह प्रेमसंबन्ध हो जाएगा जिससे तुम्हें भी पूरी प्रसन्नता होगी और हमारे भी हृदय से मानो एक बहुत बड़े पत्थर का बोझ हलका हो जाएगा। और हम लोगों में मानों एक गुप्त भेद की स्थिति इसीके साथ हो जायगी। और साथही तुम एक ऐसी कहानी से अवगत हो जाओगी कि जितनी वह भयानक और त्रासदायक है उतनीही मज़ेदार और दिलचस्प भी कही जा सक्ती है।

एडा—श्रीमान् ! आपने मुझे भयभीत कर दिया !

इतना कह के वह फोष्ट की ओर देखने लगी, उसके चेहरे की उड़ी हुई रङ्गत इसबात का पता दे रही थी कि वह बड़ीही भयभीत है।

फोष्ट—(दुःख से) ओह ! तू तो अभीही भय से काँपी जाती है। ऐसे भयानक भेद के सुन्ने की सामर्थ तुझ में नहीं ! इसके सुन्ने के लिये तो पत्थर का हृदय चाहिये। परन्तु हाय ! मेरा अनुमान ठीक न निकला—मुझको, कोई ऐसा मित्र न मिला—जिसपर मैं पूर्णतया विश्वास कर सकूं—क्या तू प्यारी इससे अवगत नहीं है कि अपने मित्र से अपने चित्त की व्यथा सुना देने से एक प्रकार का धैर्य हृदय में आ जाता है।

एडा—इससे भयभीत न हो कि मैं काँपती हूं—तुम हमारे हृदय को और हमारे हौसलों को अभी लों नहीं जानते—हमारी आत्मा बड़ीही दृढ़ है ! प्यारे। केवल प्रेमही एक ऐसी वस्तु है जिसने मुझ पर विजय पा ली है ! नहीं मैं बड़ीही दृढ़ और हृदय की बड़ीही कड़ी हूं। यदि तुम्हारा कोई वैरी हो और तुम मेरे हाथ में तलवार दे के केवल इतना कह दो **"एडा अब यही समय तुम्हारे प्रेम की परीक्षा का है !"** तो देखो मैं तुरन्तही वह तलवार उसके हृदय में पैठाए देती हूं वा नहीं ! क्या अब भी मेरे स्वर में कँपकँपाहट है ? क्या अब भी मेरे होंठ, तुम से बातें करती समय हिलते हैं। यदि ऐसाही है तो यथार्थ में तुम कह सक्ते हो कि तुझ में साहस नहीं केवल ऊपरी बातों की जमा खर्च है, और यदि ऐसा नही है तो फिर मुझ से स्वीकार करो कि वास्तव में तुम्हारा गुप्त भेद सुन्ने तथा तुम्हारे प्रेम के योग्य मैं हूं।

यह सुनके फोष्ट आश्चर्य से क्षणैक पर्यंत उसकी ओर देखता रहा और फिर धीरे से उसका हाथ पकड़ के वह उससे कहने लगा।

"हाँ प्यारी हाँ तू सचमुच मेरे प्रेम के योग्य है मैं तुझ से अपना वह भेद कहूंगा"

इतना कहके उसे, हृदय से उसने लगा लिया। और फिर कहने लगा—

"परन्तु यहाँ नहीं —यहाँ नहीं (इतना कहके वह ठहर गया और फिर कुछ देर के उपरान्त बोला) यहाँ दिन के प्रकाश में मैं तुमसे उसे प्रगट नहीं कर सक्ता। नहीं – केवल भयानक, अन्धकारमय निशा ऐसे भेद के निमित्त ठीक है ! एडा—मेरी एक मात्र प्यारी एडा, आज तू मुझ से बारह बजे रात को वायना के सेंएट-ष्टीफन नामी गिरजाके द्वार पर मिलियो—क्यों, क्या वहाँ, और इतनी रात में आने का तुझ में साहस है ?

ए०—तुम मुझे वहाँ पाओगे—बारह बजे रात; वायना के सेण्ट ष्टीफन के द्वार पर मैं अवश्य तुमसे मिलूंगी।

फोष्ट—अच्छा तो अब हम तुझ से विदा होते हैं एडा!

एडा—अच्छा प्यारे मैं भी उस समय पर्य्यन्त के लिये छाती पर पत्थर रख के तुम से पृथक होती हूं।

इतना कहके दोनों हार्दयिक उद्वेग से एक दूसरे की छाती से लग गए और फिर वे अपनी २ राह लगे।

उन्तीसवाँ बयान।

भेद।

आँधी बड़े बेग से चल रही थी और भयानक अन्धकार मय निशा थी। शीघ्रता से दौड़ती हुई आँधी वायना के बाजारों में एक हुल्लड़ सा मचाए हुई थी। काले २ बादल आकाश पर, नक्षत्रों तथा चन्द्रमा को छिपा के दौड़ रहे थे।

बड़े २ वृक्ष, जो घमण्ड से अपना सिर ऊँचा उठाए, तथा विशाल और दृढ़ भुजाओं को फैलाये दृढ़ता से खड़े थे चलती हुई वायु में चिल्ला रहे थे। साथही चलती हुई वायु उनकी डालियों को हिलाए डालती थी और तोड़ २ के पृथ्वी पर बिथरा रही थी।

सेण्ट ष्टीफन नामी गिरजा एक बड़ेही सुनसान और बीहड़ स्थान में खड़ा था।

गिरजा की इमारत जो चमकीले काले पत्थरों से बनाई गई थी इस समय इस भयानक अन्धकार में और भी काली जान पड़ती थी। गिरजा का ऊँचा कलसा किसी बुर्ज पर बनाया गया था जो पृथ्वी से पाँच सौ फीट की ऊँचाई पर खड़ा था, और जो काले २ बादलों में एकदम मिल गया था।

बारह बजने में अभी कुछ मिनीटों की देर थी जब एक रमणीमूर्ति; अपने को एक काले लबादे में छिपाये वहाँ आन उपस्थित हुई।

और इससे कुछ काल के उपरान्त एक मनुष्य भी एक लम्बा कबा ओढ़े उसी स्थान पर आ खड़ा हुवा।

"एडा"

यह उस पीछे के आनेवाले ने कहा।

"फोष्ट"

यह उस रमणी मूर्ति ने कहा।

फोष्ट—प्यारी सचमुच तू एक बीर और साहसी बाला है। कह तो सही—क्या रात का भयानक अन्धकार तेरा चित्त हिलाये देता है?—क्या वायु के भीषण शब्द तेरे कानों को अप्रिय बोध होते हैं?

एडा—यदि मैं डरती होती तो यहाँ एक क्षण भी ठहरने का साहस न कर सक्ती और पहिले तो मैं मकानही से बाहर न होती! मैं प्यारे अपने हृदय को बहुतही दृढ़ कर चुकी हूं।

फोष्ट—(चिल्ला के) धन्य बालिके। धन्य तेरा साहस! तू वास्तव में इसी योग्य है तूने अपने कर्तव्य से मेरे हृदय में यह बैठा दिया कि मैं तुझे हृदयेश्वरी की उपाधि दे हृदय में बैठाऊं—तू दृढ़ जान पड़ती है—तू अपनी शक्तियों पर अधिकृत जान पड़ती है। परन्तु यह तो बताओ कि जहाँ मैं तुझे लेचलूं वहाँ तू मेरे साथ निशंक चल सक्ती है?

एडा—मैं तुम्हें चाहती हूं—उसी से मेरा तुम पर पूरा विश्वास है। मुझे जहाँ चाहे वहाँ लेचलो।

इतना सुनके फोष्ट ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे घुमाता हुवा गिरजा के पिछवाड़े की ओर ले चला।

वहां पहुंचनेपर इन लोगों को बहुत छोटा एक द्वार दिखाई दिया जो गिरजा से सटे हुये एक छोटे मकान में बना हुवा था।

फोष्ट उसी छोटे द्वार की ओर बढ़ा, जिसके निकट पहुँचने पर उसे उसने खोल लिया और जब वह तथा एडा दोनों उसके भीतर होगए तो उसने द्वार बंद कर दिया और एक सँकरे और अन्धकारभय रास्ते में शीघ्रता से आगे बढ़ने लगा। एडा इस समय, ठीक उस्के बगल से सटी हुई चल रही थी। अन्त जाते २ एक दूसरा द्वार उन्हें मिला जहां इन दोनों की चाल में कुछ फरक आया।

इस द्वार को भी फोष्टही ने खोला; और जब एडा उसमें से निकलने लगी तो उसकी बांह पकड़ के फोष्ट यों बोला—

"आगे की राह; बड़ीही ढारदार है, तनिक तुम्हें संतोष करना चाहिए।"

इतना कहके फोष्ट ने इस द्वार को भी भीतर से बंद कर दिया और फिर अपनी कक्षा के नीचे से एक छोटी, खूबसूरत और तेज़ लम्प निकाल के जला ली; जिससे कुल स्थान प्रकाशमय होगया; परन्तु एडा यह न निश्चय कर सकी कि फोष्ट ने उस लम्प को जलाया कैसे !

अब एक धुँधला प्रकाश कोठरी की दीवारों तथा अन्य स्थानों में जाके पड़ने लगा।

वायु इस स्थान की तर और उबसी हुई थी। जान पड़ता था कि निकटही कहीं बहुत से मुरदे रक्खे हुए हैं जिनके सड़ने की बदबू वहां लों भली भांति फैल रही थी।

फोष्ट—क्यों प्यारी हमारे साथ तुम इस सीढ़ी से उतर सक्ती हो।

इतना कह के फोष्ट ने लम्प नीचा कर दिया जिसका प्रकाश एक संकरी सीढ़ी पर होता हुवा दूर तक चला गया। और जो देखने में बड़ा लम्बा गार दिखाई देता था जिसके नीचे का कोई भाग; अन्धकार के अतिरिक्त न दिखाई पड़ता था।

यह देख केवल एक क्षणमात्र एडा हिचकिचाई परन्तु फिर साथही उसने हृदय को पुष्ट किया और बोली—

"मैं तुम्हारे साथ हूं और प्यारे, तुम जिस स्थान पर लेजाने की इच्छा करोगे मैं चलने को प्रस्तुत हूं।"

फोष्ट—एडा—एडा।

यह फोष्ट ने घबराये हुए स्वर में कहा और फिर उसे धिक्कारने कीराह से वह बोला—

"क्यों प्रिये ! तुम भयभीत हो रही हो ?"

एडा—क्षमा कीजिए—एक क्षण के निमित्त मुझपर भय ने अधिकार पा लिया था— अब वह समय दूर हो गया। अब फिर वैसा होना कदापि संभव नहीं है! देखिये— मेरा हाथ लेके देखिये ! क्या इसमें तनिक भी कँपकँपाहट है ?

फोष्ट—नहीं प्यारी !

एडा—और क्या मेरी आवाज़ से भय प्रतीत होता है ?

फोष्ट—नहीं प्यारी ! तुम्हारा स्वर तो बड़ाही कोमल और सुरीला जान पड़ता है इसमें भय का लेश मात्र नहीं, अब अब मैं तुमपर मैं विश्वास करता हूं—प्यारी

एडा—आओ—आओ—अब बढ़ी आओ।

इसके उपरान्त वे दोनों एक २ सीढ़ी करके धीरे २ नीचे उतरने लगे। फोष्ट आगे २ लम्प लिये हुवा था, जिसका प्रकाश दोनों को राह दिखा रहा था।

तब जैसेही ये लोग, सीढ़ीयों का अन्तिम भाग, समाप्त करने लगे, वैसेही बदबू कुछ इतनी बढ़ गई कि इनका दिमाग फटने लगा। अन्त यह सीढ़ी एक स्थान से दाहिने हाथ की ओर, गोलाई से घूम गई थी जिसमें होके ये शीघ्रता से आगे बढ़े तो सीढ़ियां समाप्त होती दिखाई दीं जिसके उपरान्त एक सँकरी राह थी और फिर एक बड़ा पुराना बंद द्वार दिखाई दिया।

बदबू अब पहिले से चौगुनी और अठगुनी विशेष हो गई थी।

फोष्ट—यह स्थान बड़ाही नीचे है, पृथ्वी हमसे; एक बड़े अन्तर पर ऊपर छूट गई।

एडा—(बड़ीही गंभीरता तथा साहस से) हां प्यारे इस राह से जैसे हम लोग उतर आये हैं वैसेही चढ़ भी तो सकते हैं।

फोस्ट—इसमें क्या संदेह! हमलोग आवश्यकीय वार्तालाप के उपरान्त, कुछही क्षणों में यहां से ऊपर चलेंगे।

एडा—तो तुम मुझे सभी कुछ यहां बता दोगे! क्यों प्यारे?

फोष्ट—हां प्यारी मैं कुछ उठा न रक्खूंगा सभी कुछ तुमसे कहूंगा।

इन्हीं बातों में इन लोगों ने वह सँकरी राह समाप्त करडाली और अब उसी द्वार के निकट आ पहुँचे।

फोष्ट—अब एडा—अब भी तुम हमारे साथ चलोगी? या यहीं से एकदम लौट जाओगी—परन्तु स्मरण रखना कि फिर हमसे इस भेद के सुन्ने का साहस तुम प्रगट नहीं कर सक्तीं।

एडा—प्यारे, मैं तुमपर आशक्त हूं। मेरी इच्छा उस भेद के सुन्ने की, बड़ीही प्रबल हो रही है।

यह शब्द बड़ेही अटल भाव से कहे गये थे। जिसे सुन्तेही कौण्ट ओरेना की कुल हिचकिचाहट मिट गई।

फोष्ट—अच्छा तो देखो कि किस स्थान पर उस गुप्त भेद को मैं तुमपर प्रगट करूंगा।

इतना कहतेही फोष्ट आगे बढ़ा, द्वार खोला और उसके भीतर उसने शीघ्रता से प्रवेश किया, इसके साथही साथ एडा भी थी। भीतर पहुँच के फोष्ट ने लम्प उंचा कर दिया जिसके प्रकाश में वहां का भयानक दृश्य एडा के सामने चमकने लगा।

एडा इस समय ठीक फोष्ट की बगल से सटी खड़ी थी। उसके चेहरे से, किसी प्रकार का भय इस भयानक दृश्य के देखने पर न दिखाई देता था।

भयानक दृष्य !—हाँ सचमुच भयानकही दृश्य वहां उपस्थित था—पत्थर की बेञ्चों पर सैकड़ोंही लाशें बेकफन और बेतरतीब पिशाचों और भूतों के समान आकार बनाये चारों ओर पड़ी थीं।

अब मानों एडा तथा फोष्ट सेण्ट ष्टीफन गिरजे के मुरदा खाने में खड़े थे।

मुरदे, जो वहां चारों ओर पड़े हुए थे, वे रीत्यनुसार गल तो न गये थे परन्तु उनके चमड़े बिलकुलही सूख गए थे और उनपर एक विशेष प्रकार का रङ्ग चढ़ा जान पड़ता था। यहां, उन में से किसी की बांह टूटी पड़ी थी—वहां उनका हाथ पड़ा हुवा था—उनसे कुछ अन्तर पर; किसी मुर्दे का सिर पड़ा हुवा था—किसी स्थान पर बेसिर की लाश पड़ी हुई थी।

होंठ और उसके ऊपर का कुछ चमड़ा भी मुर्दों का गल गया था जिससे उनके दांतों की लड़ी बिलकुलही खुल गई थी, और लाशें आने वालों को देख के बड़ेही भयानक स्वरूप में मानों ठठ्ठे लगा रही थीं।

मृत्यु के उपरान्त भी एक प्रकार से सब जीवित जान पड़ती थीं।

यहां आके फोष्ट; उतनी देर तक ठहरा रहा; जबलों कि एडा का चित्त बहुतही अच्छी तरह न ठिकाने हो लिया और फिर वह बोला—

"कहो प्यारी तुम्हें भय जान पड़ता है?"

एडा—(बड़ीही बीरता से) नहीं बरन् मुझे तो; मुरदों की अपेक्षा जीतों से बहुत कुछ भय मालूम होता है।

फोष्ट—अच्छा तब आओ, चौकियों पर बैठ जायें।

इतना कहके फोष्ट बैठगया और उसी के निकट, एडा भी जा बैठी, बैठने के उपरान्त अब फोष्ट ने कहना आरम्भ किया:—

"प्यारी लो; अब मैं तुम्हें वह अपना भयानक भेद प्रगट किये देता हूं जो मेरे हृदय पर बैठा; अनेकानेक कष्ट मुझे पहुंचाया करता है। क्यों प्यारी अब भी तुम मुझ से प्रीत करती हो और मैं भी तुम्हें हृदय से चाहता हूं—और जब मैं तुम्हें उस भयानक भेद से अवगत करूंगा जो मेरे हृदय में चुभा जाता है तो तुम्हें आपही मालूम हो जायगा कि मुझे कितनी आवश्यक्ता; एक तुम्हारीही जैसी बीरवाला को अपना

भेदी बनाने की थी ! अच्छा तो पहले मुझे यह कह लेने दो कि मैं किस लिये तुम्हें यहां लाया हूं यहां इस भयानक और लोमहर्षण स्थान में—! इस कारण कि मेरा भेद रक्त को जमा देने वाला है—रोंगटों को खड़ा करदेने वाला—मेरे भेद के सुने से हृदय पर छुरियां कटारियां चलने लगती हैं । तो प्यारी ! मैं इसवास्ते तुम्हें यहां लाया कि जिससे तुम्हारा हृदय दृढ़ हो तुम्हारा साहस इस भयानक दृश्य के देखने से और भी अचल होजाय –और यह सब केवल इसी के लिये, कि हमारा भेद इससे कहीं भयानक है । परन्तु एडा ! तू दृढ़ है तुझ में मर्दों का साहस है; इसके अतिरिक्त मेरा भेद दिन दहाड़े किसी से कहा भी नहीं जा सक्ता जब सूर्य प्रकाशमान हों और उनके प्रकाश से कुल वस्तुयें चमक रही हों। और न रातही के समय खुले स्थान में यह गुप्त भेद कहने योग्य है, कि कदाच् कोई व्यक्ति खड़ा इसे सुन रहा हो। नहीं: इन स्थानों में मैं अपना भेद कदापि नहीं प्रगट कर सक्ता था । हाँ उस्के प्रगट करने का यही एक स्थान था । मुर्दों का घर । जहां केवल प्रेतोंही की वासना है, जहां मनुष्य की गन्ध मात्र नहीं है, बस इसी उपयुक्त स्थान पर प्यारी मैं तुमसे अपना भेद प्रगट करने को तुम्हें ले आया हूं ।

"मैं उसे सुने पर प्रस्तुत हूं फोष्ट ! तुम कहे चलो"

वीरबाला एडा ने यह बातें परम दृढ़ता से कहीं ।

फोस्ट—(चिल्ला के) परन्तु प्यारी, एक बार इस्का तुम शपथ भी करलो कि जो कुछ मेरी जिह्वा से इस भेद के बारे में निकलेगा, उस्के लिये यदि तुह्मारे प्राणोंही पर क्यों न आ बने, परन्तु तुम नहीं बताओगी—और हां इस्के साथही इस बात की भी शपथ कर लो कि तुम मुझसे सदैव प्रेम करोगी—बराबर योंही प्रीति रक्खोगी योंही इस सुरीले स्वर से हमें सदैव सन्तुष्ट किया करोगी ।

एडा—आह मेरे प्यारे—मेरे परम विश्वास पात्र कौन्ट, मैं शपथ खाके कहती हूं कि चाहे अन्तिम समय पादड़ीही आके मुझ से क्यों न पूछें और चाहे कोई बादशाहही धमकी दिखा के क्यों न पूछता हो परन्तु मैं इस भेद का एक अक्षर भी प्रगट न करूंगी–बाकी रहा प्रेम–तो प्यारे मैं तुह्मारे प्रेम में तो एक समय से पग चुकी हूं और यह भी निश्चय किये हुये हूं कि इस भेद में किसी व्यक्ति का मार डालनाही क्यों न हो, और तुम प्यारे एक हत्याकारी क्यों न हो, परन्तु मै फिर भी तुम्हें चाहूंगी मैं फिर भी तुम पर प्रेम रक्खूंगी और साथही तुह्मारी दया दृष्टि

की भिक्षुक रहूंगी । आह केवल इसी प्रेम ने मेरे हृदय पर अधिकार कर रक्खा है नहीं प्यारे तुम देख रहे हो कि मैं कैसी दृढ़ हूं, अच्छा अब शीघ्र और बिना हिचकिचाहट के वह अपना गुप्त और रहस्यमय भेद मुझ पर प्रगट कर दो।

यह सुन कर फोष्ट कुछ क्षण के लिये चुपचाप बैठा रहा, और फिर ऊँचे स्वरों और क्षीण हुये गले से बोला—

" अच्छा प्यारी ! तो जो तुह्मारी सुनने की इच्छा है तो मैं सुनाये देता हूं। सुनो और अब तुम पर सब प्रगट हुवा जाता है । इतः पूर्व, अर्थात् कुछही वर्ष बीते होंगे कि मैं एक दरिद्र विद्यार्थी था—मेरा संसार में न तो कोई मित्रही था, और न मेरे पास एक कौड़ी भी व्यय करने को थी। आह ! उन्हीं दिवसों में मैं बन्दीखाने में डाला गया, और वहां मुझे मृत्यु की आज्ञा दी गई । मैं उस्समय थेरिजा को चाहता था, परन्तु ऐसा नहीं कि जैसा अब मेरी प्यारी एडा मैं तुझे चाहता हूं, अस्तु ! तो उस समय मैं उसे चाहता था और हृदय से चाहता था, और उस्के प्रेम का बड़ाही इच्छुक था । इस्के अतिरिक्त मुझे उन लोगों से भी बदला लेना था, जिनके कारण मुझपर यह आपत्ति आई थी । और यह स्वयं बेरेनही था, जिसने मुझे इतने कष्ट पहुँचाये थे—"

एडा—(आश्चर्य से) यही बेरेन—बेरेन ?

फोष्ट—हां यह यही घमण्डी बेरेन था, जिस्की इच्छा थी कि मुझ से और थेरिजा से कदापि व्याह न होने पायें । परन्तु मैंने इस विषय में कभी थेरिजा से कोई बात चीत न की थी । क्योंकि मैं जिस्से इतना प्रसन्न रहता था, और जिस्की प्रसन्नता से मेरी प्रसन्नता थी उसे मैं कैसे दुःखित कर सक्ता था ? इस्समय मैंने अपने प्राण बचाने—दुश्मनो से बदला लेने—तथा थेरिजा को हस्तगत करने के लिये ! आह एडा—उस्समय की मेरी अवस्था तुम स्वयंही विचार देखो कि कैसी पतली हो रही थी । (घबड़ा के और फिर साहस करके) हां प्यारी तो उस्समय मेरी अवस्था बड़ीही हीन हो रही थी । आह मेरे एक ओर तो फांसी तथा अनेक तमाशाइयों की भीड़ दिखाई पड़ती थी, तथा दूसरे ओर मुझे असीम अधिकार और अतुल सम्पत्ति दिखाई देती थी—एक ओर तो बिलकुलही अन्धकार था, और दूसरे ओर पूरा २ प्रकाश प्रगट हो रहा था—और ऐसे समय में कि जब मेरे हृदय में अनेकानेक प्रकार के कल्पनाओं की तरङ्गे उठ रही थीं—बस प्यारी ऐसे समय क्या अपनी आत्मा को पिशाच के हाथों में नहीं दे सक्ता था ?

जैसेही एडा के कानों में ये शब्द पहुँचे उसने काँप के कहा—

" नहीं नहीं फोष्ट, ऐसा होना भला संभव है ! "

फोष्ट—(बड़ीही जोर से चिल्ला के) तो एडा क्या तू मुझे अभी से तुच्छ समझने लगी।

एडा—नहीं प्यारे—ऐसा नहीं है—तुम चाहे कोईही क्यों न हो मैं तुम पर प्रेम रखने का साहस कर चुकी हूं, और यदि मैं पसन्द न भी करती तो भी मेरे प्यारे यह हृदय तुह्माराही था—आह प्यारे तुह्में नहीं मालूम कि मैं तुह्मारी एक २ अदा पर अपना सर्वस्व समर्पण कर चुकी हूं।

फोष्ट—तो मैं इस्वात पर तुमसे क्षमा की प्रार्थी हूं, कि मैंने तुम पर अविश्वासता प्रगट की। अच्छा तो अब यह तुह्मारी समझ में आही गया होगा, कि क्यों मेरे हृदय पर सांप लोटा करता है—क्यों एक धधकती हुई आग मेरे हृदय को भस्म किये डालती है—और अब तुह्में यह भी मालूम हो गया होगा, कि मुझे तुह्मारे जैसे एक मित्र की बड़ीही आवश्यक्ता थी। आह! एडा यदि वह घड़ी पुनः लौट आती—और यदि मैं पुनः विटेनवर्ग के कारागार में जा सक्ता, और फिर वहां से चाहे फांसीही पर मुझे क्यों न जाना पड़ता,—और इसपर मुझे उस बन्धन को तोड़ लेना पड़े, जो पिशाच में और मुझ में बँध गई है, तो कैसी बड़ी प्रसन्नता का कारण यह होता—मैं हार्दयिक कांक्षा से इस अदल बदल को स्वीकार करता ! प्यारी—केवल चौबीस वर्ष पर्यन्त पिशाच मेरा गुलाम है। परन्तु हाय जब उसके गुलामी का वह अन्तिम घण्टा अन्तिम मिनिट—अन्तिम सेकेण्ड व्यतीत हो जायगा, तो वह सदैव के निमित्त मेरा स्वामी हो जायगा ! आह प्यारी यही मेरी भयानक तथा कष्टदायक कहानी थी जिसे मैं तुह्में सुनाने को था।

एडा—प्यारे तू तो एक बड़ाही वीर तथा साहसी व्यक्ति निकला ! मैं तेरी सराहना किसी प्रकार नहीं कर सक्ती—और अब मैं प्यारे तुह्में चाहती हूं—हाँ मैं हृदय से चाहती हूं—आह ! हमारी प्रीत इस्वात के सुन्ने से और भी बढ़ गई, और अब मैं सदैव के निमित्त तुह्मारी और फिर तुह्मारी हूँ।

फोष्ट—प्यारी तुह्मारा प्रेम मेरे हृदय में भी जम गया, कि जिस्का वर्णन मैं जिह्वा से किसी प्रकार नहीं कर सक्ता। परन्तु अभी मुझे अपना पूरा वृत्तान्त सुना लेने दो, क्योंकि वह अभी लों अधूराही है। मेरे दस्तावेज़ में उस निर्दयी पापिष्ठी

पिशाच ने यह भी लिख दिया है, कि मैं किसी धार्मिक स्थान, जैसे गिरिजा वा किसी पादड़ी इत्यादि के मकान में भी न जा सकूं; या मैं किसी धार्मिक मनुष्य को अपने घर में भी स्थान न दे सकूं, मैंने इस्वात का पहिले बड़ाही उद्योग किया कि थेरिज़ा विन व्याह के विना गिरिजा में गये और धार्मिक रसमों के विना समाप्त हुये, और अपने पिता को आज्ञा विना पायेही मेरे साथ भाग चले, परन्तु थेरिज़ा ने एक भी न सुनी, और तब एडा गिरजा में जाने और उससे व्याह करने के निमित्त मुझे पिशाच से आज्ञा माँगनी पड़ी—और उस निर्दयी ने, हाय! उस निर्दयी ने इस नियम पर मुझे गिरजा में जाने की आयसु दी, कि मैं अपना पहिला पुत्र उसे दे दूं!

एडा—(चिल्ला के) बड़ाही भयानक नियम यह है!

फोष्ट—हाय! एडा! यथार्थ में यह बड़ाही भयानक नियम है—परन्तु मेरी प्यारी एडा तू प्रार्थना कर—तू हर तरह से प्रार्थना कर सक्ती है—और मैं इस्का साहस भी नहीं कर सक्ता—प्यारी तू केवल भगवान से यही प्रार्थना कर, कि वह सन्तान जो उस्के गर्भ-में है बालिकाही हो—नहीं तो मेरे हृदय का टुकड़ा मुझ से पृथक कर लिया जायगा।

एडा—(दृढ़ता से) भगवान की सौगन्ध मैं रात दिन उस्के लिये प्रार्थना करूंगी। फोष्ट तुम निराश न हो!

फोष्ट—(बड़ेही दुःख से) और प्यारी मेरे निमित्त भी प्रार्थना करो—यद्यपि मैं अनुमान करता हूं, कि मेरे लिये तो कुल प्रार्थना इत्यादि निरर्थकही होगी, परन्तु तुम करो तो सही! जो दया ईश्वर की होगी वही सही—परन्तु अब हम लोगों को यहां से चलना चाहिये, एडा—अब तो मेरा गुप्त भेद जानही चुकी हो—और प्यारी उस्पर भी तुम मुझपर कृपा कर वैसाही प्रेम बनाये हो, क्यों ऐसाही है नः?

एडा—आह प्यारे! मेरा प्रेम तो कई गुन और बढ़ गया।

इतना कह के एडा ने उस्के गले में बाँहें डाल दीं, और दोनों एक हुमङ्ग में एक दूसरे को चूमने लगे।

इस्के उपरान्त वे दोनों एक दूसरे से पृथक हुये, और फोष्ट ने लम्प उठाया तथा एडा को साथ लेके उस मुर्देवाली कोठरी से निकला।

बीसवाँ बयान।

भाई।

इस घटना के तीन मास के उपरान्त, जिस्की वर्णना अभी हम ऊपरवाले बयान में कर आये हैं, एक युवक,—जिस्की सूरत से गरीबी और तङ्ग हाली फटी पड़ती थी, और जिस्के फटे और गर्द से लतपत वस्त्रों से यह भी प्रतीत होता था, कि वह कहीं दूर से चला आता था,—ओरेना के महल के समीप दिखाई पड़ता है।

उस्का चेहरा मोहरा बड़ाही सुन्दर था, यद्यपि थकावट के कारण उस्में एक प्रकार की खिन्नता भी आ गई थी, पर तो भी उस्के सच्चे सौन्दर्य की छाया उस खिन्नता में से भी फूट फूट के बहिर्गत हो रही थी। युवक के बड़े और चमकीले नेत्र, तथा चेहरे पर के वह घुँघुराले बाल उस्को इस वर्तमान अवस्था से बहुत कुछ पृथक कर रहे थे।

सन्ध्या हो चुकी थी, जब यह भूखा थका सर्दी तथा हैरानी से काँपता और परीशान पथिक ओरेना के महल के हाते के पास पहुँचता है, और उस्के गिर्द के घिरे लोहे के जङ्गले में का एक फाटक खोल के उस्में प्रवेश करता है।

इस्के उपरान्त पथिक ने आपही आप काँपतेहुये स्वर में कहना प्रारम्भ किया—

"दारुण दुःख सहन कर, और तीस माइल् का लम्बा पथ बड़ेही कष्टों से समाप्त कर मैं यहां पहुँचा हूं—तीस माइल्स का लम्बा पथ और मैंने बीच २ के बहते हुये श्रोतों के ठंढे जल के अतिरिक्त, वे अन्न जल के समाप्त किया है। और १५ या बीस मील की प्रत्येक मंजिल इसी तरह मारता चला आया हूं! परन्तु उस्पर भी मेरा हृदय नहीं हिला—मेरे साहस में किसी प्रकार का भेद न पड़ा! इस्का कारण क्या था? इस्का कारण केवल इतनाही है, कि मुझे एक आशा बँधीहुई है, कि जब मैं ओरेना में पहुँच जाऊँगा, तो फिर मुझे भूख प्यास का कष्ट न सहन करना पड़ेगा! हाय! यदि मुझे अपनी कमाई से भर पेट भोजन मिल जाया करता तो मैं मरजाता, परन्तु दूसरे की सहायता की इच्छा भी कभी न करता—और वह दूसरी चाहे मेरी बहिनही क्यों न होती! क्योंकि मैं उस्के गरम और घमण्डी स्वभाव से भली भाँति परिचित हूं—उस्के विचित्र स्वभाव और चञ्चल चित्त से मैं कुछ अविज्ञ नहीं हूं! परन्तु उस्पर भी मुझे आशा है, कि भाई को देख के उस्के रक्त में अवश्यही उबाल उत्पन्न होगा, और वह मुझे निस्सन्देह हाथों हाथ लेगी! हां—प्यारी बहिन मन्द मुस्कान के साथ, नि-

श्चय अपने भाई की स्वागत को खड़ी होगा ! और यदि फोष्ट जो एक समय में मेरा सहपाठी था, हम और वह साथही साथ स्कूल में शिक्षा पाते थे, ऐसा उच्च पदाधिकारी होके हमें भूल भी गया होगा, तो हमारी वहिन तो हमें न भूलेगी एडा तो हमपर अवश्यही द्दारा करेगी ! मेरी प्यारी माता ! मेरी दयालु जननी ! तीन सप्ताह व्यतीत हुये, कि सदैव के लिये तुह्मारे नेत्र मुँद गये—तीन सप्ताह वीते कि तुम कब्र् में निश्चिन्तता से विश्राम कर रही हो ! हा ! कितना मैं तुह्मारे लिये रोया हूं—कितना मैंने तुह्मारे लिये प्रार्थना की है—रात २ भर मैं तुह्मारी कबरही पर बैठा प्रार्थना करता रहा ! और जो कुछ मेरे पास बचा खुँचा था, वह सब तुह्मारी मिट्टी देने में खर्च कर दिया ! आह मेरी माता ! यदि तुह्मारी आत्मा स्वर्ग से इस ओर को आ सक्ती होगी, और तुम हमारी इस अवस्था—उसी अपने पुत्र की यह अवस्था, जिसे तुम इतना प्यार करती थी, देखती होगी तो तुह्में कितना कुछ खेद न होता होगा। यह मेरी सुस्ती का कारण नहीं है, कि पहिनने को एक टुकड़ा वस्त्र का और खर्चने के लिये एक कौड़ी का भी मैं मोहताज हो रहा हूं ! और न फजूल खर्ची और ऐसाशीही इस कष्ट का कारण है, केवल दुर्भाग्य—केवल दुर्भाग्य ने मुझे गरीब, दरिद्री, भिखमंगा पथ २ का भिखारी बना दिया है—परन्तु जो हो, माना मैंने कि मैं वड़ाही गरीब और अभागा हूं, परन्तु सारे, संसार से तो नेत्र मिला सक्ता हूं, क्योंकि मेरे चालचलन पर तो कोई धब्बा नहीं है।

यही सब बातें थीं, जिन्हे वह युवक, परन्तु अभागा पथिक आपही आप कहता ओरेना के महल के ओर बढ़ रहा था।

इससमय पूरा २ अन्धकार चारों ओर फैल गया था, परन्तु महल के निकलते हुये एक प्रकाश की ओर टकटकी लगाये वह लगातार पैर उठाता उसी ओर बढ़ा चला जाता था।

बढ़ते २ अब वह एक और लोहे के जङ्गले के पास आ पहुँचा, जो, बाग तथा महल के विभक्त करनें के लिये लगाया गया था। इस जङ्गले के छड़ ठीक बरछी के तुल्य थे और जिनके सिरे पर चमकीला सोनहला पानी फिरा हुवा था।

इसी जङ्गले के निकटही निकट पथिक, एक ओर बढ़ने लगा तो उसे कुछही अन्तर पर एक द्वार दिखाई दिया, जिसमें भाग्यवश ताला न लगा हुवा था।

पथिक—शगुन तो अच्छा है।

इतना कहके उसने बाग में प्रवेश किया, और फिर आपही आप बोला—

" भगवान ! मेरी बहिंन मुझे सहर्ष स्वीकार करे ! और आह ! यदि उसका हृदय भी हमारेही तरह नरम होगा - तो माता का स्वर्गवास सुनकर कितना कुछ न खेद वह प्रगट करेगी—वही माता जिनका अत्र पुनः पृथ्वी पर आगमन असम्भव है।

इतना कहके श्यामवर्ण के लहलहाते वृक्षों तथा मनोहर कुञ्जो के निकट से पथिक, आगे बढ़ने लगा, जो इससमय शरद ऋतु के कारण ओस की मोटी चादरों के नीचे छिपे जा रहे थे। इसी प्रकार आगे बढ़ते हुये जब महल लगभग सौ गज के अन्तर पर रह गया तो सहसा इसे बाँये हाथ की ओर इससे कुछही अन्तर पर एक प्रकाश दिखाई दिया।

यह देखतेही इसके हृदय में एक बात आ गई, कि यह रोशनी जो इससे कुछ अन्तर पर दीख पड़ती है, निश्चय महल के बाहर किसी छोटे मोटे मकान में से निकल रही है, और वहीं चल के इसे अपने बहिन का समाचार पहिले ले लेना चाहिये, तब महल में प्रवेश करना उचित है।

यह सोचतेही वह उस आते हुये प्रकाश की ओर बढ़ने लगा। करीब पहुँचने पर इसे मालूम हो गया, कि यह प्रकाश, एक छोटे मकान के ऊपरवाले खण्ड की खिड़की से निकल रहा है, जो बाग के बीचों बीच एक झील के किनारे खड़ा है।

इस छोटे मकान का द्वार खुला था, इस कारण हमारे पथिक ने निधड़क उसमें प्रवेश किया।

परन्तु जैसेही वह कुछ दूर भीतर गया वैसेही उसे ध्यान आया, कि कदाच् गृह स्वामी मेरे ऐसे अचांचक चले आने से रुष्ट हो जावे— या वह मेरी इस अवस्था को देख और यों निधड़क घुसते पाके ईश्वर जाने क्या अपने चित्त में अनुमान करे।

वह हिचकिचा गया !

और फिर आपही आप बोला—

" मै अपनीं इस अवस्था से महल में प्रवेश भी तो नहीं कर सक्ता—हमारे बहिन की घमण्डी आत्मा इससे बड़ीही असन्तोष प्रगट करेगी, कि एक हव व्यक्ति जिस्के बाल मैले आंखे धँसी हुई, कपड़ा फटाहुवा, जूता टूटा हुवा है—यहां आके मुझे अपना एक निकटस्थ संबन्धी बताता है! परन्तु अब तो मै इतना भूखा—इतना प्यासा और इतना थका हुवा हूं, कि खड़े होने की भी मुझमें सामर्थ नहीं है—अब भीतर चलता हूं, और वहां चलके सब हाल पूछताहूं।"

इतना आपही आप कहके वह धीरे २ सीढ़ी पर चढ़ने लगा, जिस्के अन्त में एक छोटा सा खुला हुवा द्वार था।

द्वार के निकट पहुँचके वह उसे खटखटानेही को था, कि सहसा उस्के भीतर से किसी के बात चीत करने के शब्द सुनाई दिये। स्वर से यह भली भाँति परिचित था।

" अब तुह्मारे निमित्त क्या किया, जाये एडा ! "

यह फोष्ट का कण्ठस्वर था।

अजनबी (आपही आप) तो यहां फोष्ट और एडा दोनोंही एकत्रित हैं।

इतना कहके वह बड़ीही स्थिरता से दोनों की बातें सुनने लगा।

" आह प्यारे ! जैसे बन पड़े अब मुझे इस आपत्ति और इस महा वेदना से छुड़ाओ" ! यह एडा का कण्ठस्वर था। "

" परन्तु कैसे ? तुम कोई मनसूबा अपने चित्त में बाँधो, और उसे मुझसे कह दो ! कि यही मेरी इच्छा है—तुम प्यारी मेरे धन, दौलत, अधिकार—सभी से तो विज्ञ हो ! बस वह तदबीर बता दो, और मैं उसे पूरा करने के लिये प्रस्तुत हूं। "

यह फोष्ट का कण्ठस्वर था।

" सुनो प्यारे—मेरी यह निर्लज्जता तुह्में अवश्यही छिपानी होगी ! परन्तु अभी यह मैं निश्चय नहीं कर सक्ती, कि किस प्रकार। इस्का विचार हमारे हाथों सुपुर्द करना तुह्मारे बड़े भूल का कारण है—मैंने तो तुह्मीं से सलाह लेने का विचार किया है ! अब तुम्हीं जैसे चाहो इसे छिपाओ।"

यह एडा का कण्ठस्वर था।

" हां प्यारी ! तो दो रास्ते इससमय, मुझे सुझाई देते हैं ! प्रथम तो यह कि तुम यहां आस पास का कुल स्थान छोड़ के कहीं दूर चली जाओ—क्योंकि कुछही दिनों के उपरान्त इस भेद का छिपाना एक प्रकार पूर्णतया असम्भव हो जायगा। और दूसरे यह कि कोई उच्चघराने के परन्तु गरीब सुन्दर युवा को मैं ढूँढ़ निकालूं, जो द्रव्य की लालच से, जिसे मैं तुह्मारे दहेज में दूंगा, तुम से ब्याह करनेपर प्रस्तुत हो जायगा। "

यह फोष्ट का कण्ठस्वर था।

" प्यारे यह दूसरी बात मुझे हृदय से पसन्द है—हां—ऐसाही होना उचित है, जैसा तुम कह रहे हो। वायना में उच्च घरानेवालों का कोई काल नहीं है, जिन्हें कुछ

भी रुपये की लालच दी जायेगी, वे दौड़तेहुये व्याह करने पर प्रस्तुत हो जाँयेगे—वह हमसे इस्वारे में एक प्रश्न भी न करेंगे। तब अच्छा तो है, प्यारे फोस्ट (इतना उसने हार्दयिक उद्वेग से कहा) हम एक दूसरे के साथ व्याह दिए जाँए, और इसतरह हम तुमसे पृथक भी न हो सकेंगे।"

यह एडा का कण्ठस्वर था।

" अच्छी बात है! परन्तु प्यारी एडा तुम्हें मालूम होगा, कि दोही मास के उपरान्त उस कार्य के निमित्त तुम्हारी हमें बड़ीही आवश्यक्ता होगी, जिस्का वर्णन मैं तुमसे कई बेर कर चुका हूं। परन्तु इस्में भी यदि भाग्यवश दोनोंही एक समय में हों—और—"

यह फोस्ट का कण्ठस्वर था।

इस्के आगे की बातें बाहर के खड़े पथिक की समझ में न आईं।

अब वह पथिक क्या सोच रहा था?

जब उसने पहिलेही पहिल फोस्ट तथा एडा को एकत्रित पाया तो उसे बड़ाही आश्चर्य जान पड़ा। फिर इस्के उपरान्त वह अपनी इच्छा प्रतिष्ठा तथा मर्यादा के विरुद्ध उन दोनों की निर्लज्जता की बातें लाचारी से खड़ा सुनता रहा, और तब उसपर प्रगट हो गया, कि एडा तथा फोस्ट में क्या सम्बन्ध खड़ा हुवा है, और किस विषय पर वे बात चीत कर रहे हैं।

परन्तु इसपर भी वह बात के तत्व को भली भांति न समझ सका था।

इसके उपरान्त अब वह उन शब्दों को सुने लगा जो बड़ेही प्रेम से, एक दूसरे के प्रति व्यवहृत किए जाते थे। इससे उसके शरीर का रक्त सूखा जाता था—एक २ अक्षर उन दोनों का पथिक के मस्तक पर बिजली गिरा रहा था—उसका शरीर काँप रहा था और आश्चर्य न था कि उन्हें सुनके वह पृथ्वी पर गिर पड़ता। परन्तु जब एडा ने अपनी निर्लज्जता को बड़ेही खुल्लम खुल्ला शब्दों में फोष्ट से कहा, तो उसकी पलकें; बड़ीही ठंढक से नेत्रों पर गिर गईं—उसके घुटने गिरते से बोध होने लगे—एक मूर्छा—एक बीमारी, एक निर्बलता, उसपर पूरे तौर से अधिकृत हो गई। और इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि वह साहस करके तुरन्तही दीवार से आड़ न लगा लेता तो वह उसी समय पृथ्वी पर गिर पड़ता।

बातचीत अब भी होही रही थी और पथिक हृदय के कानों से ध्यान लगाये उसे सुन रहा था।

"हाँ तो उस समय पर्यंत तुम्हें अपनी अवस्था को अवश्यही छिपाना चाहिये। और अब जब मैं तुम्हें बचाने के लिये इस मनसूबे पर सोचरहा हूं तो मुझे स्मरण होता है कि एक व्यक्ति बेरेन वोन जेरनिन नामक है जो तुम्हें, इच्छा पूर्वक—"

ठीक इसी समय एक धड़ाके के साथ द्वार खुला और वही पथिक - थका माँदा, भूखा प्यासा; परन्तु क्रोध से काँपता अपने दोनों हाथ छाती पर बांधे कोठरी में आ खड़ा हुवा।

"मेरा भाई!"

कांपती हुई एडा ने इतना चिल्ला के कहा, और फिर फोष्ट के हाथ में से अपना हाथ निकाल के शीघ्रता पूर्वक उसकी ओर वह झपटी परन्तु वहां पहुँच न सकी बीचही में बेहोश होके, बिछी हुई दरी पर वह गिर पड़ी।

"अरे आटू"

इतना फोष्ट ने आटू की ओर देख कर और बहुतही घबराहट से कहा फिर इसके उपरान्तही उसने अपनी तलवार के मूठ पर हाथ डालदिया और आटू की ओर नेत्र से से नेत्र मिला के देखने लगा।

इक्कीसवाँ बयान।

छोटा मकान।

प्यारे पाठकगण सरलता पूर्वक यह अनुमान कर सक्ते हैं, कि इस पथिक के ऐसे अचांचक आजाने से उन दोनों के हृदय की क्या अवस्था हो गई थी, जो बैठे हुये आपस में ऐसे घुल २ के वार्तें कर रहे थे।

फोष्ट अपने सामने एक उस व्यक्ति को खड़ा देख रहा था, जो किसी एक समय में उस्का मित्र था, और जिस्की बहिन के धर्म की चादर को उसने बड़ीही निर्लज्जता और अत्याचार से फांड़ के टुकड़े २ कर दिया था, कुछही देर के बाद एडा उठी। इससमय उस्का चेहरा पीला पड़ा हुवा था, वह मारे लज्जा के कटी जा रही थी, और अब धीरे २ कनखियों से अपने भाई के लाल और दुःखमय चेहरे को वह देखने लगी। जो उस्के हृदय के कष्ट का पूरा अनुभव करा रहा था। और उधर वह अपनी बहिन

या उस स्त्री के सम्बन्ध से बड़ाही दुःखी हो रहा था; जिसने अपने धर्म के ऐसे अनुपम मोती को यों ठेस लगवा के बिलकुलही बेकाम कर दिया था।

अन्त आटू निकटस्थ एक चौकी पर बैठ गया; और दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँक के बड़ीही वेदना से रोने लगा।

फोष्ट, जिसे आशा थी, कि अब उस्के पुराने मित्र से कोई भारी विवाद होनेवाला है, यह देख के बड़ीही घृणा से मुस्कराया और फिर उस्की बहिन एडा की ओर देखने लगा।

परन्तु एडा ने यह सब कुछ न लक्ष किया, वह अपने भाई की यह अवस्था देख के बड़ीही व्यग्र हो रही थी।

दृश्य के प्रत्येक व्यक्ति की यही अवस्था थी!

" आह मेरी बहिन "

आटू ने, एडा की ओर अश्रुपूर्ण नेत्र से देख के इतना कहा, और फिर कुछ क्रोध से जोर से कहने लगा—

" हाय बहिन! आज अभी मुझे क्या मालूम हुवा है! मैं विटेनवर्ग से गिरता पड़ता अपनी बहिन प्यारी बहिन के देखने के लिये चला आ रहा हूं?—दरिद्रता के कष्ट से दुःखी—और वे अन्न जल के इन फटे कपड़ों में सरदी बरदाश्त करता मैं केवल इसी आशा पर साहस बाँधे चला आता हूं; कि चल के अपनी प्यारी बहिन के आदर सत्कार से प्रसन्न हूंगा; उस्की मूर्ति देखतेही यह सब कष्ट निवारण हो जायँगे! हाय! केवल इसी आशा ने मुझे जीवित रक्खा, और यहां लों पहुँचाया, नहीं पथ के कष्ट कुछ ऐसे न थे कि जो मेरे प्राण न ले लेते; आह; एडा—जब मैं रात के समय किसी किसान की झोपड़ी में ठहरने के लिये स्थान माँगता तो वह मुझे धक्के देके वहां से निकाल देता; उससमय मैं यह सोचता कि " धन्य ईश्वर कि एडा तो इस कष्ट से नहीं रहती " और जब मैं भूख के कष्ट से बड़ाही दुःखी होता तो किसी गड़ेरिये के सामने हाथ फैलाता तो वह रोटी का टुकड़ा ठीक उसी प्रकार मेरे सामने फेंक देता, जैसे किसी कुत्ते को कोई देता है; उससमय मै अपने चित्त को यह कहके ढाढ़स देता कि " एडा के पास रोटी बहुत है; और वह मुझे भी देगी " और साथही मैं उस कष्ट—उस दुःख—उस भूख प्यास की अवस्था में यह भी सोच रहा था, " कि एडा एक हमारे दयालु प्रतिष्ठित और धनाढ्य मित्र के पास है, जो उस अनाथ बालिका की भली

प्रकार रक्षा करेगा—परन्तु हाय एडा (विलख कर) हाय एडा तूने मेरी कुल आशाओं पर पानी फेर दियां। कुल कामनाओं को मिट्टी में मिला दिया।

" अनाथ ! "

इतना कहके एडा आंसू बहाने लगी और अपने भाई के मुँह की ओर, उसके बात करती समय देखने लगी; और जब उसकी बातों का अन्त हुवा तो उसने फिर आत्मिक वेदना से कहा—:

"अनाथ ! मैं अनाथ क्यों होने लगी मेरे भाई और माता दोनोंही अभी संसार में वर्तमान हैं।"

आर्टू—(एक बड़ेही दुःखित स्वर में) तुम्हारी माता एडा ! (रो के) तुम्हारी माता — जो उस दुःख और दरिद्रता की अवस्था में तुम्हारे स्त्रीधर्म को एक अनुपम मोती समझती थी—और जो तुम्हारी भलाइयों को मणि माणिक से कहीं विशेष बहुमूल्य समझती थी—वह तुम्हारी गरी गरीब माता—एडा—"

"बोलो आर्टू, बोलो !!!" एडा बड़े जोर से चिल्लाई ! और फिर आर्टू की ओर शीघ्रता से बढ़ और उसका दोनों हाथ अपने हाथों में दबा के घबराहट से कहने लगी -

"बोलो - मैं कहती हूं जल्दी बोलो—मेरी माता का क्या हुवा ?"

आर्टू—अब वह संसार में नहीं हैं !—और मैं भी भगवान को धन्यवाद देता हूं कि अच्छा हुवा उसे अपने पास उन्होंने बुला लिया नहीं संसार में रहके अपनी बेटी की निर्लज्जता उसे अपने कानों सुननी पड़ती।

"मेरी माता—हाय मेरी प्यारी माता—चलबसी !"

एडा ने यह कहा और फूट २ के रोती हुई अपनें भाई के सामने घुटनों के बल बैठ गई; मानों वह उसकी मिन्नत कर रही थी।

भाई—उठो, एडा- उठो, हमारे सामने रोने धोने तथा घुटने टेकने से क्या लाभ यदि ऐसीही ग्लानि आई हो तो भगवान की बन्दना करो।"

'इतना कहके उसने एडा का हाथ पकड़ के जमीन से उठा लिया और फिर कोच पर बैठा दिया।

आर्टू—(फोष्ट के प्रति—बड़ीही कड़ाई और क्रोध से) अच्छा तो अब मेरे महाशय या मेरे श्रीमान् क्योंकि यथार्थ में जो नाम आपका होना चाहिये वह तो

मेरे हृदय में है परन्तु भगवान ने न जाने क्या समझ के तुम्हें इतना धनी कर दिया है इस कारण मुझे भी कहना पड़ा कि मेरे महाशय या मेरे श्रीमान्—"

फोष्ट—आटू ! मेरे प्यारे मित्र, जो कुछ होना था, वह तो सब कुछ होही चुका, तुह्मारी इन बातों से वह बातें बन न जायँगी। हां भविष्य के लिये मैं तुमसे क्षमा का प्रार्थी हूं, और आशा है कि तुम उसे स्वीकार भी करोगे !

" क्षमा ! "

इतना उस युवक मुसोविर या आटू ने नाक भौं चढ़ा के और बहुतही घृणायुक्त दृष्टि से फोष्ट के देख के कहा, और फिर बोला—:

" क्या तुम अनुमान करते हो, कि वह तमाम सोना जो अबलों संसार के कुल मनुष्यों ने मिलके एकत्रित किया है, या वे अदृश्य खज़ाने जो अभी हम लोगों के पैरों के नीचे पृथ्वी में गड़े हुए हैं, उस भोली भाली बालिका के स्त्री धर्म का बदला हो सक्ते हैं ? क्या तुम अनुमान करते हो कि पृथ्वी के कुल जवाहिरात, जिन्हें मनुष्यों ने परिश्रम कर के कानों से वहिर्गत किया है, मिला के भी, रमणी मूर्ति के स्त्री धर्म रूपी दैदिप्यमान मणि को खरीद सक्ते हैं ? नहीं ! कदापि नहीं ! मेरे श्रीमान—जब एक बेर इस धर्म का तेजप्रदीप पापिष्ठियों की चलाई हुई वायु से बुझ जाता है, तो फिर उस स्थान को ललेबदखशाँ भी अपनी झिलमिलाती हुई किरणों से नहीं प्रकाशित कर सक्ता ! यह ठीक है—भाग्य ने ऐसा कहने पर मुझे विवश कर दिया है—कि मैं गरीब हूं—मैं निस्सहाय हूं—मैं फटे हालों हूं—मुझे किसी प्रकार की कोई आशा नहीं है—; परन्तु वह तुह्मारी कुल सम्पत्ति—वह तुह्मारा कुल, अधिकार, जो तुम मुझे दे सक्ते हो, वह भी मुझे ऐसी प्रसन्नता कभी नहीं दे सक्ता, क्योंकि मेरे घराने की प्रतिष्ठा को इस वेहया स्त्री ने; जो अभी उस निर्लज्जता के छिपाने के लिये तुम परामर्श कर रही थी बिलकुलही डुबा दिया है।

फोष्ट—आटू-ये शब्द बड़ेही कड़े हैं—तनिक तुम विचार का प्रकाश—इस मामले पर डालोगे तो तुह्में दूसराही दृश्य दिखाई देने लगेगा।

" आज रात की बातों को देख के अब यही मैं सोच चुका हूं—और यही अनुमान, मेरा तुह्मारे बारे में सदैव के लिये रहा—हां उस समय भी; जब मृत्यु का फरिश्तः अपना कर्तव्य साधन कर रहा होगा, और मेरी आत्मा पर दारुण दुःख उपस्थित होगा—तब भी मैं यही सब अनुमान करूँगा—मैं अब अपने चित्त में इन बातों

के अतिरिक्त, जिन्हें मैं तुम पर प्रगट कर चुका हूं, दूसरी बातों को स्थानही न दूंगा, परन्तु मैं तुम्हें भली भांति समझता हूं, श्रीमान्—" इतना कहते २ आदू के गाल मारे क्रोध के लाल हो गये; जिस समय वह बोलता था, उस समय उसके नेत्रों से अग्नि स्फुलिङ्ग वहिर्गत होते जान पड़ते थे, उसने फिर कहा, "तुम समझते होगे, कि धनाढ्य लोग, जैसे तुम हो—अपने धन के बल से गरीब असहायों की स्त्री से सम्भोग कर सक्ते हैं—तुम समझते हो कि आनन्द करने का यही सरल रस्ता है—तुम अनुमान करते हो कि मेरी बहिन का पातिवृत धर्म नष्ट कर के मुझे अपने धन से तुम प्रसन्न कर लोगे—तुम्हारे निकट मानों यह कोई सामान्य बात है—जिस्का बदला सदैव रुपयाही चुका सक्ता है, परन्तु यह ध्यान चित्त से निकाल दो—वे भाई—साले, पिता, जो तुम्हारेही जैसे कमीने होंगे, जो अपनी बहिन या लड़कियों को अपनेही हाथों रुपये की लालच में बर्बाद करते हैं, और सदैव के लिये भगवान के सामने मुँह काला करते हैं, ऐसा कर सक्ते हैं परन्तु—कॉन्ट ओरेना! आदू पानेल्ला उन व्यक्तियों में नहीं है! परन्तु इन सामान्य विचारों से तेरा क्या होता है? तू ने मेरी प्रतिष्ठा को मटियामेट कर दिया है, परन्तु क्या तू मेरी इच्छानुसार उस्का बदला भी दे देगा?

फोष्ट—मैं दे दूँगा—उसका नाम भी तो बताओ!

आदू—अच्छा तो सुनो वह ये हैं—पहले तो मुझे एक प्याला शराब दो जिससे कि मेरे शरीर की थकावट मिटे—और गया हुवा बल पुनः शरीर में पहन आये—इसके उपरान्त मुझे एक तलवार दो और फिर आओ हमारे तुम्हारे दो २ हाथ चलें जिसे इश्वर जय दे वह मानों अपने वैरी के भय से छूटा।

फोष्ट—(घृणा से मुसकरा के) बेवकूफ युवक! तू मुझसे क्या मांग रहा है? तू जैसा बलहीन है उससे तेरे प्राण केवल मेरी दया पर निर्भर होंगे। मैं तुझे क्षण भर में काट के फेंक दूँगा परन्तु यह व्यर्थ की एक हत्या होगी।

आदू—सुनिये महाशय—लड़ाई में सदा बलिष्टही की जय नहीं हुवा करती है—: तुमने मुझसे प्रण किया है कि मैं तुम्हारी बात पूरी करूंगा! फिर अब क्यों हिचकिचाते हो क्याश्रीमान् का वह प्रण बिलकुल झूठाही था?

ये शब्द आदू ने बड़ीही कड़ाई तथा हार्दयिक घृणा से फोष्ट के प्रति देख के कहे।

फोष्ट—(घृणायुक्त मुसकान और ताने भरे शब्दों में) अच्छा मानलिया कि मैं मर भी

गया तो तू अपने हृदय में सोच तो भला कि तेरे बहिन की क्या दुर्गति होगी उसका पूछनेवाला संसार में फिर कौन है ?

आटू -(अपना हाथ अपने माथे पर ज़ोर से मार के) हां सच कहते हो इसे तो मैं भूलही गया था। यदि मैं तुझ पाजी कौन्ट का वध करूंगा तो वह बच्चा जो अभी गर्भही में है बिलकुल अनाथ हो जायेगा; और यदि मैं इतने बड़े कलंक पर भी तुझसे बदला न लूं तो मैं बड़ाही नामर्द कहलाया जाऊँगा।

फोष्ट—(यह देख के कि एडा के आंसू अब बिलकुल सूख गये हैं और वह अपनी गई हुई शक्तिपर पुनः अधिकृत होती जान पड़ती थी) सुनो आटू ! मैं तुम्हारी बहिन के जीवन के दिवस बिताने का अपने सामर्थ भर बहुत अच्छा बन्दोबस्त कर सक्ता हूं फिर इसके उपरान्त वह और उसका बच्चा बड़े आनन्द से रह सक्ता है। और यह—जिस प्रकार तुम कहो उसी प्रकार मैं करने को तैयार हूं।

यह सुनके आटू कुछ न बोला वह किसी गंभीर विषय पर विचार करता जान पड़ता था अन्त कुछ देरके उपरान्त उसने सिर उठाया और फोष्ट की ओर देखके उसने कहा—

"जो मैं कहूंगा उसे स्वीकार करो गे ?"

फोष्ट—निस्सन्देह !

आटू—अच्छा तो श्रीमान् ! जो मैं कहता हूं उसे लिखिये। आप के निकटही टेबुल पर लिखने पढ़ने की भी सामग्री है।

फोष्ट की इच्छा यह थी कि किसी प्रकार यह झगड़ा बिना किसी विशेष उपद्रव के मिट जाये तो अच्छा—पहला ध्यान तो उसे यह था कि कहीं इस हुल्लड़ में थेरिज़ा को न खबर हो जाये, दूसरा ध्यान उसे, एडा के कारण उसके भाई का था कि इसे चोट चपेट पहुँचने से उसकी बहिन भी दुखी होजायगी। इसी कारण वह बिना किसी ऊत्तर के टेबुल पर जा बैठा और कलम उठा के लिखने को प्रस्तुत हो गया।

इसके उपरान्त आटू आगे बढ़ा और कौन्ट के कन्धे पर इस लिये झुक गया कि वह जो लिखे, उसे भली भांति यह पढ़ सके, और तब वह बोला—

"तो यही बातें श्रीमान् लिखें:—

"मैं स्वीकार करता हूं, कि मैं अपने स्वभाव की निर्बलता

के कारण एक भारी पाप का भागी हुवा हूं, अर्थात् एडा के गर्भ में जो बच्चा है वह मेराही है। मैंही उसका पिता हूं और इस कारण वसीयत करता हूं कि इसको एक सहस्त्र अशरफियाँ—"

फोट—नहीं–मैं दस सहस्त्र अशरफियां लिखूँगा।

आटू—नहीं श्रीमान्! वह आप के धन से धनी नहीं हुवा चाहती है वरन् अपने बच्चे के लालन पालन के निमित्त केवल उस समय पर्यन्त यह धन चाहती है, जब लों कि बच्चा बड़ा हो के माता की सुध ले सके—हां तो अब लिखियेः—

"एडा के जीवन निर्वाह और अपने बच्चे की शिक्षा इत्यादि के निमित्त सालाना दिया करूँगा। और मेरे उपरान्त मेरे सम्पत्ति के अधिकारियों का कर्तव्य होगा, कि वे वसीयत नामे को स्वीकार करें, और उतनी अशरफियाँ मासिक देते जायँ।"

फोट—(उत्सुकता से) बस हो गया?

आटू—बस इतनेही की मेरी इच्छा थी, श्रीमान्! अच्छा अब इसके नीचे हस्ताक्षर तो कर दीजिये।

इसके उपरान्त कौन्ट ओरेना ने शीघ्रता से उसपर हस्ताक्षर किये। फिर उसने उस वसीयत नामे को लपेट के अपनी बहिन के हाथ में दिया, और फिर वह बोलाः—

" इसे रक्खो एडा—कदाच कुछ देर में तेरे पास इसी कागज के अतिरिक्त पेट पालने का और कोई रास्ता न रहे।"

एडा—(अपने वस्त्रों के नीचे उस कागज को रखते हुये) आप के इन शब्दों का मैं तात्पर्य न समझी!

आटू—(बड़ीही गम्भीरता से) इसका तात्पर्य यह है कि श्रीमान् कौन्ट महाशय अब अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करेंगे, और कृपा कर के मुझे एक प्याला शराब और एक तीक्ष्ण असि प्रदान करेंगे।

एडा—(दोनों हाथ बाँध कर) प्यारे भाई अब इस अधमा के निमित्त आप अपने प्राण को व्यर्थ आपत्ति में न डालें।

यद्यपि इस वीर स्त्री का हृदय बड़ाही कठोर था, परतोभी भाई के कष्ट के ध्यान मात्र से यह व्यग्र हो गई थी।

" हमारे कामों में जो हमारे नाम और मर्यादा से सम्बन्ध रखता है, तू बिलकुल दखल न दे! बस अलग हट! "

आटू ने यह बड़ीही गम्भीरता से कहा, और फिर फोष्ट की ओर घूम के बोला—

" तो अब श्रीमान्! क्या आप मेरी बातें स्वीकार कीजियेगा, और मुझे तलवार दीजियेगा! या मैं आप को अनुचित वाक्यों या किसी कड़ी चोट से क्रोध में लाऊँ, और आप से तलवार लूँ। "

यह सुन के फोष्ट का क्रोध भी भड़का, और उसने गरज के कहा—

" नहीं तुम्हें इतना परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। परन्तु पागल युवक! सचेत रहो, तुम हमारे सामने ठीक वैसेही हो, जैसे किसी देव के हाथों में एक छोटा-बच्चा।

आटू- (घृणा से मुस्करा के) श्रीमान् निश्चय रक्खें कि इन बेहूदी बातों का कोई असर मेरे हृदय पर न होगा।

फोष्ट—अच्छा तो तुम अपनी माँगीहुई वस्तुयें ले लो। नीचे की कोठरी में एक इलमारी है, जो भाँति २ के उत्तमोत्तम शराबों से भरी हुई है, और वहीं दीवारों पर भिन्न भिन्न प्रकार के बड़ेही उत्तम हथियार खूँटियों से टँगे हुये हैं। शराब तुम इच्छानुसार पी लो जो तुम्हारी अन्तिम पिलाई होगी—और हथियारों में से एक हथियार ले लो—जो तुम्हें किसी प्रकार नहीं बचा सक्ता। इस्के उपरान्त यदि तुम्हारी लड़ाई की इच्छा हो तो रात के अन्धकार और चारों ओर के सन्नाटे में जहां चित्त चाहे निकल चलो, और वहीं हमारे तुम्हारे तलवार चले। ऐसा स्थान यह नहीं है, कि जिसमें हमारी तुम्हारी लड़ाई में कोई दखल देनेवाला न हो।

आटू—अच्छा ऐसाही होता है।

इतना कहके वह अपनी बहिन की ओर फिरा, और उससे बोला—

"एडा! अब हम विदा होते हैं! चाहे इस लड़ाई का परिणाम कुछही क्यों न हो, परन्तु फिर तू अब मेरा मुँह न देखेगी। यदि मेरी जय हुई, और मैंने वैरी को मार लिया तो मैं यहां से कुछ दूर, किसी अन्य स्थान में अपना नाम बदल के जा रहूंगा।

क्योंकि मैं तुमसे बहुतही छिपने का उद्योग करूँगा जिसने मेरे घराने को कलुपित किया है, और एडा तेरी माता ने तुझे मरंती समय आशीर्वाद दिया था—अब उस स्वर्गवासिनी माता को प्रत्येक समय अपने सामने समझ के पापों से बचना और धर्मकार्य में लगना—अच्छा अब चलते हैं, विदा—एडा, विदा।

इतना कह के वह आगे बढ़ा, और अपनी बहिन के माथे को चूम के फिर पीछे हटा।

आटू—श्रीमान्! अब मैं प्रस्तुत हूं।

इतना कह के वह द्वार की ओर मुड़ा।

परन्तु उसके आगे बढ़तेही एडा उसकी ओर बढ़ कर कहने लगी—

" आटू—मेरे भाई-मेरे प्यारे भाई-मैं तुम से मिन्नत करके कहती हूं-तुम उसके बल को नहीं जानते! तुम्हें नहीं मालूम कि तुम किससे लड़ने जाते हो—वह—

इसी समय फोष्ट आगे बढ़ा, और एडा की बाँह पकड़ के जोर से पीछे को झटक दिया, और साथही उसके कान में कहने लगा—

" एडा! क्या तू उस शपथ को बिलकुलही भूल गई? क्या तू मेरा भेद खोल के मुझे चौंपट करेगी?"

यह सुन्तेही वह सँभल गई; और एक क्षण के उपरान्त वह बड़ीही गम्भीरता से खड़ी हो गई, इन शब्दों ने जो दृश्य, और जो ध्यान उसके मस्तक में कर दिया, उससे उसकी जबान बिलकुलही बन्द हो गई।

" परन्तु तुम्हें भी उसे बचाना होगा—तुम्हें भी उसे बचाना होगा—"

यह एडा ने अपने प्यारे के कान में एक क्षण के उपरान्त, बहुतही धीरे से और आटू की ओर देख के कहा।

आटू अब बिलकुल द्वार के निकट खड़ा, नीचे उतरने को तैयारही था।

फोष्ट—हां—हां—एडा—भय न करो; हमारे लौटने तक तुम यहीं रहना।

इतना कहके वह शीघ्रता से आटू के पीछे २ हो लिया।

एडा कोठरी में पलट आई, और बिछौने पर गिर के अपने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा के बोली—

" हाय मेरी माता सदैव के निमित्त संसार छोड़ के चल बसी-और अब—देखें हमारे भाई का क्या होता है?"

परन्तु हमारे प्यारे पाठक गण इस बात से अवगत हो चुके हैं, कि एडा दुःख से दुःख और कठिनाइयों से कठिनाई को भी सहन कर सक्ती थी। निर्लज्जता ने और भी उसमें एक बड़ा भारी साहस डाल रक्खा था।

वह कुछही देर में बिछौने से उठी, और आँसू इत्यादि पोंछ के उस उसने पत्र को निकाला, जिसपर फोस्ट ने हस्ताक्षर किये थे, और जिसे उस्के भाई ने उसे दिया था। उसे निकाल के दृष्टि गड़ा के व्यक्त उस्का एक २ अक्षर पढ़ने लगी।

पत्र पढ़ने के उपरान्त वह आपही आप बोली—

"उसने इसमें अपने पुत्र को स्वीकार किया है। यह लिखावट निश्चय किसी दिन मेरा भारी काम दे जायगी।

परन्तु वह समय अभी तनिक दूर है; नहीं वह निश्चय मेरे बस में आजायेगा—औरऔर—तब—"

वह यहां ठहर गई और साथही एक मुसकराहट उसके चेहरे से बोध हुई।

इस समय उसकी लालच और कल्पनाओं ने उसकी माँ का मृत्यु और भाई की आपत्ति को बिलकुलही उसेक हृदय से भुला दिया था।

एडा—हां फोष्ट! हां मैं उसे हृदय से प्यार करती हूं और वह भी मुझे कुछ कम नहीं चाहता है; परन्तु उसके संबन्ध से मैं अवश्य उच्चश्रेणी और अतुल सम्पत्ति लाभ करूंगी!—कितनी कठिनता से यह समय व्यतीत होता है! आशा है कि अब उनकी लड़ाई का अन्त हो गया! होगा! फोष्ट तो किसी प्रकार पराजय होहीं नहीं सक्ता! उसका भयानक बल उसे बचायेगा;—परन्तु मेरा भाई—आटू!—आह नहीं—फोष्ट प्रतिज्ञावद्ध होके गया है वह अवश्य उसे बचायेगा।

इतना कहके वह खिड़की के निकट गई और उस अन्धकार में जहां लों दृष्टि काम करती थी देखने लगी। और आपही आप सोचती जाती थी।

"वहां थेरिज़ा बैठी अनुमान कर रही होगी कि उसका स्वामी किसी आवश्यकीय कार्य के निमित्त वायना में बुलाया गया है। और इसी कारण वह बेचारी अकेली ही आर्कडिउक और उनकी पत्नी आर्कडचेज़ मेरिया के आदर सत्कार में लगी हुई है, आह इस मेरिया को तो देखो! छोकड़ी ने बड़ा जादू किया, कि आर्कडूयक को लोभा लिया! आह! बस यही एक कारण था—बस यही ईर्षाही एक ऐसी वस्तु थी, जिसने अर्धनिशा को सेन्ट स्टिफेन के गिरजा के द्वार पर जाने का साहस मुझमें उत्पन्न कर दिया,

क्योंकि मुझे पहिलेही से कुछ संदेह था, कि फोस्ट के हृदय में कोई गुप्त भेद अवश्य छिपा हुवा है—जिसके जानने के लिये मैं उत्सुक थी, क्योंकि मैं समझती थी, कि वह भेद मालूमहोतेही फोष्ट मेरे वश में हो जायेगा !—"

" परन्तु अब तो समय व्यतीत होता जाता है, और वह आता नहीं दिखाई पड़ता था, इसका क्या तात्पर्य है ? क्षण भर पर्यन्त के लिये मेरी माता के मृत्यु ने और तदुपरान्त मेरे भाई के आ पड़ने ने मेरे चित्त को चञ्चल कर दिया था। परन्तु वह केवल एकही क्षण के लिये—अब वह समय व्यतीत हो गया—अब वह निर्बलता मुझ में नहीं है, और अब एडा पुनः अपने सुखमय स्वप्नों को देख रही है। "

अब फोष्ट तथा आटू को गये लगभग एक घंटे के व्यतीत हो गया।

इधर, जैसेही एडा उपरोक्त लिखी बातें अपने चित्त से कह चुकी, जो केवल उसी के चित्त को प्रसन्न कर रही थी, वैसेही सीढ़ियों पर किसी के पैरों का शब्द शीघ्रता से निकट आता बोध हुवा, और इसके उपरान्तही फोष्ट कोठरी में प्रवेश करता दिखाई दिया।

उसे देखतेही एडा शीघ्रता से उसकी ओर दौड़ी, और चिल्ला के कहने लगी—

" क्यों प्यारे **उसे** तुमने बचाया ? "

फोष्ट—हां बचा दिया—परन्तु तुह्मारीही प्रार्थना के कारण, परन्तु जब मैंने अपनी तलवार उसके गले पर रख दी तो साथही इसबात की सौगन्ध भी लेली, कि कभी अब वह यहां न आये, और न हम लोगों के बीच में किसी प्रकार का दखल दे।

एडा—तो प्यारे तुमने बड़ीही बुद्धिमानी से अपना कर्तव्य साधन किया। वह दृढ़ प्रतिज्ञ है। अब वह कभी हम लोगों के बीच में बाधा न देगा।

फोष्ट—अच्छा तो अब हम लोगों को महल की ओर लौटना चाहिये। तुम सीधे यहां से अपनी कोठरी की ओर चली जाओ। और मैं महल के बड़े फाटक से होता हुवा सदर रास्ते से भीतर जाऊँगा। कल सन्ध्या को प्यारी हम लोग फिर यहां एकत्रित होंगे, और उस विषय का निबटेरा कर देंगे, जो आज तुह्मारे भाई के आजाने के कारण अधूड़ाही रह गया है।

इसके उपरान्त एडा अपने प्रेमी के गले लग गई, और फिर एक कोने से अपना लम्बा लबादा उठा और ओढ़ के एक ओर से अपनी राह लगी।

इसके चले जाने के उपरान्त, फोष्ट कुछ काल पर्यन्त वहीं बैठा रहा, और फिर एक दूसरे पथ से वह भी महल की ओर चल दिया।

बाईसवाँ बयान ।

पालने की कोठरी ।

गत वर्ष का गया २, बहार का मौसिम; अब पुनः आ पहुँचा है, और पृथ्वी को सुन्दर २ फूलों और लहलहाते हुये वृक्षों से आच्छादित कर रहा है ।

पुनः फोट्ट और एडा उसी बँगले में बैठे इधर उधर की बातें कर रहे हैं ।

डूबते हुये सूरज की किरनें, शीशों के द्वार से होती हुई इस बैठी हुई युगल मूर्ति पर पड़ रही हैं ।

दोनों के सामने टेबुल पर, भिन्न २ प्रकार की शराबें और रकाबियों में उत्तमोत्तम फल चुने हुये हैं । उन फलों में उस गरम मकान के फल भी हैं, जिसमें एडा और फोट्ट की साक्षात् हुई थी ।

फोट्ट—यहां लों तो एडा—वा अबलों तो एडा—हम लोगों को सभी इच्छाएँ निर्विघ्न पूरी होती गईं । थेरिज़ा, आर्कडूचक के महलों में भेजीही गई, कि जिसमें काम पड़ने पर शाही हकीम, जो मेरी आज्ञा की बाट जोहते रहते हैं, तुरन्तही थेरिज़ा की सेवा के निमित्त प्रस्तुत कर दिये जायें । और वह डाक्टर भी मुझ से मिला हुवा है । और जहां लों कि मैं दोनों गर्भधारिनियों की अवस्था देखता हूं ! वहां लों मुझे प्रतीत होता है, कि दोनों के एकही समय बच्चा उत्पन्न होगा । जो हो, कुछही देर में तो सब प्रगट हुवा जाता है । और क्यों—मैंने तुमसे पहिलेही न कह दिया था, कि उस बूढ़े डाक्टर वा दाई का अपने वश में कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है ?

एडा - तो मैंने इस पर सन्देह भी कब किया था । अरे तुह्मारे पास तो प्यारे ! इतना द्रव्य है, कि शाहंशाह मेक्समिलियन के ताज सहित सारा देश, जरमनी को खरीद सक्ते हो । परन्तु मेरे प्यारे, अब हमें यहां अपना समय न नष्ट करना चाहिये, सोचो कि मुझे कल बड़े तड़के तुह्मारी स्त्री के आभूषणों का सन्दूक तथा अन्यान्य वस्तुयें लेके आर्कडूचक के महल में जाना है ।

फोट्ट—अच्छा तो प्यारी—एक बेर हमें और सुध—नहीं—प्रार्थना कर लेने दो, कि जो कुछ मैंने कहा है, कृपा कर उसे भूल न जाना ! क्योंकि यदि भाग्यवश जैसा मैंने सोचा है, सब ठीक वैसाही होत गया, तो अन्तिम कार्य, केवल तुह्मारे साहस और कृपा पर निर्भर रहेगा ।

एडा—क्यों घबराते हो—मैंने जो कुछ तुमसे कहा है, उस पर दृढ़ हूं—परन्तु बच्चों का भेद—कि कौन बालक और कौन बालिका—"

फोष्ट—अहा !!! इससे तुह्मारा कोई सम्बन्ध नहीं। मैंने इसका प्रबन्ध पहिलेही से कर रक्खा है। बुड्ढा डाक्टर इस कार्य को भली प्रकार सम्पादन करेगा। तुम अपनी फिक्र रक्खो।

एडा—एक प्रश्न मेरा और है, प्यारे! और बस इसके उपरान्त मैं महल की ओर लौट जाऊँगी। क्या तुमने सन्तरियों का भी प्रबन्ध कर रक्खा है, जो पालने की कोठरी के द्वार पर ताइनात किये जाँयगे?

फोष्ट—इसकी कोई आवश्यक्ता नहीं है—चाहे वह कोई सिपाही क्यों न पहरे पर खड़ा किया जाय, मुझे कोई आवश्यक्ता उसे मिलाने की नहीं है! क्या मैं तुमसे यह नहीं कह चुका हूं, कि यदि मेरी इच्छा हो तो मैं लोगों की दृष्टि से अन्तरधान हो सक्ता हूं, और साथही वह व्यक्ति भी अन्तरधान हो सक्ता है, जो मेरे साथ हो? और क्या इसी प्रकार मैं थेरिज़ा को लिसंडोर्फ दुर्ग से नहीं निकाल लाया था? और क्या इसी प्रकार अब मेरी प्यारी मैं उस—"

एडा—(बाधा दे कर) बस २ मैं अब सब समझ गई। ऐसे व्यर्थ प्रश्न के निमित्त मैं क्षमा की प्रार्थी हूं, बात यह है, कि मुझे आप के कुल कार्य पूरा होने के लिये अनेक प्रकार की आशंकायें—"

फोष्ट—मैं सब जानता हूं—उन्हें मैं भली प्रकार जानता हूं, प्यारी एडा! अच्छा अब विदा हो, मेरी प्यारी। और अब मैं कल डिउक के महलही में तुमसे साक्षात करूँगा। इसके बीच में साक्षात् होना असम्भव है। मैंने भी थेरिज़ा से कल मिलने की प्रतिज्ञा की है, इस लिये प्रातःकाल मैं भी वहां पहुँचूँगा।

* * * * * * *

इस बात चीत तथा साक्षात के एक सप्ताह उपरान्त डिउक लिपोल्ड के महल में एक प्रकार की भारी घबराहट भीतर बाहर फैली हुई थी।

इस समय सन्ध्या के पाँच बज चुके थे—और यही वह समय था, जब वह घबराहट फैली हुई थी—इसका कारण यह था, कि आर्कडचेज़ तथा कौन्टेस ओरेंना; दोनोंही पेट के दर्द से दुःखी थीं।

डाक्टर ओरेनवर्ग, जो आर्कडिउक के डाक्टर थे, मेरिया की देखभाल के लिये नि-

युक्त किये गये थे। और यह इस समय उसी कोठरी में पड़ी हुई थी जहां इसके पति की उत्पत्ति हुई थी। और जिससे हमारे प्यारे पाठक गण भी भली प्रकार विज्ञ हैं, अर्थात् यह वही कमरा था, जो रसम के कमरे के नाम से विख्यात था।

इसी कमरे के ठीक दूसरे ओर एक बहुत बड़े कमरे में थेरिज़ा पड़ी हुई थी। थेरिज़ा की देखभाल के लिए जरमनी का एक परम प्रसिद्ध डाक्टर नियुक्त था जिसका नाम लरज़ेन था।

एडा अपनी स्वामिन के निकटही थी और प्रत्येक कार्य को ऐसा ध्यान पूर्वक सम्पादन कर रही थी कि थेरिज़ा उसे देख २ के बड़ीही प्रसन्न हो रही थी। और थेरिज़ा को सम्पूर्ण रूप से एडा पर **भरोसा** हो गयाथा।

फोष्ट तथा आर्क डिउक इस समय रसम के बड़े कमरे में बैठे हुए थे इनके पासही जरमनी के और दो उच्च पदाधिकारी भी विराजमान थे।

आर्कडचेज की कोठरी में एक दाई उपस्थित थी जिसे बच्चे के सेवा की पदवी प्रदान की गई थी। यह एक वृद्धा थी और फोष्ट ने इसे भी और साथही उन दोनों डाक्टरों को भी उचित द्रव्य दे के अपने मतलब के लिये साध लिया था।

आर्कडिउक ने अपनी कुरसी उस बड़े कमरे की एक खिड़की की ओर बढ़ाई और साथही फोष्ट को भी बुलाके यों बातचीत करनी प्रारम्भ की।

डिउक—मेरे प्यारे मित्र, हमलोगों के लिये यह एक बड़ाही कठिन समय है। परन्तु यह क्या—यह कैसी अद्भुत बात मैं देखता हूं—मैं जोर देके कहता हूं—तुम कांप रहे हो—निश्चय तुम बीमार हो—ले अब यहां से उठो—या किसी तरद्दुद ने तुम्हारी यह अवस्था कर रक्खी?

फोष्ट—नहीं श्रीमान्! क्षणमात्र का एक सिर का दर्द था जो मुझे बेचैन किये हुवा था। परन्तु अब मुझे कोई कष्ट नहीं है। वह समय गया। हां तो श्रीमान् कहरहे थे—"

डिउक—देखो मित्र यह कैसा विचित्र समय है कि दोनों मित्र के यहां एक समय में ही पुत्र उत्पन्न हो। मैं तो जहां लों अनुमान करता हूं यही विदित होता है कि एक के यहां तो पुत्र उत्पन्न होगा और दूसरे के यहां पुत्री, जिनका भविष्य में एक न एक दिन अवश्यही विवाह हो जायेगा।

फोष्ट—और इस प्रकार श्रीमान् का वह पिछला विचार भी पूरा हो जायेगा। (मुस्करा के) परन्तु ठहरिये यह बाहर से कोलाहल क्यों सुन पड़ता है। कदाच यह शब्द फौजी बारिकों से आ रहा है।

डिउक—मेरी जान सिपाही लोग उन दोनों सिपाहियों को धन्यवाद दे रहे होंगे जो आज के पहरे के लिये पासा डाल कर चुने गये हैं। और यह कोलाहल भी उन्हीं लोगों का है।

फोष्ट—क्यों श्रीमान् दो सिपाही?

डिउक—हां। क्या तुमने वह कहानी नहीं सुनी या उसे भूल गये जो मैंने तुम्हें सुनाई थी। तुम्हें स्मरण होगा कि मैंने तुमसे कहा था कि मेरी उत्पत्ति के समय एक पाजी डाक्टर ने दाई तथा उस संतरी को; जो पालने के कमरे के पहरे पर था मिला लिया और मुझे, अपनी बहिन के बच्चे से बदलने की फिकिर में लगा था परन्तु वह तो ईश्वर ने कुशल की।

फोष्ट-नहीं श्रीमान्—मैं उसे भूला नहीं हूं। वरन् उसका एक २ अक्षर मुझे अबलों याद है। और मैं अनुमान करता हूं कि उसी घटना ने श्रीमान् को इतना सावधान कर दिया कि आप दोहरे पहरे का प्रबन्ध कर रहे हैं।

डिउक—खूब सोचे! बस यही कारण है। इसके अतिरिक्त मैं उस देवता तुल्य व्यक्ति पर बड़ा विश्वास करता हूं। डाक्टर डोरेनबर्ग—आह! उसपर मैं ठीक अपने पिता के तुल्य विश्वास करता हूं।

फोष्ट—वास्तव में वह व्यक्ति प्रशंसायोग्य है।

इतना कहते २ फोष्ट के होठों से एक दबी मुस्कराहट झलक गई, परन्तु उसे फोष्ट न देख सका।

डिउक—और फिर दाई भी कुछ कम विश्वासपात्री नहीं है। डेमहर्डर को मैंने बड़े परिश्रम से ढूंढ़ के निकाला है।

फोष्ट—क्या बात है। भला श्रीमान् कहीं चूकनेवाले थोड़ेही हैं!

और यथार्थ में फोष्ट ने इसी विश्वासपात्री डेमहार्डर की दस दिवस पहिलेही से भली प्रकार मुट्ठी गरम कर दी थी।

डिउक—सर्वोपरि यह कि मैंने अब की दो सन्तरियों को पालने की कोठरी के पहरे के लिये आज्ञा दी है, जिससे एक दूसरे को स्वयं दृष्टि पर रक्खेगा, और कोई घटना न संघटित होने पायेगी।

फोष्ट—वाह ! तो श्रीमान ने उत्तमोत्तम तदबीरें कर रक्खी हैं ।

डिउक—(हँसते हुये) नहीं अभी उत्तमोत्तम नहीं है । क्योंकि मुझे इतने पर भी; न तो डाक्टरही पर विश्वास है, और न सन्तरी तथा दाई पर भरोसा है, वरन मैं स्वयं उस समय से, जब से बच्चा पालने की कोठरी में लाया जायगा, और उस समय पर्यन्त, जबलों कि वह फौज के सामने न लाया जायगा, उस कोठरी का बराबर पहरा देता रहूंगा ।

फोष्ट—तो श्रीमान् ने मानों कुल बुद्धिमानी अपने इस प्रबन्ध में खर्च की है, और सच तो यों है, कि यहां इस की आवश्यक्ता भी थी, परन्तु यदि श्रीमान् आज्ञा दें तो मैं भी आप के इस कार्य का सहायक होऊँ, और आप के साथही साथ पहरा देता जाऊँ ।

डिउक—क्या चिन्ता है, प्यारे मित्र !

ठीक इसी समय उस दूसरी कोठरी का द्वार खुला, और शाही दाई डमेहरडर ने इस बड़े कमरे में प्रवेश किया । द्वार से निकलने पर उसने अपने पीछे कोठरी को सावधानी से बन्द कर दिया, और फिर वहां से यह सीधी इस कमरे को समाप्त करती इसके सदर द्वार के निकट पहुँची ।

द्वार से निकल के यह जैसेही बाहर जाने लगी, वैसेही सामने से एडा, इसकी ओर आती दिखाई दी ।

एडा—भले मिलीं ।

इतना कहके उसने अपने चारों ओर देखा, और जब इससे निश्चिन्त हो गई, कि वहां कोई अजनबी नहीं है, तो कहने लगी –

" मैं तो तुह्मारीही ओर इस बहाने से आ रही थी, कि कौन्टेस साहिबा ने डचेज साहेबा का कुशल समाचार माँगा है । "

दाई—और मैं भी तुह्मारे पास इसी बहाने से आ रही थी । परन्तु कहो तो समाचार क्या है ?

एडा—लेडी थेरिज़ा के एक बड़ाही सुन्दर बालक उत्पन्न हुवा है ।

दाई—और आर्कडचेज़ के यहां एक बड़ीही स्वरूपवती बालिका !

इसपर एडा ने बहूतही धीरे से कहा—

" तो क्या डाक्टर डोरेनवर्ग ने आर्कडचेज़ से यह कह दिया कि तुह्मारे बालिका नहीं वरन् बालक उत्पन्न हुवा है ?
दाई—हां ! और क्या डाक्टर लेरज़ेन ने थेरिज़ा को भी यह विश्वास दिला दिया है, कि तुह्मारे बालिका उत्पन्न हुई है ?
एडा—हाँ हां !

इसके उपरान्त दोनों अपनी २ राह लगीं।

एडा तो थेरिज़ा के पास लौट आई, और दाई ने आर्कडचेज़ के कमरे में प्रवेश किया।

इन दोनों की बात चीत में पाँच मिनिट से ज्यादा नहीं लगे थे।

परन्तु जैसेही दाई रसंम की कोठरी में से जाने लगी, वैसेही फोष्ट की ओर एक प्रसन्नता भरी दृष्टि से देखा, जिसे और तो कोई न समझ सका, परन्तु फोष्ट भली प्रकार ताड़ गया।

एक प्रसन्नता का चिन्ह उसके सिर से पैर पर्यन्त झलक गया।

दाई के कोठरी में लौट जाने के कुछही देर के उपरान्त डाक्टर डोरेनवर्ग उसमें से बहिर्गत हुये। और उच्चस्वर से डिउक को मुबारक बाद दिया, कि वह एक पुत्र के पिता हुये।

और इसके कुछही मिनिटों के उपरान्त डाक्टर लेरज़ेन ने भी इस बड़े कमरे में प्रवेश किया, और फोष्ट को यह कह के मुमारकवाद दिया, तुह्मारे यहां एक बालिका उत्पन्न हुई है।

दोनों डाक्टरों को इस समाचार के बदले में एक २ बहुमूल्य अँगूठी दी गई जिसे वे लोग प्रसन्नता पूर्वक पहिन के अपने २ रोगियों की कोठरी में लौट गये।

इसके उपरान्त आर्कडिउक ने फोष्ट का हाथ पकड़ लिया, और कहा—

" मेरा विचार अब पूरा हो गया, अपने पुत्र के लिये मैं तुह्मारी पुत्री की मँगनी करता हूं. "
फोष्ट—इसे मैं सहर्ष स्वीकार करता हूं, श्रीमान् !

इतने में वे अफसर तथा राजेश्वर इत्यादि जो वहां उपस्थित थे, आगे बड़े, और डिउक को पुत्र उत्पन्न होने की मुबारकबादी देने लगे। और जिनका मुबारकबाद एक बड़ेही धन्यबाद के हाथ स्वीकार किया गया।

एक रुक्का वरदार तुरन्तही वेरिक के ओर भेजा गया, जो थोड़ीही देर के उपरान्त उन दोनों हथियारबन्द सन्तरियों के साथ पलट आया, जो पालने की कोठरी के पहरे के लिये चुने गये थे।

हम इस समय उन बातों का यहां लिखना वृथाही समझते हैं, जो फोष्ट तथा डिउक में सन्तान के उत्पत्ति के बारे में हुई, क्योंकि ध्यान करतेही पाठक उसकी प्रतिमा अपने नेत्रों के सामने देख सक्ते हैं।

डिउक का चेहरा मारे प्रसन्नता के लाल हो रहा था, और उन्हें उस समय के आने की उत्कण्ठा थी, कि वह स्वयं मेरिया के गले लग के उसे पुत्रोत्पन्न पर मुबारक बाद देवें।

एक ओर, फोष्ट का हृदय विदीर्ण हुवा जाता था, जब वह यह सोचता था, कि अपनी आत्मा अपने हृदय के टुकड़े को दूसरे के सुपुर्द करना होगा, और दूसरे के बालक को लेके अपने की तरह पालना होगा। परन्तु उसने अपने हृदय के उठते हुये आवेग को बड़ीही धीरता से दबाया, यहां लों कि सुख के चिन्ह के अतिरिक्त दुःख का चिन्ह इसके चेहरे पर नाम मात्र को भी न झलकता था।

एक घण्टा इसी प्रकार व्यतीत हो गया, और तब दाई बच्चे को गोद में लिये आर्कडचेज़ की कोठरी से बहिर्गत हुई।
डाक्टर डोरेनबर्ग उसके साथ था।

यह देखतेही आर्कडिउक अपने हृदय के आवेग को रोक न सका, और शीघ्रता से आगे बढ़ के दाई के हाथ में के बच्चे के सिर को चूम लिया।

डाक्टर ने इसके उपरान्त तुरन्तही कहा—

"आह—यह कमरा बच्चे के लिये बड़ाही ठंढा है।"

आर्क डिउक—अच्छा तो दाई को आज्ञा दीजिये कि वह सीधे पालने के कमरे में बच्चे को ले के चली जावे। और तुम—मेरे प्यारे डाक्टर साहब रजिष्ट्रार साहब जो कुछ पूछें उनका स्पष्ट रूप से उत्तर दे के, बच्चे का हुलिया रजिष्टर में दर्ज करा दो। मैं अपने प्यारे बच्चे के आराम तथा बचाव के लिये संसार की कुल युक्तियां करने को प्रस्तुत हूं।

दाई, इसके उपरान्त, बिना बिलम्ब के पालने की कोठरी में चली गई, उसके भीतर पहुँचने पर द्वार तुरन्तही बन्द कर दिया गया और बाहर वे दोनो हथियारबन्द सन्तरी उसी समय पहरे पर खड़े हो गये।

फोष्ट—(धीरे से और बड़ीही शीघ्रता से डाक्टर के प्रति) तुमने बड़ी सावधानी की कि बच्चे को तुरन्तही रसम के कमरे से बाहर कर दिया, उसका पिता भी उसे भलीभाँति न देख सका, क्योंकि केवल कुछही क्षण का समय तो उसे अपने बच्चे के पास ठहरने का मिला था।

"इस स्थान पर ऐसाही करने का समय भी था, परन्तु आप देखते हैं! द्वार पर सन्तरी खड़े किये गये हैं!"

इस अपनी बात को डाक्टर ने भी उन्ही स्वर में कहा जिसमेंकि फोष्ट ने कहा था।

फोष्ट—कोई चिन्ता नहीं मैं इसका प्रबन्ध कर लूँगा।

इसपर डाक्टर ने फोष्ट पर एक प्रसन्नता का चिन्ह प्रगट किया, और फिर रजिष्ट्रार के निकट रीत्यनुसार, बच्चे का हुलिया लिखाने के लिये पहुँचा। और रजिष्टर में राजकुमारी के स्थान, राजकुमार लिखाया। साथही डिउक ने; अपने चचा शाहंशाह जरमनी के नाम पर, उस बच्चे का भी मेक्समिलियेन नाम रक्खा।

साथही यह भी हम लिखा चाहते हैं कि फोष्ट ने कोई उत्सुकता का चिन्ह उन दोनो सन्तरियों के खड़े होने पर न दिखाया, वरन् उसने डाक्टर की व्यग्रता पर ऊपर लिखा वही उत्तर सामान्य रूप से दे दिया क्योंकि इसके अतिरिक्त और वह क्या कह सक्ता था। अपना असली भेद तो वह सर्वसाधारण पर खोलही नहीं सक्ता था।

* * * * * * * * *

अर्ध निशा है।

आर्क डिउक तथा फोष्ट, रसम वाले कमरे में एक बड़े बहुमूल्य और सुन्दर टेबुल के गिर्द बैठे हुए हैं। जिसपर अनेकानेक प्रकार के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ रक्खे हैं।

पालने के कमरे के, दाहिने और बांये, वे दोनों संतरी बिलकुल बेजान पुतलों की भाँति खड़े थे।

चाँदी के बड़े २ लम्पों के जलने से यह कमरा बड़ाही प्रकाशमय हो रहा था। इस समय इसका प्रकाश दिन की धूप को भी लज्जित कर रहा था, और जिसमें, नीचे टेबुल पर के रक्खे प्यालों में गहरे लाल रङ्ग की शराबें एक अनोखी बहार दिखा रही थीं।

आर्क डिउक—प्यारे कौन्ट, इस समय तुम, हमसे भी कुछ विशेष प्रसन्न हो, क्योंकि

तुम अपने बच्चे का चन्द्रमुख; जब चाहो तब देख सकते हो परन्तु मैं इच्छा करने पर भी प्रातःकाल के भीतर नहीं देख सक्ता । परन्तु सच कहना—क्या थेरिज़ा अपनी प्यारी बच्ची को हृदय से लगा के प्रसन्न हुई है ?

फोष्ट—मुझे तो स्मरण होता है, कि कदाच यह मैं आपसे निवेदन कर चुका हूं कि एडीला क्योंकि मैंने अपनी पुत्री का नाम एडीलाही रक्खा है—के उत्पन्न होतेही डाक्टर लरज़ेन ने उचित समझके थेरिज़ा को कोई ऐसी दवा सुँघा दी कि जिससे वह बेहोश हो गई । और इसकारण उसने अभीलों अपनी बालिका का मुख चन्द्र नहीं देखा है ।

आर्क डिउक—हाँ हाँ मुझे याद आ गया । सचमुच तुमने कुछ देर हुए मुझसे यह बात कही थी और अब मैं उसके लिए क्षमा का प्रार्थी हूं । बात यह है कि इस समय मेरे ध्यान बिलकुलही बँटे हुये हैं । परन्तु मैं विवश हूं क्योंकि पुत्र के उत्पत्ति की प्रसन्नता ने मुझे अपने आपे से बाहर कर रक्खा है, मुझे आशा है कि तुम्हारी भी यही दशा होगी ।

फोष्ट हाँ यदि संपूर्ण रूप से ऐसी नहीं तो उसके समीप की तो अवश्यही है ।

इसके उपरान्त, कुछ देर लों दोनोंही चुपके बैठे रहे और फिर डिउक बोला—

"मैं आपसे कुछ देर के निमित्त विदा होता हूं । परन्तु मेरे मित्र इस हमारी शीघ्रता और घबड़ाहट पर हँसना मत, क्योंकि मेरिया, सचमुच एक भारी आपत्ति में थी और अब उस आपत्ति में से निकलने पर उसे मुबारकबाद अवश्यही देना चाहिये । देखो तुम यहां से कहीं न जाना ।"

इतना डिउक ने निश्चिंतता से पालने की कोठरी की ओर देख के कहा ।

फोष्ट—निश्चिन्त रहें श्रीमान् मैं यहां से हटने वाला नहीं हूं ।

डिउक - क्योंकि मैं समझता न हूं प्यारे मित्र—कि तुम्हें भी मेरी बातों की कुछ वैसीही चिंता है जैसी मुझे ।

यह डिउक ने फोष्ट से बहुतही धीरे से कहा ।

फोष्ट—श्रीमान् कुछ का शब्द इस वाक्य में क्यों लाते हैं क्योंकि मुझे इसबारे में पूरी २ चिंता है ।

यह सुनके आर्क डिउक धन्यवाद देने की तरह मुसकरा दिए और फिर उस कोठरी की ओर बढ़े जिसमें मेरिया पड़ी हुई थी ।

अब फोष्ट को दूर से एक आशा की चमकती दमकती किरन दिखाई दी जिसने उसकी कुल निराशारूपी तिमिर को मटिया मेट कर दिया।

अब उसने धीरेसे अपने कपड़ों के नीचे हाथ डाला और किसी अर्क से भरी एक शीशी निकाली, इसका काग खोला। और फिर फलों की रकाबी खींचने के बहाने हाथ आगे बढ़ाके, उस अर्क को डिउक के प्याले में उँड़ेल दिया।

यह काम कुछ इस शीघ्रता, सफाई और चतुरता से हुवा कि यद्यपि दोनों संतरी फोष्टही की ओर ध्यान पूर्वक देख रहे थे, परन्तु उन्हें कुछ भी न दिखाई दिया। और दिखाई देना तो दूर रहा उन्हें किसी बात का शुबहा पर्यंत न हुवा।

फोष्ट के चेहरे से भी कोई ऐसी बात न झलक पड़ी कि जिससे शुबहा किया जा सक्ता हो। हाँ उसके हृदय में सचमुचही, एक आनंद का सागर सा उमड़ आया और उसने अपने हृदयही में कहा—

"अब मैं पिशाच को भली भांति धोखा दे सकूंगा।"

इसके कुछही देर उपरान्त, आर्क डिउक लौट आये, इस समय उनका चेहरा मारे प्रसन्नता के कुंदन की भांति दमक रहा था।

फोष्ट—आर्क डचेज़ की कुशल कहिये। कैसी हैं?

डिउक—इतनी अच्छी कि हम योग्य डाक्टर डोरेनवर्ग की दवाओं तथा तदबीरों से बात चीत भी कर सके।

फोष्ट—अच्छा तो आप यदि आज्ञा दें तो मैं डाक्टर डोरेनवर्ग के नाम पर एक प्याला शराब का पीऊँ?

डिउक—और साथही डाक्टर लरजेन का भी। क्योंकि ये दोनोंही प्रशंसा के योग्य हैं।

इतना कहके डिउक ने ब्राण्डी की बहुमूल्य और उत्तम सुर्खासुर्ख शराब को अपने प्याले में भर दिया।

फोष्ट ने भी तुरंतही इसका अनुकरण किया। और फिर इसके उपरांत दोनों प्याले देखते २ खाली कर दिये गये।

इसके उपरांत डिउक ने उन बातों को प्रारम्भ किया, जो इसे हृदय से प्रिय जान पड़ती थीं, और जो वैसीही फोष्ट को भी पसंद आती थीं, जैसे कि डिउक को।

परन्तु कुछही देर के उपरान्त डिउक का सिर भारी होने लगा, और फिर नींद आने लगी। यह देख के वह घबराया, और नींद मिटाने के लिये, कोठरी में इधर उ-

घर टहलने लगा, परन्तु इससे कोई लाभ न हुवा । इसपर वह फिर अपने स्थान पर आ बैठा, और एक प्याला शराब का पीके कुछ फल इत्यादि खाये, और फिर पड़के खर्राटे लेने लगा ।

कुछ देर तक फोप्ट इसके उपरान्त भी चुपचाप बैठा रहा, और ठहर २ कर डिउक की ओर देखता रहा ।

अन्त वह अपने स्थान से उठा, और सन्तरियों की ओर देख के कहने लगा—

" मेरे प्यारे मित्रों तुम लोग अपना कार्य भली प्रकार सम्पादन कर रहे हो, इससे मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, कि तुम रोटी और शराब खा तथा पी सक्ते हो । और तुम मेरीही आज्ञा से इसी टेबुल पर जहां इच्छा हो, बैठ के जो चाहे वह खा सक्ते हो, और फिर इसके उपरान्त अपने पहरे पर जा खड़े होना ! परन्तु सावधान ! मैं डिउक महाशय की आज्ञा से एक कार्य के निमित्त जाता हूं, जहां से तुरन्तही लौटूंगा । परंतु देखो तुम लोग पहरे से सचेत रहना । किसी प्रकार की निन्द्रा का समय न मिले ।

भला सन्तरियों को फोप्ट के कहने से किसतरह उज्र हो सक्ता था, दोनों तुरन्तही आगे बढ़े, और टेबुल पर जम गये ।

इसके उपरान्त फोप्ट रसम के कमरे से बाहर चला गया ।

इसके उपरान्त वह कुछही क्षणों में अपना बच्चा गोद में लिये कोठरी में आ पहुँचा ।

परन्तु संतरियों ने न तो उसे देखाही और न उसके पद शब्द सुने ।

फोप्ट सीधा पालने के कमरे में घुस गया, और वहां से वह शीघ्रही डिउक की बालिका वैसेही गोद में उठाये कोठरी से निकल आया ।

अब भी—न तो संतरियों ने कोई शब्द सुना और न इसी को देखा ।

इसके उपरांत, फोप्ट रसम के कमरे से बाहर निकल गया, और फिर कुछ मिनटों पर्यन्त वह बाहरही अपना काम करता रहा ।

अब फोप्ट ने पुनः कोठरी में प्रवेश किया, परंतु अब उसके पद शब्द भी सुन पड़ते थे, और वह संतरियों को दिखाई भी देता था ।

कुरसी पर बैठने पर फोप्ट ने संतरियों को एक २ प्याला और पीने की आज्ञा दी, जिसे उन लोगों ने धन्यवाद सहित स्वीकार किया, और फिर अपने २ स्थान पर बिना किसी दुबुधे के वे जा खड़े हुये ।

फोष्ट, इस बड़े कमरे में रात भर बैठा रहा, और डिउक महाशय प्रातःकाल पर्यन्त खर्राटेही लेते रहे।

अब प्रातःकाल की रसम प्रारम्भ हुई। अर्थात् राजकुमार मेकसमिलियन पालने की कोठरी से सिपाहियों के सामने लाया गया और इसके उपरान्त फिर वह डचेज़ के पास भेजा गया, जिसे देखतेही उन्हों ने छाती से लगा लिया।

इतने में उधर थेरिज़ा भी उस दवा की बेहोशी से होश में आई, जिसे डाक्टर ने जानबूझ के अपने मतलब के लिये उसे दिया था और होश में आतेही उस बालिका अर्थात् एडीला को अपनाही संतान समझ हृदय से उसने लगा लिया।

इस प्रकार फोष्ट का पुत्र आर्क डचेज़ के पास रहा, और आर्क डचेज़ की बालिका थेरिज़ा द्वारा पोषण की जाने लगी।

तेइसवाँ बयान।

वेसिउविउस पर्वत।

उपरोक्त बयान में जिस घटना का उल्लेख किया गया है, उसे हुये अब एक वर्ष व्यतीत हुए।

अब यह सन् १४९५ का मौसिम बहार है।

परन्तु हमारा दृश्य अब बदल गया है।

अब हम आप को एक नये स्थान नेप्लेजज़ में लिये चलते हैं।

नेप्लेज़ नगर एक खाड़ी के बीच में बसा हुवा है। नेप्लेज़ अपने चारों ओर के बड़े २ टीलों से पोरटीसी के किनारे से लेकर मिसेनो पर्यंत बसा हुवा है। नगर के दोनों ओर के टीलों, तथा उसी के निकट की पहाड़ियों पर अनेकानेक महल तथा असंख्य सोहावने बगीचे बने हुये हैं।

इस बड़े नगर में लगभग बयालीस सहस्र के तो सभ्य प्रतिष्ठित और धनाढ्य लोगों की बस्ती थी इसके अतिरिक्त साठ सहस्र, असहाय दुखिया और अभागों की झोपड़ियाँ थीं।

परन्तु वे बगीचे. और उत्तमोत्तम महल जो सिसली के पिछवाड़े थे, वास्तव में बड़ेही रमणीक और बड़ेही बहार के थे। इसका कारण पहिले तो वहां, की भू-

मिट्टी बड़ी उपजाऊ और जोरदार थी दूसरे ठंढक का उतना असर वहां नहीं पहुँचता कि जिससे निकलते हुए पौधों को किसी प्रकार की क्षति पहुँचे।

प्रातःकाल नगर के बाजारों में सुंदर सुगंधयुत ठंढी और आनंददायक प्रातः समीरन इधर उधर हिलोरें लिया करती थी। और जब सूर्य देव निकल आते थे तो पहाड़ी के चोटियों से टक्कर लेती और वहाँ के सुगन्धों से लदे हुए वायु के झँकोरे नगर में आने लगते थे, जिससे वहाँ के प्रत्येक रहनेवाले का मकान सुगन्धित हो जाता है और जिससे तड़केही तड़के उनपर नींद का वेग और भी प्रबल हो जाता था।

बस तो तात्पर्य यह कि यदि इस नगर की सैर करनी हो तो प्रातःकालही का समय बड़ा उचित था, जब चारों ओर एक अटल सन्नाटा छाया रहता था, और फिर जैसे २ सूर्य भगवान ऊँचे होते जाते हैं वैसेही वैसे लोगों का रव भी बढ़ताही जाता था। उस समय की शोभा भी विलक्षण थी। मेडेटेरेनियन नामक समुद्रों का राजा इस नगर के सामने इसकी सुन्दरता, तथा इसकी खाढ़ी और टापुओं को देख २ के मुस्करा के रह जाता था और जिसके ऊपर अर्थात् जहां से समुद्र का जल और आकाश मिलता हुवा दिखाई पड़ता है स्वच्छ नीलवर्ण आकाश का सामियाना सा खिंचा हुवा है। परन्तु इस स्वच्छ आकाश की शोभा उस समय और भी अपूर्व हो जाती है, जब प्रातःकाल सूर्य भगवान इसे बिलकुलही सोनहले रङ्ग से रंग देते हैं।

इसके दूसरे ओर; आकाश और पृथ्वी के मिलनें के स्थान में उन बड़े २ पहाड़ों की चोटियां दिखाई पड़ती थीं जो इसके गिर्द खड़े थे, और उन सभों के बीच में उन सभों से पृथक और ऊँचा वेसिउविउस खड़ा था जो उन पहाड़ों में उनका शाहंशाह जान पड़ता था।

पर्वत सोमना और पर्वत ओट्टेजनो जिनकी उँचाई समुद्र तटसे चार सहस्र फीट है इस पर्वत के दोनों ओर सटे खड़े हैं परन्तु वे ऐसेही जान पड़ते हैं जैसे काशी जी के माधवराव के धरहरे के सामने कोई सामान्य मन्दिर।

पर्वत वेसिउविउस के नीचे का भाग उत्तमोत्तम बगीचों तथा सुन्दर गावों और रमणीक महलों से आच्छादित है। यह भूमि यथार्थ में बड़ीही उपजाऊ तथा सुन्दर थी, जिससे लोगों को यह स्थान बड़ाही पसन्द आ गया था।

परंतु पर्वत के ऊपरी भाग में एक बड़ाही बीहंड़ दृश्य था अर्थात् पहाड़ में ज्वाला के साथ की निकलती हुई किरन तथा गले हुए पत्थरों के बहने सें बड़ी २ लकीरें पड़ गई थीं।

परन्तु पहिली मई सन् १४९५ में न तो नेपेल्ज़ में कोई बहारदार दृश्य था और न वहां का आकाशही निर्मल और स्वच्छ था और न समुद्रही शांत रूप से स्थिर था।

इसका कारण यह था कि कल संध्या को यहां एक बहुत भारी भूकम्प हुवा था। और आज सूर्य देव के एक घंटा पूर्व से ज्वालामुखी पर्वत विसिउविउस से लाल पत्थर, राख, और गले हुए धातों की वर्षा प्रारंभ होगई थी।

इसके उपरांत एक वह भयानक शब्द सुन पड़ा कि जिस्का वृत्तांत आजलों तवारीख में पाया जाता है।

अब आग और पत्थर पहिले से भी कुछ विशेष पक्षियों की भाँति वायु में उड़ते दीख पड़ने लगे। इनके उड़ने की उँचाई तीन सहस्र फीट से किसी प्रकार कम न होगी और जिसमें से एक काला और बदबूदार धूँवा निकल के नगर को अपनी मोटी चादर के नीचे छिपाने लगा।

उस धुँवे में से पहाड़-की निकलती हुई आग, बिजली की तरह चमक रही थी और उससे इतनी गरमी फैल रही थी, कि कोसों पर्यन्त के मैदान आग की तरह गरम हो रहे थे।

इससे कुछही देर के उपरान्त, उक्त पर्वत की सबसे ऊँची और दृढ़ चोटी के दो टुकड़े हो गये, और जिन में से पत्थर तथा और धातों का गलाव नदियों की तरह, चारों ओर लहराता हुवा वह निकला। कुछ देर लों तो यह गली हुई धातु धीरे २ वहती रही, परन्तु फिर कुछही देर के उपरान्त इसका वेग बड़ाही प्रबल हुवा, और फिर घोर नाद करता यह चारों ओर फूट पड़ा।

अब, वे सुन्दर बाग, गांव, उत्तमोत्तम महल, स्वादिष्ट फलों के स्थान रमणीक घूमने फिरने की जगह, सब भस्म होने लगी। जलता बलता ज्वालामुखी का निकला हुवा बहाव उन्हें सत्यानास करने लगा।

अब नगर की बड़ी २ अट्टालिकाओं में सन्नाटा फैलने लगा। उड़तें हुये पत्थर आ आ के उनके दरवाजे के लगे शीशों में टकराने और उन्हे चूर्ण करने लगे, गर्द की आँधी चारों ओर फैल गई, और थोड़ीही देर में ज्वालामुखी की गली हुई कीट

बहती हुई नगर में आ पहुँची, तो एक भयानक रव मनुष्यों का सुन पड़ा, और उनमें बड़ी भारी व्यग्रता फैल गई !

मनुष्य इधर उधर दौड़ने लगे—स्त्रियां, अपने बच्चों को छाती से लगाये चिल्लाती हुई एक ओर को भागी जाती थीं मर्द अपने हाथों से अपना मुंह गिरती हुई धूल से बचाते हुये लोगों को सहायता देते हुये पीछे हटते जाते थे। परन्तु वह गलाव भी बेतौर उन लोगों के पीछे पड़ा था। वह उसी भयानक रूप से उन्हें भस्म करने के लिये लहरें मारता आगे बढ़ताही चला आता था।

सूर्य देव निकले तो सही परंतु उनकी ज्योति उड़ती हुई राख इत्यादि के कारण, उदासी लिये हुए लाल रङ्ग की थी—और दूसरे यह कि; उनका प्रकाश इतना प्रबल न था कि उस भयानक स्थान का दृश्य भली भाँति दिखाई देता। अब पहाड़ से एक और भयानक वस्तु निकलने लगी। अर्थात् गरम और खौलता हुवा पानी, उस फटे स्थान में से निकल के सीधे आकाश की ओर जाता था और जो ठीक एक मोटे और ऊँचे खंभे की तरह दिखाई पड़ता था और फिर एक विशेष ऊंचाई पर्यंत पहुंचके, वही खम्भा छितरा जाता था और उसका जल; पर्वत विसिउविउस के चारों ओर वृष्टि की भांति बरसने लगता था।

लगभग एक घंटे के यही अंधड़ चलता रहा इसके उपरांत अब धूल और चिनगारियों की बृष्टि होने लगी, और देखते २ चारों ओर इसी का एक बादल सा छाया दिखाई पड़ने लगा। यथार्थ में इस धूल का रङ्ग बिलकुल काला था इस कारण तुरंतही कुल नीचे का दृश्य अंधकारमय हो गया। सूर्य भगवान की तीक्ष्ण किरनें उस राख के बादल को भेद के; नीचे पड़ने में असमर्थ हुईं, इस कारण, इस टापू पर; ज्वाला मुखी पहाड़ के चारों ओर कोसों पर्यंत, राख का काला एक बादल, छाया हुवा दिखाई पड़ता था जिसके नीचे की भूमि भी, सूर्य की किरन न पड़ने से गहरे काले रङ्ग की दिखाई देती थी। इसी के साथही साथ एक बड़ीही गलीज़ बदबू भी जो धूंये के कारण थी चारों ओर फैलती जाती थी। अब भूकम्प भी प्रारंभ हो गया और चारों ओर एक महाप्रलय का सा दृश्य दिखाई देने लगा।

भूकम्प के होने से समुद्र भी अपने स्थान से आगे बढ़ा और भयानक रूप से लहरें मारता किनारे की ओर बढ़ने लगा। जान पड़ता था कि आज वह नगर को वहा के एक गार बना देने को है।

अब अंधकार घोर—तर हो गया। जिसमें बड़े २ लाल पत्थर, चमकते हुए लाल अग्निस्फुलिङ्गों के साथ पहाड़ में से निकल रहे थे। और वे ठीक वैसेही जान पड़ते थे कि जैसे किसी सर्प की निकलती हुई जिह्वा हो, जो चारों ओर से घेर लिया गया हो और कुंडल मारे एक स्थान पर बैठा हैरानी से जीभ लपलपा रहा हो।

कभी २ प्रायः बहुत बड़े २ पत्थरों के टुकड़े अग्निस्फुलिङ्गों के साथ, पर्वत से बहिर्गत होते, और बड़े वेग से पहाड़ के इधर उधर गिरते, और टुकड़े २ होके दूर तक फैल जाते, और जिसकी प्रतिध्वनि के शब्दों से जान पड़ता कि मानों सहस्रों तोपों पर एक साथही बत्ती दी गई है।

हां तो जब उक्त पर्वत के बिचले भाग के निवासी, जो गांवों, झोपड़ियों, महलों, बगीचों, और छोटे २ दुर्गों में निवास करते थे, इस भयानक दृश्य को देख के भागे—कुछ तो मन्त्र पढ़ते हुये, और कुछ जोर २ से ईश्वर की प्रार्थना करते हुये वहां से पागलों की भांति बेचारे भागे—और ठीक इसी प्रकार कि जैसे कोई भयानक भेड़िया उन लोगों का पीछा कर रहा है—आह! इस समय, उनकी बुद्धि ठिकाने न थीं, बाप बेटे को और बेटे बाप को छोड़ भगे तथा माता अपने बच्चों को उसी घबराहट में इधर उधर छोड़ के भागीं। क्योंकि चोटी में का निकलता हुवा, लाल २ बहाव, लाल सर्प की भांति बराबर लहराता हुवा ऊपर से चला आ रहा था, प्रकृति में विभिन्नता आ चली थी, सूर्य का प्रकाश लोप हो गया था। पृथ्वी हिल रही थी, समुद्र घहरा रहा था ठीक उसी समय, हां ठीक उसी भयानक समय में दो मूर्तियां पहाड़ के ऊपरी भाग की ओर चढ़ती दिखाई देती थी।

इन दोनों का पर्वत का बहता हुवा गलाव कुछ न कर सक्ता था। बरसते हुये पत्थर के टुकड़े आग धूल गरम पानी की उन्हे कोई परवाह न थी, जो इनके चारों ओर वर्षा के जल की भांति बरस रहे थे।

जिस समय अन्य लोग उस लोमहर्षण स्थान को देख के प्राण बचा के भाग रहे थे, उस समय ये दोनों ऊपर की ओर चढ़े चले जाते थे, जहां से ये नाशकारी वस्तुयें बहिर्गत हो रही थीं। यह बड़ी भयानक चढ़ाई थी।

अब वायु के तेज़ झपाटे उनकी शरीर में लगने लगे—अब बहता हुवा गलाव उनके निकट आ गया—अब शरीर को झुलसा देने वाली गरमी की सीमा में वे

पहुंच गये थे—अब ज्वालामुखी की निकलती हुई लपटों का प्रकाश उनके चेहरे पर पड़ने लगा था—इस समय पत्थर, राख, तथा आग की आँधी अपने निकट के चारों ओर की दिशाओं को परिपूर्ण किये देती थी—अब ज्वालामुखी की निकलती हुई फुफकार, एक सर्प की फुफकार की भांति इनके शरीर में लग रही थी—अब ज्वाला मुखी की निकलती हुई लाल और मैली लपटें उनके वस्त्रों पर लोटती बोध होने लगीं—परंतु इतने पर भी वे, निर्द्वंद—विना एक क्षण भी हिचकिचाये—विना किसी क्षति के ऊपर बढ़ते चले जाते थे।

उन सहस्रों स्त्रियों का कातर नाद भी; जिनके बच्चे उनसे पृथक् हो गये थे, या उन मर्दों की लोमहर्षण चिङ्घाड़ भी; जो बहते हुवे गलाओ से जल गये थे इन दोनो पथिकों की राह नहीं रोक सके थे।

समुद्र का भयानक रव; जो वह हिलोरें ले ले के मचा रहा था बड़े २ सहस्रों मन के पत्थरों की भयानक चोट; जो कोसों के अन्तर से ऊपर से गिर के चूर्ण हो रहे थे—वायु की असह्य और महाप्रबल गति—नगर के रहने वालों का आर्त नाद बड़े २ पुराने वृक्षों का अर्रा २ के टूटना —ज्वालामुखी की निकलती हुई डरावनी फुफकार—और बहती हुई राख की आँधी का चित्त को हिला देने वाला झर्राटा—यह सभी उन दोनों आगे बढ़ने वालों के कर्णकुहर में प्रवेश कर रहा था। परन्तु इससे उनकी चाल में न तो कोई फरक आनेही को था और न आयाही।

अब उस पहाड़ ने और भी अपनी विकराल मूर्ति बना ली। बढ़ते हुये महा अंधकारही ने उसकी यह दशा कर दी थी। उसपर इन दोनों का बढ़ना स्पष्ट रूप से प्रगट करता था कि इनमें मनुष्यों के बल से कहीं विशेष कोई गुप्त बल अवश्यही है।

गरम और लाल निकलता हुवा बहाव अब और शीघ्रता से चारों ओर बहने लगा। क्रमशः बहाव में उन्नति होती गई—उत्पात बढ़ता गया यहां लों कि आधही घंटे के उपरांत वह पहाड़ बिलकुल लाल होके एक लाल; आग के निकाले हुए लोहे की भांति चमकने लगा।

और उसी चमकते तथा दमकते हुए पहाड़ पर, वे दोनों पथिक, निशंक आगे बढ़ते चले जाते हैं।

जब पर्वत बिलकुल अँङ्गारोंही का बना जान पड़ता था—और जब ज्वालामुखी

एक नरक से भी कुछ विशेष भयानक हो रहा था—जिस समय धूल का बादल आकाश पर झूल रहा था उस समय इन दोनों ने अपनी अपनी गति और भी शीघ्र की।

यह कितना आश्चर्य और कौतुकमय व्यापार था।

इसी समय सहसा एक बड़ीही डरावनी बड़ीही भयानक आवाज़—जो समुद्र की गरज—और ज्वालामुखी के निकलते हुए पत्थरों के सन्नाटे—तथा उपस्थित दृश्य के सभी कोलाहलों से ऊँची थी, सुन पड़ी।

इस समय उन दोनों पथिकों का तो ध्यान कीजिये।

एक तो ज्वालामुखी पर्वत की चोटी, फट के दो टुकड़े हो गई, और उन दोनों फटे हुये टुकड़ों के बीच में दो गज़ का अन्तर हो गया।

दूसरे लिउक्कार्दन नामक झील के उस भाग में जो ज्वालामुखी पर्वत की ओर था एक भारी उबाल तथा हलचल पड़ गया मानों झील के नीचे की भूमि बड़े ज़ोर से हिल रही है और फिर धीरे २ ठीक बीचों बीच से एक पहाड़ी निकल आई; जो देखतेही देखते कुछ घंटे में चार या साढ़े चार सौ फीट केलगभग ऊंची हो गई।

अब इसने मानों कुल झील को घेर लिया। इस निकली हुई पहाड़ी का घेरा डेढ़ मील के निकट हो गया और थोड़ा सा भाग झील का रह गया जो इसके चारों ओर लहरें मार रहा था।

अब यह पहाड़ "मौन्ट निउवो" या नये पहाड़ के नाम से विख्यात है। परन्तु अब भी—जब चारों ओर यह महाप्रलय का सा दृश्य उपस्थित था तब भी वे दोनों पथिक, निःशंक, निर्द्वंद पैर बढ़ाये, पहाड़ पर चढ़ते चले जाते थे।

उस समय जब मकान, और बगीचे इत्यादि इस प्रकार पृथ्वी में लोप होते जाते हैं मानों वह किसी गुप्त द्वार के मुंह पर हैं और उनके खुलतेही वे उसके भीतर चले जाते हैं उस समय जब बाल वृद्ध, युवा, बनिता इस भयानक स्थान से अनेकानेक कोसों के अन्तर पर, प्राण रक्षा के निमित्त जा खड़े हुए थे; उस समय जब बहाव नगर में चारों ओर बह रहा था ये दोनों व्यक्ति पहाड़ी की चोटी पर निशंक जा पहुंचे।

"क्यों पिशाच!"

फोष्ट ने चिल्ला के कहा; जो पिशाच के पीछे २ पैर उठाये बढ़ता चला जाता था "क्यों पिशाच! यह सब तेरीही करतूत है!"

इस पर पिशाच ने एक गंभीर और बादल के गरज के तुल्य घर्राती हुई आवाज में उत्तर दिया :-

"हां ! यह सब करतूत मेरी है परन्तु उसमें तेरा भी भाग अवश्यही है !"

फोष्ट—(भय से कांप के और उखड़े हुये स्वर में) मेरा ! तू व्यर्थ मुझे दोष लगाता है ! मुझमें इतनी शक्ति कहां कि यह सब मैं कर सकूं ।

इस पर पिशाच ने एक हृदय को हिलादेने वाला और रक्त को सुखा देने वाला कहकहा लगाया और फिर बड़ेही घृणायुक्त स्वर में फोष्ट से कहने लगा—

"दृष्टिहीन् मनुष्य ! कदाच् कुछ दिवसों के उपरान्त तू यह भी कहने लगेगा कि पर्वत ब्रोकेन पर, खड़े होके उस दक्खिनी तूफान को जो मैंने बुलाया था और जिसके कारण नदी एलबी के कोसों पर्यंत के दोनों ओर के हरे भरे किनारे मिट्टी में मिल गये उसमें भी तेरा दोष नहीं था। उस पाप का भागी भी तू मुझी को समझता होगा।

फोष्ट -(दुखी होकर) नहीं —उस पाप का भागी यथार्थ में मैंही हूं—परन्तु जब उसका ध्यान मुझे आता है तो मेरे रोंये खड़े हो जाते हैं।

पिशाच—(अपना स्वर धीमा करके परन्तु ताने भरे हुए स्वर में) अच्छा तू अपने पापों को स्वीकार तो करता है। आह ! तुच्छ मनुष्य कभी अपने पापों और अपनी भूलों को स्वीकारही नहीं करते—यद्यपि उन्हें प्रत्यक्ष दिखाई देता है कि इसमें सरासर उन्हीं का दोष है, परंतु वे उसे किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं करते " इतना कहते २ पिशाच की आवाज़ बड़ीही कड़ी हो गई जिसे सुनके मनुष्य का हृदय दहल उठे " झूठ को सच कर दिखाने में मनुष्य बड़ा चतुर होता है । और ऐसा करने के उपरान्त वह अपने इस काम से प्रसन्न भी कितना होता है। इसका तो मानों मनुष्य पर एक पिशाचही सवार रहता है !

फोष्ट—किसका पिशाच सवार रहता है ?

पिशाच —घमंड का। जो तेरी जाति मात्र के हृदय में पैठ के उनसे बहुत भारी क्षति कराता है—मैंने प्रायः देखा है कि स्त्री तथा पुरुष, जो एक दूसरे पर तन मन न्योछावर करते हैं, एक तनिक सी बात पर झगड़ पड़ते हैं—और फिर वह झगड़ा यहाँ लों बढ़ता है कि एक दूसरे के पूरे और पक्के वैरी हो जाते हैं। इसका कारण क्या है ? वही घमंडही एक ऐसी वस्तु है जो अपने को नीचा नहीं देख

चाहता और लड़ने पर तैयार कर देता है। यदि उस में का एक अपना दोष समझ के चुप हो जावे फिर यह बात बढ़ेही क्यों। मैंने देखा है कि क्रोध के समय मनुष्यों ने अपने परम मित्रों को एक घमंड से भरे शब्द में अपने से सदैव के निमित्त पृथक् कर दिया है परन्तु यदि उसके उपरान्त, उस व्यक्ति ने अपना दोष समझ केवल इतना अपने मित्र से कह दिया होता **"इसमें मेरीही चूक थी"** तो क्यों बात बढ़ती; फिर मित्रता ज्यों की त्यों हो जाती—परन्तु नहीं! यहाँ वही घमंड का पिशाच जो मनुष्य के मस्तक में स्थान बनाये हुए है उसे इतना नम्र बनने की आज्ञा नहीं देता। मैंने और भी देखा है कि (इतना कहते २ पिशाच का कंठस्वर और ऊँचा होता जाता था) मैंने देखा है कि भाई ने भाई को छोड़ दिया—माता ने पुत्री को पृथक् कर दिया—पिता पुत्र के नाम रो बैठा—बहिन भाई से पृथक् हो गई परन्तु इतना उनके मुँह से न निकला! न निकला कि **"मुझे क्षमा करना मुझसे चूक हुई"**—हाँ! और मैंने यह भी देखा है कि बादशाहों ने अपने योग्य पदाधिकारियों को निकाल बाहर किया—प्रेमिकाओं ने अपने प्रेमियों से हाथ धो लिया प्रेमियों ने अपनी अपनी अनुपम प्रेमिकाओं का वियोग सहन किया—यह सब किया, इसके कारण अनेक दुःख सहे परन्तु मनुष्य के सिर पर के चढ़े हुए पिशाच ने उसके मुँह से कोई नम्र शब्द न निकलने दिया—तू देखता है कि इसे मैं स्वयं भी बुरा समझता हूं और इससे भयभीत रहता हूं। और फिर भी सदैव डरूंगा और इससे पृथक् रहने का उद्योग करूंगा क्योंकि यदि मैंने इसी पिशाच के वशीभूत होके काम न किया होता तो अबतक मैं भी बैकुंठ में होता।

फोष्ट—यह तो सब सत्य है परन्तु इस लम्बी चौड़ी वक्तृता का तात्पर्य क्या है? वृथा यह सब बकने से तुझे लाभही क्या है?

इस समय, पिशाच की वक्तृता का एक २ शब्द फोष्ट के हृदय पर तीरों का काम कर रहा था।

पिशाच—क्या मेरी बातों से तेरे हृदय को दुःख हुआ है। परन्तु इन्हें तो मैंने कुछ शिक्षा की तरह नहीं कहा बरन् बातों २ में मेरे मुँह से बातें निकल गई थीं।

(इतना कहके उसने एक बड़ाही भयानक कहकहा लगाया) अच्छा तो अब हम लोगों को अपनी अपनी बातों की ओर झुकना चाहिये । हाँ तो तुमने मुझसे पूछा था कि यह सब काम तेराही है और मैंने उत्तर दिया था कि हाँ परन्तु तुम्हारे लिये; इस कारण तुम भी इस महापाप के भागी हुए ।

फोष्ट—(चकित होके और चिल्लाके) हमारे लिये ? क्यों पिशाच हमारे लिये ?

पिशाच—हाँ हाँ तुम्हारे लिये क्योंकि मैं तो तुम्हारा एक गुलाम हूं जो कुछ तुम कहोगे वही मैं करूंगा ।

फोष्ट—(धीरे २ हार्दयिक घृणा और पूरे कष्ट से) तू मेरा गुलाम काहे को मालिक है ।

पिशाच—हाँ, सचमुच मैं एक दिवस तेरा स्वामी भी हो जाऊँगा, परन्तु आजसे कुछ मास ऊपर बाईस वर्षों के उपरान्त । अच्छा तो मैं अपनी उस बात को भली प्रकार समझा के बताये देता हूं जिसे सुनके तुम इतना चकित और भयभीत हो रहे हो । तुम्हें स्मरण होगा कि कल संध्या समय जब बायना में हमारी तुम्हारी अन्तिम साक्षात् हुई थी, तो तुमने बातों २ में मुझ से कहा था कि तुम मेरे राज्य को देखा चाहते हो जहाँ मैं बादशाही करता हूं । यह बात तुम्हारी मैंने स्वीकार कर ली—इतना कहके पिशाच ने एक बड़ी भयानक दृष्टि से फोष्ट को देखा और फिर एक कड़े और घृणायुक्त स्वर में कहने लगा, हाँ तो मैंने यह स्वीकार कर लिया कि मैं तुम्हें अपना देश दिखाऊँगा और तुमने भी इसपर अपनी प्रसन्नता प्रगट की । परन्तु वहाँ का दृश्य इतना भयानक और लोमहर्षण है कि जिसका ठिकाना नहीं । और वहीं तुम्हें अन्त में रहना होगा इससे अचांचक उसे दिखा देने की मेरी हिम्मत न पड़ी और यही उचित जान पड़ा कि पाहिले पृथ्वी के उपस्थित भयानक दृश्य दिखा के तुम्हारा हृदय पुष्ट कर लूं तब वहाँ ले चलूं फोष्ट ! यह जो तुम्हारे सामने ! दृश्य उपस्थित है वह वहां की भयानक अवस्था का एक अंश भी नहीं है क्योंकि अभी तो तुम केवल अपने चारों ओर एक अन्धकार मात्र देखते हो केवल एक ज्वालामुखी पर्वत मे से ज्वाला निकलता पाते हो । केवल जलती बलती आग का इतनाहीं प्रभाव देखते हो कि पृथ्वी फाड़ के जल में से एक पहाड़ निकाल दियां, परन्तु फोष्ट ! इन सब को देख के अब अपने को तैयार कर लो, आह ! इन सब को देख के मेरे राज्य की

भयानक—हां महा भयानक अवस्था के देखने के लिये तैयार हो जाओ। अभी मैं तुमसे कह चुका हूं कि यहां का दृश्य वहां के सामने सौ में एक गुना भयानक भी नहीं है, तो सचही है! अरे यहां बड़े २ भयानक सर्प कहां हैं? जो मनुष्य के जले हुये शरीर में भयानक रूप से लिपटे हुये होते हैं और बार २ अपनी जीभ निकाल फन उठाये मनुष्य की जिह्वा को चूसते हैं। यहाँ वे बड़े २ अज़दहे कहाँ है?—कौन अज़दहे कि जो मिसिर देश के नील नदी के मगर-मच्छों से भी सौगुने बड़े हैं और जो पापियों को सहस्रों प्रकार की यंत्रणा दिया करते हैं, और कष्ट दे दे के उनका शरीर काट २ के खाते हैं परन्तु फिर भी वे पापी नहीं मरते और न कभी मरेंगे। यहाँ वह अटल दुःख और कष्ट कहाँ है? जो कभी मनुष्यों से पृथकही नहीं होते, और वह मनुष्यही यहाँ कहां हैं जो भाँति २ की यंत्रनाओं पर भी जीवित रहते हैं। यहाँ के मनुष्य तो यदि इस जलते तथा बहते हुए गलाव में पड़ें तो एक क्षण में भस्म हो जांय परन्तु वहां यह अवस्था नहीं है, वहां की न तो अग्निही कभी बुझती है और न वे मनुष्यही मरके कभी उस भयानक यंत्रणा से उद्धार पाते हैं।

फोष्ट—(चिल्लाके) बस, बस, अब बहुत नहीं। यह बड़ाही भयनक दृश्य है।

पिशाच—तो क्या अब तुम्हारी इच्छा हमारे राज्य के सैर करने की नहीं है? यदि ऐसाही है ते हमें आज्ञा दो हम तुम्हें यहीं से लौटा सक्ते हैं।

फोष्ट—नहीं—मैं लौटा नहीं चाहता—मुझे तेरे राज्य के देखने की बड़ीही इच्छा है परन्तु स्मरण रखना! कि संध्या पर्यंत मुझे वायना में पहुंच जाना चाहिये।

पिशाच—तुम आज्ञा दो और मैं तुरन्तही उसका पालन करूंगा। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि हम बड़ेही शीघ्रगामी हैं; और जिसके उदाहरण में यह तुम देखही चुके हो कि वायना से नेप्लेज़ में, मैं एक क्षण में आ पहुंचा हूं।

यही सब बातें करते अब वे एक ऐसे स्थान में पहुंचे, जहां से पहाड़ की चोटी फट गई थी और अब उस स्थान से दो रास्ते पहाड़ की चोटी पर उन बहते हुए गलावों में से जाते थे।

पिशाच—अच्छा, तो अब तुम इस रास्ते से चोटी पर चलो और मैं इसपर से चलता हूं।

फोष्ट—परन्तु इस पृथक् २ चलने का कारण क्या है?

पिशाच—कारण तो इसका प्रत्यक्ष है और वह यह कि उस फटी हुई चोटी पर इतना स्थान नहीं है कि हम दोनों एकत्रित खड़े हो सकें।

इसके उपरान्त वे दोनों पृथक् २ हो गये एक तो उत्तर की ओर से चोटी पर चला और दूसरा दक्षिण दिशा की ओर से अपनी चढ़ाई समाप्त करने लगा।

कुछही काल में दोनों, चोटी पर जा पहुँचे।

परन्तु इन दोनों के बीच में एक बहुत बड़ा गार पड़के इन दोनों को पृथक किये हुए था, पर तो भी फोष्ट पिशाच को भली भांति देख और उसकी आवाज़ सुन सक्ता था और इसी प्रकार पिशाच भी फोष्ट को देख और उसकी बातें सुन सक्ता था।

अन्धकार का बादल अब ऊपर से हट गया था इस कारण सूर्य देव की चमकती दमकती किरनें अब एक बेर फिर उस पहाड़ पर पड़ने लगीं; आँधी भी अब कम हो चुकी थी और पहाड़ की निकलती हुई ज्वाला में भी बहुत कुछ न्यूनता थी।

फोष्ट ने एक बेर सिर उठाया और नीलवर्ण आकाश की ओर देखा तब उसने अपनी दृष्टि नीचे डाली तो उसे अपने पैरों के निकटही एक भयानक गार दिखाई दिया जिसकी गहिराई का अनुमान, वह बेचारा तो क्या करता मनुष्य मात्र का ध्यान और अनुमान भी वहां लों नहीं पहुँच सक्ता था।

अब पहाड़ से ज्वाला न निकलती थी; लहराता हुवा समुद्र अब बड़ाही स्थिर हो के अपने पहले लहराते हुए स्थान से साढ़े चार कोस पीछे जा ठहरा था; आंधी बंद हो गई थी; और बहा हुवा गलाव अब शीघ्रता से ठंढा होता जाता था।

यह सब तो था परन्तु इस ज्वालामुखी पर्वत के कारण जो तबाही चारों ओर आई थी, वह अभी ज्यों की त्योंही थी।

नेपेल्ज़ के बड़े २ घण्टे प्रसन्नता से लोगों को धन्यवाद देने के निमित्त बजाये जा रहे थे कि भागे हुए लौट आयें और ईश्वर को धन्यवाद दें कि उसने अपनी दया से उस सजी सजाई नगरी पर विशेष हानि न पहुँचने दी।

हां, गांव, कसबे, झोंपड़े, महल, और बगीचे तो अवश्यही इस महान आपत्ति के आने से बरबाद हो गये थे।

और उतनीही बरबादी उनके लिये बहुत थी।

फोष्ट ने जब दृष्टि गड़ा के उस गार को देखा, जिसमें से वह बहता हुवा गलाव तथा आग और पत्थर निकलते थे तो उसका हृदय कांप गया।

फोष्ट यह देखही रहा था कि सहसा उसके कर्ण, कुहर में पिशाच का भयानक स्वर यह कहता सुनाई पड़ा—

"देखा ! एक रास्ता यह भी हमारे राज्य का है क्या तू वहां जाने और उसे देखने का अब भी साहस करता है !"

फोष्ट—हां हां मैं अवश्य देखूंगा !

पिशाच—अच्छा तो फिर अब हमें व्यर्थ विलम्ब न करना चाहिये।

इसी समय पहाड़ बड़े जोर से पुनः हिलने लगा और फिर वह फटा हुवा भाग एक भयानक टक्कर के साथ पुनः आपस में मिल गया।

इसके उपरान्त सहसा पिशाच फोष्ट के निकट आ खड़ा हुवा और उसका हाथ अपने हाथों में लेके और उस पर अपनी मर्मभेदी दृष्टि गड़ा के बोला—"तैयार हो"

फोष्ट—हां तैयार हूं !

पिशाच—अच्छा तो आओ !

इतना कहके दोनों, पर्वत विसिउविउस के उस गार से जिससे ज्वाला निकलती थी कूद पड़े और लोप हो गये।

चौबीसवाँ बयान।

बेरेन ज़ेरनिन।

ठीक उसी दिन जिस दिन पर्वत विसिउविउस के फटने और उसमें की आपत्तियों के निकलने से उसके नीचे का भाग बिलकुलही मटियामेट हो गया और साथही नगर नेप्लेज़ के भी बचने की उम्मेद न की गई थी उसी दिन नगर वायना में कुछ घटनायें ऐसी संघटित हुई कि जिनका उल्लेख आनन्द से बाहर न होगा।

नगर के एक विशेष महल्ले में बेरेन ज़ेरनिन की एक वृहत् अट्टालिका थी जिसमें वे सपत्नी सहवास करते थे।

बेरेन की अवस्था लगभग चालीस वर्ष के थी। वह किसी समय में बड़ेही स्वरूपवान भी थे परन्तु इस समय ऐयाशी तथा शराबख्वारी ने उनकी सूरत में बहुत कुछ भेद डाल रक्खा था। विशेषतः यह कि उनका चेहरा पीला पड़ गया था और उनकी आंखें बिलकुलही गड़हे के भीतर हो रही थीं। यद्यपि वह गँवार तथा अपढ़ थे प-

रन्तु अपने इस ऐब को वह मीठी २ बातों और दो चार बुद्धिमानी के लटकों से सदैव छिपाये रहते। और यह बातें उनकी प्राकृतिक थीं जिनसे वह अपने उस ऐब के ढांकने में बहुत कुछ कृतकार्य होते थे। बेरेन साहब समय २ पर जूवा और इसके अन्तर्गत और भी अनेक कुकामों का आनन्द लिया करते थे इससे नगर के कुल बदमाश, लुच्चे, उचक्के इनके लंगोटिया यार हो गये थे। बेरेन् अपनी बुद्धि की तीक्ष्णता तथा संसार का गरम सर्द देखने के कारण अपने दल का मुखिया माना जाता था।

बेरेन के जीवनचरित्र में कुछ बातें बड़ीही विचित्र थीं जिनका उल्लेख करना हम यहां पर बहुतही उचित समझते हैं।

इसके माता पिता अतुल सम्पत्ति छोड़ के उस समय स्वर्ग धाम को सिधारे जब यह पूर्ण युवा थे। उस समय यह अपने चचा के सुपुर्द किए गए जो किसी उच्च शाही पदवी पर आरूढ़ थे। यह अनाथ केवल अपने चाचाही की कृपादृष्टि के भरोसे पर नहीं छोड़ा गया था क्योंकि उसके माता पिता बहुत कुछ धन और ऐश्वर्य इसके लिये छोड़ गये थे। और जिस समय बेरेन अपने चाचा के हाथों सुपुर्द किया गया था उस समय इसकी अवस्था तेईस वर्ष की थी। इसका चाचा बड़ेही स्वच्छ हृदय का मनुष्य था उसने शिउडोर (क्योंकि बेरेन का नाम यही था) के केवल पढ़ाने लिखानेही पर ध्यान नहीं दिया; वरन् उसने उसकी उस सम्पत्ति को भी बढ़ाना प्रारंभ किया जो उसके माता पिता छोड़ गये थे। इसी प्रकार बेरेन् जब बालिग़ हो गया तो उसके चाचा ने कुल सम्पत्ति उसके हवाले कर दी और साथही अपनी जायदाद का दानपत्र भी उसी के नाम कर दिया जिससे वह नगर के कुल रईसों से भी विशेष वह धनाढ्य हो गया। इसके कुछही दिवसों के उपरान्त उसका चाचा भी स्वर्ग धाम को सिधारा और तब बेरेन् अपनी कुल सम्पत्ति का स्वतंत्र अधिकारी हो गया।

बेरेन् को अपनी युवा अवस्थाही से अन्यान्य देशों के देखने तथा इधर उधर भ्रमण करने की इच्छा रहा करती थी और अब—जब वह बिलकुलही स्वतंत्र हो गया तो उसने इधर उधर देशपर्यटन का विचार किया। उन दिनों एक भारी आपत्ति तो यह थी कि मनुष्य आजकल की तरह निरापत्ति, नोट तथा बेङ्क इत्यादि का चेक लेके कहीं भ्रमण नहीं कर सक्ता था इस कारण बेरेन् ज़रनेन ने बहुत से बहुमूल्य

जवाहिरात अपने हाथ में करके जो दो तीन वर्ष के व्यय के निमित्त बहुत थे एक ओर की राह ली।

चायना छोड़े उसे बारह वर्ष बीत गए, परन्तु उसका कोई समाचार उसके मित्रों को न मिला इसलिये शाही अफसरों ने शाहंशाह की सेवा में इस विषय की रिपोर्ट की कि बेरेन् ज़रनीन गत बारह वर्ष से अनुपस्थित है और इसके बीच में उसने कोई पत्र इत्यादि भी अपने मित्रों को न लिखा इससे अनुमान किया जाता है कि उसने निश्चय किसी अन्य देश में प्राण विसर्जन किया। और उसके काश्तकार बिना मालगुज़ारी अदा कियेही आनन्द से भूमि जोतते बोते हैं, और उसके कोई वली वारिस भी नहीं है इसलिये उचित है कि उसकी जायदाद गवर्मेन्ट मे जब्त हो और ऐसा आज्ञापत्र जारी किया जावे कि यदि उसका असली वारिस आके अपना दावा करे और सबूत दे सके तो उसकी कुल जायदाद उसको लौटा दी जावे।

यह लिखावट शाहंशाह के सामने पहुँची और उन्हों ने उसे देख के और कुछ विचार के जायदाद के ज़ब्ती की आज्ञा दी। परन्तु अभी जायदाद को जब्त हुए कठिनता से दो चार दिवस बीते होंगे कि सहसा बेरेन् ज़रनिन आन उपस्थित हुवा। इसकी सूरत अब बिलकुलही बदल गई थी यहां लों कि उसके लंगोटिये यार लोग भी कठिनता से उसे पहचान सक्के थे। इसके साथही उसकी वह पहले जैसी नेक चाल चलन में भी बहुत कुछ भेद आ गया था; अब उसकी गिनती पक्के बदमाशों में की जा सक्की थी।

बेरेन् ने आतेही दरबार में अपनी जायदाद के वापसी की अर्ज़ी दी। इसके साथही उधर से पूरे २ तौर से सबूत भी मांगे गये। जिसपर इसने अनेक प्रकार के सबूत देने प्रारंभ किये, अर्थात् उसने पहले तो अपना पिछला जीवनवृत्तान्त सब कह सुनाया और फिर अपने कुल जायदाद का पृथक् २ नाम बताया और साथही अपने यहां के जानवरों इत्यादि की गिनती सुनाई और फिर सबूत में बहुत से जवाहिरात जिन्हें वह अपने साथ ले गया था और जिसे उसके मित्र भली भांति पहचानते थे अदालत में दिखाये फिर इसके उपरान्त उसने अपने लम्बे भ्रमण का हाल जिसमें वह यूरोप, ऐशियाई तुरकी इत्यादि में गया था स्पष्टता से कह सुनाया; साथही उसने यह भी कह दिया कि वह

एक पोलिटिकल दोष में जिसका वह यथार्थ में अपराधी न था रूम में बहुत दिवसों पर्यंत कैद रहा और यही कारण था कि उसने इतने दिनों में कोई पत्र अपने मित्रों को न लिखा। इसके उपरान्त बहुत से वे नौकर जिन्हें व अपने घर की रखवाली के लिये छोड़ गया था और बहुत से वे मित्र, जिन्होंने इसे भ्रमण के पहिले देखा था पेश किये गये और उन लोगों ने गवाही दी कि हां सूरत और हाथ पैर के बनाव से यह उन्हें थिउडोर ज़रनिनहीं जान पड़ता है।

जब शाही अदालत को पूरा सबूत मिल गया तो फिर तुरंतहीं इसकी कुल जायदाद वापस कर दी गई। और ये बातें; जब हम बेरेन् का परिचय आपसे करा रहे हैं, इसके चार वर्ष पूर्वही हो गई थीं।

जायदाद पातेही वह बहुत बड़े ऐशो आराम तथा शराबखोरी में पड़ गया जिसे देख के इसके पुराने मित्रों ने इसपर घृणा प्रगट की और इसका साथ छोड़ दिया। इसके उपरान्त इसने उन ईमानदार भृत्यों को निकाल बाहर किया किया जिनके विश्वास पर वह अपनी जायदाद छोड़ के बाहर गया था और जब लौट के आया तब भी उन्हें उसी कार्य पर ईमानदारी के साथ आरूढ़ पाया था। उनेक स्थान इसने लुच्चे और पाजियों की भरती की जो उसकी सोहबत गरमाने लगे। अब उसके पुराने और प्रतिष्ठित मित्रों के स्थान ऐसे मनुष्य आने लगे जो सैकड़ों बार राज दंड भोग चुके थे या जिन्हें और कहीं ठिकाना न था, वे आके इसी के यहां डेरा डाल के पड़े, इसी का खाते और आनन्द से बैठे उत्तमोत्तम शराबें पिया करते थे। अब तो मानों एक रसम सी पड़ गई है कि जब किसी रईस के हाथ दौलत आये तो सैकड़ोंही मुफ्त-खोर उसके मित्र बन जाते हैं और फिर रईस को लँगोटीही बँधवा के तब वहां से टलते हैं। इसी प्रकार वह अतुल सम्पत्ति बेरेन् ज़रनिन की उस के भ्रमण से लौटने के तीन वर्ष के उपरान्तही लुट गई और अब उसके वे नकली मित्र भी एक के उपरान्त दूसरे टहल गये।

अब बेरेन् के नेत्र खुले। अब उसने अपने पिछले बीते तीनों वर्षों को घृणा की दृष्टि से देखा। परन्तु—

"का वर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूक पुनि का पछताने" ॥

बेरेन् का यह दुःसमय था जब फोष्ट ने उससे पहिली साक्षात् की, और इसकी अवस्था पर उसने बहुत कुछ दुःख प्रगट करके इसकी सहायता भी की।

फोष्ट को अब एडा की भी कोई आवश्यक्ता न थी क्योंकि बच्चों की बदलाई का कार्य बिलकुल समाप्त हो गया था। और अब इसे एडा के लिये कोई उपयुक्त वर भी ढूँढ़ना था इसलिये ढूँढ़ ढाढ़ के उसने इसी बेरेन से मैत्री उत्पन्न की और क्रमशः बात चीत करके उसने बहुत सा रुपया देके बेरेन को उस शादी पर प्रसन्न करा लिया। फोष्ट ने बेरेन को बड़ा द्रव्य दिया। व्याह की रसमों के उपरान्तही दुलहा, दुलहिन, कहीं दूर एक कसबे में जा बसे। और जहां वे कुछ महीने आनन्द पूर्वक रहे इसके उपरान्तही एडा के एक बच्चा हुवा—वही बच्चा जो फोष्ट से इसके गर्भ में आया था -और जो उत्पन्न होने के चौबीसही घंटे के उपरान्त मर गया।

जब एडा को भ्रमण की आपत्तियों के सहन करने का बल हो गया तो पुनः वह पलट के अपने स्वामी के साथ, वायना में आ गई। और इस प्रकार इसका लज्जा-युक्त पाजीपना संसार पर प्रगट न हुवा।

हमारे पाठकगण आश्चर्य में होंगे कि फोष्ट ने एडा के वर ढूंढने में क्यों कष्ट सहन किया वा उसकी शादी दूसरे से करनेही से क्या प्रयोजन? एडा फोष्ट को भली प्रकार प्यार करती थी—वह उसके भयानक भेद से भली प्रकार विज्ञ थी— वह उसके उस भेद से भी भली प्रकार विज्ञ थी जिसे उसने बच्चों के बदलने में खेला था। वह फोष्ट को हृदय से चाहती थी—जैसा कि इटेलियन स्त्रियां अपना प्रेम निवाहती हैं (और यथार्थ में एडा भी उसी वंश से थी) इसके उपरान्त फोष्ट ने भी एडा के लिये बहुत कुछ किया—उसने अपना क्रोध उसी के कहने से रोका—कौन क्रोध?—वही जो एक व्यक्ति का प्राण नाश किये बिना जानेही को नहीं था—यह सब था परन्तु फोष्ट ने फिर उसका व्याह अन्य से क्यों किया?—इसका कारण यह था कि प्रथम तो फोष्ट एडा को थेरिज़ा से पृथक् रक्खा चाहता था, दूसरे वह उसके इस वर्तमान पति से निश्चित था क्योंकि वह भली प्रकार जानता था कि वह केवल उसका नाम मात्र का पति है।

अच्छा तो यह अवस्था बेरोनेस ज़रनेन की थी जिनसे हम अपने पाठक गणों से से परिचय करा रहे हैं। पहिली मई सन् १४९५ को बेरेन का व्याह हुये पूरा एक वर्ष हो गया था। यह हम ऊपरही लिख आये हैं कि जिसदिन नेब्रेज़ में यह सब घटनायें हो रही थीं उसी समय वायना में और नई २ घटनायें हो रही थीं। अब वह घटनायें थीं क्या! उन्हें सुनिये।

एडा इस समय अपनी कोठरी में बैठी हुई थी। इसके सामने जवाहिरों का डिब्बा था। इतने में उसकी खवास जरट्रूड नामक ने घबड़ाहट से कोठरी में प्रवेश किया।

खवास—(चिल्ला के) आह! श्रीमती! एक विचित्र अजनबी पुरुष बड़े कमरे में बैठा है और आप से मिलने के लिये झगड़ रहा है।

एडा—मुझ से मिलने के लिये?

इतना कहते २ उसका ध्यान तुरन्त अपने भाई आदू की ओर गया, इससे वह भयभीत नहीं हुई वरन् बड़ेही शान्तभाव से उसने पूछा—

"भला उस आदमी की सूरत कैसी है?"

खवास—नाटा कद–दुबला पतला और लाल बालों की उसकी दाढ़ी है जिस में जान पड़ता है कि कभी कंघी नहीं फेरी गई है।

एडा—अरे—तो वह भूलता है, ऐसी सूरत के किसी आदमी से मुझसे जान पहचान नहीं।

यह एडा ने बड़ी निश्चिन्तता से कहा क्योंकि उसका संदेह तो अब मिटही गया था कि वह उसका भाई नहीं है।

खवास—श्रीमती वह भूल कदापि नहीं करता है। प्रथम तो उसने द्वार में प्रवेश करते ही बेरेन महाशय से साक्षात की इच्छा की। परन्तु दरबान ने उससे कह दिया कि बेरेन महाशय मकान में नहीं हैं तब वह दरबान को जबरदस्ती ढकेल कर भीतर घुस आया और एक कुरसी पर बैठ के कहने लगा कि अच्छा जबलों वे न आयें मैं यहीं बैठता हूं। कुछ क्षणों के उपरान्त उसने दरबान को पुनः बुलाया और कहा कि मेरे वास्ते भोजन और शराबें टेबुल पर लगा दो। यह बात उसकी दरबान ने अस्वीकार कीं। जिस पर वह अजनबी उसपर बहुत बिगड़ा और इसी समय जब मैं उसी के बड़े कमरे से आ रही थी तो दरबान ने मुझसे सब कुछ कहा और—"

एडा—(बाधा देकर कुछ व्यग्रता से) जरट्रूड! तेरी यह आदत है कि बात का बतंगड़ बनाया करती है। भला मुझे ऐसे पाजियों से क्या काम! जाके नौकरों से कह दे कि वे शीघ्र उसे धक्के देके यहां से निकाल बाहर करें।

जरट्रूड—श्रीमती! मैं कहने को तो कहे आती हूं परन्तु ऐसा करना तनिक कठिन जान पड़ता है। उस बदमाश के हाथ में एक बहुत बड़ी लाठी है।

ओर उसके जेवों में पिस्तौलें भी जान पड़ती हैं।

बेरेनेस जेरनिन (या एडा)—तो क्या वह मुझी को पूछता है?

जरट्रुड—हां श्रीमती आपही को बुलाता है। जब मैंने उसे इस बारे में जली कटी सुनाई थी कि बिना काम काज के ऐसे बेधड़क पराये मकान में घुस आना शरीफों का काम नहीं बरन् पाजियों का है, और जिस समय हमारी श्रीमती बेरोनेस महाशया सुनेंगी तो और भी रुष्ट होंगी। बस इतना सुन्तेही वह खड़ा हो गया और कहने लगा कि "अच्छा! क्या तुम्हारे लार्ड ने उससे व्याह किया है?" बस इसके उपरान्त ही से वह आपकी साक्षात् के निमित्त उपद्रव मचा रहा है।

एडा—इसमें कोई संदेह नहीं जेरट्रूड—कि तू एक छोटी सी बात को बहुतही अच्छी तरह बढ़ा के सुना सक्ती है। परन्तु मैं इस उजड्ड को अवश्य देखूंगी और उसके उस आवश्यकीय कार्य को भी चलके पूछूँगी।

एडा यह कहके बड़ेही आश्चर्य से बड़े कमरे की ओर उस अजनबी को देखने चली। उसने अनुमान किया था कि यह व्यक्ति जिसने इतना साहस किया कदाच बेरेन के किसी बदमाश और आवारः मित्रों में से है जो दिन रात उसी के यहां बैठ के उसका द्रव्य उड़या करते थे।

एडा जेरट्रूड के साथही साथ बड़े कमरे की ओर बढ़ी, और वहां पहुँचने पर तुरंतही इसकी दृष्टि उस व्यक्ति पर पड़ी जिसका वयस पैंतालीस के निकट का था और बाकी इसका हुलिया ठीक वैसाही था जैसा कि जेरट्रूड ने अभी २ इससे कहा था।

एडा को देखतेही उसने शीघ्रता से अपनी फटी और टूटी टोपी के ओर प्रतिष्ठा से हाथ बढ़ाया और बोला—

"मैं अनुमान करता हूं कि अपही बेरेन जेरनिन की बेरोनेस हैं"

एडा—हां मैंही बेरोनेस जेरनिन हूं और अब तुम्हारा नाम मूसुने की प्रतीक्षा करती हूं शीघ्र कहो।

इसपर उस अजनबी ने एक भारी कहकहा लगाया और फिर कहने लगा—

"मैं कौन हूं यही न आप पूछती हैं—मेरी अवस्था और मेरी ढिठाई से आप भांति २ की दुवधायें करती होंगी कि यह मित्र है वा शत्रु या ईश्वर जाने कौन है? तो इतना तो मैं बताये देता हूं कि मैं उनका मित्र हूं—और मित्र भी पुराना जब वे आयेंगे तो

आप देखेंगी कि कितनी आवभगत वे हमारी करते हैं। यद्यपि अन्तिम साक्षात हुए हमारे उनके बहुत दिन हुये पर तो भी बेरेन साहब अपनी अटल मित्रता में भेद थोड़ेही आने देंगें। और बाकी की बातें तो मैं उन्हीं से अकेले में करूंगा। परन्तु यह तो कहिये कि बेरेन महाशय, लौटेंगे कितनी देर में?

एडा—(सकोप) कुछही देर में आये जाते हैं। और मैं आशा करती हूं कि तुझ ऐसे दोस्त की तो गरदन में हाथ दिलवा कर बाहरही निकलवा के तो छोड़ेंगे।

इसपर उस व्यक्ति ने सकोप और ताने भरे वाक्यों से एडा का उत्तर दिया।

"मैं तो भली भांति समझे बैठा हूं कि वे मेरे साथ कदपि ऐसा न करेंगे। और साथही मैं ऐसी सुन्दरी से कड़े शब्दों में बात चीत भी नहीं किया चाहता।"

इतनी सुन्तेही एडा के चेहरे पर रक्त दौड़ने लगा और उसने क्रोध से लाल होके कहा—

"कमीने, पाजी! चल दूर हो यहां से, अभी निकल बाहर हो!!!"

अजनबी—(बड़ीही बेपरवाही से) अच्छा तो इस समय तो मैं जाता हूं क्योंकि मेरी भी ऐसीही इच्छा है परन्तु सूर्यास्त के पहिले, संध्या समय, मैं बेरेन माहाशय की साक्षात के लिये फिर आऊँगा। और श्रीमती उनसे कह भी देंगी कि तुम्हारा मित्र शरमन तुमसे मिलने को है। फिर देखियेगा कि कैसा वे प्रसन्न होते हैं।

इतना कहके उस मनुष्य ने सलाम करने के लिये फिर टोपी उतारी और इसके उपरान्त बड़े कमरे से चल दिया।

दरवान—(अब वह अजनबी के निकलने के लिये फाटक खोल रहा था) मैं समझता हूं तुम्हारी जैसी सूरत है वैसी तुम्हारी आवभगत भी भली प्रकार की गई होगी।

यह सुनके शरमन ने बड़ीही लापरवाही और स्वतंत्रता से उत्तर दिया—

"आह! तूभी हमारे लिये अपनी यह राय देता है?" इतना कहके उसने एक लाठी जोर से दरवान के हाथ पर जड़ दी जिससे उसके हाथ से तालियों का गुच्छा छूट पड़ा।

दरवान ने इसपर चिल्ला २ के अजनबी को गालियां देनी प्रारम्भ की; परन्तु उसने इसकी कोई परवाह न की और उसी प्रकार निश्चिन्तता से आपही आप कुछ बड़बड़ाता हुआ आगे बढ़ गया।

एडा का हृदय शरमन की उजड्डता से बड़ाही मलीन हो रहा था। वह उत्सुक

देखें बेरेन उसका नाम सुनके क्या कहता है और इससे उनसे कितनी राह रसम है।

इधर बेरेन सूर्यास्त के घण्टा भर के उपरान्त मकान में लौटा, इस समय वह शराब के नशे में चूर था।

दरबान—श्रीमान से श्रीमती बरोनेस महाशया कुछ कहा चाहती हैं!

लार्ड—श्रीमती की हमपर बड़ी दया है।

लार्ड ने यह एक कारण से कहा, और वह यह था कि अभी यह जुवाखाने से एक भारी रकम हार के आया था इससे इसका चित्त बड़ाही दुखी हो रहा था, और जब उसने लेडी की ओर का बुलावा सुना तो प्रसन्न हो गया और सोचने लगा कि अब वहीं चलके और एडा से इधर उधर की बात करके वह मन प्रसन्न करेगा।

इतनेहीं में एडा, अपनी ख़वास जेरट्रूड सहित बड़े कमरे के बगल में आन उपस्थित हुई और लार्ड से साक्षात करके कहने लगी।

एडा—अच्छा हुवा श्रीमान! कि यहां, हमारी आपकी साक्षात हो गई। आज हमारी एक व्यक्ति ने बड़ीही बेइज्जती की और फिर दरबान और इस हमारी खवास के सामनेही—यदि श्रीमान चाहें तो मैं उन कुल बातों को सुना जाऊँ और इसके बदले में मेरी इच्छा है कि उसको कोई बड़ी सजा देनी चाहिये या इतना पिटवाना चाहिये कि फिर वह किसी की इस प्रकार बेइज्जती न कर सके, और देखिये थोड़ीही देर में वह फिर यहां आया चाहता है।

यद्यपि बेरेन लेडी की कुल बातों को भली प्रकार नहीं समझा पर तो भी लड़खड़ाती हुई ज़बान में उसने कहा—

"क्या श्रीमती की बेइज्जती हुई है?"

एडा—हां साहब बुरी भांति मेरी बेइज्जती हुई, और एक कमीने पाजी बेहया ने मेरी बेइज्जती की जो श्रीमान् के जान पहचान होने का दावा रखता है और साथही सन्ध्या समय आने के लिये धमकी भी दे गया है।

इतना कहके एडा हैरानी से अपने पति के चेहरे को देखने लगी।

बेरेन—भगवान जाने वह कौन व्यक्ति है, क्या उसने अपना नाम भी कुछ बताया था?

एडा—वह कहता था कि श्रीमान् उसे अपने एक परम मित्र की भांति समझते हैं और उस्का नाम शरमेन है।

"शरमेन ?"

साथही बेरेन ने पूछा, और यह कहते २ उस्का चेहरा मुर्दों के सदृश पीला पड़ गया—और शराब का कुल नशा एकक्षण में उनपर से हवा हो गया।

एडा—हाँ शरमेन ! क्या आप उसे जानते हैं ?

बेरेन—(चिल्ला के) अभाग्यवश मैं उसे जानता हूँ—मैं भली प्रकार उसे जानता हूँ।

इसके उपरान्त, दूसरे क्षण में बेरेन ने अपने हृदय के आवेग को रोका—चेहरे के भाव को बदल दिया और एक मन्द मुस्कान के साथ कहने लगा।

"परन्तु श्रीमती को उस्से किसी प्रकार का भय नहीं खाना चाहिये, वह हमारी कोई क्षति नहीं कर सक्ता। परन्तु मैं उस्से अवश्य मिलूँगा, और मिलूँगा भी तो अकेले में। अच्छा तो उस्के आने की मैं इसी कोठरी में प्रतीक्षा करता हूँ।"

इतना कहके शीघ्रता स लार्ड महाशय एक कोठरी में चले गये, जिस्का पथ बड़े कमरेही से था और उस्में पहुँच के उन्होंने तुरन्त द्वार बन्द कर दिया।

सच तो ऐसे है कि शरमेन के नामही ने बेरेन जरनिन के चित्त पर एक न्यारा असर डाला। जिस्से वह काँप उठा था।

पचीसवाँ बयान।

रात की बातचीत।

एडा अपने पति की यह अवस्था देख के बड़ेही आश्चर्य्य से मूर्त्ति की भांति उसी बड़े कमरे में खड़ी रह गई।

एडा ने यह भली भाँति ताड़ लिया कि शरमन के नाम से बेरेन का बन्द २ काँप गया है और इस्से निश्चय कोई गुप्त भेद इन दोनों के बीच में है।

भेद क्या है ? अब इस पर एडा ध्यान दौड़ाने लगी। कभी वह सोचती कि क्या इन दोनों की किसी भारी दोष में साट होगी ? या लार्ड उस्का कर्जदार है ? या जैसा मैं पहले समझती थी वह उस्का केवल एक सामान्य टुकड़े खोशामित्र है ?

बेरेन के कोठरी में चले जाने के उपरान्त—जैसा कि अभी हम पीछे के बयान में लिख आये ह एडा यही सब खड़ी सोच रही थी।

परन्तु अभी उस्का विचार वहीं लों पहुँचा था जहाँ लों कि हम ऊपर दिखा चुके हैं कि सहसा असामान्य स्वर से घण्टी बजी और इसके उपरान्तही शरमन भी कोठरी के भीतर आ पहुँचा।

शरमन—(चिल्ला के एडा से) क्यों प्यारी लेडी ! तुम्हारे प्रतिष्ठित बेरेन महाशय मकान में आये? अगर वे आगये हों कृपाकर उनसे हमारी ओर से निवेदन कर दीजिये कि मुझे दर्शनों से कृतार्थ करें! और फिर हम अपने मित्र के स्वास्थ्य का प्याला चाहे वह किसी प्रकार की शराब से भरा हो चढ़ायें।

एडा—(बड़ेही घमंड से) श्रीमान लार्ड महाशय भी; जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो तुम्हारी साक्षात के निमित्त प्रस्तुत बैठे हैं।

शरमन—(पागलों की भांति एडा की ओर देख और चिल्ला के) वह पिशाच—वह नीच अब बिलकुलही लार्ड बन बैठा है! उनकी सेवा! उनकी साक्षात—! किसी समय का एक भारी शराबी—और अब भी मैं उसे ऐसाही समझता हूं—क्यों लेडी?

"लुच्चे हरामजादे!"

बेरोनेस ने यह चिल्ला के कहा, इस समय उसका समस्त क्रोध उबल पड़ा—उसकी बड़ी और काली २ आंखों से आग की चिनगारियां निकल रही थीं और फिर वह बोली।

"बेहया! यह हमारा मकान है।"

इसके उपरान्त आगे बढ़के उसने उस कोठरी का द्वार जिसमें लार्ड बैठा था जोर से खोल दिया और चिल्ला के बोली—

"श्रीमान! क्या आप सुन्ते हैं और उचित समझते हैं कि यह दुनिया भर का खबीस आके तुम्हारी स्त्री की इतनी हतक करे—और इतने कुवाक्य सुनाये साथही आप को भी गाली गलोज से न छोड़े!"

लार्ड—वह तुम्हारी कोई हानि न करेगा एडा—यह तो उसकी आदत है।"

इतना कहके लार्ड शीघ्रता से शरमन की अगवानी के लिये झपटा और फिर उससे कहने लगा।

"शरमेन—मेरे प्यारे मित्र—तुम्हारे आने से मुझे परम आन्द हुवा।"

शरमन—(एडा की ओर घमंड से देख के) मुझे तो आपसे ऐसीही आशा थी। परन्तु भगवान जाने मुझ पर यह लेडी इतनी क्यों बिगड़ रही है और व्यर्थ को गालियाही दिये जाती है? परन्तु हमारी तो ऐसी इच्छा होती है कि उसके लाल २ होंटों को चूम २ के बंद कर दूं जिसमें फिर गाली न निकल सके।

लार्ड—हूंहूं—शरमन ईश्वर के लिये ऐसा न करो।

लार्ड ने इसे बहुतही धीरे से शरमन की ओर देख के कहा साथही उसकी आवाज से नम्रता तथा घमंड भी पाया जाता था।

एडा ने शरमन की बात तो अवश्य सुनी परन्तु लार्ड की बातों को न सुन सकी और उसने बड़ेही क्रोध से लार्ड से कहा—

"जब अवकाश मिले तो श्रीमान मेरी बात भी कुछ सुन लेंगे मुझे इस हरामजादे का सविशेष वृत्तान्त सुनके प्रसन्नता होगी"।

इतना कह के एडा शाहाना ठाट से कोठरी के बाहर हो गई। परन्तु जैसेही वह द्वार के बाहर हुई वैसेही शरमन का तीक्ष्ण कंठस्वर यह कहता सुनाई पड़ा।

"क्यों बेरेन! इसका नाम क्या है? मैं अवश्य उसकी इस कृतिघ्नता का दंड दूंगा"

यह सुनके एडा अपने कमरे में चली आई और जेरट्रूड को सहेज दिया कि तू द्वार पर जाके ठहर जब यह शरमन चला जाये तो मुझे आके समाचार दीजियो।

एक घंटा व्यतीत हो गया और तब जेरट्रूड अपनी स्वामिनी के पास आई इसे देखतेही जल्दी से एडा ने पूछा।

"क्या वह गया?"

खवास—नहीं श्रीमती—वरन उसे वहीं बैठा छोड़ के लार्ड महाशय स्वयं तुमसे मिलने के लिये आ रहे हैं।

एडा—अच्छा तो तू श्रीमान से आगे बढ़के कहदे कि मैं इसी कोठरी में हूं और यहीं उनसे साक्षात भी करूंगी।

यह सुनके जेट्रूड चली गई और उसके कुछही मिनटों के उपरान्त बेरेन ने कोठरी में प्रवेश किया।

दीपनिर्व्वाण (दिल बहलाने का बहाना, सच्चे प्राचीन इतिहास — आर्य्यवंशधारियों का शिथिल हो जाना और महाराज पृथ्वीराज भारत पर मुसलमानों का दांत लगाना तथा आर्य्यवंशियों के चिराग का बुझ जाना इस दीपनिर्व्वाण का बताना है मूल्य दो॰ आ)

दलितकुसुम (बहुतही अपूर्व उपन्यास)

पुलिसवृत्तान्तमाला (बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित इसमें पुलिस के गुप्त रहस्य झलकाये गये हैं)

प्रणयिनी परिणय

मयानकभ्रमण (बाबू हरिकृष्ण जौहर लिखित)

मधुमालती (उत्तम उपन्यास)

मनोरमा (जादूगरनी)

मायाविनी

मरताक्या न करता

राजहेरत दोनों भाग (उर्दू) बाबू हरिकृष्ण जौहर कृत

सहासपना

संसारदर्पण (आज कल के नवीन अंग्रेजी शिक्षितों की बहार बाबू राम लिखित)

स्वर्णलता उपन्यास (यह गृहस्थी का उपन्यास है इसमें देवरानी व आत्मस्वार्थ और भाई भाई में विद्वेष, गृहस्थी के तैसनैस का चित्र खिंचा है कि आंखें खुल जाती हैं इसके पढ़ने से एक प्र शिक्षा भी प्राप्त होती है। इसे बाबू राधाकृष्ण ने अनुवाद किया

हदीफ उर्दू (बाबू हरिकृष्ण जौहर द्वारा लिखित)

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा।

मैनेजर भारतजीवन प्रेस—बनारस सिटी।